तीन लोक विधान

-विधान की रचयित्री-

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 92
ISBN 978-93-80353-48-7

तीन लोक विधान

–रचयित्री–

इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, विश्वशांति महावीर आदि
अनेक विधानों एवं ग्रंथों की रचयित्री चारित्रचन्द्रिका,
गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
'श्री गौतम गणधर वर्ष' वीर निर्वाण संवत् 2540-41 (सन् 2014-2015) के
अन्तर्गत शरदपूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

नवम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आश्विन शु. पूर्णिमा, 8 अक्टूबर 2014	160/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण-1988 से षष्ठ संस्करण-2004 तक 6600 प्रतियाँ
सप्तम संस्करण-2007-1100 प्रतियाँ, अष्टम संस्करण-2010-1100 प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

तीनलोक विधान में तीनलोक के समस्त अकृत्रिम जिनमंदिर और जिनप्रतिमाओं की पूजा है। ये जिनमंदिर अनादिकाल से स्वयं पृथ्वीकाय रूप से बने हुए हैं और अनन्त काल तक ऐसे ही बने रहेंगे। इनमें विराजमान जिनप्रतिमाएँ भी अनादि अनिधन हैं, रत्नमयी हैं। आचार्यों ने कहा है कि ये पृथ्वीकायिक रत्न ही इन जिनप्रतिमारूप से परिणत हो रहे हैं। इन प्रतिमाओं की सुन्दरता और वीतराग छवि इन्हीं में हैं। अन्यत्र असंभव है। हाँ, इन्हीं की प्रतिकृतिरूप कृत्रिम प्रतिमाएँ बनवायी जाती हैं किन्तु उतनी सुन्दरता नहीं आ सकती है।

नीचे अधोलोक में पहली रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भाग हैं–खर भाग, पंकभाग और अब्बहुलभाग। असुरकुमार के अतिरिक्त भवनवासी देवों के नागकुमार आदि नव भेदों के देवों के भवन खरभाग में हैं तथा असुरकुमार देवों के भवन पंकभाग में हैं। असुरकुमार के अतिरिक्त भवनवासियों के भवन, भवनपुर और आवास में तीनों के निवास स्थान माने हैं।[1] ये यद्यपि भवनपुर आवास मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्रों में पर्वतों आदि पर हैं परन्तु इनके भवनों की प्रमुखता खर भाग में ही होने से इनके जिनमंदिर अधोलोक के जिनमंदिर कहलाते हैं। चूँकि ये अपने मध्यलोक की चित्रा पृथ्वी के नीचे हैं। ये भवनवासी देवों के जिनमंदिर सात करोड़ बहत्तर लाख हैं।

तिलोयपण्णत्ति में इन भवनवासी देवों का तीसरे अधिकार में वर्णन करके चौथे अधिकार में नरलोक का वर्णन किया है। अतः इसी ग्रंथ के आधार से मैंने इन भवनवासी देवों के जिनालय की पूजा के बाद मध्यलोक के जिनालय की पूजा ले ली है। मध्यलोक में तेरहवें रुचकवर द्वीप तक जिनमंदिर हैं। ये जिनमंदिर अकृत्रिम अनादि निधन हैं और संख्या में 458 हैं।

इनकी पूजा के बाद व्यंतर देवों के जिनमंदिरों की पूजा है। त्रिलोकसार में कहा है कि रत्नप्रभा के खरभाग में भूतजाति के व्यंतरों के चौदह हजार भवन हैं और पंकभाग में राक्षस जाति के व्यंतर देवों के सोलह हजार भवन हैं। शेष छह प्रकार के व्यंतरों के भवन पृथ्वी के ऊपर हैं। इन व्यंतरों के तीन तरह के

1. त्रिलोकसार पृ. 248।

स्थान होते हैं-भवन, भवनपुर और आवास। जो चित्रा पृथ्वी के नीचे हैं वे भवन कहलाते हैं[1], जो असंख्यात द्वीप समुद्रों में हैं वे भवनपुर हैं और जो तालाब पर्वत तथा वृक्ष आदि पर बने हुए हैं वे आवास कहलाते हैं[2]। इसी मध्यलोक में हिंगुलक आदि द्वीपों में व्यंतर इन्द्रों के नगर माने हैं[3]। इसी प्रकार इन व्यंतरों के असंख्यात गृह होने से जिनमंदिर भी असंख्यात हैं। इसी तिलोयपण्णत्ति व त्रिलोकसार के आधार से ही मैंने मध्यलोक के बाद व्यंतर देवों के जिनालय की पूजा बनाई है।

राजवार्तिक ग्रंथ में लिखा है कि नीचे पंकभाग में व्यंतरों के असंख्यात लाख नगर हैं तथा मध्यलोक में भी सर्वत्र पर्वत, नदी, वृक्ष, सरोवर, वन, उद्यान आदि में माने हैं। यथा-''इस जम्बूद्वीप से तिरछे असंख्य द्वीप समुद्रों के बाद खरपृथ्वी भाग में दक्षिणाधिपति किन्नरेन्द्र के असंख्यात लाख नगर हैं। इसी प्रकार छह दक्षिणेन्द्र के दक्षिण दिशा में आवास हैं और उत्तरेन्द्र के उत्तर दिशा में आवास हैं। राक्षसेन्द्र के पंकबहुल भाग में असंख्यात लाख नगर हैं। भूमितल में भी ये व्यंतरदेव, द्वीप, पर्वत, समुद्र, देश, ग्राम, नगर, तिगड्डा, चतुष्पथ, घर, गली, जलाशय, उद्यान, देवमंदिर आदि में निवास करते हैं[4]।

इस मध्यलोक में ही चित्रा पृथ्वी से सात सौ नब्बे योजन की ऊँचाई पर आकाश में अधर तारा, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि ज्योतिष देवों के विमान हैं। ये ढाई द्वीप तक तो घूमते रहते हैं मेरु की प्रदक्षिणा देते रहते हैं और इसके आगे सब विमान जहाँ की तहाँ स्थिर हैं। ये सभी असंख्यात द्वीप समुद्रों तक असंख्यात विमान हैं। इन सबमें जिनमंदिर हैं अतः ज्योर्तिदेवों के भी असंख्यात जिनमंदिरों की संक्षेप में पूजा की गई है।

पुनः ऊर्ध्वलोक के सोलह स्वर्ग, नवग्रैवेयक, नवअनुदिश और पाँच अनुत्तर के विमानों के जिनमंदिरों की पूजाएँ हैं। ये सब जिनमंदिर चौरासी लाख, सत्यानवे हजार तेईस हैं।

इस प्रकार इस 'तीनलोक विधान' में इन्हीं तीनलोक के जिनालयों की अति संक्षेप में पूजाएँ हैं। इस विधान में चौंसठ पूजाएँ हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. तिलोयपण्णत्ति पृ. 644, त्रिलोकसार पृ. 245। 2. त्रिलोकसार पृ. 247। 3. तिलोयपण्णत्ति अ. 6, पृ. 649। 4. राजवार्तिक अ. 4, सूत्र 11 की टीका।

क्र.	पूजाएँ	अर्घ्य	पूर्णार्घ्य
1.	णमोकार मंत्र पूजा		
2.	भगवान आदिनाथ पूजा		
3.	त्रैलोक्य जिनालय पूजा		
4.	भवनवासी जिनालय पूजा		
5.	असुर कुमार जिनालय पूजा		
6.	नागकुमार जिनालय पूजा		
7.	सुपर्ण कुमार जिनालय पूजा		
8.	द्वीप कुमार जिनालय पूजा		
9.	उदधि कुमार जिनालय पूजा	7	3
10.	स्तनित कुमार जिनालय पूजा	7	3
11.	विद्युत् कुमार जिनालय पूजा	7	3
12.	दिक्कुमार जिनालय पूजा	7	3
13.	अग्नि कुमार जिनालय पूजा	7	3
14.	वायु कुमार जिनालय पूजा	7	3
15.	मध्यलोक जिनालय पूजा		
16.	सुदर्शन मेरु जिनालय पूजा	16	3
17.	जंबू वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
18.	जंबूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा	60	4
19.	विजयमेरु पूजा	16	3
20.	पूर्व धातकी खण्डस्थ धातकी शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
21.	पूर्व धातकी पर्वत जिनालय पूजा	60	4
22.	श्री अचल मेरु पूजा	16	3
23.	पश्चिम धातकी खंडस्थ धातकी शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
24.	पश्चिम धातकी खंड पर्वत जिनालय पूजा	60	4
25.	धातकी खण्डद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा	2	2
26.	मंदर मेरु पूजा	16	3
27.	पूर्व पुष्करार्ध द्वीप पुष्करवृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2

28.	पूर्व पुष्करद्वीप पर्वत जिनालय पूजा	60	4
29.	विद्युन्माली मेरु पूजा	16	3
30.	पश्चिम पुष्करार्ध पुष्कर वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
31.	पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा	60	4
32.	पुष्करार्ध द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा	2	2
33.	मानुषोत्तर जिनालय पूजा	2	2
34.	नंदीश्वर द्वीप जिनालय पूजा	52	2
35.	कुंडलगिरि जिनालय पूजा	4	2
36.	रुचकगिरि जिनालय पूजा	4	2
37.	व्यंतरदेव जिनालय पूजा		
38.	किन्नर देव जिनालय पूजा	7	2
39.	किंपुरुष जिनालय पूजा	7	2
40.	महोरगदेव जिनालय पूजा	7	2
41.	गंधर्व जिनालय पूजा	7	2
42.	यक्षदेव जिनालय पूजा	7	2
43.	राक्षसदेव जिनालय पूजा	7	2
44.	भूतदेव जिनालय पूजा	7	2
45.	पिशाचदेव जिनालय पूजा	7	2
46.	ज्योतिष्कदेव जिनालय पूजा		
47.	चन्द्रमा जिनालय पूजा	8	2
48.	सूर्य जिनालय पूजा	8	2
49.	ग्रह जिनालय पूजा	88	2
50.	नक्षत्र जिनालय पूजा	28	3
51.	प्रकीर्ण तारका जिनालय पूजा	11	2
52.	वैमानिक देव जिनालय पूजा		
53.	सौधर्म युगल जिनालय पूजा	37	3
54.	सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्ग जिनालय पूजा	13	3
55.	ब्रह्मकल्प जिनालय पूजा	23	3
56.	लांतव कापिष्ठ जिनालय पूजा	5	2
57.	शुक्र-महाशुक्र जिनालय पूजा	4	2

58. शतार-सहस्रार जिनालय पूजा	4	2
59. आनत-प्राणत आरण अच्युत जिनालय पूजा	15	2
60. नवग्रैवेयक जिनालय पूजा	11	2
61. नव अनुदिश जिनालय पूजा	9	2
62. पंच अनुत्तर जिनालय पूजा	5	2
63. सिद्ध शिला पूजा	16	1
64. कृत्रिम जिनालय पूजा	15	2

इस प्रकार इस विधान में कुल अर्घ 884 हैं और पूर्णार्घ्य 140 हैं। सब मिलाकर ये एक हजार चौबीस हो जाते हैं। इसमें ''त्रैलोक्य चूड़ामणि'' नाम की बड़ी जयमाला सहित पैंसठ जयमालाएँ हैं।

तीनलोक विधान की विधि—आष्टान्हिक आदि पर्व में विधान करना हो तो मुहूर्त की कोई बात नहीं है। यदि अन्य किसी भी चैत्र आदि मास में विधान करना हो तो मुहूर्तज्ञ से शुभ मुहूर्त निकलवाकर दिगम्बर गुरुओं का, आर्यिकाओं का संघ सान्निध्य करके विधान प्रारंभ करें। सर्वप्रथम जिनमंदिर या पांडाल में जहाँ भी विधान करना हो वेदी बनवाकर उसमें जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा विराजमान कर सामने तीनलोक के आकार का रंगोली या रंगे चावलों से मंडल बनाना चाहिए। यह मण्डल बड़े रूप में अट्ठाइस फुट लम्बा व चौदह फुट चौड़ा हो, तो अच्छा रहेगा, चूँकि मंडल के ऊपर ही प्रत्येक अर्घ के श्रीफल चढ़ाने होते हैं। मण्डल में बीचोंबीच सुदर्शन मेरु के स्थान पर सुन्दर गंधकुटी रखकर उसमें जिनेन्द्र प्रतिमा विराजमान करनी चाहिए। मण्डल को चंदोवा, छत्र, चंवर, वंदनवार, माला, झालर, फन्नूस आदि से खूब सजाना चाहिए।

मण्डल पर यथास्थान पाँचमेरु स्थापित करना चाहिए और आठ मंगल द्रव्य भी रखना चाहिए। मण्डल के बाहर दोनों तरफ धूपघट व अखंड द्वीप की स्थापना करनी चाहिए। इस मण्डल पर चारों तरफ एक सौ आठ लघु ध्वजा व आठ दिशाओं में आठ महाध्वजा लगाना चाहिए।

पूजन करने वाले इन्द्र-इन्द्राणी सुन्दर केशरिया वस्त्र पहनकर मुकुट हार कुंडल आदि से साक्षात् इन्द्र जैसे पूजा करें। सर्वप्रथम शुभ मुहूर्त में झण्डारोहण करके, अंकुरारोपण करके जलयात्रा द्वारा वेदी शुद्धि करके सकलीकरण, मण्डप प्रतिष्ठा, इन्द्र प्रतिष्ठा आदि सम्पन्न करके पूजा प्रारंभ करें। पूजन की सामग्री में मण्डल पर चढ़ाने के एक हजार से अधिक नारियल मंगाना चाहिए और सर्व

अष्टद्रव्य सामग्री वास्तविक, सुन्दर, बढ़िया होनी चाहिए तथा जयमाला में चाँदी, सोने आदि के पुष्प भी चढ़ाना चाहिए।

यह विधान सत्ताइस दिन, सोलह दिन, तेरह दिन या अपनी सुविधानुसार ग्यारह दिन में भी सम्पन्न किया जा सकता है। इस विधान में लगभग चालीस छन्दों का प्रयोग है, अतः संगीतलय के साथ मधुरता से पढ़ते हुए तथा नृत्य करते हुए भक्ति में विभोर हो यह विधान करना चाहिए। इसमें जाप्यानुष्ठान में सवा लाख का संकल्प करना चाहिए। जाप्य यह है–

1. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

प्रथम जाप्य 21 अक्षरी है, द्वितीय जाप्य चौबीस अक्षरी है व तृतीय जाप्य सत्ताइस अक्षरी है। जिस जाप्य का उच्चारण शुद्ध हो और जिसकी इच्छा हो वह जाप्य अनुष्ठान में सभी को करना चाहिए।

विधान पूर्ण होने पर तीन कुंड बनाकर हवन करना चाहिए। विधान कराने वाले विद्वान आर्ष परम्परा के अनुयायी, निर्लोभी, पापभीरू, विधि विधान के मर्मज्ञ, कुशल होना चाहिए। तभी विधान कराने वालों को वास्तविक आनंद और वास्तविक फल प्राप्त हो सकेगा।

विधान के समापन में जिनेन्द्रदेव की रथयात्रा करके 1008 या 108 कलशों से जिनप्रतिमा का महाभिषेक करना चाहिए। पुनः चतुर्विध संघ की पूजा, मुनियों को पिच्छी, पुस्तक आदि दान व आर्यिकाओं को पिच्छी, शास्त्र, वस्त्र दान देकर अपनी शक्ति के अनुसार श्रावकों का भी प्रीतिभोज, वस्त्र आदि से सम्मान करके समापन के समय दीन-दुःखियों को भी वस्त्र, भोजन, औषधि आदि करुणा दान देकर विधान सम्पन्न करना चाहिए।

इस तरह जो श्रावक जिनप्रतिमा की भक्ति से प्रेरित हो यह विधान करेंगे, करायेंगे या अनुमति देंगे। वे इस लोक में अनेक अभ्युदय को प्राप्त कर अंत में दो-तीन आदि भवों में ही त्रिलोक शिखर के अग्रभाग को प्राप्त कर लेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह विधान मेरे लिए तथा करने-कराने वालों के लिए मंगलमयी होवे, यही मेरी मंगलकामना है।

राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

कुन्दकुन्दान्वयो जीयात्, जीयात् श्री शांतिसागरः।
जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्री वीरसागरः।।
श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिमचन्दना।
जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।।

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहीं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके दीर्घकालीन त्यागमयी जीवन के प्रति विनम्र विनयांजलिरूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

1. जन्म, वैराग्य और दीक्षा-22 अक्टूबर सन् 1934, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में ''मैना'' का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र 18 वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया। उसी दिन से इस कन्या के जीवन में 24 घंटे में एक बार भोजन करने के नियम का भी प्रारंभीकरण हो गया।

नारी जीवन की चरमोत्कर्ष अवस्था आर्यिका दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् 1955 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके **''आर्यिका ज्ञानमती''** नाम प्राप्त किया।

2. अध्ययन और अध्यापन-ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-

चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को निबद्ध कर लिया। ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। 'कातंत्र रूपमाला' रूपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना रूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्मामृत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

3. लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से-भगवान महावीर के पश्चात् 2600 वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वारा शास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् 1954 में सहस्रनाम के 1008 मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् 1969-70 में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के सामने उजागर कर दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज लगभग 250 से भी अधिक संख्या हो चुकी है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास, चारों अनुयोगोंरूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि अनेकानेक भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है। पूज्य माताजी का चिंतन एवं लेखन पूर्णतया जैन आगम से संबद्ध है, यह उनकी महान विशेषता है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

4. सिद्धांत चक्रेश्वरी-पूज्य माताजी ने जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' की सोलहों पुस्तकों के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' का

लेखन करके महान कीर्तिमान स्थापित किया है। क्रम-क्रम से हिन्दी टीका सहित इन पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य चल रहा है। आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्डरूप द्वादशांगरूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके साररूप में द्रव्य संग्रह, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणिरूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा 1000 वर्ष पूर्व लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हुआ है।

5. शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर-जैन सिद्धांतों का मर्म विद्वत् वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान विद्वत्वर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् 1978 में हस्तिनापुर में पं. मक्खनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग 100 विद्वानों का विद्वत् प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह श्रृंखला चल रही है।

6. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार-सन् 1985 में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ, पुनः अनेक संगोष्ठियाँ सम्पन्न होती रहीं और सन् 1998 में 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पधारे कुलपतियों को भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। 11 जून 2000 को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुँचाये गये। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ (Proceedings) प्रस्तुत हो चुकी हैं।

7. दिगम्बर समाज की साध्वी को प्रथम बार डी.लिट्. की उपाधि प्रदान कर विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ-किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध

विद्वत्ता के सम्मान हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर जैन साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गईं। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्मसाधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्यिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं।

8. पूज्य माताजी की प्रेरणा से त्याग में बढ़े कदम-त्यागमार्ग में अग्रसर सम्यग्दृष्टी जीव की यह विशेषता रहती है कि वह संसार परिभ्रमण से आक्रान्त अन्य भव्यजीवों को भी मोक्षमार्ग का पथिक बनाने हेतु विशेषरूप से प्रयासरत रहता है। इसी भावना की परिपुष्टी करते हुए पूज्य माताजी ने अनेकानेक शिष्य-शिष्याओं का सृजन किया।

संघस्थ साधुओं-मुनिजनों एवं आर्यिकाओं को अध्ययन कराते हुए सन् 1956-57 में ब्र. राजमल जी को राजवार्तिक आदि अनेक ग्रंथों का अध्ययन कराकर पूज्य माताजी ने उन्हें मुनिदीक्षा लेने की प्रेरणा प्रदान की। पुनश्च ब्र. राजमल जी कालांतर में आचार्य अजितसागर जी महाराज के रूप में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में चतुर्थ पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

सन् 1967 में सनावद चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने ब्र. मोतीचंद एवं युवक यशवंत कुमार को घर से निकाला, उन्हें खूब विद्याध्ययन कराया तथा यशवंत कुमार को मुनिदीक्षा दिलवायी, जो वर्तमान में आचार्यश्री वर्धमानसागर के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। ब्र. मोतीचंद जी भी क्षुल्लक मोतीसागर बनकर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के प्रथम पीठाधीश के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

वर्तमान पट्टाचार्यश्री अभिनंदनसागर जी महाराज ने भी पूज्य माताजी से राजवार्तिक, गोम्मटसार आदि ग्रंथों का अध्ययन किया था। मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज, मुनि श्री संभवसागर जी महाराज इत्यादि ने भी पूज्य माताजी से विद्याध्ययन किया तथा उनकी प्रेरणा से ही मुनि दीक्षा प्राप्त की। वर्तमान में पूज्य माताजी के

अनन्य शिष्य स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी अत्यंत कर्मठ व्यक्तित्व के रूप में समस्त समाज में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

आर्यिका माताओं की शृँखला में आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, आर्यिका श्री जिनमती माताजी, आर्यिका श्री आदिमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री श्रुतमती माताजी, मैं स्वयं (आर्यिका चन्दनामती) तथा आर्यिका श्री सम्मेदशिखरमती माताजी, आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी आदि अन्य कई माताजी पूज्य माताजी से प्राप्त वैराग्यमयी संस्कारों एवं अध्यापन का ही प्रतिफल हैं। पूज्य माताजी से सर्वांगीण ग्रंथों का अध्ययन करके पूज्य जिनमती माताजी ने प्रमेयकमलमार्तण्ड, पूज्य आदिमती माताजी ने गोम्मटसार कर्मकाण्ड का हिन्दी अनुवाद किया है। मुझे भी षट्खण्डागम एवं अन्य महान ग्रंथों की हिन्दी टीका, महावीर स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं कतिपय संस्कृत रचनाएँ लिखने का सुअवसर पूज्य माताजी की अनुकम्पा से प्राप्त हुआ है।

62 वर्षों की सुदीर्घ अवधि में कितने ही भव्य जीवों ने पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत, पंच अणुव्रत, शक्ति अनुसार प्रतिमाएँ इत्यादि ग्रहण करके संयम के मार्ग को आत्मसात किया है। वर्तमान में पूज्य माताजी के साक्षात् सानिध्य में रहकर अनेक ब्रह्मचारिणी बहनें त्यागमार्ग में संलग्न हैं।

9. तीर्थ विकास की भावना-तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों के विकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना है कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी संस्कृति की महान धरोहर हैं अतः इनका संरक्षण-संवर्धन-विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम **भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर'** में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसे एक अतुलनीय 'मानव निर्मित स्वर्ग' (A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives And Natural Wonders) की संज्ञा प्रदान की है। सन् 1993 से 1995 तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार-दिल्ली में कमलमंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी

की ही प्रेरणा के प्रतिफल हैं।

कितने ही अन्य स्थानों पर भी जैसे-**खेरवाड़ा में** कैलाशपर्वत निर्माण की प्रेरणा, **पिड़ावा में** समवसरण रचना की प्रेरणा, **सोलापुर (महा.) में** भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा की स्थापना, **श्री महावीर जी के शांतिवीर नगर में** मंदारवृक्ष की स्थापना, **अतिशयक्षेत्र श्री त्रिलोकपुर में** पारिजातवृक्ष की स्थापना, **केकड़ी (राज.) में** सम्मेदशिखर की रचना आदि अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की **जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)** के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, भगवान महावीर की विशाल खड्गासन प्रतिमा सहित विश्वशांति महावीर मंदिर, नवग्रह शांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर एवं नंद्यावर्त महल आदि अनेक निर्माण आपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर हुए हैं तथा कुण्डलपुर तीर्थ विश्वभर के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि **'राजगृही' में** 'मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर' एवं विपुलाचल पर्वत की तलहटी में मानस्तंभ रचना, भगवान महावीर की निर्वाणस्थली **पावापुरी में** जलमंदिर के समक्ष पाण्डुकशिला परिसर में भगवान की खड्गासन प्रतिमा सहित 'भगवान महावीर जिनमंदिर', गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणस्थली **गुणावां जी में** गौतम स्वामी की खड्गासन प्रतिमा सहित जिनमंदिर, **श्री सम्मेदशिखर जी में** भगवान ऋषभदेव मंदिर इत्यादि समस्त निर्माण भी पूज्य माताजी की संप्रेरणा से ही सम्पन्न हुए हैं।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की शृँखला में **भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में** 'श्री पुष्पदंतनाथ जिनमंदिर' का निर्माणकार्य होकर उसमें भगवान पुष्पदंतनाथ की विशाल सवा 9 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान हो चुकी हैं।

तीर्थंकरों की शाश्वत **जन्मभूमि अयोध्या में** वर्तमानकालीन वहाँ जन्में पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि की टोकों पर जिनमंदिर निर्माण की प्रेरणा प्रदान कर आपने संस्कृति को जीवन्त करने का अभूतपूर्व प्रयास किया है। उस शृँखला में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की टोंक पर सुन्दर कलात्मक मंदिर बनकर उसमें सवा चार फुट पद्मासन श्वेत प्रतिमा विराजमान हुई हैं तथा सरयू नदी के तट पर भगवान अनन्तनाथ के मंदिर का निर्माण होकर पंचकल्याणक सम्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार क्रमशः भगवान अजितनाथ एवं अभिनंदननाथ की टोकों पर भी मंदिरों के सुन्दर निर्माण हो चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षास्थल-**माधोराजपुरा (राज.) में** भी 'गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ' के विकास का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है। यहाँ सुन्दर कृत्रिम सम्मेदशिखर पर्वत का निर्माण करके 15 फुट

उत्तुंग काले पाषाण वाली भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा एवं चौबीसी विराजमान की गई हैं। इस तीर्थ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 21 नवम्बर से 26 नवम्बर 2010 तक पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (वर्तमान पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी) के निर्देशन में विशेष महोत्सवपूर्वक सम्पन हुई है।

इसी शृँखला में अतिशय क्षेत्र **श्री महावीर जी (राज.) में** पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से महावीर धाम परिसर में **पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर** का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनाँक 29 जनवरी से 2 फरवरी 2012 तक सानंद सम्पन्न किया गया।

विशेष : तेरहद्वीप रचना, तीर्थंकरत्रय प्रतिमा एवं तीनलोक रचना-

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थ के विकास की अद्वितीयता को अमरता प्रदान करने वाली इन रचनाओं का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से इतिहास में प्रथम बार हुआ। अप्रैल सन् 2007 में स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। विश्व में प्रथम बार निर्मित इस रचना में विराजमान 2127 जिनप्रतिमाओं के दर्शन करके लोग इच्छित फल की प्राप्ति करते हैं। इसके अतिरिक्त हस्तिनापुर में जन्मे भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमाओं एवं 56 फुट उत्तुंग निर्मित तीनलोक रचना की जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी सन् 2010 में हुई जो हस्तिनापुर के अतिशय में चार चाँद लगा रही हैं।

10. विश्व में अनोखी 108 फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा-विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से द्रुतगति से चल रहा है। युगों-युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

11. शिरडी (महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ-शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' का निर्माण हुआ है, जिसमें पूज्य माताजी के निर्देशानुसार भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा विराजमान करके पंचकल्याणक महोत्सव (मई 2013 में) सम्पन्न हो चुका है और अब वहाँ सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण किया जा रहा है।

12. जृम्भिका तीर्थ विकास की प्रेरणा-भगवान महावीर स्वामी की कैवल्य भूमि जृंभिका जो आज बिहार प्रान्त में जमुई के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ एक नूतन भूमि पर भगवान की प्रतिमा विराजमान हो चुकी है तथा इस जृम्भिका तीर्थ का

विकास हो रहा है।

13. धर्मप्रभावना के विविध आयाम-जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में गठन किया गया। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का संचालन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन, णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली से उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्डरूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री-श्री पी.वी. नरसिंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'समवसरण मंदिर' में स्थापित होकर युगों-युगों तक के लिए भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिला रहा है। भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) से सन् 2003 में 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का विविध प्रांतों में सफल प्रवर्तन भी इसी शृँखला की विशिष्ट कड़ी है।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने सन् 1997 में राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, जिसका झण्डारोहण पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने किया एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह तथा श्रीमती सुषमा स्वराज आदि अनेक कैबिनेट मंत्रियों ने उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया। साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' (सन् 1997-1998 में) तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (सन् 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित) भी पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित हुए एवं हो रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों ईकाइयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित कर रहे है।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

14. संघर्ष विजेत्री-पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्ष परम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है।

15. भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का आयोजन-23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में 6 जनवरी 2005 को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन किया गया। भगवान की केवलज्ञान कल्याणक भूमि 'अहिच्छत्र', निर्वाणभूमि 'श्री सम्मेदशिखर जी' इत्यादि अनेकानेक तीर्थों पर विविध आयोजनों के साथ यह वर्ष मनाया गया। वर्ष 2006 को ''सम्मेदशिखर वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने प्रदान की, ताकि तन-मन-धन से दिगम्बर जैन समाज अपने महान तीर्थराज 'श्री सम्मेदशिखर जी' के प्रति समर्पित हो सके। पुनः दिसम्बर 2007 में अहिच्छत्र में आयोजित 'सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक' के साथ इस त्रिवर्षीय महोत्सव का समापन किया गया।

16. शताब्दी का अभूतपूर्व अवसर : दीक्षा स्वर्ण जयंती -वैशाख कृष्णा दूज, वी.नि.सं. 2532 अर्थात् 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण करने वाली प्रथम साध्वी पूज्य माताजी वर्तमान दिगम्बर जैन साधु परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित होने के गौरव से युक्त होकर हम सभी के लिए अतिशयकारी प्राचीन प्रतिमा के सदृश बन गईं। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 14 से 16 अप्रैल 2006 तक **'गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'** का भव्य आयोजन करके समस्त समाज ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित की।

17. विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया राष्ट्रपति जी ने-21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ। पुनः सन् 2009 ''शांति वर्ष'' में पूरे देश में विश्व की शांति के लिए धार्मिक अनुष्ठान एवं संगोष्ठियों के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

18. 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष' मनाने की प्रेरणा-बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के महान उपकारों से जन-जन को परिचित कराने के उद्देश्य से पूज्य माताजी ने वर्ष 2010 को ''प्रथमाचार्य

श्री शांतिसागर वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा समस्त समाज को प्रदान की। इस वर्ष का उद्घाटन ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ जन्म-दीक्षा एवं निर्वाणकल्याणक के शुभ दिवस किया गया तथा ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 31 मई 2011 तक यह वर्ष पूरे देश के विभिन्न अंचलों में अनेक धर्मप्रभावनात्मक कार्यक्रमों के साथ विभिन्न आयोजनोंपूर्वक मनाया गया।

19. प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष मनाने की प्रेरणा-शरदपूर्णिमा-2011 के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, जो पूज्य माताजी के दीक्षा गुरु भी हैं, का वर्ष मनाने की घोषणा की अतः यह वर्ष समाज द्वारा विभिन्न आयोजन पूर्वक सानंद मनाया गया।

20. चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष-जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्षा की आयु है, अर्थात् 18 वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर उस त्यागमयी जीवन के 60 वर्ष भी उन्होंने निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण किये। इसीलिए इनके 79वें जन्मदिवस एवं 61वें त्यागदिवस पर हमने अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन के आह्वान पर चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 मनाने की घोषणा की। इस वर्ष में सभी को शक्ति अनुसार चारित्र ग्रहण करने का संदेश दिया गया।

21. मंगलमय अमृत महोत्सव-अब पूज्य माताजी के 80वें जन्मदिवस को शरदपूर्णिमा-18 अक्टूबर 2013 को ''गणिनी ज्ञानमती अमृत महोत्सव'' के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। इस अवसर पर ''सम्मेदशिखर विधान'' के 80 मांडले बनाकर 80 परिवारों के द्वारा उनकी पूजन करने का विहंगम दृश्य उपस्थित हुआ। ज्ञातव्य है कि पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार **शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में ''आचार्य शांतिसागर धाम''** नामक स्मारक का निर्माण किया जा रहा है, जो आचार्य श्री की सम्मेदशिखर यात्रा (सन् 1927-28 में की गई) की ऐतिहासिकता का दिग्दर्शन कराएगा।

इन चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में कोटिशः नमन है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें शताब्दी महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो एवं आपके द्वारा नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

एक अद्वितीय जैन केन्द्र

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी (अध्यक्ष)

राजधानी दिल्ली से 110 किमी. दूर उत्तरप्रदेश के जिला मेरठ स्थित पौराणिक तीर्थ **हस्तिनापुर** में सन् 1974 से 'जम्बूद्वीप' नाम से एक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र अवस्थित है। 200 फुट के व्यास में निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना **'जम्बूद्वीप'** के अन्दर हल्के गुलाबी संगमरमर से निर्मित 101 फुट ऊँचे **सुमेरु पर्वत** की शोभा आज प्रत्येक व्यक्ति के मन को आकर्षित करती है।

प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा समस्त आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है-**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)।** जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 1972 में इस संस्थान की स्थापना हुई। दिगम्बर जैन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्मोग्राफिक रिसर्च **(Digambar Jain Institute of Cosmographic Research)** के नाम से प्रसिद्ध इस संस्थान का आधारभूत लक्ष्य था-जम्बूद्वीप का निर्माण और यह जम्बूद्वीप ही अंततः संस्थान का मुख्य कार्यालय बन गया।

जंबूद्वीप की 35 एकड़ पवित्र भूमि पर संस्थान के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है-

1. जंबूद्वीप रचना-जिनेन्द्र भगवान की 207 प्रतिमाओं से पावन भारतीय शिल्प और जैन भूगोल का अद्वितीय उदाहरण, आधुनिक आकर्षणों-बिजली के फौव्वारे, नौका-विहार इत्यादि सहित।

2. कमल मंदिर-भगवान महावीर की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं।

3. ध्यान मंदिर-24 तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं सहित **'ह्रीं'** रचना इस मंदिर में विराजमान हैं, जो कि 'ध्यान' (Meditation) करने हेतु उत्तमोत्तम माध्यम हैं।

4. त्रिमूर्ति मंदिर-भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाओं से इस मंदिर का नाम सार्थक है। कमल पर विराजमान भगवान नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ से इस मंदिर की शोभा द्विगुणित हो गयी है।

5. वासुपूज्य मंदिर-इस मंदिर में 12वें तीर्थंकर-वासुपूज्य स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

6. शांतिनाथ मंदिर-जिन भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों से हस्तिनापुर की भूमि परम-पावन हुई है, उन शांति-कुंथु और अरहनाथ भगवंतों की खड्गासन प्रतिमाएँ इस मंदिर में विराजमान हैं।

7. ॐ मंदिर-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठियों की प्रतिमाओं सहित **ॐ** (ओम) रचना इस मंदिर में विराजित है।

8. विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर-इस मंदिर में विदेह क्षेत्र के विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बीस कमलों पर विराजमान हैं।

9. सहस्रकूट मंदिर-जिनेन्द्र भगवान की 1008 प्रतिमाओं सहित।

10. भगवान ऋषभदेव मंदिर-धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा एवं अन्य जिन प्रतिमाओं सहित।

11. भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ-'भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' में निर्मित, भगवान के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाला, 8 प्रतिमाओं से समन्वित 31 फुट ऊँचा कीर्तिस्तंभ।

12. तेरहद्वीप जिनालय-इस मंदिर के अंदर मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना का अति सुन्दरता के साथ दिग्दर्शन कराया गया है, जिसमें पंचमेरु पर्वतों के साथ-साथ कुल 2127 प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

13. अष्टापद दिगम्बर जैन मंदिर-इस मंदिर के अंदर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद-कैलाशपर्वत की आकर्षक प्रतिकृति विराजमान है। कैलाशपर्वत का ही दूसरा नाम अष्टापद है। 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस प्रतिकृति के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर इसका उद्घाटन किया गया।

14. नवग्रह शान्ति जिनमंदिर—पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उत्तर भारत में प्रथम बार निर्मित इस नवग्रहशांति जिनमंदिर में नवग्रह अरिष्ट निवारक नव तीर्थंकरों की धातु निर्मित सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन-पूजन करके भक्तगण अपने ग्रहों की शांति करते हुए देखे जाते हैं।

15. तीर्थंकरत्रय की विशाल प्रतिमाएँ—हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकर श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ भगवान की 31-31 फुट की खड्गासन प्रतिमाएँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान हुई हैं, जिनका विशाल मंदिर भी प्रस्तावित है।

16. तीनलोक की भव्य रचना—त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति आदि करणानुयोग ग्रंथों के अनुसार तीन लोक की सुन्दर रचना का निर्माण भी पूज्य माताजी की प्रेरणा का ही सुफल है। इसमें अत्याधुनिक सुविधा के लिए लिफ्ट लगाई गई है, जिससे सभी भक्तगण सिद्धशिला तक के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

17. जम्बूद्वीप पुस्तकालय—प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित लगभग 15000 ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह सहित।

18. जम्बूद्वीप औषधालय

19. ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस—विशेष कृत्रिम रेल, जिसमें चौबीसों तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों का विविध झाँकियों एवं चित्रावली के माध्यम से मनमोहक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

20. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला—1972 में संस्थापित इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक लाखों की संख्या में 300 से अधिक ग्रंथों एवं पुस्तकों के संस्करणों का प्रकाशन हो चुका है।

21. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका—यह पत्रिका सन् 1974 से लगातार प्रकाशित हो रही है, जिसमें जैन शास्त्रों के साररूप लेखों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संकलन एक स्थान पर प्राप्त होता है।

22. राजा श्रेयांस भोजनशाला—आने वाले दर्शनार्थियों को प्रतिदिन शुद्ध (जैनचर्या के अनुरूप) भोजन उपलब्ध कराने वाला यह दिगम्बर जैन समाज का प्रथम भोजनालय है, जहाँ एक साथ 500 लोग बैठकर भोजन कर सकते हैं।

23. धर्मशालाएँ—200 से अधिक फ्लैट, बंगले इत्यादि, जिनमें ठहरने संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

24. मनोरंजन के साधन—तरह-तरह के झूले, बच्चों की रेल, हँसी के गोलगप्पे, नौका विहार, फौव्वारे, हरे-भरे लॉन, पूरे कैम्पस में घूमने के लिए ऐरावत हाथी (मोटर से संचालित), बिजली की आकर्षक व्यवस्था, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य इत्यादि बरबस ही दर्शनार्थियों को इस भव्य रचना की तुलना 'स्वर्ग' से करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

अक्टूबर 1981-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'**।

31 अक्टूबर 1982-फिक्की ऑडिटोरियम-दिल्ली में **'जम्बूद्वीप सेमिनार'** जिसका उद्घाटन श्री राजीव गांधी, तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा किया गया।

अप्रैल 1985-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान'** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह द्वारा किया गया।

जून 1982 से अप्रैल 1985-लालकिला मैदान, दिल्ली से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा 4 जून, 1982 को पूरे देश में भ्रमण करने हेतु **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'** रथ का उद्घाटन किया गया। जनसाधारण में अहिंसा, चारित्र-निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए 1045 दिन तक देश भर में भ्रमण करने के पश्चात् यह ज्ञान ज्योति तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) द्वारा जम्बूद्वीप के मुख्य द्वार के समक्ष सदैव के लिए स्थापित कर दी गई।

1992-'अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी' का जंबूद्वीप स्थल पर श्री नेमीचंद जैन, विधायक (मध्यप्रदेश) की अध्यक्षता में आयोजन किया गया।

'जैन गणित' एवं **'चारित्र निर्माण'** आदि विषयों पर हुई संगोष्ठियाँ **मेरठ विश्वविद्यालय एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में** आयोजित की गईं।

1993-अयोध्या में अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में **'भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव'** विषय पर संगोष्ठी।

अक्टूबर 1995-मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय **'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी-95'**।

मार्च-अप्रैल 1998-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 9 अप्रैल 1998 को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली से देश भर में भ्रमण करने हेतु **'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ'** का उद्घाटन। 3 वर्ष तक देशभर में तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धांतों एवं जैनधर्म की प्राचीनता का प्रचार-

प्रसार करने के पश्चात् यह समवसरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद) में स्थापित कर दिया गया।

अक्टूबर 1998-जम्बूद्वीप स्थल पर **'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'**, जिसका उद्घाटन किया गया-स्वर्गीय श्री राजेश पायलट (तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा)।

फरवरी 2000-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले **'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष'** का उद्घाटन किया गया।

इस युग में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पर 1008 संगोष्ठियों की शृंखला, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभों का निर्माण तथा अन्य अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष के अंतर्गत आयोजित किये गये।

टोरण्टो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि विदेश की भूमियों पर भी इन्हीं प्रेरणाओं के माध्यम से 4 फरवरी 2000 को निर्वाण महामहोत्सव मनाया गया।

जून 2000-जम्बूद्वीप स्थल पर 11 जून 2000 को **'जैनधर्म की प्राचीनता'** विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

फरवरी 2001-भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में **'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ'** का नवनिर्माण। इस तीर्थ पर भगवान के दीक्षा कल्याणक के प्रतीकस्वरूप धातु के वटवृक्ष के नीचे ध्यान में लीन महायोगी ऋषभदेव की सवा पांच फुट उत्तुंग पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीकस्वरूप भगवान की चतुर्मुखी प्रतिमा सहित दिव्य समवसरण रचना तथा निर्वाण कल्याणक के प्रतीक स्वरूप 51 फुट उत्तुंग 'कैलाशपर्वत' की भव्य रचना पर भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहारी लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा तथा तीन चौबीसी के प्रतीक स्वरूप 72 जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। 'ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' भी स्थापित है। 4 से 8 फरवरी 2001 तक 'भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा' एवं 1008 महाकुंभों से कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव का 'महाकुंभमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम।

सन् 2003-2004-भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में **'नंद्यावर्त महल तीर्थ'** का निर्माण। भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर और नंद्यावर्त महल (भगवान महावीर का जन्म महल) एवं उसमें स्थापित भगवान शांतिनाथ जिनालय इस तीर्थ के मुख्य आकर्षण हैं। महावीर की जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार हेतु **भगवान महावीर ज्योति रथ** सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रवर्तन कर चुका है।

सन् 2005-2007-भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव-6 जनवरी 2005 को जन्मभूमि वाराणसी से इसका भव्य उद्घाटन होकर पूरे एक वर्ष तक (27 दिसम्बर 2005 तक) इसे विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

पुनः सन् 2006 में पूज्य माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि ''सम्मेदशिखर वर्ष'' घोषित किया तथा दिसम्बर 2007 में केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करके 4 जनवरी 2008 को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का समापन किया।

विशेषरूप से इस संस्थान द्वारा 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के सानिध्य में भारत गणतंत्र की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी अपने पति डॉ. देवीसिंह शेखावत के साथ सम्मेलन में पधारीं। कार्यक्रम में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री टी.वी. राजेश्वर तथा स्वास्थ्य मंत्री श्री अनंत कुमार मिश्रा भी पधारे। इसी अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा वर्ष 2009 को ''शांति वर्ष'' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह 'शांति वर्ष-2009' वर्तमान में समस्त जैन समाज द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया गया।

सन् 2010 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से गठित ''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी'' द्वारा भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकासकार्य सम्पन्न किया गया है। तीर्थ पर भगवान पुष्पदंतनाथ की सवा 9 फुट पद्मासन प्रतिमा सुन्दर जिनमंदिर में विराजमान होकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित हो चुकी हैं

तथा भगवान पुष्पदंतनाथ कीर्तिस्तंभ तीर्थ की कीर्ति को दिग् दिगन्तव्यापी ख्याति प्राप्त कराने में निमित्तभूत है।

सन् 2012 में अतिशय क्षेत्र **श्री महावीर जी (राज.) में** पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शांतिवीर नगर के निकट स्थित महावीर धाम परिसर में **पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर** का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनाँक 29 जनवरी से 2 फरवरी 2012 तक सानंद सम्पन्न किया गया है तथा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत इस जैन मंदिर का संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा है।

इस संस्थान के द्वारा समय-समय पर विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं। संस्थान के अद्भुत कार्यकलाप की श्रेणी में है-**णमोकार महामंत्र बैंक,** जहाँ प्रतिवर्ष श्रद्धालु भक्तों द्वारा लाखों की संख्या में णमोकार मंत्र लिखकर जमा कराए जाते हैं। ये करोड़ों महामंत्र विश्वशांति की किरणें प्रसारित करने में अतिशय धरोहरस्वरूप हैं।

संस्थान द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-सन् 1995 से प्रत्येक पाँच वर्ष में यह पुरस्कार जैन धर्म पर उच्चस्तरीय शोध तथा संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु किसी भी जैन विद्वान या समर्पित कार्यकर्ता को 1,00,000/-(एक लाख) रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति-पत्र इत्यादि के साथ प्रदान किया जाता था। अप्रैल 2006 में ''गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'' के अवसर पर संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष इस पुरस्कार को देने का निर्णय लिया गया अतः अब यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी वरिष्ठ विद्वान अथवा विशिष्ट समाजसेवी को प्रदान किया जाता है।

आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-सन् 1999 में स्थापित 25,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप पुरस्कार-सन् 2000 में स्थापित 25,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

नंद्यावर्त महल पुरस्कार-सन् 2004 से प्रारंभ 25000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

श्री छोटेलाल जैन पुरस्कार-सन् 2003 में स्थापित 25,000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

प्रकाशचंद जैन स्मृति पुरस्कार-सन् 2012 से प्रारंभ 25000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप बाल प्रतिभा पुरस्कार-सन् 2010 से प्रारंभ 11000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष' के अवसर पर घोषित **'भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड'**, **'ब्राह्मी पुरस्कार'**, **'भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर पुरस्कार'**, **'गणिनी ज्ञानमती दीक्षा स्वर्ण जयंती पुरस्कार'**, **'हीरक जयंती पुरस्कार'** तथा **रूपाबाई पुरस्कार** आदि भी संस्थान द्वारा प्रदान किये जा चुके हैं।

पुनः ''गणिनी ज्ञानमती अमृत महोत्सव''-18 अक्टूबर 2013 के अवसर पर 80000/-रुपये की राशि वाला **'अमृत महोत्सव पुरस्कार'** भी प्रदान किया गया।

इस प्रकार यह संस्थान अपनी विभिन्न समर्पित कार्य योजनाओं द्वारा समाज की सेवा में प्रतिक्षण संलग्न है। मानसिक शांति, आध्यात्मिक विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अन्य अनेक लाभ एक साथ प्राप्त करने हेतु यह संस्थान जंबूद्वीप दर्शन के लिए आपको सादर आमंत्रित करता है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**

9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
10. **श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**
11. **स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।**
12. **श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।**
13. **श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।**
14. **श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।**
15. **श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।**
16. **श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।**
17. **श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली।**
18. **श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली**
19. **श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)**
20. **श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।

22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।

56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।

89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
108. सौ. पुष्पा पवन कुमार कासलीवाल, खामगांव (बुलठाणा) महा.।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
	मंगलाचरण	1
	मंगलाष्टक	2
	चैत्य भक्तिः	3
	चैत्यभक्ति (हिन्दी)	5
	पूजाएँ	
1.	णमोकार महामंत्र पूजा	6
2.	श्री आदिनाथ पूजा	11
3.	त्रैलोक्य जिनालय पूजा	16
4.	भवनवासी जिनालय पूजा	21
5.	असुरकुमार जिनालय पूजा	26
6.	नागकुमार देव जिनालय पूजा	33
7.	सुपर्णकुमार जिनालय पूजा	39
8.	द्वीपकुमार जिनालय पूजा	45
9.	उदधिकुमार जिनालय पूजा	51
10.	स्तनित कुमार जिनालय पूजा	57
11.	विद्युत्कुमार जिनालय पूजा	63
12.	दिक्कुमार जिनालय पूजा	70
13.	अग्निकुमार जिनालय पूजा	76
14.	वायुकुमार जिनालय पूजा	84
15	मध्यलोक जिनालय पूजा	90
16.	सुदर्शन मेरु पूजा	94
17.	जम्बूद्वीपस्थ जंबू शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	102
18.	जम्बूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा	107
19.	विजय मेरु पूजा	124
20.	पूर्व धातकीखण्ड धातकी वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	132
21.	पूर्व धातकीखण्ड पर्वत जिनालय पूजा	138

विषय	पृष्ठ संख्या

22. श्री अचलमेरु पूजा 157
23. पश्चिम धातकीखण्डस्थ धातकी वृक्ष शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजा 165
24. पश्चिम धातकी खण्ड पर्वत जिनालय पूजा 170
25. धातकी खण्डद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा 188
26. मंदर मेरु पूजा 193
27. पूर्वपुष्करार्ध द्वीप पुष्करवृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा 201
28. पूर्व पुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा 206
29. विद्युन्माली मेरु पूजा 222
30. पश्चिम पुष्करार्ध पुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा 230
31. पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा 236
32. पुष्करार्ध द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा 252
33. मानुषोत्तर जिनालय पूजा 257
34. नंदीश्वर द्वीप जिनालय पूजा 264
35. कुण्डलगिरि जिनालय पूजा 279
36. रुचकगिरि जिनालय पूजा 285
37. व्यंतरदेव जिनालय पूजा 291
38. किन्नरदेव जिनालय पूजा 296
39. किंपुरुष जिनालय पूजा 303
40. महोरगदेव जिनालय पूजा 309
41. गंधर्व जिनालय पूजा 316
42. यक्षदेव जिनालय पूजा 321
43. राक्षसदेव जिनालय पूजा 329
44. भूतदेव जिनालय पूजा 336
45. पिशाचदेव जिनालय पूजा 343
46. ज्योतिष्क देव जिनालय पूजा 350
47. चन्द्रमा जिनालय पूजा 355
48. सूर्य जिनालय पूजा 362
49. ग्रह जिनालय पूजा 369
50. नक्षत्र जिनालय पूजा 387

विषय	पृष्ठ संख्या

51. प्रकीर्ण तारका जिनालय पूजा 397
52. वैमानिक देव जिनालय पूजा 405
53. सौधर्म युगल जिनालय पूजा 410
54. सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्ग जिनालय पूजा 424
55. ब्रह्मकल्प जिनालय पूजा 432
56. लांतव कापिष्ठ जिनालय पूजा 443
57. शुक्र-महाशुक्र जिनालय पूजा 449
58. शतार-सहस्रार जिनालय पूजा 456
59. आनत-प्राणत आरण अच्युत जिनालय पूजा 462
60. नव ग्रैवेयक जिनालय पूजा 471
61. नव अनुदिश जिनालय पूजा 478
62. पंच अनुत्तर जिनालय पूजा 485
63. सिद्ध शिला पूजा 491
64. कृत्रिम जिनालय पूजा 501

त्रैलोक्य चूड़ामणि चूलिका (बड़ी जयमाला) 509

तीन लोक विधान प्रशस्ति 513

आरती 515

भजन 516

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन 517

शांतिधारा

–गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (......)[1] सर्वज्ञानावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदर्शनावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववेदनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायुःकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनामकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगोत्रकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वान्तरायकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रोधं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमायां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व लोभं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वरागं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसिंहभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वाग्निभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसर्पभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वयुद्धभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसागरनदीजलभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनिगडादिबंधनभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूकंपदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वधनहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वव्यापारहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि

1. जिनके लिए शांतिधारा करा रहे हों, उनका नाम बोलें।

भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वराजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचौरभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुष्टभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशत्रुभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशोकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववैरं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भिक्षं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमनोव्याधिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वआर्तरौद्रध्यानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भाग्यं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायशः छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वपापं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व अविद्यां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वप्रत्यवायं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वकुमतिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रूरग्रहभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुःखं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वापमृत्युं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनताअभयदानदायक-सार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीरवर्धमाननामालंकृत-श्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे......प्रदेशे......नामनगरे वीरसंवत्....... तमे....... मासे.......पक्षे......तिथौ......वासरे नित्य पूजावसरे (.......... विधानावसरे[1]) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! सुभिक्षं कुरू कुरू मनः समाधिं कुरु कुरु धर्मशुक्लध्यानं कुरु कुरु सुयशः कुरु कुरु सौभाग्यं कुरु कुरु अभिमतं कुरु कुरु पुण्यं कुरु कुरु विद्यां कुरु कुरु आरोग्यं कुरु कुरु श्रेयः कुरु कुरु सौहार्दं कुरू कुरू सर्वारिष्ट ग्रहादीन् अनुकूलय अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर्द्राघय द्राघय। सौख्यं साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांतिं कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्य मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

1. प्रतिदिन में 'नित्यपूजावसरे' बोलें और विधान में उसी विधान का नाम बोलें।

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं........।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

तीन लोक विधान

मंगलाचरण

शंभु छंद

जिनदेवदेव का वंदन कर, जिनप्रतिमाओं को नित्य नमूँ।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनमंदिर, वंदन कर कर्म कलंक वमूँ।।
इस युग के स्रष्टा धर्मविधाता, आदिनाथ को नित प्रणमूँ।
मेरा संकल्प पूर्ण होवे, जिनचरणकमल को नित प्रणमूँ।।1।।

बहुतेक दिनों से थी इच्छा, मैं तीन लोक जिनयज्ञ रचूँ।
अकृत्रिम जिनमंदिर जिनवर, प्रतिमाओं को रुचि से अर्चूं।।
यह घड़ी आज शुभ आई है, जिनवर पद अर्चा करने की।
होवे विधान यह मंगलकर, भव्यों को हो रुचि करने की।।2।।

इस भरतक्षेत्र में दुषमकाल, यह काल महाविकराल अहो।
शाश्वत जिनमंदिर दर्शन की, नहिं शक्ति हमें है प्राप्त अहो।।
फिर भी परोक्ष वंदन प्रणमन, पूजन कर मन आनंदित हो।
इसलिये विधान करूँ रुचि से, अतिशायि पुण्य संपादित हो।।3।।

चित्राभू तले भवनवासी, देवों के भवन बने शाश्वत।
इस अधोलोक में सात करोड़, बहत्तर लाख जिनालय नित।।
इस मध्यलोक में चार शतक, अट्ठावन जिनगृह शाश्वत हैं।
बस ऊरध में चौरासि लाख, सत्यानवे हजार तेइस हैं।।4।।

कोट्यष्ट सुछप्पन लाख सत्यानवे, सहस चार सौ इक्यासी।
जिनभवन अकृत्रिम त्रिभुवन में, मैं नमूँ नमूँ ये सुखराशी।।
नव सौ पच्चीस करोड़ सुत्रेपन, लाख सत्ताइस सहस कही।
नव सौ अड़तालिस जिनप्रतिमा, मैं वंदूँ पाऊँ मोक्ष मही।।5।।

व्यंतरसुर के गृह में शाश्वत, जिनमंदिर असंख्यात मानें।
ज्योतिष विमान में जिनमंदिर, हैं संख्यातीत मुनी जानें।।
सब जिनगृह में जिनप्रतिमायें, सब इक सौ आठ-आठ राजे।
इन जिनगृह जिनप्रतिमाओं को, मैं नमूं सर्वपातक भाजें।।6।।

सब धन्य धन्य जिनवर मंदिर, सौ इंद्र वंदना करते हैं।
गणधर गुरु सर्वऋद्धिधारी, त्रयकाल वंदना करते हैं।।
चारण ऋषि मुनि सब साधूगण, कर जोड़ वंदना करते हैं।
विद्याधर गगन गमन करते, प्रत्यक्ष वंदना करते हैं।।7।।

मैं यहीं परोक्ष भावपूर्वक, कर जोड़ शीश नावूँ वंदूँ।
जिनमंदिर जिनप्रतिमाओं को, मैं वंदूँ कोटि कोटि वंदूँ।।
जिनवर की भक्ती गंगा में, अवगाहन कर मल धो डालूँ।
निज आत्म सुधारस को पीकर, चिन्मय चिंतामणि को पालूँ।।8।।

इति श्री त्रैलोक्यविधानजिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिः।

अथ मंगलाष्टक स्तोत्रं

अनुष्टुप् छंद

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।1।।

भावनामरगेहेषु, जिनगेहाश्च शाश्वताः।
जिनार्चास्तेषु नित्याः स्युः, ते ताः कुर्वन्तु मंगलम्।।2।।

चतुःशताष्टपंचाशत्, मध्यलोके जिनालयाः।
जिनार्चाः सौख्यदास्तेषु, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।3।।

व्यंतरामरगेहेषु, संख्यातीता जिनालयाः।
असंख्याः प्रतिमाश्चापि, ते ताः कुर्वन्तु मंगलम्।।4।।

ज्योतिर्वासिविमानेषु, संख्यातीता जिनालयाः।
असंख्या मूर्तयस्तत्र, ते ताः कुर्वन्तु मंगलम्।।5।।

वैमानिकविमानेषु, नित्याः संति जिनालयाः।
जिनार्चाः शाश्वतास्तेषु, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।6।।

कृत्रिमाकृत्रिमाः सर्वे, त्रैलोक्ये ये जिनालयाः।
कृताकृता जिनार्चाश्च, ते ताः कुर्वन्तु मंगलम्।।7।।

त्रैलोक्यशिखराग्रे या, भाति सिद्धशिला शुभा।
अनंतानंतसिद्धेभ्यो, भृता कुर्यात् सुमंगलम्।।8।।

अर्हंतः सर्वसिद्धाश्च, साधवस्त्रिविधा अपि।
सज्ज्ञानमतिदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।9।।

इति मंडपांतः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चैत्यभक्तिः

अर्हतां सर्वभावानां, दर्शन-ज्ञानसंपदाम्।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि, यथाबुद्धि विशुद्धये।।1।।

श्रीमद्भावनवासस्थाः, स्वयंभासुरमूर्तयः।
वंदिता नो विधेयासुः, प्रतिमाः परमां गतिम्।।2।।

यावंति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि, वंदे भूयांसि भूतये।।3।।

ये व्यंतरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः।
ते च संख्यामतिक्रांताः, संतु नो दोषविच्छिदे।।4।।

ज्योतिषामथ लोकस्य, भूतयेऽद्भुतसंपदः।
गृहाः स्वयंभुवः संति, विमानेषु नमामि तान्।।5।।

वंदे सुरतिरीटाग्र-मणिच्छायाभिषेचनम्।
याः क्रमेणैव सेवंते, तदर्च्चाः सिद्धिलब्धये।।6।।

इति स्तुतिपथातीत-श्रीभृतामर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः, सर्वास्रवनिरोधिनी[1]।।7।।

वसन्ततिलका छंद

देवासुरेंद्रनागसमर्चितेभ्यः।
पापप्रणाशकरभव्यमनोहरेभ्यः।।
घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यः।
नित्यं नमो जगति सर्वजिनालयेभ्यः।।8।।

अचंलिका–इच्छामि भंते! चेइयभत्तिकाउसग्गो कओ तस्सालोचेउं, अहलोयतिरियलोयउड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोइसियकप्पवासयत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति अहमवि इ संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति मंगलवाद्यपूर्वकं जिनमंडपान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चैत्यभक्ति-हिन्दी (कुसुमलता छंद)

सब पदार्थवित् दर्शज्ञान-संपत्युत अर्हत की प्रतिमा।
यथाबुद्धि मनशुद्धिहेतु, गुणकीर्तन करूँ अतुल महिमा।।1।।

श्रीमद्भवनवासि के गृह में, भासुर जिनमूर्ती स्वयमेव।
परमसिद्धगति करें हमारी, वंदूँ उन्हें करूँ नित सेव।।2।।

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं, कृत्रिम अकृत्रिम सबको।
मैं वंदूँ शिववैभवहेतु, सब जिनचैत्य जिनालय को।।3।।

---

1. श्री गौतम स्वामी कृत चैत्यभक्ति के मध्य से लिये गये 16 से 22 तक श्लोक।

व्यंतर के विमान में जिनगृह, उनमें अकृत्रिम प्रतिमा।
संख्यातीत कहीं हैं वंदूँ, दोष नाश के हेतु सदा।।4।।

ज्योतिष देवों के विमान में, अद्भुत संपत्युत जिनगेह।
स्वयंभुवा प्रतिमा भी अगणित, वंदूँ वैभवहेतु सनेह।।5।।

सुरपति के नत मुकुटमणि-प्रभ से अभिषेक हुआ जिनका।
वैमानिक सुरसेवित प्रतिमा, सिद्धिहेतु मैं नमूँ सदा।।6।।

इसविध स्तुति पथातीत, अंतर बाहिर श्रीयुत अर्हन्।
चैत्यों के संकीर्तन से, मम सर्वास्रव का हो रोधन।।7।।

देव असुर सुर नाग इंद्र से, अर्चित वंदित जिनमंदिर।
भविजन के सब पाप प्रणाशक, महामनोहर जिनमंदिर।।
घंटा ध्वजा चंदोवा तोरण, आदि विभूषित जिनमंदिर।
नित्य नमूँ मैं तीन भुवन के, कृत शाश्वत सब जिनमंदिर।।8।।

अचंलिका

भगवन्! चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनकी आलोचन करने को, इच्छुक हूँ धर मन संतोष।।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्वलोक में, कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं त्रिभुवन के, चउविध सुर करें भक्ति से सेव।।
भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक सुर परिवार सहित।
दिव्यगंध सुम धूप चूर्ण से, दिव्य न्हवन करते नित प्रति।।
अर्चें पूजें वंदन करते, नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं, पूजूँ वंदूं नमूँ सतत।।
दुक्खों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे बोधिलाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपत होवे।।

।।इति मण्डपांतः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं.-1

णमोकार महामंत्र पूजा

स्थापना

गीताछंद

अनुपम अनादि अनंत है, यह मंत्रराज महान है।
सब मंगलों में प्रथम मंगल, करत अघ की हान है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुओं की वंदना।
इस शब्दमय परब्रह्म को, थापूँ करूँ नित अर्चना।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमस्कारमंत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

महातीर्थ गंगा नदी नीर लाऊँ।
महामंत्र की नित्य पूजा रचाऊँ।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादि चंदन महागंध लाके।
परं शब्द ब्रह्मा की पूजा रचाके।।णमोकार.।।2।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय संसारतापविनाशनय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयः सिन्धु के फेन सम अक्षतों को।
लिया थाल में पुंज से पूजने को।।णमोकार.।।3।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय अक्षपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही कुंद अरविन्द मंदारमाला।
चढ़ाऊँ तुम्हें काम को मार डाला।।णमोकार.।।4।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लड्डू इमर्ती बनाऊँ।
तुम्हें पूजते भूख व्याधी नाशऊँ।।णमोकार.।।5।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखादीप की ज्योति विस्तारती है।
महामोह अंधेर मंहारती है।।णमोकार.।।6।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध बढ़े धूप खेते अगिन में।
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।।णमोकार.।।7।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनानास अंगूर अमरूद लाया।
महामोक्ष संपत्ति हेतु चढ़ाया।।णमोकार.।।8।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदि मिला अर्घ लाया।
महामंत्र नवकार को मैं चढ़ाया।।णमोकार.।।9।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधिनपंचनमस्कारमंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांती धारा मैं करूँ, तिहुँजग शांती हेत।
भव भव आतप शांत हो, पूजूं भक्तिसमेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका पुष्प ले, पूजूँ मंत्र महान्।
पुष्पांजलि से पूजते, सकल सौख्य वरदान।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

सोरठा

पंचपरम गुरुदेव, नमूँ नमूँ नत शीश मैं।
करे अमंगल छेव, गाऊँ तुम गुणमालिका।।

चाल-हे दीपबंधु....

जैवंत महामंत्र मूर्तिमंत्र धरा में।
जैवंत परमब्रह्म शब्दब्रह्म धरा में।।
जैवंत सर्व मंगलों में मंगलीक हो।
जैवंत सर्वलोक में, तुम सर्वश्रेष्ठ हो।।1।।

त्रैलोक्य में हो एक तुम्ही शरण हमारे।
माँ शारदा भी नित्य ही तुम कीर्ति उचारे।।
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से।
सम्पूर्ण उपद्रव नशें हैं तुम प्रताप से।।2।।

छ्याली सुगुण को धरें अरिहंत जिनेशा।
सब दोष अठारह से रहित त्रिजग महेशा।।
ये घातिया को घात के परमात्म हुए।
सर्वज्ञ वीतराग औ निर्दोष गुरु हुए।।3।।

जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं।
वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं।।
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनंता।
सर्वार्थ सिद्धि देत हैं वे सिद्ध महन्ता।।4।।

छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे।
चउ संघ के नायक हमें भव सिन्धु से तारें।।
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते।
भव्यों को मोक्ष मार्ग को उपदेश सुनाते।।5।।

जो साधु अट्ठाईस मूलगुण को धारते।
वे आत्म साधना से साधु नाम धारते।।
ये पंचपरमदेव भूत काल में हुए।
होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये।।6।।

होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनंते।
ये तीन लोक तीन कालके हैं अनंते।।
इन सब अनंतानंत की मैं वंदना करूँ।
शिवपथ के विघ्न पर्वतों की खंडना करूँ।।7।।

इस ओर तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊँ।
इक ओर महामंत्र अक्षरों को धराऊँ।।
इस मंत्र के पलड़े को उठा ना सके कोई।
महिमा अनंत यह धरे ना इस सदृश कोई।।8।।

इस मंत्र के प्रभाव श्वान देव हो गया।
इस मंत्र से अनंत का उद्धार हो गया।।
इस मंत्र की महिमा को कोई गा नहीं सके।
इसमें अनंत शक्ति पार पा नहीं सकें।।9।।

पाँचों पदों से युक्त मंत्र सारभूत है।
पैंतीस अक्षरों से मंत्र परमपूत है।।
नितप्रति जो महामंत्र की आराधना करें।
वे मुक्ति वल्लभापति निज कामना करें।।10।।

दोहा

यह विष को अमृत करे, भव भव पाप विदूर।
पूर्ण 'ज्ञानमती' हेतु मैं जजूँ भरो सुख पूर।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनपंचनमसकारमंत्राय जलमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

सोरठा

मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत हैं।
जो पूजें रुचि धार, स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें।।12।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-2

श्री आदिनाथ पूजा

स्थापना– गीता छंद

हे आदिब्रह्मा! युगपुरुष! पुरुदेव! युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती, के विधाता हो तुम्हीं।
मैं आपका आह्वान करता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –चाल –नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनु सम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति,जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्ट द्रव्य का थाल, अर्घ्य सम चढ़ाऊँ मैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' हेतु, तुम गुण गाऊँ मैं।।

श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(मण्डल पर पाँच अर्घ्य)

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ही धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।

नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

–शंभु छंद –

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंग शेखर छंद–

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।

जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।1।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।2।।

सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।3।।

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,

अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।4।।

–दोहा –

नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
''ज्ञानमती''सुख शांति दे करो भवांबुधि पार।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-3

त्रैलोक्य जिनालय पूजा

स्थापना

–नरेन्द्र छंद–

त्रिभुवन के जिनमंदिर शाश्वत, आठ कोटि सुखराशी।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चार शतक इक्यासी।।
प्रति जिनगृह में मणिमय प्रतिमा इक सौ आठ विराजें।
आह्वानन कर जजूँ यहाँ मैं जन्म मरण दुःख भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक-स्त्रग्विणी छंद –

स्वर्ग गंगानदी नीर झारी भरूँ।
नाथ के पाद में तीन धारा करूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चंदन घिसाके कटोरी भरूँ।
नाथ पादाब्ज अर्चूं सभी दुःख हरूँ।।सर्व.।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत तंदुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं।
नाथ के अग्र में पुंज सुख हेतु हैं।।सर्व.।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद बेला सुगंधित कुसुम ले लिये।
नाथ पादाब्ज में आज अर्पण किये।।सर्व.।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर बरफी अंदरसा पुआ लायके।
नाथ के सामने चरु चढ़ाऊँ अबे।।सर्व.।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योती लिये आरती मैं करूँ।
मोह हर ज्ञान की भारती मैं भरूँ।।सर्व.।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ अबे धूपघट में जले।
कर्म निर्मूल हो देहकांती मिले।।सर्व.।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर केला चढ़ाऊँ भले।
मोक्ष की आश सह सर्व वाछित फले।।सर्व.।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम ले लिये।
नाथ को अर्पहूँ रत्नत्रय के लिये।।सर्व.।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

श्रीजिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्मसाम्राज्य, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुखसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

जय त्रिभुवन के जिनभवन, जिनप्रतिमा जिनसूर्य।
नमूँ अनंतों बार मैं भव्य कमलिनी सूर्य।।1।।

–शंभु छंद–

जय अधोलोक के जिनगृह सात करोड़ बहत्तर लाख नमूँ।
जय मध्यलोक के चार शतक अट्ठावन जिनगृह नित्य नमूँ।।
जय व्यंतरसुर ज्योतिष सुर के जिनगेह असंख्याते प्रणमूँ।
जय ऊरध के चौरासि लाख सत्यानवे सहस तेईस नमूँ।।1।।

कोट्यष्ट सुछप्पन लाख सत्यानवे सहस चार सौ इक्यासी।
जिनधाम अकृत्रिम नमूँ नमूँ ये कल्पवृक्षसम सुख राशी।।
नव सौ पचीस कोटी त्रेपन्न लाख सत्ताइस सहस तथा।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा मैं नमूँ हरो भवव्याधि व्यथा।।2।।

जिनमंदिर लंबे सौ योजन पचहत्तर तुंग विस्तृत पचास।
उत्कृष्ट प्रमाण कहा श्रुत में मध्यम लंबे योजन पचास।।
चौड़े पचीस ऊँचे साढ़ेसैंतिस जघन्य लंबे पचीस।
चौड़े साढ़े बारह योजन ऊँचे योजन पौने उनीस।।3।।

मेरू में भद्रसाल नंदनवन के वर द्वीप नंदीश्वर के।
उत्कृष्ट जिनालय मुनि कहते मैं नमूँ नमूँ अंजलि करके।।
सौमनस रुचकगिरि कुंडलगिरि वक्षार कुलाचल के मंदिर।
मनुजोत्तर इष्वाकार अचल मध्यम प्रमाण के जिनमंदिर।।4।।

पांडुकवन के जिनगृह जघन्य मैं नमूँ नमूँ शिरनत करके।
रजताचल जंबू शाल्मलि तरू इनके मंदिर सबसे छोटे।।
ये एक कोस लंबे आधे चौड़े पोने कोस ऊँचे हैं।
सर्वत्र लघू जिनमंदिर का परिणाम यही मुनि गाते हैं।।5।।

जिनगृह को बेढ़े तीन कोट चहुँदिश में गोपुर द्वार कहें।
प्रतिवीथी मानस्तंभ बने प्रतिवीथी नव नव स्तूप कहें।।
मणिकोट प्रथम के अंतराल वन भूमि लतायें मनहरतीं।
परकोट द्वितिय के अंतराल दशविधी ध्वजायें फरहरतीं।।6।।

परकोट तृतिय के बीच चैत्यभूमी अतिशायि शोभती है।
सिद्धार्थवृक्ष अरु चैत्यवृक्ष्ज्ञ बिंबों के चित्त मोहती है।।
प्रतिमंदिर मध्य गर्भगृह इकसौ आठआठ अतिसुंदर हैं।
इन गर्भगृह में सिंहासन पर जिनवरबिंब मनोहर हैं।।7।।

ये बिंब पांचसौ धनुष तुंग पद्मासन राजें मणिमय हैं।
बत्तीस युगल यक्ष दोनों बाजू में चंवर ढुराते हैं।।
जिन प्रतिमा निकट श्रीदेवी श्रुतदेवी की मूर्ती शोभें।
सानत्कुमार सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति भव्य जनमन लोभें।।8।।

प्रत्येक बिंब के पास सुमंगल द्रव्य एक सौ आठ आठ।
भृंगार कलश दर्पण चामर ध्वज छत्र व्यजन अरू सुप्रतिष्ठ।।
श्रीमंडप आगे स्वर्ण कलश शोभें बहु धूप घड़े सोहें।
मणिमय सुवर्णमय मालायें चारण ऋषि का भी मन मोहें।।9।।

मुखमंडप प्रेक्षामंडप अरू वंदन अभिषेक मंडपादी।
क्रीड़ा नर्तन संगीत गुणनगृह चित्रभवन विस्तृत अनादि।।

बहुविध रचना इन मंदिर में गणधर भी नहिं कह सकते हैं।
मां सरस्वती नित गुण गाये मुनिगण अतृप्त ही रहते हैं।।10।।

मैं नित्य जिनालय को वंदूँ नित शीश झुकांऊ गुण गाऊँ।
जिनप्रतिमा के पद कमलों में बहुबार नमूँ नित शिर नाऊँ।।
प्रत्यक्षदर्श मिल जाय प्रभो! इसलिये परोक्ष करूँ वंदन।
जिन ज्ञानमती ज्योति प्रगटे इस हेतु करूँ शत-शत वंदन।।11।।

–दोहा–

चिंतामणि जिनमूर्तियां, चिंतित फल दातार।
चिच्चैतन्य जिनेन्द्र को, नमूँ नमूँ शत बार।।12।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधिअष्टकोटिषट्पंचाशतलक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-4

भवन वासी जिनालय पूजा

अथ स्थापना-अडिल्ल छंद

भवनवासि देवों के गृह में जानिये।
सात करोड़ बहत्तर लाख प्रमाणिये।।
ये शाश्वत जिनभवन बने हैं मणिमयी।
आह्वानन कर पूजूँ पाऊँ शिवमही।।1।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चामर छंद –

क्षीरसिंधु के समान स्वच्छ नीर लाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद में चढ़ाय ताप नाशिये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि गंध लेय पात्र में भराइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद में समर्च सौख्य पाइये।।भवन.।।2।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरफेन के समान श्वेत शालि लाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद अग्र पुंज को रचाइये।।भवन.।।3।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब पुष्प केतकी मंगाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद के चढ़ाय सौख्य पाइये।।भवन.।।4।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप सेमई सुवर्ण पात्र में लिये।
श्रीजिनेन्द्र को चढ़ाऊं पूर्ण तृप्ति के लिये।।भवन.।।5।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में कपूर को जलाय लीजिये।
श्रीजिनेन्द्र के समक्ष आरती उतारिये।।भवन.।।6।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध से सुगंध धूप अग्निसंग खेइये।
कर्म को जलाय के अपूर्व सौख्य लेइये।।भवन.।।7।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम संतरा बदाम द्राक्ष थाल में भरें।
श्रीजिनेन्द्र को चढ़ाय आत्म सौख्य को भरें।।भवन.।।8।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध शालि पुष्प आदि अष्ट द्रव्य ले।
अर्घ को चढ़ाय के अपूर्व सौख्य हो भले।।भवन.।।9।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिन पद धार करंत।
तिहुंजग में हो शांतिसुख, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्म सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

शाश्वत श्रीजिनवर भवन, श्रीजिनबिंब महान्।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले धर्म शुचि ध्यान।।1।।

(चाल-हे दीनबंधु....)

जैवंत भवनवासि के शाश्वत जिनालय।
जैवंत सातकोटि बाहत्तर जिनालय।।
चौंसठ सुलाख भवन असुर कुमरदेव के।
चौरासि लाख भवन कहे नागकुमार के।।2।।

सुपर्णसुर के लाख बाहत्तर भवन कहे।
सुर द्वीपकुमर के छियत्र[1] लाख गृह रहें।।
उदधी स्तनित विद्युत[2] दिक् अग्निकुमर के।
बस लाख छियत्तर भवन हैं इन प्रत्येक के।।3।।

वायुकुमार के भवन हैं लाख छयानवे।
सब सातकोटि बाहत्तर सुलक्ष जानवे।।
दशभेद भवनवासि के प्रत्येक भवन में।
जय जय जिनेन्द्र गेह राजते सुमध्य में।।4।।

इस रत्नप्रभा भूमि के सुतीन भाग हैं।
खरभाग पंकभाग में भावन के भवन हैं।।
सुर नागकुमारादि नव प्रकार प्रथम में।
रहते असुरकुमार देव पंकभाग में।।5।।

इनके भवन भवनपुरा आवास त्रय कहे।
किनही सुरों के त्रयप्रकार के स्थल रहें।।
ये असुरकुमार मात्र भवन में हि रहे हैं।
इन सबके भवन समसुचतुष्कोण कहे हैं।।6।।

ऊँचाई तीनशतक योजनों सुभवन की।
संख्यात व असंख्य योजनों कि विस्तृती।।
योजन सुएक शतक तुंग महाकूट हैं।
ये रत्नमयी कूट वेदियों के बीच है।।7।।

इनकूट उपरि श्रीजिनेन्द्रभवन रत्न के।
सब तीन कोट चार गोपुरों से युक्त ये।।
प्रत्येक वीथियों में मानतंभ शोभते।
नौ नौ स्तूप 'बिंबसहित चित्त मोहते।।8।।

परकोट अंतराल में त्रय भूमियां कहीं।
वन भूमि ध्वजाभूमि चैत्यभूमि सुखमही।
मंदिर में वंदनाभवन अभिषेकमंडपा।
नर्तन भवन संगीतभवन प्रेक्षमंडपा।।9।।

स्वाध्याय भवन चित्र मंडपादि बने हैं।
जिनमंदिरों में देवछंद रम्य घने हैं।।
प्रत्येक जिनालय में इकसौ आठ बिंब हैं।
पद्मासनों से राहते जिनेश बिंब हैं।।10।।

प्रतिमा के उभय श्रीदेवि श्रुतदेवि मूर्ति हैं।
सर्वाण्ह यक्ष सनत्कुमार यक्ष मूर्ति हैं।।
भृंगार कलश चामरादि अष्ट मंगली।
प्रत्येक इकसौ आठ-आठ शोभते भली।।11।।

प्रत्येक बिंब दोय तरफ ढोरते चंवर।
हैं नागयक्ष मूर्तियां जो सर्व चित्तहार।।

सद्दृष्टि देव भक्ति भरें पूजते सदा।
मिथ्यादृशी कुलदेव मान वंदते मुदा।।12।।

वीणा मृदंग दुंदुभी बहुवाद्य बजाके।
स्तोत्र पढ़ें नृत्य करें भक्ति बढ़ाके।।
जल गंध अष्ट द्रव्य लिये अर्चना करें।
जीवन सफल करें जिनेन्द्र वंदना करें।।13।।

जय जय जिनेन्द्र बिंब की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण कर्म शत्रु की मैं खंडना करूँ।।
जिनभक्ति के प्रसाद से संसार से तिरूँ।।
जिन ज्ञानमती पूर्ण हो भव वन में ना फिरूँ।।14।।

–घत्ता–

जय जय जिनप्रतिमा, अद्भुत महिमा, भवनवासि के जिनगेहा।
जय मुक्तिरमा घर वंदत सुरनर, मैं पूजूं नित धर नेहा।।15।।

ॐ ह्रा भवनवासिदेवभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद-

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-5

असुरकुमार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

भवनवासि के दश भेदों में, असुरकुमार प्रथम हैं।
इकने चौंसठ लाख भवन, उन बीचहिं कूट उतुंग हैं।।
कूटों ऊपर शाश्वत स्वर्णिम, जिनमंदिर अभिरामा।
आह्वानन कर पूजूँ नितप्रति, शीघ्र मिले शिवरामा।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-वसंततिलका छंद

गंगानदी जलभरा शुचि स्वर्ण झारी।
पादारविंद प्रभु के त्रय धार देऊँ।।
जैनेन्द्रधाम भवनासुर के घरों में।
पूजूँ सदा अतुलभक्ति धरूँ हृदय में।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर केशर घिसा भरके कटोरी।
जैनेंद्रपाद युग में चर्चूं रुची से।।जैनेंद्र.।।2।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोती समान सित अक्षत धोय लाय।
पादाब्ज के निकट पुंज चढ़ाय देऊँ।।जैनेंद्र.।।3।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

चंपा जुही सुरभि पुष्प गुलाब के हैं।
अर्पूं जिनेंद्र चरणों यश गंध फैले।।जैनेंद्र.।।4।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरी सोहाल बरफी पकवान लाडूँ।
जैनेंद्रदेव सनमुख अर्पण करूँ मैं।।जैनेंद्र.।।5।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती तम नाशती है।
मैं आरती करत ही निज ज्योति पाऊँ।।जैनेंद्र.।।6।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वरधूप जिनेंद्र आगे।
हो कम भस्म फिर धूयें साथ भागे।।जैनेंद्र.।।7।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर आम फल श्रीफल मैं चढ़ाऊँ।
सर्वार्थसिद्धि मिल जाय अतः रिझाऊँ।।जैनेंद्र.।।8।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरादि अर्घ सुम चांदी के मिलाये।
होवे अनर्घपद प्राप्त तुम्हें चढ़ायें।।जैनेंद्र.।।9।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्रीजिनवर पद पद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुख लाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

असुरदेव के भवन में, शाश्वत जिनवरधाम।
पुष्पांजलि अर्पूं यहाँ, मिले स्वात्म विश्राम।।1।।

इति मंडलस्योपरि भवनवासिस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद–

रत्नप्रभा के पंकभाग में, असुरकुमार भवन हैं।
इनमें चमर और वैरोचन, ये दो इंद्र सुमन[1] हैं।।
चौंतिस लाख भवन हैं पहले, चमर इंद्र के सुंदर।
इनके मध्य जिनालय वंदूँ, मिले शीघ्र शिवसुंदर।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पंकभागे चरमरेन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्षजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वैरोचन के तीस लाख हैं, भवन शाश्वते शोभें।
इनके बीच जिनालय अनुपम, भक्ती से सुर पूजें।।
सवपर भेद विज्ञान हेतु मैं, जिनमंदिर को पूजूँ।
भव भव में जिनभक्ति मिले मुझ, पुनर्जन्म से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पंकभागे वैरोचनेन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्षजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घं-दोहा–

असुरकुमारों के यहाँ, जिनगृह चौंसठ लाख।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ नतमाथ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पंकभागे असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टि-लक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उनहत्तर कोटि तथा, बाहर लाख प्रमाण।
इनके सब जिनबिंब को, पूजूँ करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पंकभागे असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टि-लक्षजिनालयस्थएकोनसप्ततिकोटिद्वादशलक्षजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–नरेन्द्र छंद–

असुरकुमार भवनवासी का, चैत्यवृक्ष पीपल है।
एक कोस जड़ तना मध्य का, तुंग एक योजन है।।
चार चार योजन की लंबी, शाखायें लहरायें।
पूर्वदिशा के मूलभाग जिनबिंब पांच हम ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिक्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दिव्यवृक्ष के मरकतमणिमय, पत्ते बहुत घने हैं।
पुष्प सुगंधित रत्नमयी हैं, अंकुर बहुत घने हैं।।
छत्र चंवर घंटा ध्वज से युत, दक्षिण दिश जिन प्रतिमा।
इन पाँचों प्रतिमा को पूजूँ, पंचम गति हो सुषमा।।2।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आदि अंत से रहित अकृत्रिम, पृथिवीकायिक तरु हैं।
पश्चिम दिश में पद्मासन युत, पाँच बिंब मनहर हैं।।
आठ महा मंगल द्रव्यों युत, प्रातिहार्ययुत प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से, पाऊँ सौख्य अनुपमा।।3।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तोरणद्वार ध्वजा मंगलघट, धूपघटों की शोभा।
पद्मासन जिनप्रतिमा शाश्वत, सुरगण का मन लोभा।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नितप्रति, रोग शोक दुख नाशें।
परमानंद सुधारसमय नित, आतमज्योति प्रकाशें।।4।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मानस्तंभ सभी प्रतिमा के, आगे इक इक सुंदर।
चारों दिश में सात-सात, जिनप्रतिमा जजें पुरंदर।।
इन बीसों मानस्तंभों में, मणिमय जिनवर प्रतिमा।
नित प्रति अर्घ चढ़ाकर पूजूँ, नमूँ नमूँ नहिं उपमा।।5।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षचतुर्दिग्विंशतिजिनप्रतिमा–प्रत्येक-सन्मुख विंशतिमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-नरेन्द्र छंद–

चैत्यवृक्ष के चारों दिश में, बीस जिनेश्वर प्रतिमा।
मानस्तंभ बीस जिन आगे, रत्नों की जिनप्रतिमा।।
इक इक मानस्तंभों में, जिनबिंब अठाइस वर्णें।
सर्व पांचसौ साठ बिंब को, पूजत शिवतिय परणें।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितअश्वत्थचैत्यवृक्षचतुर्दिग्राजमानविंशतिजिन-प्रतिमाप्रत्येक सन्मुखविंशतिमानस्तंभविराजमान-सर्वपंचशतषष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–दोहा–

चिच्चिंतामणिरत्न हैं, शाश्वत जिनवरबिंब।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल जग डिंभ।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

असुरकुमारों के मुकुटों में, चूड़ामणि शुभ सोहे।
कृष्णवर्ण तनु नानाविध विक्रिय से जन मन मोहे।।
धनु पच्चीस देह ऊँचा है, आयू इक सागर की।
जघन्य आयू दशहजार, वर्षों किनही असुरों की।।2।।

नहिं नख केश देव के होते, दाढ़ी मूँछ न होवें।
अविधज्ञान इन नरक तीसरे, उपरि मेरुवत होवे।।
चमर और वैरोचन इनमें, इंद्र विभवशाली हैं।
इनके दशविध परिकर सुर हैं, बहुविध गुणशाली हैं।।3।।

एक इंद्र का इक प्रतीन्द्र है, त्रायस्त्रिंश तेतिस ही।
सामानिक चौंसठ हजार हैं, लोपाल सुर उर ही।।
आत्मरक्ष सुर दोय लाख, छप्पन हज्जार कहे हैं।
अंतः परिषद सहस अठाइस, मध्यम तीस सहस हैं।।4।।

बाहिर परिषद सहस बतीसे, अनीक सात तरह हैं।
पांचकोटि अड़सठ सुलाख ये, छयानवे सहस सभी हैं।।
देव प्रकीर्णक आभियोग्य अरु, सुर किल्विषिक असंख्ये।।
चमर इंद्र के ये परिकर सुर, नानाविध सुख लभ्ये।।5।।

इनकी पाँच देवियाँ मुख्या, छप्पन सहसहिं देवी।
वैरोचन सुरपति का इससे, कुछ कम वैभव ये ही।।
असुरकुमार भवन में चौंसठ, लाख जिनालय संदर।
उनकी पूजा वंदन करते, बांधे पुण्य निरंतर।।6।।

कोई कोई कलह वैरप्रिय, असुरकुमार कहाये।
अंबावरीष जाती के ही, नरकधरा में जायें।।
पूर्व वैर स्मरण दिलाकर, लड़ाभिड़ा सुख पाते।
नारकियों के दुःख देख, हर्षित हो पाप कमाते।।7।।

जो मिथ्यात्व सहित तप तपते, बिन समाधि से मरते।

जिनवर मुनिवर श्रुत प्रतिपक्षी, सदोष चारित धरते।।
ऐसे नर इन असुरगती मैं, जन्म धारते सुख से।
अड़तालिस मिनटों में अंदर, नवयौवन तनु धरते।।8।।

इसके नंतर जातिस्मृति, या धर्मोपदेश सुनकर।
जिनमहिमा अवलोकें या, देवों की रिद्धि निरखकर।।
बहुत देव सम्यग्दृष्टि बन, भव अनंत को नाशें।
जिनवर भक्ति करें अतिशायी, करें मोक्ष को पासे।।9।।

मिथ्यादृष्टी सुर भि वहाँ पर, जिनमंदिर में जाते।
जिनप्रमिता को वंदें पूजें, बहुविध पाप नशाते।।
जय जय अकृत्रिम जिनमंदिर, जय जय जिनवर प्रतिमा।
जय जय मंगलमय लोकोत्तम, शरणभूत जिनप्रतिमा।।10।।

–घत्ता–

जय जय श्रीजिनवर, पद्मासनधर, जय जय नासादृष्टि धरें।
जय सौम्य छवी तुम, पूजें त्रिभुवन, 'ज्ञानमती' सुखशांति भरें।।11।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चौबोल छंद

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-6

नागकुमारदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

नागकुमारदेव के शाश्वत, भवन चुरासीलाख कहे।
रत्नप्रभा पृथिवी खर भागे, भवन मध्य जिनधाम रहें।।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, आह्वानन कर भक्ति से।
निज शाश्वत अनुपमपद पाऊँ, जिनवर पद अनुरक्ती से।।1।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-सोरठा

सीतानदि को नीर, जिनपद में धारा करूँ।
पाऊँ भवदधि तीर, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

केशर गंध सुगंध, जिनपद पंकज चर्चंते।
फैले सुयश सुगंध, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शाली धौत अखंड, सन्मुख पुंज रचावते।
मिले सौख्य अखंड, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

चंपक हरसिंगार, सुरभित पुष्प चढ़ावते।
मिले निधी भण्डार, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, जिन सन्मुख अर्पण करूँ।
क्षुधा व्याधि हो दूर, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपक ज्योति जलंत, जिनवर की आरति करूँ।
मोह ध्वांत नाशंत, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप सुगंध अमंद, अग्निपात्र में खेवते।
मिले स्वात्म आनंद, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

जामुन आम अनार, सरस मधुर फल अर्पिहूँ।
मिले आत्म निधि सार, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंधादि मिलाय, अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से।
धन संपति अधिकाय, शाश्वत जिनमंदिर जजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निज संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

नागकुमारों के यहाँ, दोय इंद्र अभिराम।
पुष्पांजलि कर जिननिलय, पूजूँ करूँ प्रणाम।।

इति मंडलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–सखीछंद–

सुरभूतानंद अधिप के, चौवालिस लाख भवन हैं।
उन सबमें हैं जिनमंदिर, मैं पूजूँ विश्व हितंकर।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे भूतानंदेन्द्रस्य चतुश्चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुर धरणानन्द अधिप हैं, इन चालिस लाख भवन हैं।
उन सबमें हैं जिनमंदिर, मैं पूजूँ विश्व हितंकर।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे धरणानंदेन्द्रस्य चतुश्चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-दोहा–

नागकुमारों के यहाँ, भवन चुरासी लाख।
तिनके सब जिनधाम को, जजत नमाऊँ माथ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे नागकुमारदेवभवनस्थितचतुर–शीतिलक्षजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रतिमा नब्बे कोटि हैं, तथा बहत्तर लाख।
नमूँ नमूँ प्रतिजिनभवन, प्रतिमा इक सौ आठ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे नागकुमारदेवभवनस्थित–चतुरशीतिलक्ष-जिनालयविराजमाननवतिकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–सोरठा–

ओलगशाला अग्र, नागदेव के चैत्यरू।
जिनप्रतिमा चहुँदिश्य, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।

इति मंडलस्योपरि नागकुमारभवनस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

नागकुमारन देव का, 'सप्तपर्ण' तरु चैत्य।
पूरबदिश में नित जजूँ, पाँच जिनेश्वर चैत्य।।1।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष दक्षिण दिशी, पाँच जिनेश्वर मूर्ति।
पद्मासन के राजतीं, नमते ही सुख पूर्ति।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिण–दिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सप्तवर्ण तरु पश्चिमे, पाँच जिनेश्वर बिंब।
अष्ट द्रव्य मंगल धरें, जजत हरूँ जगडिम्भ।।3।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराज–मानपंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष उत्तर दिशी, जिनवर बिंब अनूप।
पूजत ही सुख संपदा, मिले स्वात्म चिद्रूप।।4।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सब जिनप्रतिमा सामने, इक इक मानस्तंभ।
इन सब मानस्तंभ को, जजत नशें सब दंभ।।5।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितसप्तपर्णचैत्यवृक्षचतुर्दिग्विंशतिजिन-प्रतिमासन्मुखस्थिविंशतिमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

चैत्यवृक्ष के बीस जिन, बिंब जजूँ त्रयकाल।
मानस्तंभ के पाँचसौ, साठ बिंब जगपाल।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचैत्यवृक्षविंशतिजिनबिम्बतत्सन्मुखविंशतिमान-स्तम्भसम्बन्धिपंचशतषष्टिजिनप्रतिमाभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–सोरठा–

भवन चुरासी लाख, नागकुमारों के कहे।
नमूँ नमूँ नत माथ, सर्व अकृत्रिम जिनभवन।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व जिनधाम को।
पाप संताप मेरा सबै शांत हो।।
पद्म आसन धरें मूर्तियाँ शोभतीं।
भव्य के चित्त को सौम्यछवि मोहती।।2।।

नागकूमार में इंद्र प्रातीन्द्र हैं।
त्रायत्रिंशत् सुसामानिके देव हैं।।
लोकपालक तनूरक्ष त्रैपारिषद।
सात सेना प्रकीर्णक व अभियोग्य सब।।3।।

किल्विषिक भेद ये इंद्र के दश कहे।
दो अधिप श्रेष्ठ वैभव धरें सुख लहें।।
इन भवनवासि में जन्म समकित बिना।
पुण्य मिथ्यात्व युत भी फले हैं घना।।4।।

भूमि दीवाल भी रत्न मणियों जड़े।
वस्त्र आभूषणादी चमकते बड़े।।
अष्ट विध ऋद्धियाँ विक्रिया सौख्य है।
किन्तु समकित बिना दूर ही मोक्ष है।।5।।

नागसुर मुकुट में सर्प का चिन्ह है।
वर्ण श्यामल दिपे कांति से पूर्ण है।।
भूमि खरभाग में भवन नागेन्द्र के।
द्वीप सागर में हैं भवनपुर नाग के।।6।।

नग नदी वृक्ष आदी पे आवास हैं।
ये विहरते सदा क्रीड़नासक्त हैं।।
जन्मते ही अविधज्ञान को पावते।
जैनमंदिर पहुँच शीश को नावते।।7।।

भक्ति वंदन करें अर्चना भी करें।
कोई कोई वहाँ रत्न समकित धरें।।
नागसुर के जिनालय नमूँ भाव से।
नाथ! सम्यक्त्व मेरा कभी न छूटे।।8।।

इन भवनवासियों में जनम ना धरूँ।
मोह मिथ्यात्व के फंद में ना परूँ।।
नाथ! ऐसी कृपा कीजिये दास पे।
'ज्ञानमती' हो न अज्ञानमति फिर अबे।।9।।

---

1. असुरकुमार के अतिरिक्त किन्हीं–किन्हीं के भवन, भवनपुर और आवास ये तीनों निवास स्थान हैं। त्रिलोकसार गा. 297।

–दोहा–

धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिनपूजन में प्रीति।
मोक्षमार्ग की रीति यह, फले स्वात्म नवनीत।।10।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-7

सुपर्णकुमारदेव जिनालय पूजा

–अथ स्थापना-दोहा–

देव सुपर्णकुमार के, भवन बहत्तर लाख।
सबमें जिनमंदिर जजूँ, आह्वानन कर आज।।1।।

प्रति जिनगृह जिनमूर्तियां, रहें एक सौ आठ।
इन सबकी पूजा करूँ, मिले सर्व सुख ठाठ।।2।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-द्रुतविलंबित छंद–

नहिं बुझी तिसना प्रभु नीर से।
इसलिये जल से पद पूजहूँ।।
सुर सुपर्ण कुमारन के सभी।
नित जजूँ जिनमंदिर भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

नहिं हुआ मन शीतल आज तक।
सुरभि गंध चढ़ाय जजूँ अतः।।सुर.।।2।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धवल अक्षत पुंज चढ़ावते।
मुझ अखंडित सौख्य मिले प्रभो।।सुर.।।3।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

भवजयी तुम हो अतएव मैं।
सुरभि पुष्प पदांबुज में धरूं।।सुर.।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

नहिं बुझी उदराग्नि प्रभो! कभी।
इसलिये चरु से तुमको जजूँ।।सुर.।।5।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हृदय में निजज्योति जगावने।
घृत सुदीपक से आरति करूँ।।सुर.।।6।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरभि धूप जलावत अग्नि में।
करम भस्म करूँ निज के सभी।।सुर.।।7।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सरस आम अनार चढ़ायके।
मधुर मोक्ष महा फल मांगहूँ।।सुर.।।8।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

रजत पुष्प मिलाय सुअर्घ में।
अतुल भक्ति लिये अर्चन करू।।सुर.।।9।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्रीजिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
पदमानंद सुखलाभ, मिले सर्व निज संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलि।।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

रत्न प्रभा खरभाग में, रहें सुपर्णकुमार।
उनके घर में जिनभवन, जजूँ सर्व सुखकार।।1।।

इति मंडलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–सखीछंद–

सुपर्णकुमार सुरन में, दो इंद्र बखाने उनमें।
वेणु इंद्र के अड़तिस लाखा, जिनगेह जजूँ नत माथा।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वेणुइन्द्रस्य अष्टत्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अधिपति वेणूधारी के, चौंतीस लाख भवनों के।
जिनमंदिर जजूँ सनेहा, मैं शीघ्र बनूँ गतदेहा।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वेणुधारिइन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-दोहा–

देव सुवर्णकुमार के, भवन बहत्तर लाख।
तिन सबके जिनभवन को, जजूँ जोड़ जुगहाथ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वा-सप्ततिलक्ष-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि सतत्तर पुनरपी, लाख छियत्तर मान।
जिन प्रतिमा इन भवन में, नमत मिले निजस्थान।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वा-सप्ततिलक्षजिनालयविराजमानसप्तसप्ततिकोटिषट्सप्ततिलक्षजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–दोहा–

ओलगशाला[1] सामने, शाल्मलि चैत्य सुवृक्ष।
देव सुपर्णकुमार के, कुल का चिन्ह प्रतक्ष।।1।।

इति मंडलस्योपरि सुपर्णकुमारभवनस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–रोला छंद–

शाल्मलि तरु दिशि पूर्व, पाँच जिनेश्वर प्रतिमा।
मणिमय दिपें अपूर्व, पूजत सौख्य अनुपमा।।
स्वात्म सुधारस हेतु, इनको अर्घ चढ़ाऊँ।
जिनवर भवदधिसेतु, वंदत भ्रमण नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यतरु दक्षीण[2], जिनवर बिंब विराजें।
करूँ प्रदिक्षण तीन, कर्म शत्रु दल भाजें।।स्वात्म.।।2।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिण–दिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

---

1. इन देवों के भवन में एक ओलगशाला स्थानविशेष है।
2. दक्षिण दिशा में।

शाल्मलि तरु पश्चीम[1], पाँच जिनेश्वर प्रतिमा।
वंदत साधु गणीन्द्र, इनकी अद्भुत महिमा।।स्वात्म.।।3।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिश जिनबिंब, चैत्यतरु में सोहें।
नमत नशे जगफंद, पूजत सब सुख होहे।।स्वात्म.।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इक इक मानस्तंभ, प्रतिजिन प्रतिमा आगे।
नमत नशे सब दंभ, रिद्धि दौड़ती आगे।।स्वात्म.।।5।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितशाल्मलिचैत्यवृक्षचतुर्दिग्विंशतिजिनप्रतिमा-सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ–

चैत्यवृक्ष के बीस, जिनबिंबों को पूजूँ।
मानस्तंभ सुबीस, जजत जगत से छूटूँ।।
चउदिशि मानस्तंभ, सात सात जिनप्रतिमा।
जजूँ पाँच सौ साठ, जिनप्रतिमा अतिसुषमा।।1।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमातत्सन्मुख विंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशतषष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–दोहा–

सुपर्ण देवों के भवन, लाख बहत्तर मान्य।
उनके जिनगृह नमत ही, हो नवनिध धनधान्य।।1।।

---

1. पश्चिम दिशा में।

–भुजंगप्रयात छंद–

**जयो देवदेवा जयो जैनधामा।
जयो जैनप्रतिमा जयो चैत्यधामा।।
जयो शाश्वते रत्नमणि निर्मिते ये।
महामुक्ति लक्ष्मी स्वयंवर गृहा ये।।2।।**

**सुपर्णा सुरा पूजते भक्ति भावे।
उन्हों की रमा वाद्य वीणा बजावें।।
प्रभू गीत गावें सुपंचम स्वरों में।
करें देवियाँ नृत्य जिनवर गृहों में।।3।।**

**गरुड़ चिन्ह है मौलि में इन सुरों के।
तनू वर्ण श्यामल तथापी चमकते।।
ऊँचाई धनुष दश धरें मूल तनु में।
अनेकों धरें रूप विक्रिय करें वे।।4।।**

**दशों विध परीवार सुर हैं असंख्ये।
सदा पुण्य का फल लहें सौख्य संख्ये।।
सदा पंच कल्याण में आवते हैं।
महाद्वीप नंदीश्वरे जावते हैं।।5।।**

**स्वयं के अकृत्रिम जिनालय जिनों को।
नमें भक्ति से रत्न सम्यक्त्व लें वो।।
अनंते भवों के सभी पाप नाशें।
प्रभू की कृपा से स्वयं को विकासें।।6।।**

**जजूँ भक्ति से मैं सदा जैनगेहा।
मिले आत्मसंपत् धरूँ आप नेहा।।
सभी दुःख हों क्षीण सुगती गमन हो।
प्रभो! 'ज्ञानमति' पूर्ण हो शिव सुगम हो।।7।।**

–दोहा–

**जिनप्रतिमा चिंतामणी, चिंतित फल दातार।
त्रिभुवन के सुख देयके, करें मुक्ति भरतार।।8।।**

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

**जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।**

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-8

द्वीपकुमार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-अडिल्ल छंद

द्वीप कुमारन के घर में जिनगेह हैं।
लाख छियत्तर कहें जजूँ धरनेह हैं।।
मणिमय शाश्वत जिनप्रतिमा से शोभते।
आह्वानन कर पूजूँ सुर मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चामर छंद–

जन्म मृत्यु और जरा तीन दुःख देत हैं।
नीरसे त्रिधार देत मूल से नशंत हैं।।
द्वीपकुमार देव के सभी जिनालया जजूँ।
तीन रत्न पायके निजात्म आलया भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

दुःख दाव अग्नि से जला समस्त देह है।
पादपद्म गंध चर्च ताप शांत होय है।।द्वीप.।।2।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

खंड खंड हो गये प्रभो निजात्म सौख्य के।
मैं अखंड सौख्य हेतु पूजहूँ पुंज से।।द्वीप.।।3।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

आत्म गंध ना मिली अतः सुगंध पुष्प ले।
आप पाद में चढ़ाय गुण सुगंधि हो भले।।
द्वीपकुमार देव के सभी जिनालया जजूँ।
तीन रत्न पायके निजात्म आलया भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मोतिचूर लड्डुओं से थाल को भराय के।
भूख व्याधि नाश हेतु आप को चढ़ाय के।।द्वीप.।।5।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप की शिखा दिपे समस्त ध्वांत नाशती।
आप आरती करंत ज्ञान को प्रकाशती।।द्वीप.।।6।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप अग्नि में जले समस्त कर्म भस्म हों।
स्वात्म कीर्ति चार दिश उड़े दिगंत व्याप्त हो।।द्वीप.।।7।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव संतरा अनार आम थाल में भरें।
आप तो चढ़ाय के सुमोक्ष फल मिले भलें।।द्वीप.।।8।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंध तंदुलादि अर्घ को बनायके।
आपको समर्प्य मुक्ति अंगना रिझावते।।द्वीप.।।9।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुखलाभ, मिले सर्व निज संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलि।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

द्वीप कुमारन देव के, भवन छियत्तर लाख।
तिनक जिनगृह को जजूँ, पुष्पांजलि कर आज।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौपाई छंद–

पूर्ण इंद्र के चालीस लाख, जिनमंदिर आगम विख्यात।
पूजूँ भक्तिभाव से नित्य, तजूँ सर्व जन मोह अनित्य।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे पूर्णेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन्द्र वशिष्ठ के छत्तिस लाख, जिनमंदिर जिनबिंब सनाय।
पूजूँ भक्तिभाव से नित्य, तजूँ सर्व जन मोह अनित्य।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे विशिष्ठइन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

द्वीपकुमारन के यहाँ, दोय इंद्र गुणवान।
उनके सब जिनभवन को, जजत बनूँ धनवान।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्तति–लक्ष जिनालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि बियासी आठलख, जिनप्रतिमा अभिराम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त–तिलक्ष जिनालयविराजमानद्वयशीतिकोटिअष्टलक्षजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–दोहा–

द्वीपकुमारन कुलतरू, जामुन चैत्यसुवृक्ष।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जिनप्रतिमा गुणस्वच्छ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि द्वीपकुमारभवनस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–मोतीदाम छन्द–

सुचैत्य तरूवर जामुनवृक्ष, जजूँ पूरब जिनबिम्ब प्रतक्ष।
सुपांच जिनेश्वर बिंब महान् करें भवपंच परावृत हान।।1।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुदक्षिण में जिनबिंब सुपांच, सुजामुन वृक्ष अनादि अनंत।
करूं तिन अर्चन स्वात्म सुखाय, मिले शिव संपत् शीघ्रहि आय।।2।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनेश्वर बिंब तरुवर मूल, नमूँ सुख संपति हो अनुकूल।
भगें दुःख दारिद जो प्रतिकूल, मिले अति शीघ्र भवोदधि कूल।।3।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनेश्वररूप सुउत्तर दिश्य, दिये तरु चैत्य सभी जन प्रीत्य।
मिटे तनु रोग नशे सब शोक, जजें रुचि से जन लें शिव सौख्य।।4।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनेश्वर बिंबन के सन्मुख, दिपें मदथंभ हरें मद रूक्ष।
सुबीस जजूँ मन में रुचिधार, तरु भवसागर थाह अपार।।5।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षचतुर्दिग् विंशतिजिनप्रतिमासन्मुख-स्थितविंशतिमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-दोहा–

बीस जिनश्वरबिंब प्रति, बीसहिं मानस्तंभ।
उनमें प्रतिमा पांचसौ, साठ नमूँ हर द्वदं।।1।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितजम्बूचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुख-विंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशत्षष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–चाल-शेर–

जै जै जिनेन्द्र बिंब ये अनादि अनंता।
जै जै गणीन्द्र साधु वृंद वंद्य महंता।।
मैं भक्ति से जिनेन्द्र बिंब अर्चना करूँ।
मिथ्यात्व कर्म की निमूल खंडना करूँ।।1।।

जै चैत्यवृक्ष सर्व रत्नमयी बने हैं।
जै मानथंम मानियों का मान हने हैं।।मैं भक्ति.।।2।।

प्रत्येक जैनबिंब पास आठ द्रव्य हैं।
प्रत्येक इकसौ आठ-आठ मंगलीक हैं।।मैं भक्ति.।।3।।

प्रत्येक जैनबिंब उभय मूर्तियां बनीं हैं।
सर्वाण्ह सनत्कुमार यक्ष की हैं सोहनी।।मैं भक्ति.।।4।।

श्रीदेवि व श्रुतदेवी की मूर्ति वहाँ पे।
दर्शकजनों के चित्त का आनंद विकासें।।मैं भक्ति.।।5।।

सर्वत्र नागदेव चंवर ढोर रहे हैं।
सर्वत्र छत्र आदि प्रातिहार्य कहे हैं।।मैं भक्ति.।।6।।

मुनिगण मनुज परोक्ष में हि वंदना करें।
सुरगण वहाँ रहें प्रत्यक्ष अर्चना करें।।मैं भक्ति.।।7।।

ये धन्य दिवस आज मेरा धन्य जनम है।
जिनदेवदेव पूजने में चित्त मगन है।।मैं भक्ति.।।8।।

हे नाथ! दयासिंधु मुझ पे दृष्टि कीजिये।
हो 'ज्ञानमती' पूर्ण ऐसी वृद्धि दीजिये।।मैं भक्ति.।।9।।

–दोहा–

द्वीपकुमार मौलि में, हाथी चिन्ह दिपंत।
इनके गृह के जिनभवन, नमूँ नमूँ रुचिमंत।।10।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन ''सर्वतोभद्र'' जिन, पूजा करते बहु रुचि से।
चतुर्मुखी कल्याण प्राप्तकर, चक्रवर्ति पद लें सुख से।।
पंचकल्याणक पूजा पाकर, लोक शिखामणि हो चमकें।
उनके ''ज्ञानमती'' दर्पण में, लोकालोक सकल झलके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-9

उदधिकुमार जिनालय पूजा

–अथ स्थापना-दोहा–

उदधिकुमारनदेव के, भवन छियत्तर लाख।
तिनके सब जिनधाम को, पूजत बनूँ सनाथ।।1।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चाल-नन्दीश्वर पूजा–

कंचन झारी भर नीर, चरणों धार करूँ।
मिल जावे भवदधि तीर, चरणों आश धरूँ।।
उदधीकुमार जिनधाम, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निजपद विश्राम, मोक्षपुरी जाके।।1।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

काश्मीरी केशर गंध, चर्चूं चरणों में।
तन मन की ताप मिटंत, तिष्ठूँ चरणों में।।उदधी.।।2।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शशि किरणों सम अति स्वच्छ, तंदुल पुंज करूँ।
आतम अनुभव प्रत्यक्ष, पाऊँ हर्ष धरूँ।।उदधी.।।3।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

वर मौलश्री मचकुंद, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
सुरभित दशदिशा अमंद, निज सुख पाऊँ मैं।।उदधी.।।4।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

बरफी पेड़ा सोहाल, खाजे ताजे हैं।
प्रभु को अर्पूं खुशहाल, क्षुधरुज[1] भाजे है।।उदधी.।।5।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, आरति करते ही।
भग जाय मोह तम जाल, ज्योति प्रगटे ही।।उदधी.।।6।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर अगुरु युत धूप, खेऊं प्रीति से।
सुरभित हों दशदिश खूब, आतम सुख विलसे।।उदधी.।।7।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

केला एला बादाम, श्रीफल भेंट करूँ।
हो आत्म सुधारस पान, दुख निःशेष हरूँ।।उदधी.।।8।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल वसु अर्घ मिलाय, रजत कुसुम लेके।
प्रभु चरणों अर्घ चढ़ाय, पूजूँ रुचि लेके।।उदधी.।।9।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

1. क्षुधा रोग।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

उदधिकुमारन मुकुट में, मगर चिन्ह विलसंत।
इनके जिनमंदिर जजूँ, कुसुमांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

इन उदधिकुमार सुरन कुल में, जलप्रभ जलकांत इंद्र दो हैं।
जलप्रभ के चालिस लाख भवन, उन सबमें जिनमंदिर सोहैं।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, निज कर्म पंक को दूर करूँ।
आतम अमृतरस जलनिधि में, स्नान करूँ सुखपूर भरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जलप्रभेंद्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष जिनालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जलकांत इंद्र के जिनमंदिर, सब छत्तिस लाख अकृत्रिम हैं।
इनका वंदन अर्चन करते, नश जाते पापतिमिर घन हैं।।
निज समतारस निर्झरणी में, उन्मज्ज निमज्जन खूब करूँ।
सब कर्म कालिमा धोकर के, निज आतम शुद्ध पवित्र करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जलकांतेन्द्रस्य षट्त्रिंशत्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्यामल तनु दश धनु उतुंग, उदधिकुमारन वेश्म।
लाख छियत्तर जिनभवन, नमूँ नमूँ धर प्रेम।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त–तिलक्ष जिनालयविराजमानद्व्यशीतिकोटि अष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–सोरठा–

उदधिकुमारन सद्म, चैत्यवृक्ष 'वेतस तरु'।
पुष्पांजलि विकिरंत, जिनप्रतिमा को पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि उदधिकुमार भवनस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

वेतस तरु के पूर्वदिश, जिनप्रतिमा रत्नाम।
नमूँ नमूँ शतशतद नमूँ, मिले स्वात्मसुख लाभ।।1।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितवेतसचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान–पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष में दक्षिणे, जिनवर बिंब अनूप।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से, मिले स्वात्म चिद्रूप।।2।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितवेतसचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पारसमणि जिनमूर्तियां, जजतें पारस होय।
अर्घ चढ़ाऊँ प्रीति से, आतम पावन होय।।3।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितवेतसचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करें याचना भविकजन, कल्पवृक्ष फल देत।
बिन मांगे जिनमूर्तियाँ, जजत अतुल फल देत।।4।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितवेतसचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष के चारदिश, पण पण मानस्तंभ।
कोटि कोटि वंदन करूँ, गलें कषायरुदंभ।।5।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितवेतसचैत्यवृक्षचतुर्दिग्विंशतिजिनप्रतिमा–सन्मुख-स्थितविंशतिमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-दोहा–

बीस जिनेश्वर बिंब के, बीसहिं मानस्तंभ।
इनमें प्रतिमा पाँच सौ, साठ नमूँ सुखकंद।।1।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितचेतसचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुख-विंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशत्षष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला-त्रिभगी छंद

जय जय जिनधामा, उनमें प्रतिमा, अतिशय महिमा, इंद्र नमें।
जय जय ये मणिमय, पूजें चिन्मय, समतारसमय, सौख्य गमें।।
मैं जिनगुण गाऊँ, यज्ञ रचाऊँ, पूजत पाऊँ, स्वात्मनिधी।
निजयश विकसाऊँ, आतम ध्याऊँ, लघु तिर जाऊँ, भवजलधि।।1।।

–तोटक छंद–

जय नित्य जिनेश्वर की प्रतिमा, जय नित्य जिनेश्वर की महिमा।
जय केललभानु उद्योत करें, जय वंदत आतम ज्योति भरें।।2।।

जय भव्स सरोज विकास करें, जय पाप पिशाच निमूल करें।
जय साधुगण प्रणमें नित ही, शत इंद्र नमें जजते नितही।।3।।

जय आत्म सुधारस निर्झरणी, भव वारिधि हेतु महातरणी।
जय ज्ञान प्रकाश करें घट में, भवि मोह अंधेर हरें क्षण में।।4।।

जिनमंदिर में घन घंट बजें, वहं झांझन की झनकार उठे।
सुरवृन्द्र जजें गुण को उचरें, बहु नृत्य करें संगीत करें।।5।।

सुर अप्सरियाँ गुण गान करें, बहु वीणमृदंग सुवाद्य करें।
जय सौम्य छवी मन को हरती, नमते घट साम्य सुधा भरती।।6।।

धन धन्य जिनेश्वर भक्ति घड़ी, धन धान्य अनूपम शक्ति बढ़ी।
धन धन्य शिवंकर युक्ति मिली, धन धन्य निजात्म कली सु खिली।।7।।

–दोहा–

जय जय जय चिंतामणी, जिनगृह जिनवर रूप।
''ज्ञानमती'' सुख हेतु मैं, नमूँ नमूँ चिद्रूप।।8।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-10

स्तनितकुमार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

स्तनितकुमार देव भवनों में, जिनगृह लाख छियत्तर।
शाश्वत रत्नमयी अतिशायी, सुर मनहर अति सुंदर।।
गणधर मुनिगण नितप्रति वंदे, गुण गावें स्तुति पढ़के।
मैं भी यहाँ भक्ति से पूजूँ, स्थापन विधि करके।।1।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-दोधक छंद–

नीर चढ़ाऊँ जिन चरणों में।
चित्त सरोरुह जिन विकसाऊँ।।
चैत्यगृहों को नितप्रति पूजूँ।
स्वात्म सुधा को मन भर पीऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध सुगंधी दश दिश फैले।
नथ पदाब्जे चरचत शीतं।।चैत्य.।।2।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षत चोखे धवल अखंडे।
पुंज चढ़ाऊँ चरण समीपे।।चैत्य.।।3।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

श्वेत गुलाबी कमल खिलें हैं।
पुष्प चढ़ाऊँ मन हरषा के।।चैत्य.।।4।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

सेमइ गूझा घृतमय पूआ।
भूख नशाऊँ चरण चढ़ाके।।चैत्य.।।5।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपशिखा ये जगमग भासे।
आरति करते निज घट भासे।।चैत्य.।।6।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप दशांगी अगनि जलाऊँ।
धूम्र उड़े चौ दिश महकावे।।चैत्य.।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धपूं निर्वपामिति स्वाहा।

आम सुकेला सरस चढ़ाऊँ।
मोक्ष महाफल मधुर मिलेगा।।चैत्य.।।8।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अर्घ बनाके रतन मिलाऊँ।
नाथ पदाब्जे तुरत चढ़ाऊँ।।चैत्य.।।9।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

स्तनितकुमारन मौलि में, स्वस्तिक चिन्ह लसंत।
उनके जिनमंदिर जजूँ, कुसुमांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

देवस्तनितकुमार तनु श्यामल धनुष दश तुंग हैं।
इनमें अधि पदो घोष अरु महाघोष नाम धरंत हैं।।
इन घोष सुरपति भवन चालिस लाख जिनमंदिर धरें।
उनको जजूँ नित अर्घ लेकर दुःख दारिद परिहरें।।5।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे घोषेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

महाघोष अधिपति के यहाँ छत्तीस लाख जिनालया।
मणिरत्नमय भूभी वहां भविवृन्द हित सौख्यालया।।
इनको जजूँ नित भक्ति से ये कामधेनु स्वरूप हैं।
चिन्मय चिदंबर ज्योति प्रगटे जो स्वयं चिद्रूप हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे महाघोषेन्द्रस्य षट्त्रिंशत्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

देवस्तनितकुमार के, भवन छियत्तर लाख।
उनके सब जिनधाम को, नमूँ जोड़ जुग हाथ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि बियासी आठ लख, श्री जिनबिंब अनूप।
पूजत ही सुखसंपदा, मिले स्वात्मसुखरूप।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्ष जिनालयविराजमानद्वयशीतिकोटि अष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

सोरठा

स्तनितकुमारन देव, चैत्यवृक्ष 'सुकदंब' है।
मिले छांव अतएव, सुमन चढ़ाकर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि उदधिकुमार भवनस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पद्धड़ी छंद

जय जय कदंबतरु चैत्यवृक्ष, जय पूरब दिश जिनबिंबस्वच्छ।
मैं नमूँ नमूँ धर भक्तिभाव, मिल जावे निज आतम स्वभाव।।1।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तरु में मरकतमणि पत्रकांत, फल फूल अंकुरे जगमगंत।
मणिमय सुमनों में भी सुगंध, मैं पूजूं जिनवर बिंब पंच।।2।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन चैत्यवृक्ष मुनिनाथ वंद्य, जिनप्रतिमा शतशत इंद्र वंद्य।
मैं पूजूं मनवचतन विशुद्ध, जिनतीर्थस्नान में आत्म शुद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–पंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिमयी चैत्यतरु अति दिपंत, शाखाओं से नभ को स्पृशंत।
मैं वंदूं प्रतिमा भक्तिधार, मिल जावे आतम निधि अपार।।4।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वरमानस्तंभ अनादि नंत, चहुंदिश में शोभें पाँच पाँच।
ये मानस्तंभ सुबीस जान, मैं जजत बनूँ सम्यक्त्ववान।।5।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षचतुर्दिग् विंशतिमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-पद्धड़ीछंद–

जिनबिंब पाँच सौ साठ सिद्ध, मानस्तंभों के जग प्रसिद्ध।
तरु चैत्य बिंब विंशति प्रमाण, वंदन करते होता कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितकदंबचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशत्षष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–रोधा छंद–

जय जय श्रीजिनराज, त्रिभुवन मंगलकारी।
जय जय श्रीजिनराज, लोकोत्तम सुखकारी।।
जय जय जिनवर वेश्म, शरणभूत त्रिभूवन में।
जय जय जिनवर बिंब, क्षेम करो सब जग में।।1।।

भवनवासि के भवन, योजन संख्याते हैं।
भवन अनेक असंख्य, योजन विख्याते हैं।।
सभी भवन चौकोन, त्रयशत योजन ऊँचे।
इनके बीचहिं कूट, सौ योजन के ऊँचे।।2।।

कूटों ऊपर जैन, मंदिर शाश्वत शोभें।
रत्नमयी जिनबिंब, सौम्य छवी मन लोभे।।
दर्शन करते भव्य, नरक पशू गति नाशें।
जिनमहिमा को देख, समकित ज्योति प्रकाशें।।3।।

मिथ्या दृष्टीदेव, मरण समय आकुल हों।
बहुत विलाप करेय, मर एकेन्द्रिय भी हों।।
महा शत्रु मिथ्यात्व, इस सम शत्रु न जग में।
देव विभूती पाय, फिर एकेन्द्रिय जन्में।।4।।

हे देवन के देव! यही अरज इक सुनिये।
जब तक मोक्ष न होय, निज चरणों में रखिये।।
मेरे चित में नाथ! चरण कमल तुम तिष्ठें।
कृपा करो हे नाथ! सम्यक रत्न न छूटे।।5।।

भव भव में जिनदेव, मिले समाधी मरणा।
भव भव में जिनदेव, मिले आपका सरणा।।
एक यही अरदास और नहीं कुछ माँगूँ।
करो 'ज्ञानमति' पूर्ण पुनः नहीं कुछ यांचूँ।।6।।

–घत्ता–

जय जय जिनमंदिर, चैत्य तरूवर, बिंब जिनेश्वर शरण लिया।
जय तुम पद प्रणमूँ, जगत न भरमूँ, दोष वमूँ धर चरण हिया।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-11

विद्युत्कुमार जिनालय पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

विद्युत्कुमारों के यहाँ, जिनगृह छियत्तर लाख हैं।
ये मुक्ति कन्या के स्वयंवर, भवन सम विख्यात हैं।।
इनको जजें जो भव्य, निश्चित भवजलधि जल देयंगे।
आह्वानन कर हम पूजते ही स्वात्म संपति लेयंगे।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद–

प्रभु लाख चुरासी योनियों में घूम कर अब थक चुका।
इस हेतु तुम पद शरण लेकर नीर से पूजूँ मुदा।।
जिनवर जिनालय और प्रतिमा पूजहूँ मैं भक्ति से।
निज आत्मरस पीयूष सरिता में नहाऊँ युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

एकेंद्रियादिक देह में दुख दाव से संतप्त हो।
प्रभु गंध से पद चर्चहूँ तुम पाद छाया सुलभ हो।।जिनवर.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

अहमिंद्र से भि निगोद तक सुख दुखमयी सब पद धरे।
अक्षय सुपद के हेतु भगवन पुंज अक्षत के धरें।।जिनवर.।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बहुविध अयश से खिन्न हो नहिं स्वात्म गुण यश पा सका।
बहुविध महकते पुष्प सुंदर अतः चरणों में रखा।।
जिनवर जिनालय और प्रतिमा पूजहूँ मैं भक्ति से।
निज आत्मरस पीयूष सरिता में नहाऊँ युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

लड्डू इमरती पूरियाँ फेनी मलाई खीर से।
नहिं तृप्ति पाई इसलिये नेवज चढ़ाऊँ प्रीति से।।जिनवर.।।5।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपक अंधेरा दूर करता एक कोठे का अरे।
तुम आरती करते सकल अज्ञान तम हरता खरे।।जिनवर.।।6।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वरधूप खेते अग्नि में सब कर्म भस्मीभूत हों।
जिन आत्म समरस प्राप्त हो फिर मृत्यु बैरी दूर हो।।जिनवर.।।7।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव केला आम दाड़िम फल लिया।
बस मोक्षफल को आश लेकर, आपको अर्पण किया।।जिनवर.।।8।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प में बहुरत्न आदि मिलाय के।
मैं अर्घ अर्पण करूँ प्रभु को हर्ष अधिक बढ़ाय के।।जिनवर.।।9।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

जिनआलय आदर्श सम, निज सुख दर्शन हेतु।
पुष्पांजलि कर पूजते, निज अनुभव सुख देत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद–

विद्युत्कुमार सुर मौली में, वज्र चिन्ह अति सुंदर।
बिजली सम तनु दिपे धनुष दश, ऊँचे श्रेष्ठ विभवधर।।
इनके दोय इंद्र में पहले, ‘हरिषेण’ भवनों में।
चालीस लाख जिनालय सुंदर, पूजत सुख मिनटों में।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे हरिषेणेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हरीकांत सुरपति के जिनगृह, छत्तिस लाख अकृत्रिम।
इनकी पूजा वंदन करने, निज सुख मिले अकृत्रिम।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरितमय, रत्नत्रय निधि पाऊँ।
निज परमानंद सागर में, आवगाहन कर सुख पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे हरिकांतेन्द्रस्य षट्त्रिंशत्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

विद्युत्कुमार देवके, सहस छियत्तर धाम।
तिनके सब जिनगेह को, कोटि कोटि प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्षजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि बियासी आठ लख, जिनप्रतिमा अभिनंद्य।
नमूँ नमूँ नित भाव से, गणधर मुनिगण वंद्य।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्ष जिनालयविराजमानद्व्यशीतिकोटि अष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–सोरठा–

‘तरु प्रियंगु’ तरुचैत्य, विद्युत देवों के यहाँ।
पूजूँ उसके चैत्य, पुष्पांजली बिखेर के।।1।।

इति मण्डलस्योपरि विद्युत्कुमारदेवस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–तोटक छंद–

जिनचैत्य प्रियंगु सुपूर्व दिशं।
जिनबिम्ब महाशिव सौख्य प्रदं।।
जिनबिम्ब अनूपम पांच जजूँ।
निज रूप दिखे परमात्म भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिरत्नमयी फल फूल शुभं।
तरु दक्षिण में प्रतिमा अनुपं।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानपंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भव वारिधि नाव जिनेश्वर हैं।
भवि वृन्दन के परमेश्वर हैं।।जिन.।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अतिशायि जिनेश्वर रूप दिपें।
सुर भक्त नमें मन में हरषें।।जिन.।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रतिबिंब सन्मुख मानस्थं।
सब बीस भये मद मान हरं।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुचैत्यवृक्षचतुर्दिशिविंशतिमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

तरु चैत्यविषे विंशति प्रतिमा।
सब मानस्तंभन में गिनना।।
सब पाँच शतक अरु साठ जिनं।
प्रणमूँ भववारिधि नाव जिनं।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितप्रियंगुचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशतत्षष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–दोहा–

जिनप्रतिमा जिन सारखी, पाप अनंत हरंत।
मुक्तिरमा की प्रियसखी, नमत लहूँ भव अंत।।1।।

–चार-शेर–

जैवंत रत्नकांत शाश्वते जिनालया।
जैवंत मूर्तिमंत सर्व सौख्य आलया।।
जैवंत रहें मूर्तिमयी जैन मूर्तियाँ।
जैवंत रहे कामधेनु रत्न मूर्तियाँ।।2।।

हे नाथ! आप भक्ति हैं चिंतामणी समा।
चिंतित मनोरथों को पूरने में है क्षमा।।
ये भक्ति चार गती दुःख दूर करेगी।
पंचम गति में लेय जाके शीघ्र धरेगी।।3।।

हे नाथ! नरक दुःख मैं अनंतशः सहा।
तिर्यंचयोनि में अनंत काल दुख लहा।।
नर योनि में नाना प्रकार दुःख सहे हैं।
देवों में भी मिथ्यात्व से दुःखी ही रहे हैं।।4।।

हे नाथ! दयासिंधु! दयादान दीजिये।
निज भक्त जानके मुझे स्थान दीजिये।।
अब फेर फेर जन्म या हो युक्ति कीजिये।
मैं मृत्यु को भी मार दूँ ये शक्ति दीजिये।।5।।

सीता ने तुम्हें ध्याय के अग्नी को जय किया।
मैना सती ने भक्ति से हि कुष्ठ नाशिया।।
जब चंदना ने ध्यान किया बेड़ियाँ झड़ी।
भक्ती से मनोवती दर्श पाया उसी घड़ी।।6।।

मुनि मानतुंग के सभी ताले थे खुल गये।
अकलंक देव भी तो बाद में जयी भये।।
श्रीमन समंतभद्र के भक्ती प्रभाव से।
जिनचंद की प्रतिमा वहाँ प्रगटी उछाव से।।7।।

बहुतेक ने तुम भक्ति से संकट को निवारा।
अतएव मैंने भक्ति से तुमको हि पुकारा।।
सब रोग शोक दुःख व्यथा दूर कीजिये।
संपूर्ण 'ज्ञानमति' सुधापूर दीजिये।।8।।

–घत्ता–

जय जय जिनदेवा, भ्रमतम छेवा, सुरपति सेवा सतत करें।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, दुःख नशाऊँ, सुख विलसाऊँ, जनम टरे।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-12

दिक्कुमारजिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

सुर दिक्कुमारों के जिनालय लाख छीयत्तर कहें।
ये सब अनादि अनंत अनुपम स्वर्ण चांदी के कहे।।
निज रूप अवलोकें यहाँ दर्पण सदृश भविजन सदा।
मैं पूजहूँ आह्वानन कर जिनधाम त्रिभुवन शर्मदा।।1।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-सखी छंद–

सुर गंगा सलिल पवित्रा, जिन चरण त्रिधार करित्रा।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।1।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कचंन द्रव सम चंदन हैं, चर्चूं जिनपाद अमल हैं।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।2।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शशिदीप्ति सदृश तंदुल हैं, जिन चरणन पुंज धवल हैं।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।3।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सुर कल्पतरु के सुमना, जिनपद पंकज में धरना।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।4।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

घेवर फेनी पकवान, अर्पण करते क्षुध् हाना।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।6।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिदीप शिखा जगमग हो, आरति करते घट युति हो।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वर धूप धूपघट खेऊँ, निज आतम का यश लेऊँ।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।8।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रीफल अमृत फल मधुरा, अर्पण कर जीवन सुधरा।
मैं पूजूँ जिनवर धामा, होवे निजपद विश्रामा।।9।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

भवन छियत्तर लाख हैं, दिक्कुमार के नित्य।
तिनके जिनमंदिर जजूँ, पुष्पांजलि कर इत्यं[1]।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

दिक्कुमार सुर में अधिप, प्रथम अमितगति नाम।
जिनके चालिस लाख प्रम, जिनगृह, जजूँ महान्।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अमितगतिइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्र अमित वाहन यहाँ, छत्तिस लाख प्रमाण।
जिनमंदिर नित प्रति जजूँ, मिल सर्व कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अमितवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशत्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

दिक्कुमार के जिनभवन, सर्व छियत्तर लाख।
पूजूँ जिनभक्ती मगन, नमूँ नमूँ नत माथ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्षजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि बियासी आठ लख, जिनवर बिंम महान्।
पूजत आत्मपियूष रस, मिले पंच कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्ष जिनालयविराजमानद्व्यशीतिकोटिअष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

1. यहाँ।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–दोहा–

दिक्कुमार का चैत्य तरु, वृक्ष शिरीष लसंत।
समकित निधिहित पूजहूँ, कुसुमांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि विद्युत्कुमारदेवस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

सुर दिक्कुमारन मुकुट में शुभ सिंह चिन्ह विराजता।
दस धनुष ऊँचा देह श्यामल कांति से दिश व्यापता।।
इनके शिरीष सुचैत्यतरु में पूर्व दिश जिनबिंब हैं।
उन पूजते नव निद्धि रिद्धी सिद्धियाँ निज हस्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुर दिक्कुमारों के भवन शाश्वत सुवर्णिम चमकते।
अगणित विभव देवांगना सुर परिकारों सह दमकते।।
इनके शिराष सुचैत्यतरु दक्षिण दिशी जिनबिंब हैं।उन.।।2।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन भवनवासी देव के दश भेद सुरपरिवार हैं।
इन प्रमुख देवी पाँच हैं उन विक्रिया गुणसार है।।
इनके शिराष सुचैत्यतरु पश्चिम दिशी जिनबिंब हैं।उन.।।3।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन दिक्कुमार इंद्र के बत्तिस सहस देवांगना।
सम्यक्त्वधारी जिन जजें क्रम से लहें शिव अंगना।।
इनके शिराष सुचैत्यतरु उत्तर दिशी जिनबिंब हैं।उन.।।2।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान-पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रत्येक प्रतिमा सामने इक एक मानस्तंभ हैं।
ये रत्ननिर्मित अकृत्रिम नमते हरें जगफंद हैं।।
मुनिवृन्द भी वंदन करें सुर खग मनुष पूजा करें।
हम पूजते अति भक्ति से संसार सागर से तिरें।।5।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षचतुर्दिश्विंशतिमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

तरुचैत्य के प्रत्येक दिश पण पंच जिनवर बिंब हैं।
प्रत्येक प्रतिमा सामने सब बीस मानस्तंभ हैं।।
प्रति दिशा सातहिं सात प्रतिमा मानथंभों में दिपे।
सब पाँच सौ अरु आठ प्रतिमा पूजतें आतम दिपें।।1।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितशिरीषचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशत्षष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः

जयमाला

–दोहा–

सर्व अकृत्रिम जिनभवन, अतिशय विभव धरंत।
नमूँ नमूँ शिर नाय के, निज गुण मणि विलसंत।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

जय जय जयजिनमंदिर अनुपम, रत्न सुवर्ण विनिर्मित।
जय जय तीन कोट हैं इनमें, चउ चउ गोपुर संयुत।।
चार चार गलियाँ अति लंबी, शोभे जिन मंदिर में।
इक इक मानस्तंभ व नौ नौ, स्तूप प्रतेक गली में।।2।।

**पर कोटे के अंतराल में, वनभूमी ध्वजभूमी।
अशोक सप्तच्छद चंपक अरु आम्रवनों की भूमी।।
इन चारों वना मध्य एक इक चैत्यवृक्ष अति ऊँचे।
प्रतिदिश जिन प्रतिमा से मंडित छत्र चंवर युत दीपें।।3।।**

**नंदा नंदोत्तरा आदि बावड़ियाँ जल से पूर्णा।
फूलें कमल कुमुद फूलों से महकें कलकल पूर्णा।।
हंस बतख बहु पक्षिगणों के, कलरव ध्वनि से सुंदर।
बावड़ियों के क्रीडा करते रमते सुरगण मनभर।।4।।**

**सिंह व गज अरु वृषभ गरुड़ शशि सूर्य मोर अरु हंसा।
कमल चक्र इन दश चिन्हों युत ध्वज फरहरें निशंका।।
ध्वजभूमी में रत्न ध्वजायें पवन झकोरे हिलतीं।
महाध्वजा प्रत्येक चिन्ह की इक सौ अठ-अठ दिखतीं[1]।।5।।**

**इक इक महाध्वजाश्रित इक सौ आठ-आठ लघुध्वज हैं।
सर्वध्वजायें बहु लहरायें गगनस्पर्शि दिखत हैं।।
तृतीय कोट मधि चैत्यभूमि है जिन प्रतिमा से सुंदर।
प्रति जिनगृह में जिनप्रतिमा हैं इक सौ आठ-आठ वर।।6।।**

**देवच्छद के भीतर जिनप्रतिमा के उभय तरफ में।
श्रीदेवी श्रुतदेवी की हैं मूर्ती रत्न घटित में।।
यक्षदेव सर्वाण्हकुमार रू सनत्कुमारन मूर्ती।
मंगल द्रव्य आठ सब इक सौ आठ-आठ की पूर्ती।।7।।**

**जिनगृह में मंडन मंडप अभिषेक व नर्तन मण्डप।
संगीत रू अलोक सुक्रीड़ा स्वाध्यायादिक मंडप।।
मंगल कलश धूपघट घंटा सुवर्ण रजत मालायें।
नानाविध शोभयुत गृह में सौम्य छवी प्रतिमायें।।8।।**

1. तिलोयपण्णत्ति अ. 4 पृ. 116।T

–दोहा–

**जय जिन प्रतिमा जिन भवन, चैत्यद्रु[1] मानस्तंभ।
कोटि कोटि वंदन करूँ, ज्ञानमती सुखकंद।।9।।**

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

**जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।**

इत्याशीर्वादः।

1. चैत्यवृक्ष।

पूजा नं.-13

अग्निकुमारजिनालय पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

अग्निकुमारों के यहाँ जिनगृह छियत्तर लाख हैं।
गणधर मुनिश्वर भी परोक्षहिं में नमाते माथ हैं।।
जो वंदते भाक्तिक यहाँ वे सर्व संकट टारते।
आह्वानन कर मैं पूजहूँ ये सर्व सुख विस्तारते।।1।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-नरेन्द्र छंद–

जल से प्यास बुझी नहिं अब तक, अतः शरण तुम आया।
साम्य सुधारस पीने हेतू, जल तुम चरण चढ़ाया।।
शाश्वत जिनमंदिर को पूजूँ, सर्व अमंगल हरिये।
आधिव्याधि निर्मूलन करके, प्रभु सब मंगल करिये।।1।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदन चंद्रकिरण गंगाजल, से नहिं शांती पायी।
भव संताप निवारण हेतु, गंध चरण चर्चायी।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु निगोद में अहमिंद्रों तक, पाये पद बहुतेरे।
अब अखंड पद हेतु शालि के पुंज चढ़ाऊँ घनेरे।।शाश्वत.।।3।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

आत्म सुरभि फैलाने हेतू, बहुत प्रयत्न किया मैं।
किन्तु स्वात्म गुण सुरभि हेतु, सुमनों को चढ़ा दिया मैं।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरण पोली घेवर फेनी, पुआ अंदर से लाया।
उदर अग्नि प्रशमन हेतु मैं, प्रभु को आज चढ़ाया।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप शिखा जगमग करती, कुछ कुछ ध्वांत विनाशें।
प्रभु तुम आरति करते क्षण में, ज्ञान सु ज्योति प्रकाशे।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप अगुरु चंदन से मिश्रित, खेऊँ धूपघटों में।
कर्म जलें सब धुआं उड़े, समरस सुख मिले क्षणों में।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रीफल केला एला काजू, पिस्ता द्राक्ष चिरौंजी।
पूर्ण अतींद्रिय सुख फल हेतु, फल से तुम्हें जजूँ जी।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत सुमनादिक, लेकर अर्घ बनाया।
पद अनर्घ नहिं मूल्य है जिसका, उस पद हेतु चढ़ाया।।शाश्वत.।।9।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

अग्निकुमान देव के, जिनमंदिर विलसंत।
निजानंद सुख हेतु मैं, जजूँ पुष्प विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद–

अग्निकुमार देव मुकुटों में, कलश चिन्ह अति शोभ रहा।
अग्नि शिखा समदेह चमकता, चालिस हाथ उतुंग कहा।।
इनमें 'अग्निशिखी' अधिपति के, चालिस लाख जिनालय हैं।
उनको पूजूँ भक्ति भाव से, वे भवि हेतु शिवालय हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निशिखीन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्र अग्निवाहन के घर में, छत्तिस लाख जिनालय हैं।
क्रोध अग्नि के प्रशमन हेतू, ध्याते साधु सुधालय हैं।।
ये जिनमंदिर भक्तजनों की, सर्व आपदा भस्म करें।
प्रणमन वंदन करके मुनिगण, कर्मेंधन को भस्म करें।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशत्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

तीर्थंकर निर्वाण अनंतर, अग्नि कुमार इंद्र यहं पे।
मुकुट अग्र से अग्नि प्रगट कर, प्रभु तनु संस्कार करते।।
इन देवों के सर्व जिनालय, लाख छियत्तर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ा कर इनको, ये सबको मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्षजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि बियासी आठ लाख सब जिन प्रतिमायें अतिशायी।
प्रति जिनगृह में इकसौ आठ से, यह गणना भवि सुखदायी।।
ध्यान अग्नि प्रज्वालन हेतु, जिनप्रतिमा को नित्य भजूँ।
आत्यंतिक शांती मिल जावे, कर्म भस्म कर सोख्य भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्त-तिलक्षजिनालयविराजमानद्व्यशीतिकोटिअष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–दोहा–

अग्निकुमारन चैत्य तरु, वृक्ष पलाश[1] दिपंत।
उसमें जिनप्रतिमा जजूँ, पुष्पांजलि किरंत[2]।।1।।

इति मण्डलस्योपरि अग्निकुमारदेवस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

अग्निकुमार सुचैत्यतरु, जिनप्रतिमा दिशि पूर्व।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले निजात्म अपूर्व।।1।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपंच–जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष दक्षिण दिशी, पांच जिनेश्वर मूर्ति।
भक्ति भाव से पूजहूँ होवे निज सुख पूर्ति।।2।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष पश्चिम दिशी, पद्मासन जिनबिंब।
गणधर ऋषिगण ध्यावते, मैं पूजूँ तज डिंभ।।3।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानपंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष के उत्तरी, जिनवर बिंब महान्।
इनको पूजूँ नित्य ये, सुख संपत्ति निधान।।4।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानपंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति प्रतिमा के समाने, इक इक मानस्तंभ।
इन बीसों को नित जजूँ, हरें सकल मुझ दंभ।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षचतुर्दिश्विंशतिमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

बीस बिंब तरु में दिपें, बीसहिं मानस्तंभ।
इनकी प्रतिमा पाँच सौ, साठ जजूँ सुख कंद।।1।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितपलाशचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशतषष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

(चाल-हे दीनबंधु......)

जय जय श्री जिनदेव देव देव हमारे।
जय जय प्रभो! तुम सेव करें सुरपती सारे।।
जय जय अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
जय जय समस्त भव्य के सर्वस्व सार हो।।1।।

जो भव्य भक्ति से तुम्हें निज शीश नावते।
वे शिरो रोग नाश स्मृति शक्ति पावते।।

जो एक टक हो नेत्र से प्रभु आपको निरखें।
उन मोतिबिंदु आदि नेत्र व्याधियां नशें।।2।।

जो कान से अति प्रीति से तुम वाणि को सुनें।।
उनके समस्त कर्ण रोग भागते क्षण में।।
जो मुख से आपकी सदैव संस्तुति करें।
मुख दंत जिह्वा तालु रोग शीघ्र परिहरें।।3।।

जो कंठ में प्रभु आपकी गुणमाल पहनते।
उनके समस्त कंठ ग्रीवा रोग विनशते।।
श्वासोच्छ्वास से जो आप मंत्र को जपते।
सब श्वास नासिकादि रोग उनके विनशते।।4।।

जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करें हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरें हैं।।
जो नाभि कमल में तुम्हें नित धारते मुदा।
नश जातीं उनकी सर्व उदर व्याधियाँ व्यथा।।5।।

जो पैर से जिनगृह में आते नृत्य करें हैं।
वे घुटने पाद रोग सर्व नष्ट करें हैं।।
पंचांग जो प्रणाम करें आपको सदा।
उनके समस्त देह रोग क्षण में हो विदा।।6।।

जो मन में आपके गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।
ये तो कुछेक फल प्रभो तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे।।7।।

तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंत गुणभि भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती।
फिर कौन सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती।।8।।

अतएव नाथ! आप चरण की शरण लिया।
संपूर्ण व्यथा मेट दीजिये अरज किया।।
अन्यत्र नहिं जाऊँगा मैंने परण[1] किया।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये यह ही धरन[2] दिया।।9।।

–घत्ता–

जय जय जिनवर जी, जय तुम प्रतिकृति,
जयजिनगृहपति नमन करूँ।
सब हरो असाता, पूरो साता,
हितकर माता चरण परूँ।10।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

1. प्रण = प्रतिज्ञा। 2. धरना दिया।

पूजा नं.-14

वायुकुमारजिनालय पूजा

–अथ स्थापना-अडिल्ल छंद–

वायु कुमार सुरों के भवन सुशासते।
लाख छयानवे प्रमित रतनमयि भासते।।
इन सबमें शाश्वत जिनमंदिर पूजहूँ।
इनमें जिनप्रतिमायें जिनसम हूबहू।।1।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-भुजंगप्रयात छंद–

पयोराशि का नीर झारी भराऊँ।
प्रभु के चरण तीन धारा कराऊँ।।
जजूँ जैन मंदिर सदा शाश्वते जो।
उड़ाऊँ करम धूलि फिर न लगे जो।।1।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

सुकाश्मीरि केशर घिसा भर कटोरी।
पदाम्भोज चर्चूं कटे कर्म डोरी।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धुले स्वच्छ अक्षत धरूँ पुंज आगे।
सभी पाप के पुंज क्षण में ही भागें।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही केवड़ा पुष्प सौगंध्य फैले
चढ़ाऊँ चरण में अतुल कीर्ति फैले।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पुआ पूरियों के भरे थाल लायें।
मिल पूर्ण तृप्ति प्रभो को चढ़ायें।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखा दीप की बाह्य का ध्वांत नाशें।
करूँ आरती ज्ञान ज्योति प्रकाशे।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशांगी सुरभि धूप खेऊँ प्रभो! मैं।
जलाऊँ सभी कर्म को एक क्षण में।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अनंन्नास नींबू बिजोरा फलों से।
जजूँ आपके पाद को मुदित होके।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

भरे थाल में अर्घ लेके चढ़ाऊँ।
महामोक्ष फल आश से प्रभु रिझाऊँ।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतिधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व निजसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

वायु कुमारन मुकुट में, तुरग चिन्ह द्रुतगामि।
इनके जिनगृह पूजहूँ, कुसुमांजलि विखरामि।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जिनालयस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

वायुकुमारन देह नीलोत्पल सदृश सुंदर दिपे।
जिनराज विहरें उस समय ये मंद पवन चलावते।।
बेलंब अधपति के जिनेश्वर धाम लाख पचास हैं।
उनको जजूँ नित भव से, वे चित्त कुमुद विकासि हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे बेलम्बइन्द्रस्य पंचाशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अधिपति प्रभंजन के जिनालय लाख छयालिस जानिये।
सब रिद्धि से युत गणधरों से वंद्य इनको मानिये।।
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक कोटिशः वंदन करूँ।
सब इष्ट योग अनिष्ट के संयोग दुःख को परिहरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे प्रभंजनइन्द्रस्य षट्चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

जिनराज पंचकल्याण में सौधर्म इन्द्रावेश से।
वायूकुमार सुरेन्द्र सुरभित मंद वायु चलावते।।
इन भवन छयानवे लाख में जिनधाम अतिशय भासते।
हम पूजते नित अर्घ ले ये कर्म पंक सुखावते[1]।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रत्येक में जिनबिंब इकसौ आठ-आठ विराजते।
सब कोटि इकसौ तीन अड़सठ लाख शाश्वत भासते।।
ये रत्नमयि जिनबिंब चिंतामणी इनको मानिये।
इन पूजते ही मनश्चिंतित कार्य सिद्धि जानिये।।3।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णतिलक्ष जिनालयविराजमान एकअर्बुद[2] त्रयकोटिकोटिअष्टलक्षजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

–दोहा–

वायुकुमारन चैत्यतरु, वृक्ष राजद्रुम[3] मान्य।
कुसुमांजलि कर नित जजूँ, मिले सौख्य अमलान।।1।।

इति मण्डलस्योपरि वायुकुमारदेवस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

चैत्यवृक्ष में पूर्वदिश, जिनवर बिंब अपूर्व।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, निजमुख मिले अपूर्व।।1।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपंच–जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. कर्म कीचड़ सुखा देते हैं। 2. अरब। 3. चिरोंजी का वृक्ष।

पांच बिंब हैं राजद्रुम, चैत्यवृक्ष दक्षीण।
पूजूँ अर्घ चढ़ायके, मिले सौख्य अक्षीण।।2।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–पंचजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष पश्चिमदिशी, जिनवर बिंब अनूप।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले स्वात्म चिद्रूप।।3।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–पंचजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष उत्तरदिशी, जिनप्रतिमायें पाँच।
जजत सर्व सुख संपदा, नहीं सांच को आंच।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानपंच-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष के चार दिश, जिनवर बिंब समझ।
इक इक मानस्तंभ हैं, पूजत सौख्य प्रत्यक्ष।।5।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षचतुर्दिक्सम्बन्धिविंशतिमान-स्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

चैत्यवृक्ष के चार दिश, जिनप्रतिमायें बीस।
मानस्तंभ की पाँच सौ, साठ नमूँ नत शीश।।1।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितराजद्रुमचैत्यवृक्षसम्बन्धिविंशतिजिनप्रतिमा-तत्सन्मुखस्थितविंशतिमानस्तम्भसम्बन्धिपंचशतषष्टिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

जय जय जय वायुकुमारों के जिनमंदिर शाश्वत रत्नमयी।
जय जय जय जिनवर प्रतिमायें, देदीप्यमान मणि रत्नमयी।।
जय जय जय चैत्यवृक्ष मनहर ये पृथिवीकायिक रत्नमयी।
जय जय जय मानस्तंभ सकल, जिनप्रतिमा संयुत रत्नमयी।।1।।

सुरभवनवासि दस भेदों में प्रत्येक में दो-दो इंद्र कहें।
दो-दो ही उनमें हैं प्रतीन्द्र, सब मिल ये चालिस इंद्र भये।।
नर नाना विध तप तप करके इन इंद्र विभव को पाते हैं।
उपपाद सुशय्या से जन्में, नवयौवन तनु पा जाते हैं।।2।।

अंतर्मूहूर्त के भीतर ही, अवधी विभंग पा लेते हैं।
निज पुण्य उदय सुर विभव देख, मंगल सुवस्त्रधर लेते हैं।।
फिर जिनमंदिर के जाकर के, 'कुलदेव' मान पूजा करते हैं।
कोई-कोई जाति स्मृति से, तत्क्षण सम्यक्त्व निधी लभते।।4।।

कोई सुर देवऋद्धि लखकर, कोई जिन महिमा को लखके।
कोई धर्मोपदेश सुनकर, सम्यक्त्व रत्न धारण करते।।
ये सम्यग्दृष्टी अतिशायी, जिन भक्ति वंदना करते हैं।
मिथ्यादृष्टी 'कुलदेव' मान, जिन नाथ अर्चना करते हैं।।5।।

ये पुण्य संपदा संचित कर, च्युत हो मानव तन पाते हैं।
फिर मुनि हो घोर तपस्या कर, शिवरमाकांत हो जाते हैं।।
नासाग्र दृष्टि जिनप्रतिमायें, पद्मासन सहित विराजे हैं।
जो इनके दर्शन कर लेते, वे आतम ज्योति प्रकाशे हैं।।6।।

ये धन्य धन्य जिनवर प्रतिमा, स्वयमेव अचेतन होती हैं।
जो चेतन भक्ति करें इनकी, उनको मनवांछित देती हैं।।
मैं नित प्रति वंदन भक्ति करूँ, पूजन अर्चन स्तवन करूँ।
निज ''ज्ञानमती'', लक्ष्मी पाकर, निज में ही सुख आनंद भरूँ।।6।।

–दोहा–

धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिन पूजन की आज।
धन संपति संतति बढ़े, मिले मोक्ष साम्राज।।7।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-15

मध्यलोक जिनालय पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद–

श्री स्वयंसिद्ध जिनमंदिर यहाँ पर चार शतक अट्ठावन हैं।
मणिमय अकृत्रिम जिन प्रतिमा ऋषि मुनिगण में मन भावन हैं।।
सौ इंद्रों से वंदित जिनगृह मैं इनकी पूजा नित्य करूँ।
आह्वानन संस्थापन करके निज से सन्निध नित्य करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

–शम्भु छंद–

ये जन्म जरा मृति तीन रोग, भव भव से दुख देते आये।
त्रय धारा जल की देकर के मैं पूजूँ ये त्रय नश जायें।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योति सौख्यमयी।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

नानाविध व्याधी रोग शोक, तन में मन में संताप करें।
चंदन से तुम पद चर्चूं मैं, यह पूजा भवभव ताप हरे।।ये.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

जग में इंद्रिय सुख खंड-खंड, नहिं इनसे तृप्ती हो सकती।
अक्षत के पुंज चढ़ाऊँ मैं, अक्षय सुख देगी तुम भक्ती।।ये.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

इस कामदेव ने भ्रांत किया, निज आत्मिक सुख से भुला दिया।
ये सुरभित सुमन चढ़ाऊँ मैं, निज मन कलिका को खिला लिया।।ये.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन हेतु नाथ, त्रिभुवन के भक्ष्य सभी खाये।
नहिं मिली तृप्ति इसलिये प्रभो! चरु से पूजत हम हर्षाये।।ये.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा निज घट में, नहिं ज्ञान ज्योति खिल पाती हैं।
दीपक से आरति करते ही, अघ रात्रि शीघ्र भग जाती है।।ये.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वर धूप घटों के धूप खेय, चहुँदिश में सुरभि महकती है।
सब पाप कर्म जल जाते हैं, गुणरत्नन राशि चमकती है।।ये.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

नानाविध फल की आश लिये, बहुते कुदेव के चरण नमें।
अब सरस मधुर फल से पूजें, बस एक मोक्षफल आश हमें।।ये.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंध आदि में चांदी के, सोने के पुष्प मिला करके।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ हे जिनवर! रत्नत्रयनिधि दीजे तुरते।।ये.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक संबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–दोहा–

शीत सुगंधित नीर से, प्रभुपद धार करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, आतम सुख विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले सर्वसुख संपदा, परमानंद तुरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय जय मध्यलोक के सब, शाश्वत जिनमंदिर मुनि वंदे।
जय जय जय प्रतिमा रत्नमयी, भविजन वंदत ही अघ खंडें।।
जय जय जिनमूर्ति अचेतन भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनकी आतम निधि भर देतीं।।1।।

जय पांच मेरु के अस्सी हैं, जंबू आदिक तरु के दश हैं।
कुल पर्वत के तीसों जिनगृह, गजदंत गिरी के बीसहिं हैं।।
वक्षार गिरी के अस्सी हैं, इक सौ सत्तर रजतचल के।
दो इष्वाकार जिनालय हैं, चारहिं मंदिर मनुजोत्तर के।।2।।

नंदीश्वर के बावन, कुंडलगिरि रुचकगिरी के चउ चउ हैं।
ये चार शतक अट्ठावन इन, जिनगृह को मेरा वंदन है।।
प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमायें, सब इक सौ आठ-आठ राजें।
उनचास हजार चारसौ चौंसठ, प्रतिमा वंदत अघ भाजें।।3।।

स्वात्मानंदैक परम अमृत झरने से झरते समरस को।
जो पीते रहते ध्यानी मुनि, वे भी उत्कंठित दर्शन को।।

ये ध्यान धुरंधर ध्यान मूर्ति, यतियों को ध्यान सिखाती हैं।
भव्यों को अतिशय पुण्यमयी, अनवधि पीयूष पिलाती हैं।।4।।

ढाई द्वीपों के मंदिर तक मानव विद्याधर जाते हैं।
आकाश गमन ऋद्धीधारी, ऋषिगण भी दर्शन पाते हैं।।
आवो आवो हम भी पूजें, ध्यावें वंदे गुणगान करें।
भव भव के संचित कर्मनाश, पूर्णैक 'ज्ञानमति' उदित करें।।5।।

–घत्ता–

जय जय श्रीजिनवर, धर्मकल्पतरु, जय जिन मंदिर सिद्धमही।
जय जय जिन प्रतिमा, सिद्धन उपमा, अनुपम महिमा सौख्यमही।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःअष्टपंचाशत्‌जिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शम्भु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-16

सुदर्शनमेरु जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

त्रिभुवन भवन के मध्य सर्वोत्तम सुदर्शन मेरु है।
यह प्रथम जंबूद्वीप में सर्वोच्च मेरु सुमेरु है।।
सोलह जिनालय में जिनेश्वर मूर्तियाँ हैं सासती।
थापूँ यहाँ उनको जजूँ, वे सर्व दुख संहारती।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-अडिल्ल छंद

गंगानदि को प्रासुक जल घट में भरूँ।
जल से पूजा करते सब कलिमल हरूँ।।
मेरु सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध सुगंधित अष्ट गंध कर में लिया।
जिन पद चर्चत चाह दाह का क्षय किया।।मेरु.।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मुक्ता फलसम तंदुल धवल अखंड हैं।
पुंज धरत जिन आगे होत अनंद है।।मेरु.।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरपादप के सुरभित सुमन मंगायके।
कामजयी जिनपाद जजूँ शिर नाय के।।मेरु.।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मोदक बरफी पुआ सरस चरु ले लिया।
क्षुधाव्याधि हर तुम पद में अर्पण किया।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत भर दीपक ज्योति सहित आरति करूँ।
मोह ध्वांत हर जिन अर्चूं भ्रम तम हरूँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

कृष्णागरु वर धूप अग्नि में खेवते।
दुष्ट कर्म अरि दग्ध हुये तुम सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

पिस्ता काजू द्राक्ष फलों को लाय के।
सरस मो फल हेतु जजूँ हरषाय।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य भर थाल में।
पूजूं अर्घ चढ़ाऊँ नाऊँ भाल मैं।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति के हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

–प्रत्येक अर्घ्य-दोहा–

सर्वश्रेष्ठ गिरिराज हैं, मेरु सुदर्शन नाम।
चारों वन के जिनभवन, नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मेरु सुदर्शन के पृथ्वी पर, भद्रसाल वन रम्य महान।
पूर्व दिशा में जिन मंदिर है, त्रिभुवन तिलक अतुल सुखदान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रथम सुराचल भद्रसाल में, दक्षिण दिश जिन मंदिर जान।
सुर नर किन्नर यक्ष यक्षिणी, विद्याधर गण पूजें आन।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रथम देवगिरि भद्रसाल में, पश्चिमदिश जिन भवन अनूप।
रत्नत्रय निधि के इच्छुक जन, पूजन करत लहें सुखरूप।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रथम मेरु के भद्रसाल में, उत्तर दिश जिनराज निकेत।
भव भय दुःख हरण हेतू भवि, नित प्रति पूजें भक्ति समेत।।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–रोला छंद–

मेरु सुदर्शन विषैं, सुभग नंदन वन जानो।
सुरनरगण से पूज्य, पूर्व दिक् जिनगृह मानो।।

जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदन वन के मांहि, जिनालय दक्षिण दिश हैं।
नित्य महोत्सव साज, देवगण पूजनरत हैं।।जल.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम दिश जिननिलय, मनोहर नंदनवन में।
सुर विद्याधर रहें, सतत भक्तीरत जिन में।।जल.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदनवन के उत्तर, जिन मंदिर सुखकारी।
उसमें जिनवर बिंब, दुरितहर मंगलकारी।।जल.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–दोहा–

वन सौमनस महान है, मेरु सुदर्शन माहिं।
पूरब दिश में जिन भवन, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाहिं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वन सौमनस जिनेश गृह, दक्षिण दिशा मंझार।
वसु विधि अर्घ्य संजोय के, पूजों हो भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस के, स्वर्णमयी जिनधाम।
भक्तिभाव से अर्घ्य ले, पूजों जिनवर धाम।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिश सौमनस में, श्री जिनभवन महान्।
त्रिभुवनतिलक प्रसिद्ध है, जजूँ अर्घ्य ले आन।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–शंभू छंद–

मेरू पर चौथा पांडुकवन, उसके पूरब दिश सुंदर है।
रत्नों की मूर्ति से संयुत, मणिकनकमयी जिनमंदिर हैं।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करे अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पांडुकवन में दक्षिण दिश का, जिन भवन अनूपम कहलाता।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उनको यह अनुपम फलदाता।।जल.।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पांडुकवन के पश्चिम दिश में, जिन चैत्यालय महिमाशाली।
सुरनर विद्याधर से पूजित, सब ताप हरे गुणमणिमाली।।जल.।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पांडुकवन के उत्तरदिश में, शुभ त्रिभुवनतिलक जिनालय है।
नामोच्चारण से पाप दहे, भक्तों के लिए सुखालय है।।जल.।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-अडिल्ल छंद–

प्रथम मेरु के सोलह जिनगृह नित जजूँ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय पूर्ण सुख को भजूँ।।

काम विजेता जिनवरबिंब मनोज्ञ हैं।
पूजत ही निष्काम बनूँ अतियोग्य मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में जिनप्रतिमा जानिये।
सत्रह सौ अट्ठाइस संख्य बखानिये।।
प्रतिजिनगृह में इक सौ आठ प्रमाण हैं।
पूजूँ मैं रूचिधार मुझे सुखखान है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत–अष्टा-विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पांडुकवन के विदिक् में, शिला चार अभिराम।
पूजँ अर्घ चढ़ाय के, मिले स्वात्म विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

सर्वोत्तम सर्वोच्च हैं, प्रथम मेरु गिरिराज।
उसकी यह जयमालिका, हर्षित गाऊँ आज।।1।।

शंभु छंद–

जय मेरु सुदर्शन है अनुपम, सोलह चैत्यालय से सोहे।
अध्यात्म शिरोमणि योगीजन, उनका भी अतिशय मन मोहे।।
उपवन वापी से कूटों से, परकोटों से सुर भवनों से।
मंडित रमणीक महासुन्दर, कांचन मणिमय शुभरत्नों से।।2।।

पृथ्वी पर भ्रदसाल वह है, चंपक तरु आदिक से भाता।
है पांचशतक योजन ऊपर, नदंनवन अतिशय सुखदाता।।

इससे साढ़े बांसठ हजार, योजन ऊपर सौमनस बनी।
छत्तीस हजार महायोजन, ऊपर पांडुकवन सौख्यघनी।।3।।

चारों वन के चारों दिश में, अकृत्रिम चैत्यालय मानो।
प्रति मंदिर इक सौ आठ कही, जिन प्रतिमा अतिशयुत जानो।।
इनके दर्शन से घोर महा, मिथ्यात्व तिमिर भी नश जाता।
सम्यग्दर्शन की ज्योति जगे, आत्मा आत्मा को लख पाता।।4।।

भव भव से संचित पाप राशि, इक क्षण में भस्म हुआ करती।
जिनराज चरण की भक्ती ही, भवि के भव भव दुःख को हरती।।
पांडुकवन की विदिशाओं में, पांडुक आदिक हैं चार शिला।
तीर्थंकर के अभिषव जल से, वे पूज्य हुईं सुरवंद्य तुला।।5।।

जय भद्रसाल के जिनमंदिर, जय नंदनवन के जिनगेहा।
जय सौमनसं पांडुकवन के, जिनभवन जजूँ मैं धरनेहा।।
ये मूर्ति अचेतन होकर भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके सब संकट हर लेतीं।।6।।

–दोहा–

मेरुसुदर्शन की भविक, पूजा करो पुनीत।
मेरुसदृश उत्तुंग फल, लहो शीघ्र ही मीत।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-17

जम्बूद्वीपस्थ जंबूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

गिरि मेरु के उत्तर दिशी उत्तरकुरू शोभे अहा।
उसमें सुदिक् ईशान के जम्बूंतरू राजे महान।।
दक्षिण दिशा में देवकुरु नैऋत्य कोण सुहावनी।
तरु शाल्मली शुभरत्नमय, सुंदर दिखे शाखाघनी।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-अडिल्ल छंद–

सुरगंगा को नीर सुरभि प्रासुक किया।
जिनपद धारा देय सकल मल क्षय किया।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति लहे शिव धाम को।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयागिरि घनसार सुकुंकुम गंध ले।
सिद्धनि के प्रतिबिंब चरण को चर्च ले।।जंबू.।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

जल से धौत सुअक्षत मुक्ताफल समा।
पूंज धरूँ जिनसन्मुख भक्ती अनुपमा।।जंबू.।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही चमेली कमल केवड़ा फूल ले।
प्रभु के चरण चढ़ाऊँ भव के दुख टले।।जंबू.।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

सद्यजात[1] घेवर बावर मोदक घने।
चरु की पूजा नित्य क्षुधा व्याधी हने।।जंबू.।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रत्नदीप की ज्योति दशों दिश तम हरे।
अंतर भेद विज्ञान प्रगट हो भ्रम टरे।।जंबू.।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप अगनि में खेय धूम दशदिश उड़े।
कर्म पुंज प्रज्वले सतत आनंद बढ़े।।जंबू.।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरतरु के परिपक्व सरस फल लाय के।
प्रभु की पूजा करूँ हरष गुण गाय के।।जंबू.।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

वारि सुचंदन अक्षत फूल चरू मिले।
दीप धूप शुचि उत्तम फल युत अर्घ्य ले।।जंबू.।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य-सोरठा–

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तिनके जिन गृह को जजूँ।
पुष्पांजलि कर नित्य, जो पूजें सो शिव लहें।।1।।

इति जम्बूवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

गीता छंद

'जंबूतरू' की उत्तरी, शाखा विषे जिनधाम है।
सब देव देवी करें अर्चा, मैं जजूँ इह थान है।।
वर नीर चंदन आदि वसुविध, द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी, अर्घ्य से पूजन किया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूवृक्षस्यउत्तरशाखायां जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'द्रुम शाल्मलि' की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनगेह है।
योगी सदा ध्याते उन्हें, हम भी जजें धर नेह है।।वर नीर.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्य दक्षिणशाखायां जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर, दो जिनमंदिर सिद्ध।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दो सौ सौलह जानिये, जिनप्रतिमा अभिराम।
नित प्रति अर्घ चढ़ायके, शत शत करूँ प्रमाण।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्यविराजमानद्विशतषोडशजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

तरु की शाखा मांहि, रत्नमयी जिनबिंब हैं।
तिनकी यह जयमाल, भक्ति भाव से मैं पढ़ूं।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

जंबूतरु का स्वर्णिम स्थल, पांच शतक योजन है।
इस थल का परकोटा कांचन-मयी मनो मोहन है।।
पीठ आठ योजन की ऊँचा, मध्य माहिं चांदी का।
इस पर जंबूवृक्ष अकृत्रिम, पृथ्वीमय रत्नों का।।2।।

यह तरु तुंग आठ योजन है, वज्रमयी जड़ जानो।
मणिमय तना हरित मोटाई, एक कोश परमानो।।
तरु की चार दिशाओं में हैं, चार महाशाखायें।
छहयोजन की लंबी इतने, अंतर से लहरायें।।3।।

मरकत कर्केतन मूँगा, कांचन के पत्ते उत्तम।
पांच वर्ण रत्नों के अंकुर, फल अरु पुष्प अनूपम।।
इसमें फल जामुन सदृश हैं, कोमल चिकने दिखते।
रत्नमयी हैं फिर भी अद्भुत, पवन लगत ही हिलते।।4।।

उत्तर शाखा पर जिन मंदिर, सुरगृह त्रय शाखा पे।
सम्यक्त्वी आदर व अनादर, व्यंतर रहते उनपे।।
तरु की चारों तरफ घेर कर, बारह पद्म वेदियाँ।
उनके अंतराल में तरु की, परिकर वृक्ष पंक्तियाँ।।5।।

एक लाख चालिस हजार इक सौ उन्नीस कहाएँ।
इन जंबू परिवार वृक्ष पर, सुर परिवार रहाऐं।।
मेरू की ईशान दिशा में, नीलाचल के दाएं।
माल्यवन्त के पश्चिम में, सीता के पूर्व कहाएँ।।6।

तरु स्थल के चारों तरफे, त्रय वन खंड कहाते।
फल फूलों युत सुरमहलों युत, जल वापी युत भाते।।
इस द्रुम के जिन गृह में इस सौ-आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
इसी तरह शाल्मली वृक्ष की, जानो सारी रचना।।7।।

शाल्मलि तरु के अधिपति व्यंतर, वेणु वेणुधारी हैं।
ये सुर सम्यक्त्वी जिन मत के, प्रेमी गुण धारी हैं।।
जितने जंबू शाल्मलि तरु हैं, उतने जिनमंदिर हैं।
क्योंकि सभी पर सुर रहते हैं, सबमें जिनमंदिर हैं।।8।।

दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम, हैं स्वतंत्र दो तरु के।
उनकी अरु सब जिन प्रतिमा की, करूँ वंदना रुचि से।।
सुर किन्नरियां नित गुण गातीं, वीणा की लहरों से।
दर्शन करके नर्तन कीर्तन, करतीं भक्ति स्वरों से।।9।।

–धत्ता–

जय जय जिन प्रतिमा,अद्भुत महिमा, पढ़े सुने जो जयमाला।
जय 'ज्ञानमति' श्री, सिद्धिवधू प्रिय, सो नर पावे खुशहाला।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षसिद्धकूटजिनालयसर्व-जिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-18

जम्बूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

इस जम्बूद्वीप के कुल पर्वत छह, हैं गजदंत गिरी चउ हैं।
वक्षाराचल सोलह सुन्दर, विजयार्ध गिरी सित चौंतिस हैं।।
इन सब पर शाश्वत जिनमंदिर, मणिमय शाश्वत जिन प्रतिमायें।
आह्वानन विधिकर मैं पूजूं, ये स्वात्म गुणों को दिलवायें।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-स्त्रग्विणी छंद–

पद्मद्रह नीर शीतल सुगंधित लिया।
नाथ के पाद में तीन धारा किया।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध के नाथ पादाब्ज को चर्चते।
देह की दाह मेटूं प्रभू अर्चते।।शाश्वते.।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोतियों के सदृश शालि के पुंज से।
पूजहँ आपको सौख्य पूरो अबे।।शाश्वते.।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मल्लिका पारिजातादि चुन के लिये।
पुष्प अर्पण करत कीर्ति सौरभ किये।।शाश्वते.।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरियाँ मोदकादी भरे थाल में।
पूजते आत्म तृप्ती सु तत्काल में।।शाश्वते.।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप कर्पूरपर ज्योति तमो वारती।
आरती से भरे ज्ञान की भारती।।शाश्वते.।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी उठे अभ्र में।
कर्म भस्मी हुये सौख्य हो स्वात्म में।।शाश्वते.।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।
मोक्ष की आश पूरो प्रभो शीघ्र में।।शाश्वते.।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अर्घ में रत्न धरके चढ़ाऊँ प्रभो।
रत्नत्रय दीजिये शीघ्र ही हे विभो।।शाश्वते.।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिधारा मैं करूँ, जिनवदपद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा–

जंबूद्वीप में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

'हिमवान' पर्वतकनकद्युतिमय द्वय तरफ बहुवर्ण का।
वर कूट ग्यारह में कहा इक सिद्धकूट जिनेन्द्र का।।
उस पर जिनेश्वर धाम है पूजा करुं अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पर्वत 'महाहिमवान' चांदी वर्ण का सुंदर दिखे।
इस उपरि आठ सुकुट पूरब सिद्धकूट परम दिखे।।उस पर.।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पर्वत 'निषध' है तप्त स्वर्णिम वर्णबहु द्वय पार्श्व हैं।
ह्रद वेदिका वन कूट नव में सिद्धकूट विख्यात है।।उस पर.।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'नीलगिरि' वैडूर्यवर्णी द्वयतरफ पचरंगिमा।
नव कूट में इक सिद्धकूट जजें सदा रवि चंद्रमा।।उस पर.।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेम्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'रूक्मी' अचल रूपामयी वर कूट आठ सुशोभते।
पूरब दिशी में 'सिद्धकूट' सुरेन्द्र का मन मोहते।।उस पर.।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शिखरी' अचल सोने सदृश शुभ कूट ग्यारह नित्य हैं।
पूरब दिशा में सिद्धकूट सुपूजते सब भव्य हैं।।उस पर.।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चार गजदंत अर्घ्य

–दोहा–

'माल्यवंत' गजदंत है, मेरु के ईशान।
वर्ण रुचिर वैडूयमणि, नवकूटों युत मान।।
मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर, पाऊं नव निधि रिद्धि।।7।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतईशानदिक्माल्यवान्गजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु के आग्नेय दिश, 'महासौमनस' नाम।
रजतमयी गजदंत यह, सातकूटयुत जान।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतआग्नेयदिक्महासौमनसगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु के नैऋत्यदिश, 'विद्युत्प्रभ' गजदंत।
वर्ण तपाये स्वर्णसम, नव कूटहिं शोभंत।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतनैऋत्यदिक्विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधमादनाचल' कहा, मेरु के वायव्य।
सातकूट युत स्वर्णसम, पूजें सुर नर भव्य।।मेरु.।।10।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतवायव्यदिक्गंधमादनगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–वक्षारपर्वत अर्घ-कुसुमलता छंद–

सीतानदि के उत्तर तट पर, भद्रशाल वेदी के पास।
'चित्रकूट' वक्षार स्वर्णमय, चार कूट के से मंडित खास।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर, श्रीजिनमंदिर बना विशाल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटेचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर तट पर, क्रम से 'नलिनकूट' वक्षार।
स्वर्णमयी पर चार कूट हैं, देव देवियाँ करें विहार।।नदी.।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटेनलिनकूटवक्षारपर्वत–स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार अचलपर, विद्याधर गण करें विहार।
पर्वत महिमा निरख निरख कर, तृप्त हुये मन हर्ष अपार।।नदी.।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटेपद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार मनोहर, सुर वनितायें करें विनोद।
चारण मुनिगण विहरण करते, समरसमय मन भरें प्रमोद।।नदी.।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटेएकशैलकूटवक्षारपर्वत–स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य वेदिका पास।
अचल 'त्रिकूट' चार कूटों युत, जिनगृह युत वक्षार सनाथ।।नदी.।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिसीतानदीदक्षिणतटेत्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

क्रम से फिर 'वैश्रवण' कूट है, देव देवियों से भरपूर।
वापी वन उद्यान मनोहर, मुनिगण करें पाप को दूर।।नदी.।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटेवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. यह गजदंतों का क्रम त्रिलोकसार के आधार से है। त्रि. गा. 663।

'अंजनगिरि' वक्षार मनोहर, स्वर्णवर्णमय अतिसुखकार।
सुर विद्याधर गगन गमनचर, ऋषिगण को भी है सुखकार।।नदी.।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटेअंजनगिरिवक्षारपर्वत–स्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार आठवां, योगीजन करते नित ध्यान।
निज आतम परमानंदामृत, अनुभव कर हो रहे महान्।।नदी.।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतअंजनात्मावक्षारपर्वत–स्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शंभु छंद

पश्चिमविदेह सीतोदा के, दक्षिण में भद्रसाल वेदी।
उस सन्निध 'श्रद्धावान' कहा, वक्षार कनकमय पर्वत ही।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेविजटावानवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, गिरि 'विजटावान' कहाता है।
वक्षार सदा चउकूटों युत, सुरनर सब के मन भाता है।।नदी.।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेविजटावानवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आशीविष' है वक्षार कहा, इस पर रत्नों की वेदी है।
परकोटे वापी उपवन से, जिनगृह से कर्मन भेदी है।।नदी.।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेआशीविषवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षार 'सुखावह' अतिसुन्दर, सुर ललना की क्रीड़ा भूमी।
यतिगण के विहरण से पावन, सबको आनंदकरी भूमी।।नदी.।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेसुखावहवक्षार-पर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, शुभ भूतारण्य बनी वेदी।
उस सन्निध 'चंद्रमाल' पर्वत, जन मन का मोह तिमिर भेदी।।नदी.।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटेचंद्रमालवक्षार-पर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षार मनोहर 'सूर्यमाल', सोने के भवन सुहाते हैं।
सुरललनाओं की वीणा के, तारों से जिनगुण गाते हैं।।नदी.।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटेसूर्यमालवक्षार-पर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'नागमाल' वक्षार अलच, अनुपम कांती छिटकाता है।
जिनवर के दर्शन करते ही, सबके अघपुंज नशाता है।।नदी.।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटेनागमालवक्षार-पर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षार सोलवां 'देवमाल', रत्नों की कांति लजाता है।
जिनदेव देव के गृह में नित, देवों का नृत्य कराता है।।नदी.।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटेदेवमालवक्षार-पर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंतीस विजयार्ध अर्घ-नरेन्द्र छंद

सीतानदि के उत्तरतट में, भद्रसाल वन पासे।
कच्छादेश विदेह बीच में, विजयारध गिरि भासे।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करने जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटेकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थितसिद्ध–कूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु के पश्चिम उस तटपर, देश सुकच्छा सोहे।
तामध रजताचल अतिसुंदर सुर किन्नर मन मोहे।।नव.।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेसुकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश महाकच्छा कहलाता, रूपाचल ता मध्ये।
विद्याधर ललना किन्नरियां, जिनगुण गाती तथ्ये।।नव.।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेमहाकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देशकच्छकावती सुमध्ये, रूपाचल सुखकारी।
सुरललना के वीणा स्वर से, जन जन का मनहारी।।नव.।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेमहाकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश कहा आवर्ता सुंदर, रूपाचल तसु बीचे।
रक्ता-रक्तोदा नदियों से, छहखंड होते नीके।।नव.।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेआवर्तदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश कहा 'लांगल' आवर्ता, तामध रूपाचल है।
तीनों कटनी पर वनदेवी, वापी जल निर्मल है।।नव.।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेलांगलावर्तादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुन्दर देश पुष्पकला के मधि रूपाचल मन भावे।
उभय तरफ पचपन-पचपन, खगनगरी मन ललचायें।।नव.।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेपुष्कलादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश पुष्कलावती सुहाता, उसमें रजतगिरी है।
विद्याधर की कर्मभूमियाँ, मुक्तीमार्ग पुरी हैं।।नव.।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीउत्तरतटेपुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

पूर्वविदेह विषे सीता के, दक्षिणतट में माना।
देवारण्य वेदिकासन्निध, वत्सादेश बखाना।।
मध्य रजतगिरि सिद्ध कूटपर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेवत्सादेशस्थितरजताचलसिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिणतट पर, देश सुवत्सा सोहे।
तीर्थंकर चक्री प्रतिचक्री, हलधर वहं नित होवें।।मध्य.।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

क्रम से देश महावत्सा में, रजताचल है जानो।
गंगा सिन्धू नदियों से भी, छह खंड होते मानों।।मध्य.।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेमहावत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश वत्सकावती वहाँ नित, कर्मभूमि मन भावे।
भव्य जीवगण कर्म अरो हन, मुक्तिरमा सुख पावें।।मध्य.।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेवत्सकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रम्यादेशे आर्यखंडे में असि मषि आदि क्रिया हैं।
क्षत्रिय वैश्य शूद्र त्रयवर्णी, होते सदा जहाँ हैं।।मध्य.।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश सुरम्या शुभ विदेह में, देह नाश कर प्राणी।
हो जाते हैं वे विदेह इस, हेतू सार्थक नामी।।मध्य.।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेसुरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रमणीया शुभ देश वहाँ पर, तीर्थंकर नित होते।
समवसरण में भव्यजीवगण, जिनधुनि सुन मल धोते।।मध्य.।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेरमणीयादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देशमंगलावती जहाँ पर, मुनिगण नित्य विचरते।
चिच्चैतन्य चमत्कारी निज, शुद्धातम में रमते।।मध्य.।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटेमंगलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–आडिल्ल छंद–

अपर विदेह नही सीतोदहिं इधर में।
भद्रसाल वनपास जु पद्मा नगरि में।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।43।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपरविदेह सुमाहिं नदी के अवर में।
देश सुपद्मा मध्ये आरजखंड में।।मध्य.।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेसुपद्मादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश महापद्मा छह खंडों युत सही।
असि मषि आदिक छह किरिया वहाँ नित कहीं।।मध्य.।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेमहापद्मादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश पद्मकावती मनोहर जानिये।
जिन चैत्यालय ठौर ठौर पर मानिये।।मध्य.।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेपद्मकावतीदेशमध्यरजताचल–स्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शंखा देश विषें जिनधर्महि एक है।
अन्य धर्म का नाम जहां नहिं लेश है।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेशंखादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह कर्मभूमी सदा।
मुनिवर आतम ध्याय कर्म से हों जुदा।।मध्य.।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेनलिनीदेशमध्यरजताचलस्थित-सिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कुमुद देश के माहिं जिनेश्वर नित रहें।
समवसरण में भविक, धर्म अमृत लहें।।मध्य.।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेकुमुददेशमध्यरजताचलस्थित-सिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सरित देश में सदा मुमुक्षु जन बसें।
मोक्ष प्राप्ति की आश धरें तन को कसें।।मध्य.।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटेसरितदेशमध्यरजताचलस्थित-सिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–लोल तरोल छंद–

सीतोदा के उत्तरदिक में, देवारण्य निकट वप्रा में।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।51।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रादेशस्थितरजताचलसिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव सुवप्रा आरज खंड में, ईति भीति दुर्भिक्ष न उनमें।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।52।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुवप्रादेशस्थितरजताचलसिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश महावप्रा सुखदाता, स्वर्ग मोक्ष का सही विधाता।।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।53।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे महावप्रादेशस्थितरजताचल–सिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश वप्रकावती सुहाता, सुरनर किन्नर के मन भाता।।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।54।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रकावतीदेशस्थितरजताचल-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गंधा देश विषें जिनगेहा, उन्हें जजें सुरनर धर नेहा।।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।55।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधादेशस्थितरजताचल जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश सुगंधा मुक्ति प्रदानी, मुनि तप करें वरें शिवरानी।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।56।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुगंधादेशस्थितरजताचल–जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश गंधिला में जो जन्में, पूर्वकोटि आयु वर उनमें।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।57।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधिलादेशस्थितरजताचल–जिनालय-जिनबिंबेम्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गंधमालिनी में होते जो, तनु ऊँचे वर धनुष पांचसौ।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोह, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।58।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधामालिनीदेशस्थितरजताचल-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई छंद

'भरतक्षेत्र' में हैं छहखंड, विजयाद्रि इस आरज खंड।
सिद्धकूट वर श्री जिनधाम, जिनपद पूजूँ करूँ प्रणाम।।59।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'ऐरावत' अधिरजत गिरीश, तापर सिद्धकूट जिनईश।
जल गंधादिक अर्घ मिलाय, पूजन करूँ मुदित गुणगाय।।60।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

इस जंबूद्वीप में हिमवन आदिक, नग पर छह जिनमंदिर है।
गजदंतों पर चउजिनमंदिर, सोलह वक्षारचल पर हैं।।
चौंतिस विजयार्ध अचल पर हैं, जिनमंदिर साठ अकृत्रिम हैं।
इन पूजूँ नित प्रति अर्घ चढ़ा, ये निज सुखदाता अनुपम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् विजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सब जिनगृह में जिन प्रतिमायें, इकसौ अठ इकसौ आठ कहीं।
ये चौंसठ सौ अस्सी मूर्ति, जिनवर समपुण्य प्रदायक हीं।।
इनकी पूजा भक्ती करते, संपूर्ण अमंगल दूर भगें।
निज आतम अनुभव आते ही, निज में निज आतम ज्योति।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयमध्यविराजमानषट्सहस्र-चतुशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

इस जंबूद्वीप में मेरु सुदर्शन, पर सोलह जिनमंदिर हैं।
जंबू तरु शाल्मलि तरु के दो बाकी पर्वत साठ कहे।।
ये सब अठसत्तर जिनमंदिर, शाश्वत रत्नों के शोभे हैं।
इन सबको अर्घ चढ़ाकर के पूजत ही अनुपम सुख हो है।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिसुदर्शनमेरुजम्बूतरुशाल्मलितरूकुलाचलादिस्थित-अष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

इन अठसत्तर जिनमंदिर में, जिन प्रतिमायें शाश्वत राजें।
ये आठ हजार चार सौ चौबिस, जिनमूर्ति सब सुख साजें।।

गणधर मुनिगण सुरगण नरपति, खगपति भी वंदन करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे यम का बंधन हरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविराजमानअष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय तीर्थंकर सुखआकर, जय जय तुम नाम मंत्र माना।
जय जय तुम मूर्ति अचेतन भी, सब कुछ फल देतीं जग जाना।।
जय जय कुल पर्वत के जिनगृह, जय जिनगृह गजदंताचल के।
जय जय वक्षारों के जिनगृह, जय जय जिनगृह रजताचल के।।1।।

त्रय कुल पर्वत क्रम से सौ दो सौ चउसौ योजन ऊँचे हैं।
आगे त्रय क्रम से चउसौ दो सौ सौ योजन ही ऊँचे हैं।।
हिमवन दससौ बावन योजन, कुछ अधिक सुविस्तृत विख्याता।
आगे चौगुने कहे फिर आधे-आधे हैं यह श्रुत ख्याता।।2।।

ये क्षेत्र बराबर लंबे हैं, इन मध्य सरों में कमल खिले।
उन पर श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि, लक्ष्मी देवी हैं निज महले।।
गंगा सिंद्धू आदिक चौदह, नदियाँ इन सरवर से निकलीं।
भरतादि सात क्षेत्रों में नित बहतीं फिर लवणोदधि में मिलीं।।3।।

गंजदंत मेरु के निकट पांचसौ, योजन ऊँचे माने हैं।
निषधाचल नील निकट चउसौ, योजन ऊँचे मुनि जाने हैं।।
पण शत योजन विस्तृत ये तीस, सहस दोसौ नव लंबे हैं।
विदिशा में मेरु के नग तक, गजदंत सदृश ये लंबे हैं।।4।।

वक्षार पांचसौ योजन विस्तृत, नग से नदि तब लंबे हैं।
नग निकट चारसौ योजन के, नदि निकट पांचसौ तुंग रहें।।
सोलह सहस पांचसौ बारह, योजन क्षेत्र बराबर हैं।
इनके जिनगृह को वंदू मैं, ये मुक्ति श्री ललना घर हैं।।5।।

सब रचताचल पच्चिस योजन, ऊँचे पचास ही विस्तृत हैं।
ये क्षेत्र बराबर लंबे त्रय कटनीयुत खगनगरी युत हैं।।
नग पर कूटों के देव भवन, वर सिद्धकूट पर जिनगृह हैं।
चारण ऋद्धि मुनिगण विहरें, वंदन करते स्तुति में रत हैं।।6।।

शाश्वत जिनमंदिर वंदन से, सब पाप समूह विनश जाते।
सब इष्ट वियोग अनिष्ट योग, टलते रोगादि विनश जाते।।
व्यंतर डाकिनि शाकिन बाधा, संपूर्ण उपद्रव टलते हैं।
अतिशायि पुण्य रवी उगता, धन धान्य सुयश सुख मिलतें हैं।।7।।

हे नाथ! आपकी भक्ति से, मुझ घट में ज्ञान प्रभाव खिले।
मुरझाया समकित कमल खिले, रत्नत्रय निधियाँ शीघ्र मिले।।
मोहांधकार रात्री विनशे, मुझको समरस पीयूष मिले।
शुभ 'ज्ञानमति' प्रगटित होकर, जग में चमके सुप्रकाश मिले।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-19

विजयमेरु पूजा

अथ स्थापना-दोहा

पूर्व धातकी खंड में, विजयमेरु अभिराम।
तिसमें सोलह जिनभवन, हैं शाश्वत गुणधाम।।1।।
जिनवर प्रतिमा मणिमयी, शिवसुखफल दातार।
आह्वानन विधि से यहाँ, पूजूँ अष्ट प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं- चामर छंद

क्षीरसिंधु नीर लाय स्वर्णभृंग में भरूँ।
श्री जिनेन्द्र पद में चढ़ाय कर्म मल हरूँ।।
मेरुविजय के जिनेन्द्र गेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धि हेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

अष्टगंध अतिसुगंध हेमपात्र में लिये।
नाथ पाद अर्च के समस्त दाह नाशिये।।मेरु.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंद्रकांति के समान श्वेत शालि लाइया।
नाथ पाद के समीप पुंज को चढ़ाइया।।मेरु.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

पारिजात मोगरा जुही गुलाब लाइया।
कामनाश हेतु आप पाद में चढ़ाइया।।मेरु.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मालपूप खज्जिकादि शर्करा विमिश्र ले।
भूख व्याधि नाशहेतु आपको समर्पित ले।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में संजोय दीप आरती करू।
भेदज्ञान को प्रकाश ज्ञान भारती वरूँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अग्निपात्र में सदा सुगंध धूप खेवते।
पापपुंज को जलाय स्वात्मसौख्य सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव आम और अनार लाय थाल में भरे।
मोक्षफल निमित्त आज आप अर्चना करें।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतादि लेय अर्घ्य थाल में।
तीन रत्न प्राप्ति हेतु पूजहूँ त्रिकाल में।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

परमशांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ प्रत्येक अर्घ

सोरठा

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, जिनवर प्रतिमा मैं जजूँ।
निज आतम कर शुद्ध, पाऊँ परमानंद मैं।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

विजय मेरु के पृथ्वी तल पर, भद्रशाल वन सोहे।
उसमें पूरबदिशि जिनमंदिर, सुरनरगण मन मोहे।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में, बसूँ मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु के भद्रशाल में, दक्षिणदिश जिनधाम।
शाश्वत जिनवर बिंब मनोहर, अतुल अमल अभिरामा।।जल फल.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दुतिय मेरु के भद्रशाल में, पश्चिम दिश जिनगेहा।
जिनप्रतिमा को सुरपति नरपति, वंदे भक्ति सनेहा।।जल फल.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजय सुराचल भद्रशाल में, उत्तरदिश जिनधामा।
भवविजयी की प्रतिमा उनमें, जजत लहें शिवधामा।।जल फल.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चाल छंद-नन्दीश्वर पूजा

श्री विजय मेरुवरशैल, जजतें अघ नाशें।
नंदनवन पूरब जैन, मंदिर अति भासे।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय, आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस मेरू दक्षिण माहिं, नंदन वन प्यारा।
जिनभवन अनूपम ताहिं, सब जग में न्यारा।।यतिगण.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदनवन पश्चिम माँहिं, जिन मंदिर भावे।
इस ही मेरू पर इंद्र, परिकर सह आवें।।यतिगण.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तर दिश नंदन रम्य, जिनवर आलय है।
इस विजय मेरु के मध्य, धर्म सुधालय है।।यतिगण.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कुसुमलता छंद

विजयमेरु नंदनवन ऊपर, वन सौमनस कहा सुखकार।
अकृत्रिम जिनभवन पूर्वदिश, सुर किन्नर मन हरत अपार।।

मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य चढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस वनी के, दक्षिण दिश जिन भवन विशाल।
गर्भालय में मणिमय प्रतिमा, भविजन पूजन करत त्रिकाल।।मैं पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस वनी में, जिनवर सदन मदन मद हार।
मृत्युंयि[1] की प्रतिमा उनमें, मुनिगण वंदत मुद मनधार।।मैं पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस रम्यवन, उसमें उत्तर दिश मंझार।
श्रीजिनमंदिर में जिनप्रतिमा, नितप्रति वंदूं बारम्बार।।मैं पूजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई छंद

विजयमेरु पांडुकवन जानो, पूरब दिश जिनभवन बखानो।
सुरपति खगपति नित्य जजें हैं, हम भी अर्घ्य चढ़ाय भजे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपाण्डुकानस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस पांडुकवन दक्षिण जानो, शाश्वत श्री जिनभवन महानो।
सुरललना जिनवर गणु गावें, हम भी पूजें जिनपद ध्यावें।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकानस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. आयुकर्म से रहित जिनेश्वर।

इस वन में पश्चिम दिश माहीं, जिनगृह सम उत्तम कुछ नाहीं।
किन्नरियाँ वीणा स्वर साजें, हम भी पूजें सब अघ भाजें।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकानस्थितपश्चिमदिक्‌जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु पांडुकवन साहे, जिनवर भवन सबन मन मोहें।
देव देवियाँ जिनपद पूजें, हम भी यहाँ तुम्हें नित पूजें।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकानस्थितउत्तरदिक्‌जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा-पूर्णार्घ्य

सोलह जिनवर भवन हैं, विजयमेरु के नित्य।
अर्चूं पूरण अर्घ्य ले, पूर्ण सौख्य हो नित्य।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनगृह के जिनबिंब को, नमूँ भक्ति मन लाय।
सत्रह सौ अठबीस हैं, पूजूँ अर्घ चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविजरामानएकसहस्रसप्तशताष्टा-विंशति-जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु पांडुकवन विदिक्, पांडुकशिलादि चार।
नमूँ नमूँ जिनवर न्हवन, पूत शिला सुखकार।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपांडुकवनविदिक्‌पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

यह विजयमेरु चौरासि सहस, योजन उत्तुंग कहाता है।
वन भद्रसाल से पंचशतक, योजन पर नंदन आता है।।

योजन साढ़े पचपन हजार, ऊपर सौमनस सुहाता है।
योजन अट्ठाइस सहस जाय, पांडुकवन सबको भाता है।।1।।

दोहा

इसमें सोलह जिनभवन, त्रिभुवनतिलक महान।
उनमें जिनप्रतिमा विमल, नमूँ नमूँ गुण खान।।2।।

चाल-हे दीनबंधु

देवाधिदेव श्री जिनेन्द्रदेव हो तुम्हीं।
अनादि औ अनंत स्वयंसिद्ध हो तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधि पाय, मैं धनवान हो गया।।3।।

रस गंध फरस रूप से मैं शून्य ही कहा।
इस मोह से ही मेरा संबंध ना रहा।।हे नाथ.।।4।।

ये द्रव्यकर्म आत्मा से बद्ध नहीं है।
ये भावकर्म तो मुझे छूते भी नहीं हैं।।हे नाथ.।।5।।

मैं एकला हूं शुद्ध, ज्ञान दरश स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार, ज्योति पुंज अरूपी।।हे नाथ.।।6।।

मैं नित्य हूँ, अखंड हूँ, आनंद धाम हूँ।
शुद्धात्म हूँ परमात्म हूँ, त्रिभुवन ललाम हूँ।।हे नाथ.।।7।।

मैं पूर्ण विमल ज्ञान, दर्श वीर्य स्वभावी।
निज आत्मा से जन्य, परम सौख्य प्रभावी।।हे नाथ.।।8।।

परममार्थ नय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।हे नाथ.।।9।।

व्यवहारनय से यद्यपी, अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही, डूबता रहा।।हे नाथ.।।10।।

फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलम्ब दे, भव पार करैया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधि पाय, मैं धनवान हो गया।।11।।

मैं आश यही लेके नाथ पास में आया।
अब वेग हरो जन्म व्याधि, खूब सताया।।हे नाथ.।।12।।

हे दीन बंधू शीघ्र ही निज पास लीजिये।
भव सिंधु से निकाल, मुक्तिवास दीजिये।।हे नाथ.।।13।।

घत्तानंद छंद

जय जय सुखकंदा, अमल अखंडा,
त्रिभुवन कंदा तुमहि नमूँ।
जय 'ज्ञानमतिय' मम, शिवतिय अनुपम,
तुरत मिलावो नित प्रणमूँ।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-20

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप धातकी वृक्ष

शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

विजयमेरु के उत्तरकुरु में, वृक्ष धातकी सोहे।
इसी मेरु के देवकुरु में, शाल्मलि तहें मन मोहे।।
इनकी एक एक एक शाखा पर, जिनमंदिर सुखकारी।
इन दो मंदिर की जिनप्रतिमा, पूजों अघतम हारी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयजिनबिंब–समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयजिनबिंब–समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयजिनबिंब–समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं- नाराच छंद

हिमाद्रि गंग नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
जिनेश पादपद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

सुगंध अष्टगंध लेय, हर्ष भाव ठानिये।
जिनेश पादपद्म चर्च, मोह ताप हानिये।।तरु तने.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

कमोद जीरिका अखंड, शालि धान्य लाइये।
सुपुंज आप पास दे, अखंड सौख्य पाइये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

गुलाब कुन्द पारिजात, पुष्प अञ्जली लिये।
जिनेश पाद पूज कामदेव को हनीजिये।।तरु तने.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

सुमिष्ट फेनि लाडु व्यंजनादि भांति भांति के।
जिनेश पाद पूजते, भगे क्षुधा पिशाचिके।।तरु तने.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अखण्ड ज्योतिवान दीप, स्वर्ण पात्र में जले।
जिनेन्द्र पाद पूजते हि, मोहध्वांत भी टले।।तरु तने.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशांग धूप लेय अग्नि पात्र में सुखेइये।
जिनेश सन्निधी तुरंत कर्म भस्म देखिये।।तरु तने.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

इलायची लवंग दाख औ बदाम लाइये।
जिनेश को चढ़ाय मुक्ति वल्लभा को पाइये।।तरु तने.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जलाधि अष्ट द्रव्य लेय अर्घ्य को बनाइये।
अनर्घ्य सौख्य हेतु नित्य नाथ को चढ़ाइये।।तरु तने.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

वृक्ष धातकी शाल्मली, पूर्वधातकी माहिं।
उनके जिनपगृह नित जजूँ, पुष्पांजलि चढ़ाहिं।।1।।

इति धातमीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान कोण में, वृक्ष आंवले जैसा।
तरु की उत्तर गत शाखा पर, जिनगृह अनुपम वैसा।।
यतिपति वंदित जिनवरप्रतिमा, कलिमल नाश करे हैं।
पूजन करते भविजन मिलकर, यम का पाश हरे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, शाल्मली द्रुम भारी।
इसकी दक्षिणगत शाखा पे, जिन मंदिर भवहारी।।
गणधर भी नित ध्याते रहते, मन में उन प्रतिमा को।
जनम जनम अघ नाशन हेतु, हम भी पूजें उनको।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

पूर्वधातकी खंड में, धातकि शाल्मलि वृक्ष।
इनके श्रीजिनभवन को, पूजूँ कर मन स्वच्छ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोनों तरु के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह जानिये, जजत हरूँ जगडिंभ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडसंबंधीधातकीशाल्मलिवृक्षशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्य-विराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान दिशा में, वृक्ष धातकी सोहे।
नैऋत दिश में वृक्ष शाल्मलि, सुरगण का मन मोहे।।
इक इक के परिवार तरू दो, लाख सहस अस्सी हैं।
दो सौ अड़तीस इतने सबमें, प्रतिमा शाश्वतकी हैं।।1।।

नाराच छंद

जिनेश बिंब एक सौ सुआठ सर्व वृक्ष में।
प्रमुख्यता धरे महान एक ही तरू इमें।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।2।।

अनादि हो अनंत हो प्रसिद्ध सिद्धरूप हो।
दयाल धर्मपाल तीन काल एक रूप हो।।नमो.।।3।।

अलोक लोक में प्रधान तीन लोक नाथ हो।
अनेक रिद्धि के धनी सुभक्ति के सनाथ हो।।नमो.।।4।।

महान दीप्यिमान मोहशत्रु को कृपान हो।
प्रसन्न सौम्य आस्य[1] हो पवित्र हो पुमान हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।5।।

दिनेश[2] तें विशेष तेज की महान राशि हो।
कुमोदनी भवीक हेतु तें[3] सुधा निवास हो।।नमो.।।6।।

भवाब्धि डूबते तिन्हें तुम्हीं सुकर्णधार हो।
गुणौध[1] रत्न के समुद्र सार में सु सार हो।।नमो.।।7।।

–दोहा–

तुम गुण गण मणि अगम हैं, को गण पावे पार।
जो गुण लव कंठहिं धरे, सो उतरे भव पार।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थश्रीविजयमेरुसंबंधीधातकीशाल्मलिवृक्षास्थित-जिनालयजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-21

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पूर्व धातकी खंड द्वीप में, छह कुल पर्वत सोहें।
गजदंताचल वक्षाराचल, चउ सोलह मन मोहें।।
रचताचल चौंतिस इन सबके, जिनगृह साठ कहाये।
आह्वानन कर पूजूँ रुचि से, परमानंद बढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं- वसंततिलका छंद

गंगा नदी जल पवित्र सुभृंग में है।
धारा करूँ त्रय प्रभो! चरणांबुजों में।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभाव सुख चिन्मय ज्ञानरूपी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिसा घनसार जो है।
पादाब्ज में चरचते निजकीर्ति पाऊँ।।पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोती समान अति उज्ज्वल शालि लाऊँ।
पूजूँ सुपुंज धरके जिन सौख्य हेतु।।पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बेला गुलाब कुसुमावलि मैं चढ़ाऊँ।
दीजे निजात्म सुख संपद शीघ्र मेरी।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभाव सुख चिन्मय ज्ञानरूपी।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पेड़ा पुआ अंदरसा भर थाल लाऊँ।
तृष्णादि व्याधिहर नाथ! तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति कर आरति मैं उतारूँ।
मोहांधकार हर भारति ज्ञान भर दो।।पूजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

खेऊँ सुगंधवर धूप धुआं उड़े है।
संपूर्ण पाप अरि भस्म करो हमारे।।पूजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेव अनार लाऊँ।
हे नाथ! मोक्षफल हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरादि अर्घ रजतादिक पुष्प लेके।
दीजे त्रिरत्न प्रभु अर्घ तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

-दोहा-

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविन्द।
त्रिभुवन में सुख शांति हो, मिले निजात्म अनिन्द।।10।।
शांतये शांतिधारा।
सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजलि करंत।
सुख संपति संपति बढ़े, निज निधि मिले अनंत।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पूर्व धातकी खंड, साठ नगों पर जिन निलय।
करूँ कर्म शतखंड, पुष्पांजलि कर पूजते।।1।।
इति मण्डलस्योपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्।

छह कुलाचल अर्घ-नरेन्द्र छंद

द्वीपधातकी में हिमवन गिरि, कांचन कांती धारे।
बीच सरोवर पद्म तास में, कमल मणीमय सारे।।
मध्य कमल पर 'श्रीदेवी' है, नग पर कूट सुग्यारे।
सिद्धकूटगत जिनमंदिर में, जिनपद पूजों सारे।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण महहिमवन, रजतवर्ण तामें है।
महापद्मद्रह मध्य कमल में, 'ह्रीदेवी' माने हैं।।
नग पर आठ कूट में इकपर, चैत्यालय सुखकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनपद पूजें, गुण गावें नर नारी।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थमहाहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण निषधाचल, तप्तस्वर्ण छवि मोहे।
द्रह तिगिंछ तामध्य कमल में, 'धृतिदेवी' अति सोहे।।
गिरि पर हैं नवकूट एक के, सिद्धकूटमंदिर मैं।
मृत्यजयी श्री जिनप्रतिमा को, पूजत ही सुख क्षण में।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थनिषधकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर नीलाचल, छवि वैडूर्यमणी है।
बीच केसरी द्रह कमलों पे, मध्य 'कीर्तिदेवी' है।।
नव कूटों में सिद्धकूट पर, जिनगृह में जिनप्रतिमा।
अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ निरंतर, भव विजयी जिनप्रतिमा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थनीलकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर रूक्मीगिरि, रजतवर्ण छवि राजें।
पुंडरीकद्रव मध्य कमल में, 'बुद्धीदेवी' राजे।।
कूट आठ में सिद्धकूट पर, जिनमंदिर मन भावे।
कामजयी जिनप्रतिमा पूजें, इंद्र देवगण आवें।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थरुक्मिकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु के उत्तर शिखरी, पर्वत कांचन छवि है।
महापुंडरीकहिं ह्रद कमलों, में लक्ष्मी निवसत हैं।।
ग्यारह कूट उन्हों में इक पर, जिनवरनिलय बखानो।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, पूजूँ मैं दुख हानो।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थशिखरीपर्वतसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गजदंत के अर्घ

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान कोण में, माल्यवान गजदंता।
नवकूटों युत सिद्धकूटधर, नीलम छवि छलकंता।।

जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञान भानु परकासे।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिमाल्यवानगजदंतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु आग्नेय कोण में, सौमनस्य गजदंता।
रौप्यमयी वह सातकूट में, सिद्धकूट अघहंता।।
जिनमंदिर में श्रीजिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनस्यगजदंतसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, विद्युतप्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि नवकूटों में, सिद्धकूट चमकंता।।
जिनमंदिर में श्रीजिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयमेरु वायव्य कोण में, गंधमादनो सोहै।
कांचन सम द्युति सात कूटयुत, सिद्धकूट मन मोहै।।
जिनमंदिर में श्रीजिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिमाल्यवानगजदंतसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षारपर्वत जिनालय अर्घ

जोगीरासा

पूर्व विदेह नदी सीता के, उत्तरतट वक्षारा।
भद्रसाल वेदी सन्निध में, 'चित्रकूट' सुखकारा।।

उस पर जिनमंदिर है सुंदर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ होवे भव दुख छेवा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

क्रम से 'नलिन कूट' नामक है, गिरि वक्षार सुहाना।
मुनिगण उस पर ध्यान धरत हैं, पावन सौख्य महाना।।उस.।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिलिनकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार तीसरा, सब जन मन को प्यारा।
इस पर चार कूट उनमें से, सिद्धकूट अघ हारा।।उस.।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपद्मवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार बगीचे, बावड़ियों से सोहे।
देव देवियाँ खेचर खेचरनी, किन्नर मन मोहे।।उस.।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिएकशैलवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई

सीता नदि के दक्षिण तास, देवारण्य वेदिका पास।
नाम 'त्रिकूट' कहा वक्षार, तापर जिनगृह पूजूँ सार।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधित्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

है 'वैश्रवण' दुतिय वक्षार, तापर सिद्धकूट मनहार।
तामें जिनगृह में जिनबिंब, अर्घ्य चढ़ाय जजूँ तज डिंभ।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अंजन' है तीजा वक्षार, वन वेदी सुर महल अपार।
तापर जिनगृह में जिनराज, अर्घ्य चढ़ाय लहूँ शिवराज।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अंजनआत्मा' है वक्षार, तापर मुनिगण करत विहार।
इस पर जिनमंदिर अभिराम, जिनमूरति को करूँ प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनात्मावक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जोगोरासा

द्वीपधातकी अपर विदेहा, सीतोदा तट दायें।
भद्रसाल सन्निध वक्षारा, 'श्रद्धावान्' कहाये।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भय हारी।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विजआवान्' दुतिय वक्षारा, सुरकिन्नर चितहारी।
ऋषिगण विचरण करते रहते, परमानंद विहारी।।उस.।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिविजटावान्वक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार तीसरा, तापर उपवन वेदी।
सुरगण के प्रसाद मनोहर, मधुर पवन श्रमछेदी।।उस.।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिआशीविषवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ वक्षार 'सुखावह' चौथा, अतिरमणीय सुहाता।
चार कूट हैं मन को भते, त्रय सुरगृह सुख दाता।।उस.।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुखावहवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई

द्वीप धातकी अपर विदेह, सीतोदा उत्तर तट येह।
देवारण्य निकट वक्षार, 'चंद्रमाल' पर जिनगृह सार।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिचन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सूर्यमाल' दूजा वक्षार, तापर जिनवर गृह सुखकार।
तामें सुरनर नत जिनबिंब, मैं पूजूँ सिद्धन प्रतिबिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नागमल' तीजा वक्षार, सुर खग मुनिगण करत विहार।
भवविजयी श्रीजिनवर धाम, पूजन करूँ लहूँ शिवधाम।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनागमलवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'देवमाल' चौथा वक्षार, दर्शनीय उत्तम गिरि सार।
तापर मदनजयी जिनगेह, जिनप्रतिमा को जजूँ सनेह।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिदेवमालवक्षारपर्वतस्थितसिद्ध-कूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ

चौबोल छंद

'कच्छादेश' विदेह कहाता, उसके मधि रूपाद्रि रहें।
रक्ता रक्तोदा नदियों से, कच्छा के छहखंड कहे।।
आर्यखंड मधि क्षेमा नगरी, जिसमें तीर्थंकर रहते।
रजतगिरि के जिनमंदिर को, अर्घ चढ़ाकर हम यजते।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' आर्यखंड में, क्षेमपुरी है श्रेष्ठ मही।
तीर्थंकर चक्री आदी से, जिनमंदिर से शोभ रही।।
देश मध्य के रजतगिरी पर, जिन चैत्यालय धर्ममही।
उसकी सब प्रतिमा को पूजूँ , अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति सही।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' में रूपाचल नवकूटों सहित कहा।
उसके सिद्धकूट में जिनगृह, प्रतिमा यजते पाप दहा।।
इस विदेह के आर्यखंड के, मध्य अरिष्टापुरी महा।
नितप्रति केवलि श्रुतकेवलि मुनि, ऋषिगण विचरण करें वहाँ।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहाकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मध्य में, विजयारधगिरि रजतसमा।
तीन कटनियों से खगनगरी, इकसौदश से श्रेष्ठतमा।।
इस विदेह के आर्यखंड में, कही अरिष्टापुरी सुखदा।
विजयारध के सिद्धकूट को, पूजत नहिं हो दुःख कदा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिकच्छावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश रम्य 'आवर्ता' उसमें, रजतगिरि अतिशय महिमा।
उसके सिद्धकूट पर जिनगृह, इस सौ आठ जैनप्रतिमा।।
आर्यखंड खड्गानगरी के, मुनिगण भी वहाँ दर्श करें।
हम भी अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, गर्भवास के दुःख हरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिआवर्तादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' उसमें, रजताचल शुभ राज रहा।
इस पर सिद्धकूट मंदिर है, सुर असुरों से पूज्य कहा।।
आर्यखंड मंजूषा नगरी, ताके नर नारी रुचि से।
अकृत्रिम जिनप्रतिमा पूजें, जिनवर गुण गाते मुर से।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिलांगलावर्तादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' के रूपाचल, उस पर शुभ नव कूट कहें।
सिद्धकूट पर जिनमंदिर में अनुपम प्रतिमा शुद्ध रहें।।

आर्यखंड औषधि नगरी के, सब जन भक्ति सहित भजते।
हम सब अर्घ्य चढ़ाकर जिनपद, पूजा कर सब दुःख तजते।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपुष्कलादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मध्य में, रजतगिरी जन मन हरती।
उसके सिद्धकूट जिनगृह की, सुर ललना कीर्तन करती।।
पुंडरीकिणी नगरी के जन, विद्यावल से गमन करें।
हम भी यहीं अर्घ्य अर्पण कर, श्रद्धा से नित नमन करें।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जोगीरासा छंद

'वत्सादेश' विदेह कहाता, तामधि विजयारध है।
उसपे सिद्धकूट चैत्यालय, जिनवरबिंब अनघ है।।
इस विदेह में पुरी सुसीमा, आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' के मधि सुंदर, रजतगिरी शाश्वत है।
सिद्धकूट जिनमंदिर उस पर, मुनिगण नित ध्यावत हैं।।
इस विदेह में पुरी कुंडला, आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधि सुंदर, रूपाचल नव कूटा।
सिद्धकूट में श्रीजिनमंदिर, पूजत ही अघ छूटा।।
इस विदेह में अपराजितपुरि, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहावत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' मध्य में, रजताचल मन भावे।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, पूजन कर सुख पावे।।
इस विदेह में प्रभंकरापुरि, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह तास मधि, रजतगिरी अति सोहे।
सिद्धकूट में जिनप्रतिमा को पूजत ही सुख होहै।।
अंकावति नगरी विदेह में, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' तामधि उज्जवल, रूपाचल मन माना।
सिद्धकूट के जिन बिंब को, जजतें पातक हाना।।
पद्मावतिपुरी विदेह में, आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया' सुंदर, तामधि रजतगिरी है।
सिद्धकूट की जिनवर प्रतिमा, जजतें दुःख हरी हैं।।
इस विदेह में शुभापुरी है, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अनूपम, रजताचल तामें है।
सिद्धकूट जिनदेव सदा ही, दुख दरिद्र हाने हैं।।

इस विदेह पुरि रत्नसंचया, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमंगलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

'पद्मादेश' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
उस पर श्रीजिनगेह, पूजत पाप हरी है।।
पद्मा आरजखंड अश्वपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मादेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' माहिं, रजताचल मन भाना।
उस पर जिनवर धाम, पूजत पाप पलाना।।
आरजखंड सुमध्य, सिंहपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुपद्मादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'महापद्मा' है देश, रूपाचल ता माहीं।
उसके श्रीजिनबिंब, जजतें पाप नशाहीं।।
आरजखंड सुमध्य, महापुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहापद्मादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पद्मकावति', रूपाचल अभिरामा।
सिद्धकूट के माहिं, पूजत हूँ जिनधामा।।
आरज खंड सुमध्य, विजयापुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शंखादेश' विदेह, विजयारध गिरि माना।
सिद्धकूट जिनगेहा, पूजत ही सुख दाना।।
आरजखंड सुमध्य, शुभ अरजा नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिशंखादेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नलिनादेश' विदेह, रूपाचल मन भावे।
तापर जिनवरगेह, पूजत शोक नशावे।।
आरजखंड सुमध्य, शुभ विरजा नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनलिनादेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कुमुदादेश' महान, रूपाचल अति सोहे।
तापर श्रीजिनधाम, पूजत ही सुख होहै।।
आरज खंड सुमध्य, कही अशोकपुरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिकुमुदादेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सरिता' देश महान, रूपाचल वर जानो।
ताके जिनगृह माहिं, जिनपद पूजन ठानो।।
आरजखंड सुमध्य, वीतशोक नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसरितादेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गीताछंद

'वप्रा' विदेह सुमाहिं सुंदर, रजतगिरि मन भावना।
नवकूट में इककूट पर है, जिनभवन अति पावना।।

इस देश आरजखंड में, विजयापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वीदेह 'सुवप्रा' मधी है, रजतगिरि उत्तम कहा।
तापे जिनालय में रतनमय, बिंब का अतिशय महा।।
इस देश आरजखंड में, पुरि वैजयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ देश 'महावप्रा' सुहाता, तास में विजयार्ध है।
उसपे जिनेश्वर मूर्तियों को, महामुनिगण ध्यात हैं।।
इस देश आरजखंड में, नगरी जयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ देश 'वप्रीकावती' में, रूप्यगिरि सुंदर कहा।
ऋषिगण विचरते हैं सदा, जिनवर सदन मन हर रहा।।
इस देश आरजखंड में, अपराजिता पुरि सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर देश 'गंधा' बीच में, विजयार्ध अनुपम शासता।
किन्नर गणों के गीत से, जिनवर भवन नित भासता।।
इस देश आरजखंड में, चक्रापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ देश 'सुगंधा' मधी है, रजतगिरि रूपामयी।
विद्याधरों की पंक्तियाँ, जिनवर भवन पूजें सही।।
इस देश आरजखंड में, खड्गापुरी है सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ देश 'गंधीला' मधी है, रजतगिरि अति सोहना।
गंधर्व सुरगण पूजते हैं, जिनभवन मन मोहना।।
इस देश आरजखंड में, नगरी अयोध्या सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ 'गंधमालिनि' देश में, विजयार्ध गिरि सुंदर कहा।
उस पर जिनेश्वर बिंब को, नित जजें सुर किन्नर अहा।।
इस देश आरजखंड में, नगरी अवध्या सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्ध–पर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

भरतक्षेत्र में हिमगिरि से, गंगा सिंधू उद्गमती।
रूपाचल की गुफा तले से, बाहर होके बहतीं।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या, तीर्थंकर जन होते।
रजताचल के जिनगृह जिनवर, बिंब जजत सुख होते।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थभरतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखरी से रक्ता रक्तोदा, नदियाँ निकलें जानो।
विजयारध की गुफा तले से, बाहर आती मानो।।

आर्यखंड के मध्य अयोध्या, पुरुष शलाका होते।
विजयारध के जिनमंदिर को, पूजत ही मल धोते।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थऐरावतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

द्वीप धातकी खंड पूर्व में, कुल पर्वत छह मन मोहे हैं।
मेरु विदिश में चार कहे, गजदतं साधु मन मोहे हैं।।
सोलह गिरि वक्षार व चौंतिस, रजताचल अति मनहारी।
अनके साठ जिनालय पूजूँ, वरूँ मोक्ष रमणी प्यारी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थभरतक्षेत्रसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत स्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।,

प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमायें, इक सौ आठ विराजे हैं।
छह हजार चार सौ अस्सी, पद्मासन से राजें हैं।।
पाँच शतक धनु तुंग रत्नमय, जिनवर प्रतिमा शाश्वत हैं।
इनकी पूजा भक्ती करते, मिला जिन पद शाश्वत है।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्यविराजमान-षट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्व धातकी में इक मेरू, 'विजय' नाम से सुरगिरि है।
इसके सोलह जिनमंदिर हैं, धातकि तरु शाल्मलि तरु है।।
कुल पर्वत आदि सब शाश्वत, जिनमंदिर अठ्ठत्तर हैं।
इनको पूजूँ अर्घ चढ़ाकर, वंदन करें मुनीश्वर हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्तजिनालयेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन अठ्ठत्तर जिनमंदिर में जिन, प्रतिमा मणिमय राजे हैं।
आठ हजार चार सौ चौबीस, संख्या है गुण साजे हैं।।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति नर, इनकी स्तुति करते हैं।
मैं भी पूजूँ भक्ति भाव से, इनसे मनरथ फलते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविजरामान–अष्ट-सहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्व धातकी खंड के, जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शतशत करूँ प्रणाम।।1।।

स्रग्विणी छंद

नाथ! मुक्तीपती मुक्तिदाता तुम्हीं।
मैं नमूँ मैं नमूँ हो विधाता तुम्हीं।।
पूरिये नाथ! मेरी यही कामना।
स्वात्म की सिद्धि हो अन्य की चाह ना।।2।।

छे कुलाचल सरों के कमल खिले रहे।
श्री ह्री आदि देवी उन्हों में रहें।।
तीर्थंकर मातु सेवा करें भक्ति से।
पुण्य संचय करें भक्ति की युक्ति से।।3।।

छह जिनागार को सर्व साधू नमें।
चार गजदंत मंदिर मुनीगण नमें।।
सोहलों शैल वक्षार स्वर्णाभ हैं।
सोलहों जैनमंदिर हरें ताप हैं।।4।।

रूप्यगिरि चौंतिसों पर जिनालय दिपें।
वंदते ही अशुभ कर्म क्षण में खिपें।।
ये सभी साठ भूभृत मुनी मान्य हैं।
जैनमंदिर इन्हों के जगत् मान्य हैं।5।।

आपकी भक्ति से ज्ञानज्योति भरूँ।
आत्म निधि पायके सिद्धिकांता वरूँ।।
छोड़ बहिरात्मता अंतरात्मा बनूँ।
रत्नत्रय युक्ति से परम आत्मा बनूं।।6।।

नाथ! ऐसी कृपा कीजिये भक्त पे।
मुक्ति पर्यंत तव पाद मन में दिपें।।
आर्त रौद्रादि दुर्ध्यान की हानि हो।
धर्म शुक्लैक सद्ध्यान की प्राप्ति हो।।7।।

स्वात्म में लीन हो चित्त एकाग्र हो।
स्वात्म पीर्यूष का पान गुणकार हो।।
'ज्ञानमति' पूर्ण हो सौख्य भंडार हो।
भक्त तेरी भवांभेधि से पार हो।।8।।

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिंबेभ्यःजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-22

अचलमेरु पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

श्री अचलमेरु राजता है, अपर धातकि द्वीप में।
सोलह जिनालय तास में, जिनबिंब है उन बीच में।।
प्रत्यक्ष दर्शन हो नहीं, अतएव पूजूँ मैं यहाँ।
आह्वानन विधि करके प्रभो, थापूँ तुम्हें आवो यहाँ।।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-गीता छंद

गंगानदी का स्वच्छ प्रासुक, नीर झारी में भरूँ।
संसार के त्रयताप शांति, हेतु त्रयधारा करूँ।।
श्री अचलमेरु के जिनालय, और जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से, नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर चंदन गंध शीतल, भर कटोरी में लिया।
जिनपाद पंकज पूजते भवतप्त मन शीतल किया।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

दुग्धाब्धि फेन समान उज्ज्वल, धौत तंदुल थाल में।
जिनचरण वारिज के निकट धर, पुंज नाऊँ भाल मैं।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बेला चमेली मौलसिरि, सुरभित सुमन भर लाइया।
कंदर्प दर्प विनाशने को, नाथ चरण चढ़ाइया।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पकवान फेनी मोदकादिक, सरस थाली में भरें।
क्षुध रोह हर तुम पद कमल, पूजत क्षुधा डाकिनि हरें।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, अंधेर सब जग का हरे।
तुम चरण पूजा दीप से, मन ध्वांत को क्षण में हरे।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप अग्नी पात्र में खेऊँ सदा।
अंतर कलुष बाहर भगे नहिं स्वप्न में हो भ्रम कदा।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर आम अनार फल, अखरोट आदिक लाइया।
अक्षय सुखद फल हेतु जिनपद, पद्म निकट चढ़ाइया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवल, दीप धूप रु फल लिया।
निज संपदा के हेतु भगवन्! अर्घ तव अर्पण किया।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अचल मेरु के जिनभवन, पूजूँ भक्ति समेत।
पुष्पांजलिकर पूजते, जिनमंदिर भवसेतु।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अडिल्ल छंद

अचलमेरु में भद्रशाल वन जानिये।
तामें पूरब दिश जिनमंदिर मानिये।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूँ नित भाव से।
निजगुण संपति हेतु भजूँ अति चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तृतीय मेरु के भद्रशाल में राजता।
दक्षिणदिश जिनभवन अनूपम शासता।।अर्घ्यं.।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल में रम्य है।
पश्चिमदिश जिनसदन सकलसुखपद्म है।।अर्घ्यं.।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल उत्तर दिशी।
जिनमंदिर में जिनप्रतिमा अनुपमकृती।।अर्घ्यं.।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

अचलमेरु के नंदनवन में, पूर्व दिशी जिन गेहा।
जिनआतम अनुभव रसस्वादी, मुनिगण नमत सनेहा।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु नंदनवन दक्षिण, सुरवंदित जिनधामा।
इंद्रिय सुख त्यागी वैरागी, यति वंदे निष्कामा[1]।।नीरा.।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुद्धातम ध्यानी मुनि ज्ञानी, जिन का ध्यान धरे हैं।
अचलमेरु नंदन पश्चिम दिश, जिनगृह पाप हरे हैं।।नीरा.।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के नंदनवन में, उत्तर दिश जिनगृह है।
समरस निर्झर जल अवगाही, गणधर गण वंदत हैं।।नीरा.।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

---

1. इच्छा रहित।

दोहा

अचलमेरु वन सौमनस, पूरब दिश जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, सिद्ध करो सब काम।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, दक्षिण दिश जिनगेह।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, करो हमें गतदेह[1]।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, पश्चिम जिनगृह सिद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, करूँ मोह अरि बिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, उत्तर जिनगृह सार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, होऊँ भवदधि पार।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई-छंद

अचलमेरु पांडुकवन जान, पूरब दिश जिननिलय[2] महान।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन नाम, दक्षिण दिशि अनुपम जिनधाम।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. अशरीदी सिद्ध पद। 2. जिनमन्दिर।

अचलमेरु पांडुकवन कहा, पश्चिम दिश जिनमंदिर रहा।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन सही, उत्तर दिशि जिनगृह सुख मही।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

अचलमेरु चउवन विषै, चार चार जिनधाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ नित्य निष्काम।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में अतुल, जिनवर बिंब महान।
सत्रहसौ अठबीस हैं, झुक झुक करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के विदिश में, पांडुकशिलादि वंद्य।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ सुखकंद।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकदिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

कल्पवृक्ष चिंतामणी, चिच्चेतन भगवान्।
चिन्मूरति जिनमूर्ति को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।

रोलाछंद

जय जय अचल सुमेरु, शाश्वत सिद्ध महाना।
जय जय पुण्य निकेत, अतिशय सौख्य खजाना।।
जय जय श्री जिनगेह, सोलह स्वर्णमयी हैं।
जय जय श्री जिनबिंब, नाना रत्नमयी है।।1।।

मानस्तम्भ ध्वजादि, तोरण मणिमालये।
तीन कोट सिद्धार्थ, चैत्यतरू बहु गायें।।
वैभव अतुल असंख्य, सहजिक रहें वहाँ पर।।
सुरपति नरपति नित्य, पूजन करें तहाँ पर।।2।।

चारण ऋषिगण आय, आतम ध्यान धरे है।।
कर्मकलंक नशाय, उत्तम सौख्य भरे हैं।।
सम्यग्दशर्न पाय, भविजन तृप्त सु होते।
आत्म स्वरूप विचार, भव भव का भय खोते।।3।।

मैं नारक तिर्यंच, देव मनुष्य नहीं हूँ।
पुरुष नपुंसक रूप, स्त्रीरूप नहीं हूँ।।
सब पुद्गल पर्याय, उपज उपज कर विनशें।
कर्मउदय से जीव, इनहीं में नित विलसें।।4।।

निश्चय नय से नित्य, परमानंद स्वभावी।
मैं अनंतगुण पुंज, केवलज्ञान प्रभावी।।
मैं मुझमें थिर होय, निज में ही निज पाऊँ।
प्रभु वह दिन कब होय, जब मैं ध्यान लगाऊँ।।5।।

तुम भक्ती से नाथ, शक्ति प्रगट हो मेरी।
करूँ कर्म का नाश, छूटे भव भव फेरी।।
जब तक मुक्ति न हाये, तब तक भक्ति हृदय में।
रहे आपकी देव! ''ज्ञानमती'' रुचि मन में।6।।

दोहा

जो पूजें जिनवर भवन, भक्ति भाव से नित्य।
सो जिनगुण संपति लहें, अनुक्रम से भवभिद्य।।7।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-23

पश्चिम धातकीखंड द्वीप धातकी वृक्ष शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-हरिगीतिका छंद (चाल-सम्मेदगढ़ गिरनार.....)

वरद्वीप धातकि में अपरदिश, बीच सुरगिरि अचल है।
ताके विदिश ईशान में, शुभ धातकी द्रुम अतुल है।।
सुरगिरि के नैऋत्य शाश्वत, शाल्मली द्रुम सोहना।
द्वय वृक्ष शाखा पर जिनालय, पूजहूँ मन मोहना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं

जल अमल ले जिनपाद पूजूँ, कर्म मल धुल जायेगा।
आत्मीक समता रस विमल, आनंद अनुभव आयेगा।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदन सुगंधित ले जिनेश्वर, पद जजूँ आनंद से।
स्वात्मानुभव आल्हाद पाकर, छूटहूँ जग द्वंद्व से।।पृथ्वी.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदाकिरण सम धवल तुंदुल, पुंज जिन आगे धरूँ।
वर धर्म शुक्ल सुध्यान निर्मल, पाय आतम निधि वरूँ।।पृथ्वी.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदार चंपक पुष्प सुरभित, लाय जिनपद पूजते।
निज आत्मगुण कलिका खिले, जन भ्रमर तापे गूंजते।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मोदक पुआ बरफी इमरती, लाय जिन सन्मुख धरें।
आत्मैकरस पीयूष मिश्रित, अतुल आनंद भव हरें।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपक शिखा उद्योतकारी, जिन चरण में वारना।
अज्ञान तिमिर हटाय अतंर, ज्ञान ज्योती धारनो।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशगंध धूप मंगाय स्वाहा-नाथ को अर्पण किया।
वसुकर्म स्वाहा हेतु ही, निज आत्म को तर्पण कियो।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर आम अनार गन्ना, लाय जिनपूजा करूँ।
वर मोक्ष फल की आश लेकर, कर्म कंटक परिहरूं।।पृथ्वी.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
जिन कल्पतरू पूजत मनोवांछित, सकल फल झट मिलें।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

युमना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

अचलमेरु ईशान, वृक्ष आंवले सम कहा।
नैऋत शाल्मलि जान, जिनगृह पूजूँ पुष्प ले।।1।।

इति धातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–हरिगीतिका–

इस धातकी तरु उत्तरी, शाखा विषे जिनगृह महा।
देवाधिदेव जिनेन्द्र की, प्रतिमा रत्नमयि है वहाँ।।
सुरभित पवन प्रेरित जिनालय, मणि ध्वाजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थरहरें।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोरीशानकोणेधातकीवृक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तरु शाल्मली की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनधाम है।
मृत्युंजयी जिनदेव की, प्रतिमा वहाँ अभिराम है।।
सुरभित पवन प्रेरित करें, जिनगृह ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थरहरें।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोनैऋत्यकोणेशाल्मलितरुस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

अचलमेरु के द्वय तरू, धातकि शाल्मलि जान।
दोनों के जिनगेह को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

हरिगीतिका

जय जय अकृत्रिम जिन भवन, अघहरण जग चूड़ामणी।
जय जय अकृत्रिम जिनप्रतिमा, सब मूर्तियाँ चिंतामणी।।
जय जय अनादि अनंत अनुपम, त्रिभुवनैक शिखामणी।
जय मोह अहि के विष प्रहारण, नाथ! तुम गारुत्मणी[1]।।1।।

सुरगिरि अचल उत्तर दिशी, उत्तर कुरू है भोगभू।
तहं धातकी तरु थल वृहत्, पर वेदिका अरू पीठ जू।।
राजत उतुङ्ग महा मनोहर, मणिमयी ये तरु हरे।
उनपे अकृत्रिम जिनसदन, मेरे सकल कलिमय हरें।।2।।

तरु चार दिश की चार शाखा, मुख्य हैं उन एक में।
जिनगृह अकृत्रिम शोभता, सुरगृह बने हैं तीन में।।
इनमें सदा व्यंतर रहें, सम्यक्त्व रत्नों युत भने।
परिवार तरु अगणित कहे, परिवार सुर उनपर घने।।3।।

फल मणिमयी हैं आंवले-सम पत्तियाँ मरकतमणी।
कोंपल पदममणि के बने, बहु फूल नाना वर्णनी।।
सब देहगृह में भी सदा, जिनधाम अनुपम राजते।
उनकी करें जो वंदना, सब पाप क्षण में नाशते।।4।।

जिनराज सिंहासन रतन-मणियों जड़ित अति सोहना।
त्रय छत्र में मोती लटकते, शशिकिरण सम मोहना।।
चौंसठ युगल सुर हाथ में, चारम लिये हैं भाव से।
वर आठ मंगल द्रव्य सब, जिनराज सन्निध भासते।।5।।

बहु देव देवी अप्सरायें, इंद्र गण भी आवते।
जिनवंदना गुणगान पूजत, करत शीश नमावते।।
संगीत बाजे विविध बजते, किंकणी घंटा खने।
वीणा बजाते नृत्य करते, ताल दे देकर घने।।6।।

खेचर युगलिया भक्ति से, जिनवंदना करते वहाँ।
नर नारियाँ भूचर सदा, विद्या के बल फिरते वहाँ।।
आकाशगामी ऋद्धि से, ऋषिगण वहाँ विचरण करें।
जिनवंदना से बहु जनम के, पाप तत्क्षण परिहरें।।7।।

गणधर सुव्रतधर चक्रधर, हलधर गदाधर सर्वदा।
श्रुतधर अशनिधर कुलधरा, जिन भक्ति करते शर्मदा।।
अध्यात्म योगी वीतरागी, शुद्ध आतम ध्यावते।
वर निर्विकल्प समाधिरत हो, परम आनंद पावते।।8।।

मैं भक्ति श्रद्धा भाव से, हे नाथ! तुम शरणा लिया।
बस मृत्यु मल्ल पछाड़ते को, तुम निकट धरना दिया।।
हे भक्त वत्सल! दीनबंधु! कृपा मुझ पर कीजिये।
हे नाथ! अब तो मुझे, केवल 'ज्ञानमति' श्री दीजिये।।9।।

दोहा

शाश्वत श्री जिनगेह के, स्वयं सिद्ध जिनबिंब।
मन वच तन से पूजहूँ, झड़े कर्म कटु निंब।।10।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-24

पश्चिम धातकीखंड पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

अपर धातकी खंड द्वीप में, षट् कुल पर्वत सोहें।
विदिशा में गजदंत चार हैं, सुर नर का मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुहाने, चौंतिस रजताचल हैं।
इनके साठ जिनालय पूजूँ, पद मिलता अविचल है।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित–षष्ट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित–षष्ट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित–षष्ट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छंद

जन्म जरा मृत्यु ये तीनों, भव भव में दुख देते।
प्रभो! निवारो इनको तुमपद में त्रय धारा देते।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को, पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ, तुम पद प्रीति बढ़ाके।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मानस तनु आगंतुक पीड़ा, भव भव में दुख देवें।
प्रभो! निवारो इनको तुमपद पंकज गंध चढ़ावें।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रिय सुख क्षणभंगुर इनसे, सदा क्लेश होता है।
अक्षत के बहु पुंज चढ़ाते, अक्षय सुख होता है।।शाश्वत.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कामदेव ने त्रिभुवन जन को, अपने वश्य किया है।
तुम पद पुष्प चढ़ाते भविजन, इसको वश्य किया है।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

भूख पिशाची बहुदुख देती, तुमने इसे नशाया।
नाना विध नैवेद्य चढ़ाते, व्याधि रहित हो काया।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन में मोह अंधेरा छाया, ज्ञान नेत्र नहिं खुलते।
दीपक से तुम आरति करते आत्म सरोरुह खिलते।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्नि पात्र में, खेऊ सुरभि उठे है।
अशुभ कर्म कण में जल जाते, सुयश सुगंधि बढ़े है।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सरस मधुर ताजे फल लेकर, शिवफल हेतु चढ़ाऊँ।
मनो भावना पूरी कीजे, हाथ जोड़ शिर नाऊँ।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ सजाकर, चांदी पुष्प मिलाऊँ।
अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रार्थना, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।शाश्वत.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवरपद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्मनंद।।10।।
शांतये शांतिधारा।
सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

सोरठा

अपर धातकी द्वीप, साठ अचल के जिनगृहा।
जजूँ हृदय धर प्रीत, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–षट् कुलाचल अर्घ-नरेन्द्र छंद–

अचल मेरु के दक्षिण दिश में, हिमवन रजतमयी है।
ग्यारह कूट सहित पर्वत मधि, पद्म सरोवर भी है।।
द्रह बिच कमल, कमल बिच देवी, श्री को भवन बखाना।
पूर्व दिशा में सिद्धकूट जिन गेह जजूँ अघ हाना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दुतिय महाहिमवन कुलनग है, रजतमयी नवकूटा।
महापद्मद्रह के कमलों बिच, ह्री सुर गेह अनूठा।।
पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावें।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निषधगिरि वर तप्त कनक छवि, नवकूटन सुर सेवी।
मध्यतिगिंछ सरोवर के बिच कमल मध्य धृतिदेवी।।पूर्व.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नीलाचल वैडूर्य मणिद्युति, नवकूटों से मनहर।
केसरिद्रह में कमल बीच, कीर्तिदेवी अति सुंदर।।पूर्व.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रुक्मीनग रूपाछवि कूटों, आठ सहित मन मोहे।
पुंडरीक द्रह मध्य कमल में, बुद्धिदेवी सोहे।।पूर्व.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखरीनग स्वर्णाभ बीच महापुंडरीक सरवर है।
मध्य कमल बिच लक्ष्मीदेवी, ग्यारह कूट उपरि हैं।।पूर्व.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिशिखरीपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–चार गजदंत अर्घ्य-नरेन्द्रछंद–

अचलमेरु ईशान दिशा में, माल्यवान गजदंता।
नीलमणी सम छवि अतिसुंदर, नवकूटों से संता।।
मेरु निकट के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर, पाऊँ निज विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिमाल्यवानगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरू की आग्नेय दिशा में, सौमनस गजदंता।
चांदी सम अति कांत चमकता, सातकूट विलसंता।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरू के नैऋत्य कोण में, विद्युत्प्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि शाश्वत सुंदर, नवकूटों युत संता।।मेरू.।।9।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरू के वायव्य दिशा में, गंधमादनाचल है।
कनककांति से दिपे मनोहर, सात कूट अविचल हैं।।मेरू.।।10।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतपर्वतस्थिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षार पर्वत अर्घ-राग भारती

मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।टेक।।
सीतानदि उत्तर तटे, ''चित्रकूट' वक्षार।
ता गिरि पे इक जिनभवन, अविनाशी अविकार।।मैं.।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीउत्तरतटेचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नलिनकूट' वक्षार है, कांचन की द्युति जान।
ताके जिनमंदिर विषें, जिनवर बिंब महान।।मैं.।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीउत्तरतटेनलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार है, ता गिरि पे चउ कूट।
सिद्धकूट में जिनसदन, पूजत पुण्य अटूट।।मैं.।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीउत्तरतटेपद्मकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार है, भृभृत अविचल मान।
ताके जिनमंदिर विषें, अकृत्रिम भगवान।।मैं.।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीउत्तरतटेएकशैलवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–राग-भरतरी–

मैं पूजूं जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उत्तरें भव पार।।
देवारण्य समीप से, है 'त्रिकूट' वक्षार।
ताके श्री जिनवेश्म को, पूजें इंद्र अपार।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेत्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षाराचल 'वैश्रवण', अनुपम रत्न भण्डार।
ताका जिनमंदिर कहा, मोक्ष महल का द्वार।।मैं.।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार पे, खेचर गण आवंत।
ताके श्री जिनगेह को, मुनिगण नित्य नमंत।।मैं.।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेआत्मांजनवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अंजन' नग वक्षार है, पूरे सुरगण आश।
ताके जिनगृह पूजते, होते कर्म विनाश।।मैं.।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअंजनवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

'श्रद्धावान' वक्षार कनकमय मानिये।
भद्रसाल वन वेदी निकट बखानिये।।
तापे श्री जिनभवन विषें जिनबिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूं जग द्वंद्व को।।19।।

ॐ ह्रीं सीतोदानदीदक्षिणतटेश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विजटावान' कहा वक्षार गिरीश पे।
कूट कहे हैं चार रहे सुर तीन पे।।
इक में श्री जिनभवन विषें जिनबिंब को।।पूजूँ.।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेविजआवानवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार गिरी अनुपम जहाँ।
सुरकिन्नरगण जिनवर यश गाते वहाँ।।
तापे श्री जिनभवन विषें जिनबिंब को।।पूजूं।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेआशीविषवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नग वक्षार 'सुखावह' सुखदातार है।
ताके जिनगृह जजत भविक भव पार हैं।।
तापे श्री जिनभवन विषें जिनबिम्ब को।।पूजूँ।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेसुखावहवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'चंद्रमाल' वक्षार गिरी सुखकार है।
भूतारण्य समीप कनकमयि सार है।
तापे श्री जिनगेह जिनेश्वर बिम्ब को।।पूजूँ।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटेचंद्रमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार जिनेश्वर गेह से।
भविजन मन तम हरें छुड़ा तन नेह से।।
जिनवर गृह के सभी जिनेश्वर बिम्ब को।।पूजूँ।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटेसूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नागमल' वक्षार अतुल जिनगृह तहाँ।
नागेन्द्रादिक देव करें पूजन वहाँ।।
जिनवरगृह के सभी जिनेश्वर बिंब को।।पूजूँ।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटेनागमलवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार मनोहर जानिये।
देव पूज्य जिनगेह वहाँ पर मानिये।।
सुर नर पूजित सर्वजिनेश्वर बिंब को।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूं जग द्वंद्व को।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटेदेवमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ-अडिल्ल छंद

अचलमेरु के पूर्व विदेह बखानिये।
सीता उत्तर 'कच्छा' देश सुमानिये।।
ताके मधि रूपाचल पे जिन धाम को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय तजूँ दुखथान को।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' अपर धातकी माहिं है।
अचल मेरु के पूर्व विदेहन माहिं है।।
मध्य रजतगिरि के श्रीजिनगृह को जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन प्रतिमा को नित भजूँ।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपरधातकी मध्य, अचल सुरगिरि कहा।
ताके पूरब देश 'महाकच्छा' लहा।।
ताके मधि रजताचल पर जिनगृह सदा।
पूजूं अर्घ्य चढ़ाक भजूँ सुख संपदा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध-कूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मध्य विजयार्ध है।
ताके जिनगृह को नित पूजें भव्य हैं।।
तिनके श्री जिनबिंब अकृत्रिम सोहते।
अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ सुरनर मन मोहते।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छाकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आवर्ती' है देश मध्य विजयार्ध है।
तापे नव कूटों में इक विख्यात है।।
सिद्धकूट में जिन प्रतिमा को पूजते।
अर्घ्य चढ़ाय जजें नर दुःख से छूटते।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' मधि रूपाद्रि है।
तापे सिद्धायतन माहिं जिननाथ हैं।।
मुनिपति से नित पूज्य अकृत्रिम चैत्य हैं।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं भवरुज वैद्य हैं।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध-कूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' मध्य रजतगिरि सोहना।
सिद्धकूट जिनगृह से जन मन मोहना।।
तिनकी जिन प्रतिमा को पूजूँ भाव से।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं अतिशय चाव से।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेपुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मध्य, विजयार्ध है।
तापे जिनगृह पूजत भव्य कृतार्थ हैं।।
तिनकी मणिमय जिन प्रतिमा को मैं जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाय सदा मन वच तन से भजूँ।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध-कूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

अपरधातकी द्वीप, अचल सुरगिरि पूरब में।
देवारण्य समीप, देश 'वत्सा' के मधि में।।
रजतगिरी पर सिद्धकूट में मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, उन्होंकी अतिशय महिमा।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के पूर्व, 'सुवत्सा' देश विदेहा।
तिसके बीचों बीच, रजतगिर रमत सुदेहा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, उन्होंकी अतिशय महिमा।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के पूर्व, 'महावत्सा' वर देशा।
तिसके मधि विजयार्ध, बसे नित तास खमेशा।।नव.।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध-कूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती', अचल सुरगिरि केपूर्वा।
रूपाचल तामध्य, रमे तापे गंधर्वा।।नव.।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध कूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचल मेरु के पूरब, 'रम्या' देश कहाता।
ताके बीचों बीच, रजतगिरि शोभा पाता।।नव.।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' कहा, सुपूर्व अचल मेरु के।
ताके मध्य रजतगिरि पे नवकूट सु नीके।।नव.।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया', अपर धातकी खंड में।
तिनके बीच रजतनग, त्रयकटनी है उसमें।।नव.।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'मंगलावती', अचल मेरु पूरब में।
तिसके मधि रूप्याद्रि तथा छहखंड उसी में।।नव.।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–चौबोल छंद–

अपरधातकी मेरु अचल के, पश्चिम सीतोदा दायें।
भद्रसालवन वेदी सन्निध, 'पद्मा' देश कहा जाये।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।43।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु की अपर दिशा में, सीतोदा नदि के दायें।
देश 'सुपद्मा' शोभा पाता, उसमें छहों खण्ड गाये।।ता.।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपर धातकी खंड द्वीप में, सीतोदा के दक्षिण में।
देश 'महापद्मा' आरज खंड, कर्म भूमि शाश्वत उसमें।।ता.।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के पश्चिम दिश में, देश 'पद्मकावती' कहा।
तीर्थंकर श्रुतकेवलि गणपति, मुनिगण से नित पूज्य रहो।।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु के पश्चिम दिश में, 'शंखा' देश विदेह कहा।
रूपाचल है मध्य उसी के, तीन कटनियों सहित रहा।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु की पश्चिम दिश में, 'नलिना' देश कहा जाता।
ताके बीच रूप्यगिरि सुंदर, विद्याधर के मन भाता।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचलमेरु की पश्चिम दिश में, 'कुमुद' देश अतिरम्य कहा।
ताके मध्य रजतगिरि सुंदर, ऋषिगण विचरें नित्य वहाँ।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपरधातकी सीतोदा के, दायें 'सरिता' देश कहा।
ताके मध्य रूप्यगिरि है नित, इंद्रादिक गण रमें वहाँ।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

'वप्रा' देश विदेह, अपर धातकी माहीं।
तामधि रजत गिरीन्द्र, सीतोदा तट ताहीं।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।51।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, अचल मेरु पश्चिम में।
रूप्याचल है मध्य, नदि के निकट सु उसमें।।सिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'महावप्रा' सुविदेह, अपर धातकी तामें।
रजताचल ता मध्य, तीन कटनियाँ तामें।।सिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'वप्रकावती' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
नवकूटों में एक, कूट सुसौख्य भरी है।।सिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, अपर धातकी द्वीपे।
विजयारध तामध्य, नवकूटों से दीपे।।सिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' माहिं, रजतगिरी अमलाना।
मुकुट सदृश नवकूट, सुरनर रमत महाना।।सिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'गंधिला' मध्य, रूपाचल अति सोहे।
तापे यतिगण नित्य, आतम समरस जोहे।।सिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वत–सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश, विजयारध ता बीचे।
तापे सुरगण आय, क्रीड़ा करत सुनीके।।सिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शंभुछंद

शुभ अपरधातकी दक्षिण में, इक 'भरत' सुक्षेत्र कहाता है।
गंगा-सिंधु नदि विजयारध, इनसे छह खंड धराता है।।
रूपाचल की पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भाता है।
मैं पूजूँ चढ़ा करके, वह आतमसिद्धि कराता है।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणदिशिभरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ अपरधातकी उत्तर में, 'ऐरावत' क्षेत्र सुहाता है।
रक्ता रक्तोदा रजतगिरी, इनमे छह खंड युत माना है।।
रजताचल की पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भाता है।
मैं पूजूँ चढ़ा करके, वह आतमसिद्धि कराता है।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थउत्तरदिशिऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

पश्चिम धातकी में छह कुलगिरि, चउ गजदंताचल शोभ रहे।
सोलह वक्षार गिरी स्वर्णिम, चौंतिस रजताचल शोभ रहे।।

इन नग पर एक एक जिनगृह, इन साठ जिनालय को पूजूँ।
चउघाति कर्म का नाश करूँ, भव भव की व्याधी से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुर्गजदंताचलषोडशवक्षार-चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंसठ सौ अस्सी जिनप्रतिमा, इन जिनमंदिर में राजे हैं।
नासाग्रदृष्टि पद्मासन हैं, छवि वीतराग अति भासे हैं।।
इन जिनमूर्ती का ध्यान किये, निज चिन्मय मूर्ति प्रगट होती।
मिथ्यात्व पिंडि फट जाती है, जिन आतम ज्योति प्रगट होती।।2।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलदिषष्टिजिनालयमध्यविराजमान-षट्सहस्र-चतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस अपरधातकी में मेरु, शुभ अचल नाम से अचलित है।
धातकी तरु शल्मलि तरु सोहें, कुलपर्वत आदि साठ नग हैं।।
इन सबके जिनगृह अठ्ठत्तर, शाश्वत मणि स्वर्णमयी सोहें।
इनकी पूजा करते सुरगण, गणधर मुनिगण का मन मोहें।।3।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिअष्टसप्तजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन सबमें जिनवर प्रतिमायें, शाश्वत अनादि से राजे हैं।
ये पांच शतक धनु तुंग कहीं, पद्मासन सौम्य विराजे हैं।।
निज आत्मसुधारस आस्वादी, चारण ऋषि वंदन करते हैं।
इन आठ हजार चार सौ चौबिस, का अभिनंदन करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिसप्ततिजिनालयमध्यविजरामान–अष्टसह-स्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनलप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय जिनवर मूर्तियाँ, जय जय जिनवर धाम।
गाऊँ गुणमणि मालिका, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

चाल-शेर

जय धातकी सुद्वीप के शाश्वत जिनालया।
जय हिमवदादि पर्वतों के छह जिनालया।।
जय जय चउ गजदंत के चारों जिनालया।
वक्षार पर्वतों के भी सोलह जिनालया।।2।।

जय जय रजतगिरी के चौंतिस सुखालया।
जय जय जिनेंद्रआलय भविजन सुखालया।।
जो भक्तिभाव से सदैव वंदना करें।
वे कर्म पर्वतों की भि खंडना करें।।3।।

हिमवन है दो हजार इक सौ पाँच कुछ अधिक।
योजन प्रमाण दो हजार कोस का ये नित।।
इससे चतुर्गुणा महाहिमवन विशाल है।
इससे चतुर्गुणा निषध पर्वत विशाल है।।4।।

आगे के नील रुक्मि और शिखरि पर्वता।
निषधादि सदृश विस्तृते इन छै में छह ह्रदा।।
इन ह्रद के मध्य नीर में सरोज खिले हैं।
श्री आदि देवियों के वहाँ महल भले हैं।।5।।

चारणमुनी इन पर्वतों पर नित्य विचरते।
जिनगेह का वंदन करें शुभ ध्यान को धरते।।
सब इंद्र इंद्राणी मिले भक्ती से आवते।
सुरवृंद देवियाँ मिले जिन कीर्ति गावते।।6।।

विद्याधरों की टोलियाँ जिन वंदना करें।
संगीत गीत नृत्य से जिन अर्चना करें।।
जिनभक्ति से असंख्य कर्म निर्जरा करें।
सम्यक्त्वनिधी पायके निजात्म सुख भरें।।7।।

मैं भी यहीं परोक्ष में उन मूर्ति को नमूँ।
निज 'ज्ञानमती' सौख्य पा मिथ्यात्व को वमूँ।।
नहिं बार बार जन्म मरण दुःख को भरूँ।
जिन हृदय में धार के संसार से तिरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीप संबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-25

धातकीखंड द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

वद द्वीप धातकी के दक्षिण, उत्तर में इष्वाकार कहे।
ये द्वीप धातकी को पूरब, पश्चिम दो खंड में बांट रहे।।
इन पर्वत पर दो जिनमंदिर, जिनप्रतिमा का आह्वानन करूँ।
सुरपति खगपति चक्री पूजित, जिनप्रतिमा का गुणगान करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय-जिनबिम्ब समूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-शंभु छंद

क्षीरोदधि का पयसम जलले, कंचन कलशा भर लाया हूँ।
निजआत्म करम मल धोने को, प्रभु धारा देने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयजचंदन केशर घिस के, तुमचरण चढ़ाने आया हूँ।
आत्यंतिक शांतीहेतू मैं, भवज्वाल बुझाने आया हूँ।।इष्वा.।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

कामोद श्यामजीरी तंदुल कमलों को धोकर लाया हूँ।
अक्षय सुखमय शुद्धात्महेतु, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।इष्वा.।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरतरू सुरभित विविध सुमन, सुमनस मनहर मैं लाया हूँ।
प्रभु काम बाण विध्वंस हेतु, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।।इष्वा.।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरण पोली पूरी खाजे, नुकती लड्डू मैं लाता हूँ।
निज क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, तुम चरणों निकट चढ़ाता हूँ।।इष्वा.।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गोघृत भर कंचनदीप शिखा, दशदिश अंधेर भगा देती।
दीपक ज्योती प्रभु जजते ही, अज्ञान अंधेर मिटा देती।।इष्वा.।।6।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंधित ले, अग्नी में खेने आया हूँ।
कर्मों को जला जला करके, दशदिश में धूम उड़ाया हूँ।।इष्वा.।।7।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

एला केला अंगूर आम, पिस्ता किसमिस बादाम लिया।
शिवफल की आशा से जिनवर, तुम सन्मुख मैंने चढ़ा दिया।।इष्वा.।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
वर हेमपात्र में अर्घ्य सजा, प्रभु निकट चढ़ाने आया हूँ।।इष्वा.।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

कनक भृंग में मिष्टजल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

दुतिय धातकी द्वीप, दक्षिण उत्तरदिश विषें।
इष्वाकृति नग दोय, ताके जिनगृह पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

वर द्वीप धातकी के दक्षिण, लवणोदधि कालोदधि छूता।
नग इष्वाकार सहस योजन, विस्तृत अरु चारशतक ऊँचा।।
यह लंबा चार लाख योजन, कनकाभ कूट चउ इसपे हैं।
इस सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर जजते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणदिशायांइष्वाकारनगस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर द्वीप धातकी उत्तर में, लवणोदधि कालोदधि छूता।
गिरि इष्वाकृति योजन हजार, विस्तृत अरुचारशतक ऊँचा।।
यह चार लाख योजन लंबा, स्वर्णाभ चार कूटों युत है।
इस सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर जजते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्योत्तरदिशिइष्वाकारनगस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

द्वीप धातकी खंड में, दक्षिण उत्तर माहिं।
इष्वाकृतिगिरि के उभय, जिनगृह पूज रचाहिं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशोःइष्वाकारपर्वतस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इष्वाकृति के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह नित जजूँ, मिटे सर्वदुख द्वंद्व।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमान–द्विश-तषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

इष्वाकार गिरीन्द्र, इनपे जिनगृह शाश्वते।
तिनमें श्री जिनबिंब, मैं गाऊँ गुणमालिका।।1।।

शंभु छंद

जय जय श्री जिन सिद्धायतनं, भविजन को सिद्धि प्रदाता हो।
जय स्वयं सिद्ध शाश्वत भगवन्! मुनिजन को मुक्ति विधाता हो।।
जय जय गुणरत्नाकर स्वामी, जो तुमको नित प्रति ध्याते हैं।
वे तुम भक्ती नौका चढ़कर, भववारिधि से तिर जाते हैं।।2।।

इष्वाकृति नग पर सिद्धकूट, उनमें जिनप्रतिमा राजे हैं।
जो उनकी पूजा भक्ति करें, वे भव बल्ली को काटे हैं।।
पर्वत के दोनों भागों में तटवेदी वनपंक्ती शोभे।
धनुपांचशतक विस्तृत स्वर्णिम, ऊँची दो कोस बहुत शोभे।।3।।

इन भित्ति सदृश वेदी के द्वय, भागों में वनखंड शोभ रहे।
जो तोरण पुष्करिणी वापी, युत जिनभवनों से रम्य कहे।।

वन खंडों में सुरमहल बने, तोरण रत्नों से शोभित हैं।
ऐसे ही पर्वत के ऊपर, तटवेदी औ वन पंक्ती हैं।।4।।

ये पर्वत अतिशय रम्य कहे, सुवरण कांती से चमके हैं।
इन पर जो चार कूट माने, त्रय में व्यंतर सुर बसते हैं।।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, जो अकृत्रिम कहलाता है।
कांचन मणिरत्नों से निर्मित, ध्वज पंक्ती को लहराता है।।5।।

जिनगृह को घेरे परकोटे हैं तीन कनकमय रत्न जड़े।
उनके अंतर में दशविध ध्वज, अरु कल्पतरु रमणीय बड़े।।
वर मानस्तंभ रत्न निर्मित, सिद्धों की प्रतिमा वंद्य वहाँ।
मानस्तंभों के दर्शन से सच, मानगलित हो जाय वहाँ।।6।।

ये जिनमंदिर शिवललना के, श्रृंगार विलास सदन माने।
भविजन हेतु कल्याण भवन, पुण्यांकुर सिंचन घन माने।।
इनमे हैं इक सौ आठ कहीं, जिनप्रतिमा रत्नमयी जानो।
मुझ 'ज्ञानमती' को रत्नत्रय, संपति देवें यह सरधानो।।7।।

जय जय जिनचंदा, सुख के कंदा, शिवतियकंता नाथ तुम्हीं।
जय तुम गुण गाऊँ, दुरित नशाऊँ, फेर न आऊँ चहुँगति ही।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिक्संबंधिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला निर्वपामिति स्वाहा।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-26

मंदर मेरु पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पुष्करार्ध वर द्वीप पूर्व में मंदिर मेरू सोहे।
उसके सोलह जिनमंदिर में जिनप्रतिमा मन मोहे।।
भक्ति भाव से आह्वानन कर पूजा पाठ रचाऊँ।
भव भव के संताप नाश कर स्वात्म सुख को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

पयोराशि को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो के पदाम्भोज धारा कराऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर अभी मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलय चंदनादी सुवासीत लाऊँ।
प्रभो आपके पाद में नित चढ़ाऊँ।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धवल शालि तंदुल लिया थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें पुंज सद्भाव धर के।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्पमाला बनाऊँ।
महा काम शत्रुंजयी को चढ़ाऊँ।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

कलाकंद लाडू इमरती बनाके।
क्षुधा व्याधि नाशूँ प्रभू को चढ़ाके।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखा दीप की लो उद्योतकारी।
तुम्हें पूजते ज्ञान प्रद्योत भारी।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ सदा मैं।
करम की भसम को उड़ाऊँ मुदा मैं।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अनन्नास अमरूद अमृत फलों से।
जजूँ मैं बचूं कर्म अरि के छलों से।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से अर्घ करके।
चढ़ाऊँ तुम्हें सर्वदा प्रीति धर के।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति के हेतु, शांती धारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे निज सुखसार, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मंदरमेरु जिनभवन, सर्वसौख्य भंडार।
पुष्पांजली चढ़ाय के, जजूँ नित्य चित धार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

पुष्करार्धवर पूर्व में, मंदर मेरु महान।
भद्रसाल पूरब दिशी, जजूँ जिनालय आन।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भद्रसाल दक्षिण दिशा, जिनगृह शाश्वत सिद्ध।
तिन में जिनवर बिंब को, जजूँ मिले सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भद्रसाल में अपरदिश, जिन मंदिर सुखकार।
जिन प्रतिमा को पूजहूँ, मिले भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदरमेरु भूमि में, भद्रसाल वन जान।
उत्तर दिश जिन भवन को, जजूँ मोक्ष हित मान।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गीता छंद

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में, मंदरगिरी कनकाभ है।
जिनवर न्हवन से पूज्य उत्तम, सुरगिरी विख्यात है।।
नंदन विपिन[1] परब दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निज और पर का करें अंतर, जो निरंतर मुनिवरा।
विचरण करें जिनवंदना हित, वे सदैव दिगम्बरा।।
नंदन विपनि दक्षिण दिशी, जिनगेह अनुमप मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

यमराज का भय नाशते, सब कामना पूरी करें।
शुद्धात्म रस प्यासे मुनी की, भावना पूरी करें।।
नंदन विपनि पश्चिम दिशी, जिनगेह अनुमप मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भव राग आग बुझावने, तुम भक्ति गंगा नीर है।
स्थान जो इसमें करें, उनकी हरे सब पीर हैं।।
नंदन विपनि उत्तर दिशी, जिनगेह अनुमप मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

मंदरमेरु माहिं, वन सौमनस सुहावे।
पूरब दिश जिनगेह, पूजत सौख्य उपाये।।

राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुख देते।
प्रभु तुम भक्ति प्रसाद, तुरत नशें त्रय एते।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु चतुर्थ महान, वन सौमनस बखाना।
दक्षिण दिश जिनधाम, मृत्युंजय परधाना।।रागद्वेष.।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदरमेरु अनूप, वन सौमनस विशाला।
पश्चिम दिश जिनवेश्म, देता सौख्य रसाला।।रागद्वेष.।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदरमेरु माहिं, वन सौमनस कहा है।
उत्तर दिश जिनधाम, शाश्वत शोभ रहा है।।रागद्वेष.।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नाराच छंद-(चाल-पार्श्वनाथ देव सेव....)

पुष्करार्ध पूर्व खंड द्वीप में सुमेरु है।
तास पांडुके वीन सुपूर्व दिक्क में रहे।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदराद्रि पांडुकेसु दक्षिणी दिशा तहां।
साधु वृंद वंदना जिनेश की करे वहाँ।।जैन वेश्म.।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु जो चतुर्थ है चतुर्थ रम्य जो वनी।
पश्चिमी दिशी सुकल्प वृक्ष पंक्तियां घनी।।जैन वेश्म.।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदराचले चतुर्थ जो वनी प्रसिद्ध है।
उत्तरी दिशा तहां मनोज्ञता विशिष्ट है।।जैन वेश्म.।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-सोरठा

सोलह श्री जिनधाम, मंदर मेरु में कहे।
जिनवर बिंब महान, अर्चूं पूरण अर्घ्य ले।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस, जिनवर प्रतिमा नित नमूँ।
नित्य नमाऊँ शीश, पूरण अर्घ चढ़ाय के।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशतअष्टाविंशतिजिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदर मेरु विदिक्क, पांडुक आदि शिला कहीं।
नमूँ नमूँ प्रत्येक, जिन अभिषेक पवित्र हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय मंदर मेरु नित, जय जय श्री जिनदेव।
गाऊँ तुम जयमालिका, करो विघन घन छेव।।1।।

शेर छंद-चाल-हे दीन बंधु....

जैवंत मूर्तिमंत मेरु मंदराचला।
जैवंत कीर्तिमंत जैन बिंब अविचला।।
जैवंत ये अनंतकाल तक भि रहेंगे।
जैवंत मुझ अनंत सुख निमित्त बनेंगे।।1।।

जै भद्रसाल आदि चार वन के आलया।
जै जै जिनेन्द्र मूर्तियों से वे शिवालया।।
जै नाममंत्र भी उन्हों का सारभूत है।
जो नित्य जपे वो लखे आतम स्वरूप हैं।।2।।

भव भव में दुख सहे अनंत काल तक यहाँ।
ना जाने कितने काल मैं निगोद में रहा।।
तिर्यंचगती में असंख्य वेदना सही।
नरकों के दुःख को कहें तो पार ही नहीं।।3।।

मानुष गती के आयके भी सौख्य न पाया।
नाना प्रकार व्याधियों ने खूब सताया।।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग तब हुआ।
तब आर्त रौद्र ध्यान बार बार कर मुआ।।4।।

संक्लेश से मर बार बार जन्म को धरा।
आनंत्य बार गर्भवास दुःख को भरा।।
मैं देव भी हुआ यदी सम्यक्त्व बिन रहा।
संक्लेश से मरा पुनः एकेन्द्रिय हो गया।।5।।

हे नाथ सभी दुःख से मैं ऊब चुका हूँ।
अब आपकी शरणागती में आके रुका हूँ।।
करके कृपा स्वहाथ का अवलंब दीजिये।
मुझ 'ज्ञानमती' को प्रभो! अनंत[1] कीजिये।।6।।

घत्ता छंद

गुण गण मणिमाला, परम रसाला, जो भविजन निज कंठ धरें।
वे भव दावानल, शीघ्र शमन कर, मुक्ति रमा को स्वयं वरें।।7।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-27

पूर्व पुष्करार्धद्वीप पुष्कवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पुष्कर तरु से अंकित पुष्कर, द्वीप जु सार्थक नामा।
सुरगिरि के दक्षिण उत्तर में, भोगभूमि अभिरामा।।
उत्तर कुरु ईशान कोण में, पदमवृक्ष मन मोहे।
देवकुरु नैऋत में शाल्मलि, तरु पे सुरगण सोहें।।1।।

दोहा

दोनों तरु पे जिन भवन, स्वयं सिद्ध गुण खान।
जिनवर पूजन हेतु मैं, करूँ यहाँ आह्वानन।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-लक्ष्मीधरा छंद

तीर्थवारी महास्वच्छ झारी भरी।
तीर्थ कर्तार के पादधारा करी।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो जलं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्ण द्रव के सदृश कुंकुमादी लिये।
राग की दाह को मेटने पूजिये।।दो तरू.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

सोमरश्मीसदृश श्वेत अक्षत लिये।
आत्म निधि पावने पुंज रचना किये।।दो तरू.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंद मंदार मल्ली सुमन ले लिये।
मारहर नाथ पादाब्ज में अर्पिये।।दो तरू.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

गूझिया औ तिकोने भरे थाल में।
भूख व्याधी हरो नाथ पूजूँ तुम्हें।।दो तरू.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रज्वलित दीप लेके करूँ आरती।
चित्त में प्रगटती ज्ञान की भारती।।दो तरू.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
मोह शत्रू जलें आपपद सेवते।।दो तरू.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

आम नींबू नरंगी सु अंगूर हैं।
पूजतें आत्म पीयूष को पूर है।।दो तरू.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंधादि ले स्वर्ण थाली भरूँ।
नाथ पद पूजते सर्वसिद्धी वरूँ।।दो तरू.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पृथवीकायिक वृक्ष, सर्वरत्नमय सोहने।
ताके श्री जिनसद्म, मनवचतन से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

मंदरमेरु से इशान में, पद्म वृक्ष रत्नों का।
उसकी उत्तर शाखा पर है, जिनमंदिर भवनों का।।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, नितप्रति पूज रचाऊँ।
परम अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचलपद को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरगिरि के नैऋत्य कोण में, शाल्मलीतरु जानो।
उसकी दक्षिण शाखा पर, जिनगेह अकृत्रिम मानो।।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, नितप्रति पूज रचाऊँ।
परम अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यम, अविचल पद को पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

पुष्कर शाल्मलिवृक्ष के, अमितवृक्ष परिवार।
तिन सबके जिनगेह को, पूजूं भवदधितार।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-बिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दो जिनगृह की जिनकृती, दो सौ सोलह जान।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के मिले, निजातम ध्यान।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयमध्यविराज–मान-द्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

स्वयं सिद्ध जिनराज, अकृत्रिम जिनगेह में।
पूर्ण करो मम आश, गाऊँ अब जयमालिका।।1।।

तोटक छंद

जय पुष्कर वृक्ष महाफलदं, जय शाल्मलिवृक्ष महासुखदं।
जय वृक्ष तने जिन मंदिर को, जय सिद्धिवधू प्रियजिनवर को।।2।।

तरु में मरकतमणि नीलम के, कर्केतन सवर्णमयी पत्ते।
बहुवर्ण रतनमय अंकुर हैं, रतनों के फलऔं पुष्प कहे।।3।।

तरु सिद्ध अनादि अनंत कहे, तहं चामर किंकणि आदि रहें।
अति तुंग सघन द्रुम शोभ रहे, शुभ वायु चले हिते तरु हैं।।4।।

इन शाख विषे जिनमंदिर जी, महिमा वरणंत पुरंदर जी।
सुर इंद्र रनेन्द्र फणीन्द्र सदा, गुण गावत भक्ति भरे जु मुदा।।5।।

जिननाथ त्रिलोकपिता तुम हो, तुमही भववारिधि तारक हो।
बिन कारण बंधु तुम्हीं प्रभु हो, तिहुँलोक तने तुमही गुरु हो।।6।।

तुम शंकर विष्णु विधी तुमही, तुम बुद्ध हितंकर ब्रह्म तुम्हीं।
भुवनैक शिरोमणि देव तुम्हीं, शरणागत रक्षक देव तुम्हीं।।7।।

तमु ज्योति चिदंबर मुक्ति, तुम पूर्ण दिगंबर विश्वपती।
सर्वारथसिद्धि विधायक हो, समता परमामृत दायक हो।।8।।

तुम भक्त मनोरथ पूर्ण करें, क्षण में निजसंपति पूर्ण भरें।
यमराज महाभट चूर्ण करें, वर 'ज्ञानमती'' सुख तूर्ण वरें।।9।।

घत्ता

तुम जिनवर भास्कर, कर्म भरम हर, शिवसंपतिकर शरण लही।
जो तुम गुण माला, पढ़े रसाला, सो पावहिं शिव सौख्य मही।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-28

पूर्व पुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पूरब पुष्कर अर्द्धद्वीप में, छह कुल पर्वत सोहें।
चार कहे गजदंत अकृत्रिम सुरकिन्नर मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुवर्णिम, चौंतिस रजताचल हैं।
इन पर्वत के साठ जिनालय, पूजत सुख अविचल है।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-दोहा

पद्म सरोवर नीर शुचि, जिनपद धार करंत।
जन्मजरामृति नाश हो, आतमसुख विलसंत।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सुरभि, जिनपद में चर्चंत।
मिले आत्मसुख संपदा, निज गुण कीर्ति लसंत।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल धवल, पुंज चढ़ाऊँ नित्य।
नवनिधि अक्षय संपदा, मिले आत्मसुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून की, माल चढ़ाऊँ आज।
सर्वसौख्य आनंद हो, मिले स्वात्म साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरणपोली इमरती, चरू चढ़ाऊँ भक्ति।
मिले आत्म पीयूष रस, मोक्ष प्राप्ति की भक्ति।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती, करूँ तिमिर परिहार।
जगे ज्ञान की भारती, भरे सुगुण भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेवते हो सुरभि, आतम गुण विलसंत।
कर्म जलें शक्ती बढ़े, मिले निजात्म अनंत।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव आम अंगूर ले, फल से पूजूँ आज।
मिले मोक्ष फल आश यह, सफल करो मम काज।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जलग गंधादिक अर्घ ले, रजत पुष्प विलसंत।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से, मिले सुगुण सुखकंद।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूं, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पुष्करार्ध में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षट् कुलाचल अर्घ्य-शंभु छंद

पूरब पुष्कर में हिमवन गिरि, सवर्णाभ अतुल अभिरामा है।
ग्यारह कूटों में पूरब दिश, जिन सिद्धकूट परधाना है।।
ता मध्य पदम द्रह बीच कमल, श्रीदेवी परिकर सह राजे।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोह करम अरिदल भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिहिमवनपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रजताभ महाहिमवन गिरि पे, हैं आठ कूट जन मन हारी।
पूरब के सिद्धायतन मध्य, जिनगेह अकृत्रिम सुखकारी।।
द्रह महापदम मधि कमल बीच, ह्रीदेवी परिकर सह राजें।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोह करम अरिदल भाजें।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाहिमवनपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निषधाचल तप्त कनक कांती, द्रह कहा तिगिंच्छ कमल बीचे।
धृतिदेवी रहती परिकर सह, नवकूटों से अद्भुत दीखें।।
सुर सिद्धकूट वंदे नत हों, मणि मुकुटों से जिनपद चूमें।
हम अर्घ्य चढ़ाकर नित पूजें, फिर भव वन में न कभी घूमें।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नीलाचल छवि वैडूर्यमणी, द्रह केसरि मध्य कमल तामें।
कीर्तिदेवी रहती उनमें, इक सिद्धकूट नव कूटों में।।
मुनि वीतराग भी जा करके, जिनगृह को वंदन करते हैं।
जो पूजें उनको भक्ति सहित, वे भव वारिधि से तरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रुक्मी पर्वत चांदी सम है, द्रह पुंडरीक में कमल खिले।
बुद्धीदेवी परिवारसहित उसमें रहती मन कमल खिले।।
नित आठ कूट में सिद्धकूट, जिनभवन अनूपम तामें है।
हम पूँजे अर्घ्य चढ़ाकर के, निरुपम सुखसंपत्ति तामें है।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखरी कुलगिरि कंचन छविमय, ग्यारह कूटों युत शोभे है।
महपुंडरीक द्रह में इक सिद्धकूट, उसमें जिनमंदिर रतनों का।
पूरब दिश में इक सिद्धकूट, उसमें जिनमंदिर रतनों का।
जिनबिंब जजें हम अर्घ्य लिये, जिनभक्ती है भवदधि नौका।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

माल्यवंत गजदत विदिश ईशान में।
नीलमणी समकांति कूट नव तास में।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय लहूँ गुण शिवमही।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमाल्यवंतगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदरमेरु महान विदिश आग्नेय है।
हस्तिदंत सौमनस रजत छवि देय हैं।।मीनकेतु.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरगिरि चौथे भूमि विदिश नैऋत्य हैं।
विद्युत्प्रभ गजदंत कनक छवि देय हैं।।मीनकेतु.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गंधमादनाचल वायव्य विदिश कहा।
कनक कांतिमय अकृत्रिम अनुपम रहा।।मीनकेतु.।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

मंदर मेरू सीतानदि के, उत्तर में वक्षार।
भद्रसाल वेदी के सन्निध, चित्रकूट अति प्यारा।।
तापर चार कूट नदि सन्निध, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितचित्रकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नलिनकूट' वक्षार दूसरा, वन उपवन से सोहे।
सुरकिन्नर गंधर्व खगेश्वर, जिनगुण गाते सोहें।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा राजें, सिद्धकूट मनहारी।।श्री.।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविदेहस्थितनलिनकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार अचल हैं, अनुपम निधि को धारे।
देव देवियाँ भक्ति भाव से, आ जिन सुयश उचारें।।
कर्मविजयि की प्रतिमा उसमें सिद्धकूट मनहारी।।श्री.।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार अचल में, अगणित भविजन आते।
सम्यक्रत्न हाथ में लेते, जिनवर के गुण गाते।।

मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितएकशैलवक्षारगिरिसिद्धकूट–जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर में जो, देवारण्य समीपे।
गिरि वक्षार 'त्रिकूट' नाम का, कनक वर्णमय दीपे।।
तापर चार कूट नदि पासे, सिद्धकूट मनहारी।।श्री.।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितत्रिकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षाराचल नाम 'वैश्रवण' शोभे सुरभवनों से।
इंद्र चक्रवर्ती धरणीपति, पूजें नित रत्नों से।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।।श्री.।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अंजननग' वक्षार मनोहर, शाश्वत सिद्ध कहा है।
सुर ललनायें क्रीड़ा करतीं, अद्भुत ऋद्धि जहाँ है।।मृत्युं.।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितअंजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार आठवां, सुर किन्नर मिल आवें।
जिनमहिमा को समक्ष समझकर, समकित ज्योति जगावें।।मृत्युं.।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूट–जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपर विदेह नदी सीतोदा, दक्षिण दिश में जानो।
भद्रसाल ढिग वक्षाराचल, 'श्रद्धावान' बखानो।।मृत्युं.।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितश्रद्धावन्वक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विजटावान' अचल सुंदर है, वेदी उपवन तापे।
इंद्र नमन करते मणियों से, विलसत मुकुट झुकाके।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितविजटावानवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार अकृत्रिम, द्रुम पंक्ती वन सोहें।
विद्याबल से श्रावकगण वहं, पूजन कर मन मोहें।।मृत्युं.।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितआशीविषवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचल 'सुखावह' सुख को देता, जो जिनगुण आलापें।
गगन गमनचारी ऋषियों के, पावन युगल वहाँ पे।।मृत्युं.।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितसुखावहवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पे, भूतारण्य समीपे।
ताके सन्निध 'चंद्रमालगिरि', रचना अद्भुत दीपे।।मृत्युं.।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितचंद्रामालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार सूर्यसम, सुवरण आभा धारे।
सुरवनितायें नित आ आकर, जिनवर कीर्ति उचारें।।मृत्युं.।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितसूर्यमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नागमाल' वक्षार अनूपम, विद्याधरगण आवें।
जन्म जन्म दुःख नाशन कारण, जिनवर के गुण गावें।।मृत्युं.।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितनागमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार गिरी पे, देव देवियाँ आके।
वीणा ताल मृदंग बजाकर, नृत्य करें वर्षा के।।मृत्युं.।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितदेवमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ्य-गीता छंद

मंदरमेरु पूर्व में, सीता नदी के उत्तरे।
वन भद्रसाल समीप 'कच्छा' देश अति सुंदर खरे।।
ता मध्य रूपाचल अतुल, नवकूट से मन को हरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनुपम 'सुकच्छा' देश में, षट् खंड रचना जानिये।
ता मध्य विजयारध अतुल बहुभांति महिमा मानिये।।
विद्याधरी वीणा बजाकर, भक्ति भर पूजा करें।।श्री.।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुंदर 'महाकच्छा' कहा, तामध्य रूपाचल सही।
वन वेदिका वापी सुरों के, गेह की अनुपम मही।।
मुनिवृद करते वंदना, निज कर्म कलिमल को हरें।।श्री.।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कच्छकावती' सुविदेह में, रचना अकृत्रिम जानिये।
तामध्य रूपाचल अतुल, नवकूट संयुत मानिये।।
आकाशगामी ऋषि मुनी, श्रावक सदा भक्ती करें।।श्री.।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकच्छाकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर देश 'आवर्ता' सरस, तामध्य विजयारध गिरी।
गाते जिनेश्वर का सुयश, नित यक्ष किन्नर किन्नरी।।
शाश्वत जिनालय वंदना, करते भविक भक्ती भरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

है क्षेत्र 'लांगलिवर्तिका', भविजन सदा जन्में वहाँ।
भव वल्लियों को काटकर शिव प्राप्त कर सकते वहाँ।।
इस मध्य रजताचल सुखद बहुभव्य के कल्मष हरें।।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धन धान्य पूरित संपदा, यह 'पुष्कला' वर देश है।
जिस मध्य रूपाचल कहा, हरता भविक मन क्लेश है।।
देवांगनायें नित मधुर, संगीत जहाँ पर उच्चरें।।श्री.।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'पुष्कलावति' देश में, विजयार्ध बीचों बीच है।
नवकूट में इक जिनसदन, नाशे भविक भव कीच है।।
स्वात्मैक परमानंद अमृत के, रसिक गुण विस्तरें।।श्री.।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलावतिदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'वत्सा' विदेह अतुल्यता मधि, आर्यखंड निरापदा।
इस देश के बस बीच में है, रूप्यगिरि वर शर्मदा।।
त्रैलोक्य नायक के गुणों की, कीर्ति बुधजन विस्तरें।।श्री.।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुंदर 'सुवत्सा' देश में, शाश्वत रजतगिरि सोहना।
नवकूट रत्नों के बने, सुर वृंद से मन मोहना।।
सुर अप्सरा मर्दल सुवीणा, को बजा नर्तन करें।।श्री.।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मनहर 'महावत्सा' विषें, विजयार्ध पर्वत सोहता।
गंधर्व देवों के मधुर, संगीत से मन मोहता।।
मुनि वीतरागी के वहाँ, ध्यानाग्नि से भववन जरें।।श्री.।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकच्छाकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'वत्सकावति' देश में, रूपाद्रि अनुपम मानिये।
विद्याधरों की पंक्तियों से, भीड़ तहं पर जानिये।।
इन्द्रादिगण आके वहाँ, मणिमौलि नत वंदन करें।।श्री.।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर देश 'रम्या' मध्य में, रजताद्रि रत्नों की खनी।
भव के विजेता नाथ की, महिमा जहाँ अतिशय घनी।।
सौ इंद्र मिलकर पूजने को, आ रहे भक्ती भरें।।श्री.।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुंदर 'सुरम्या' देश में, विजयार्ध पर्वत सोहना।
किन्नर गणों की बांसुरी, ध्वनि से मधुर मन मोहना।।
वर ऋद्धिधारी मुनि तहाँ, बहुभक्ति से विचरण करें।।श्री.।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभदेश 'रमणीया' विषे, विजयार्ध गिरि रजताभ है।
विद्याधरों की श्रेणियाँ, जिनमंदिरों से सार्थ हैं।।
नग तीन कटनी से सहित, बहु भांति की रचना धरें।।श्री.।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'मंगलावती' वर देश में, रजताद्रि बीचों बीच है।
जो जन नहीं श्रद्धा करें, रुलते सदा भवबीच हैं।।
खगपति सदा परिवारयुत जिनवर सुयश वर्णन करें।।श्री.।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमंगलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

मंदरमेरु अपर, नदी के दक्षिण जानों।
भद्रसाल के पास, 'पद्मादेश' बखानों।।
मध्य अचल विजयार्ध, जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' जान, मधि रजताद्रि बखाना।
अनुपम सुख की खान, खेचरपति से माना।।
सिद्धकूट मा माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'महापद्मा' सुविदेह, रजताचल अभिरामा।
नवकूटों युत श्रेष्ठ, सुर गावें जिन नामा।।
सिद्धकूट तामाहिं जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती', तामधि रजतगिरी है।
कनक रतन से पूर्ण, अविचल सौख्यश्री है।।
सिद्धकूट तामाहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह, देव असंख्य वहां पे।
आते रहते नित्य, प्रमुदित चित्त तहाँ पे।।

ताके मधि विजयार्ध, जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशंखादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह, भव्य नयन मन मोहे।
ताके मधि विजयार्ध, नव कूटों युत सोहे।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिनादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कुमुदा' देश विदेह, मध्य रजत गिरि सोहे।
भविमन कुमुद विकास, चन्द्र किरण सम सोहे।।सिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सरिता' देश सुमध्य, अनुपम रजतगिरी है।
जिनवच सरिता तत्र, भविमन पंक हरी है।।सिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतोदा नदि जान, ताके उत्तर भागे।
'वप्रा' देश महान, रूपाचल मधि भागे।।सिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, तामधि रजतगिरी है।
सुरललनायें नित्य, आवें भक्ति भरी हैं।।सिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

महावप्रा देश, तामें रजत नगेशा।
जिनगुण गाते नित्य, ब्रह्मा विष्णु महेशा।।सिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती', रजताचल मधिधारे।
मुनिगण जिनवर दर्श, करते सुयश उचारें।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रकावीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, रूपाचल से सोहे।
स्वातमरस पीयूष, पीके मुनि शिव जोहें।।सिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' रम्य, जिनवच सरभि वहां है।
जन मन होत सुगंध, नग विजयार्ध वहां है।।सिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'गंधिला' जान, जन मन कमल खिलावे।
मध्य रजत नग सिद्ध, जिनवच सुधा पिलावे।।सिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश, मधि रजताद्रि तहाँ है।
श्रद्धावंत महंत, का सम्यक्त्व वहां है।।सिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदअवलिप्त कपोल छंद

पूरब पुष्कर द्वीप अर्ध में, 'भरतक्षेत्र' दक्षिण दिश जान।
बीचों बीच कहा विजयारध, तिस ऊपर नव कूट महान।।

पूर्वदिशा के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अविचल अभिराम।
गर्भवास दुखनाशन कारण, अर्घ्य चढ़ाय करूं परणाम।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थितसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंदरमेरू के उत्तर दिश, शुभ ऐरावत क्षेत्र महान।
मध्य रजतगिरि चांदी सम है, त्रयकटनी युत अतुलनिधान।।
तिस पर पूर्वदिशा में जिनगृह, अकृत्रिम अनुपम सुखकार।
पुनर्जन्म दुख नाशन हेतू अर्घ्य चढ़ाय जजूँ रुचि धार।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

वर पुष्करार्ध पूरब में है, छह कुलपर्वत चउ गजदंता।
सोलह वक्षार रूप्यगिरि हैं, चौंतिस ये नग अतिशय कांता।।
इन पर जिनमंदिर अकृत्रिम, चारणऋषि वंदन करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे यम का खंडन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षाररूप्याचलस्थितषष्टिसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन सब मंदिर में जिन प्रतिमा, चौंसठ सौ अस्सी राजे हैं।
पद्मासन नासा दृष्टि धरें, छवि वीतराग अति भासे हैं।।
जो इनका ध्यान धरें नित प्रति, वे चिन्मय मूर्ति प्रगट करते।
अठ कर्मपिंड शतखंड करें, मृत्युंजय मूर्ति प्रगट करते।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनलायलमध्यविराजमानषट्–सहस्र-चतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में मंदरगिरि, चौथे मेरू पर जिनमंदिर।
पुष्करतरु शाल्मलितरु सोहें, कुलअद्रि आदि पर जिनमंदिर।।
कुल अठ्ठत्तर शाश्वत जिनगृह, मैं नित परोक्ष वंदना करूँ।
सब रोग शोक दारिद्र नशा, मृत्यू की भी खंडना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयभ्येः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन जिनगृह में जिनप्रतिमायें, चौरासी सौ चौबिस सोहें।
सुरपति जाकर वंदन करते, गणधर का भी ये मन मोहें।।
इनकी भक्ति भवदधि तरणी, निज आत्म सुधारस निर्झरणी।
जो इसमें अवगाहन करते, वे पा लेते मुक्ती सरणी[1]।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्तजिनालयमध्यविराजमान–अष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

जय जय जिनमंदिर जजत पुरंदर
अतिशय सुंदर पुण्य भरें।
जय पाप निकंदन सबसुख कंदन
मुनिगण वंदन नित्य करें।।
पाऊँ मैं साता, मेट असाता
शिवसुख दाता, तुमहिं नमूँ।
जय जय जिन प्रतिमा गुणमणि गरिमा
अतिशय महिमा, नित प्रणमूँ।।1।।

मैं नमूँ मैं नमूँ हे जिनंदा तुम्हें।
नाथ! त्रैलोक्य के पूर्ण चंदा तुम्हें।।
मोहतम नाशने हेतु भास्वान हो।
साधु चित्ताब्ज विकसावने भानु हो।।2।।

भव्य जन के पिता पालते प्यार से।
भक्त जन मातु हो पोषते लाड़ से।।
मुक्ति के मार्ग के विघ्न को टारते।
भक्त की सर्व आपत्ति संहारते।।3।।

जो तुम्हें ध्यावते सर्व के ध्येय हों।
कीर्ति जो गावते वे स्वयं गेय हों।।
जो तुम्हें पूजते सर्वजन पूज्य हों।
जो तुम्हें वंदते वे जगत् वंद्य हों।4।।

धन्य मेरा जनम धन्य है ये घड़ी।
धन्य हैं नेत्र मेरे सफल है घड़ी।।
धन्य है शीश ये आज वंदन किया।
धन्य है हाथ ये आज अर्चन किया।।5।।

एक ही प्रार्थना नाथ! सुन लीजिये।
जन्म वाराशि से पार कर दीजिये।।
पास अपने प्रभो! अब बुला लीजिये।
'ज्ञानमति' बंद कलिका खिला दीजिये।।6।।

दोहा

जिनप्रतिमा जिनसारखी, नमूँ नमूँ नत भाल।
करूणासागर ! दयाकर, करो भक्त प्रतिपाल।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-29

विद्युन्माली मेरु पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

श्री मेरु विद्युन्मालि पंचम द्वीप पुष्कर अपर में।
तीर्थंकरों का न्हवन होता है सदा तिस उपरि में।।
सोलह जिनालय हैं वहाँ सुरवंद्य जिन प्रतिमा तहाँ।
आह्वानन कर पूजूँ सदा मैं भक्ति श्रद्धा से यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-शंभु छंद

क्षीरोदधि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव-भव का कलिमल धोने को, श्रद्धा से अति हरषाया हूँ।।
विद्युनमाली मेरू पंचम, उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा, पूजत ही मिले सुखालय है।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

हरि चंदन कुंकुम गंध लिये, जिन चरण चढ़ाने आया हूँ।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आया हूँ।।विद्यु.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ......चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

क्षीरांबुधि फेन सदृश उज्जवल, अक्षत धोकर के लाया हूँ।
क्षय विरहित अक्षत सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।विद्यु.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ......अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाया हूँ।
मदनारिजयी तव चरणों में, मैं अर्पण करने आया हूँ।।विद्यु.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ...... पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाया हूँ।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।विद्यु.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ...... नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।विद्यु.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ...... दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटुकर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।विद्यु.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ...... धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

एला केला अंगूरों के, गुच्छे अति सरस मधुर लाया।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर सुख पाया।।विद्यु.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ...... फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
निज गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, तुम अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।विद्यु.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः ......अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पंचम मेरू जिन भवन, शाश्वत नित शोभंत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले स्वात्म आनंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

श्री मेरु पंचम की धरा पर, भद्रसाल सुवन कहा।
ता पूर्व दिश जिनधाम शाश्वत, मूर्ति से शोभित अहा।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर, मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्र्य सुख साम्राज्य हेतू, मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु विद्युन्मालि में, वन भद्रसाल जु सोहता।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, निज विभव से मन मोहता।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु प्रथमहि वन विषे पश्चिम दिशा में जिनभवन।
उसमें जिनेश्वर बिंब शाश्वत, राजते भव भय मथन।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु के भूवन विषै उत्तरदिशी जिन सद्म हैं।
उसमें महामहनीय जिनवर, बिंब के पदपद्म हैं।।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में हैं, पाँचवाँ सुरगिरि कहा।
नंदन विपिन में पूर्वदिक्, जिनगृह अनूपम छवि लहा।।
चंचल मनोमर्कटविजेता[1], साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल पंचम में सदा, नंदन सुवन विख्यात है।
दक्षिण दिश में जिनभवन, पूजें भविक हरषात हैं।।चंचल.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुराचल[1] में विपिन[2], नंदन अतुल महिमा धरे।
पश्चिम दिशा में जैनगृह, अतिशयभरी प्रतिमा धरे।।चंचल।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल विद्युन्मालि में, नंदनवनी तरु पंक्ति से।
जन मन हरे उत्तरदिशा के, मणिमयी जिनसद्म[3] से।।चंचल।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कनकाचल[4] पंचम विषे, वन सौमनस रसाल।
पूरबदिश में जिनभवन, अर्च हरूँ जंजाल।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि वन सौमनस में, दक्षिण दिश जिनधाम।
तिनकी जिनप्रतिमा जजूं, पूर्ण होय सब काम।।2।।

1. मनरूपी बन्दर को वश करने वाले। 2. मेरु। 3. वन। 4. जिनमन्दिर। 5. मेरु।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल[5] वन सौमनस, पश्चिम दिश जिनगेह।
इन्द्रवंद्य जिनबिंब को, पूजूँ धर मन नेह।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरु में, वन सौमनस अनूप।
उत्तरदिश जिनवेश्म को, जजत मिले निजरूप।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीदाम छंद

सुराचल पंचम में अभिराम, वनी पांडुक अतिरम्य ललाम।
जिनालयपूरबदिश में जान, जजूँ कर जोड़ करो शिवथान।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुराद्री[1] विद्युन्माली नाम, सरस वन पांडुक मुनि विश्राम।
जिनालय दक्षिणदिश में सार, जजूँ कर जोड़ करो भव पार।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकपवर्त[2] पंचम शिवकार, सुवन पांडुक में सुर परिवार।
जिनालय पश्चिमदिश रत्नाभ, जजूँ जिननाथ करो शिवलाभ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णाचल पंचम परधान, सुपांडुक वन है सौख्य निधान।
जिनेश्वरगृह उत्तर दिश जान, भरो मम आश जजूँ इह थान।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मेरु। 2. मेरु। 3. मेरु।

पूर्णार्घ्य दोहा

विद्युन्माली मेरु में, सोलह जिनवर धाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ लहूँ शिवधाम।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस हैं, जिनेश्वर बिंब महान।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, नमूँ नमूँ गुण खान।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत-अष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन के विदिक् में, पांडुशिलादि प्रसिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भाव से, लहूँ आत्मसुख सिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय विद्युन्माली मेरू, जय जय सुवरनमय जिनगेहा।
जय जय मृत्युंजयि जिनप्रतिमा, जय जय सुर पूजें धर नेहा।।
जय जय ऋषि गमन गमनचारी, श्रद्धा से वंदन करते हैं।
जय जय मुनि समरस आस्वादी स्वात्मा का चिंतन करते हैं।।1।।

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, चित्पिंड अखंड अरूपी हूँ।
स्वाभाविक दर्शन ज्ञान वीर्य, सुखरूप अचिन्त्य स्वरूपी हूँ।।
मैं हूँ अनंत गुण रत्नराशि, मैं परम ज्योतिमय परमात्मा।
मैं सकल विमल और अकल अमल हूँ, परमानंदमयी आत्मा।।2।।

यद्यपि व्यवहारनयापेक्षा मैं दीन दुखी संसारी हूँ।
इन कर्मों का कर्ता भोक्ता, नाना प्रकार तनुधारी हूँ।।

भव पंच परावर्तन कर कर, चहुँगति में घूमा करता हूँ।
बस जन्म मरण के चक्कर में, निशदिन ही झूमा करता हूँ।।3।।

फिर भी निश्चयनय से मैं ही, नित शुद्ध सिद्ध परमात्मा हूँ।
रस गंध वर्ण स्पर्श रहित, चिन्मूरति चैतन्यात्मा हूँ।।
ये राग रू द्वेष विभाव भाव, सब कर्मोदय से आते हैं।
जब कर्म बंध सम्बंध नहीं, तब कैसे ये रह पाते हैं।।4।।

निश्चय व्यवहार उभयनय से, मैं तत्त्वों का ज्ञाता होऊँ।
फिर नय का आश्रय छोड़ सभी, इक निर्विकल्प में रत होऊँ।।
मैं ध्याता हूँ तुम ध्येय ध्यान, फल आदिक भेद समाप्त करूँ।
बस एकाकी एकत्व लिये, निज में ही निज को प्राप्त करूँ।।5।।

प्रभु ऐसी स्थिति आने तक, तुम चरण कमल का ध्यान करूँ।
पूर्णैंक 'ज्ञानमती' पाने तक, पूजूँ वंदूँ गुणगान करूँ।।
हे नाथ! तुम्हारी भक्ति का, मुझको फल केवल यही मिले।
बस पास तुम्हारे आ जाऊँ, ऐसा मेरा सौभाग्य खिले।।6।।

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, विद्युन्माली मेरु।
पूजत ही निज सुख मिले, मिटे जगत का फेर।।7।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-30

पश्चिमपुष्करार्ध पुष्कर वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद (चाल-इह विधि राज करे....।)

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, मध्य कनक गिरि सोहे।
ताके दक्षिण उत्तर दिश में, भोगधरा[1] मन मोहें।।
उत्तरकुरु ईशान कोण में, पुष्करवृक्ष सुहावे।
दक्षिण[2] देवकुरु अग्नि दिश, शाल्मलि तरु मन भावे।।1।।

दोहा

दोनों तरु की शाख पर, भूकायिक[3] जिनगेह।
जिनमूर्ती की थापना, करूँ भक्ति भर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैॠत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैॠत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैॠत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-(चाल-मेरी भावना......)

पद्माकर को जल अतिशीतल, पद्म पराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करूँ मन कंज[4] खिला।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहे।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियाँ आन पड़ें।
जिनपद पूजन के नश जाते, कर्म शत्रु भी बड़े बड़े।।पृथ्वी.।।2।।

1. भोगभूमि। 2. पूर्व दक्षिण के मध्य की दिशा। 3. पृथ्वीकायिक। 4. कमल।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति भरे।
अमृत कणसम निजसमकितगुण, पाऊँ अतिशयशुद्ध खरे।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहे।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
कामबाण विजयीजिनवल्लभ, चरणजजतनवलब्धि[1] मिले।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनपद पंकज पूज किये।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से करते जिन पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप जलाकर, अष्ट कर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्य कर्म भी भस्म करें।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

1. क्षायिक दर्शन आदि नव क्षायिक भाव। 2. मलाई।

फल अंगूर, अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरें।
नव क्षायिकलब्धी फल इच्छुक, पूजूँ तुम पादाब्ज[1] खरे।।पृथ्वी.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतू, तुम पदवारिज[2] अर्घ्य किया।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मालती फूल, सुरभित निजकर से चुनें।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

मुक्तिवधू भरतार, श्रीजिनवर के बिंब हैं।
पूजूँ शिव करतार, पुष्पांजलि चढ़ाय के।।1।।

इति श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिद्वयवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

पश्चिम पुष्कर द्वीप, सुरगिरि के ईशाने।
पदम वृक्ष की शाख, उत्तर दिश परधाने।।

1. चरणकमल। 2. चरणकमल।

तापे श्रीजिनगेह, नाना रत्नमयी है।
मृत्युंजयि जिनबिंब, पूजूँ सौख्य मही है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कनकाचल नैर्ऋत्य, शाल्मलि द्रुम मन भावे।
दक्षिण शाखा उपरि, जिनवर भवन सुहावे।।
उनके श्री जिनबिंब, अकृत्रिम अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ शिवतिय प्यारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इन तरु के परिवार, अगणित शास्त्र बखाने।
उन सब में सुरवृन्द्र, वैभव संयुत मानें।।
प्रतिवेदन[1] गृहमाहिं, जिनगृह शाश्वत जानो।
पूरण अर्घ्य बनाय, पूजत ही शिव थानो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसपरिवारपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिंम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

वीतराग विज्ञान घन, सर्वसार में सार।
वंदूँ श्रीजिनदेव को, जिनप्रतिमा अविकार।।1।।

चाल-हे दीनबंधु......

जय रत्नमयी वृक्ष ये अनादि अनंता।
जय पंचरत्न वर्ण सिद्धकूट धरंता।।

1. प्रत्येक देवों के।

जय जय जिनेन्द्र देव के, जो भवन कहे हैं।
जय जय जिनेन्द्र मूर्तियाँ, जो पाप दहे हैं।।1।।

जिनमंदिरों में घंटिका, औ किंकिणी बजे।
वीणा मृदंग बांसुरी, संगीत हैं सजे।।
मंगल कलश और धूप घट अनेक धरे हैं।
जो देव देवियों के सदा चित्त हरे हैं।।2।।

रत्नों की स्वर्ण मोतियों की मालिकायें हैं।
कौशेय[1] वस्त्र सदृश रत्न की ध्वजायें हैं।।
उनमें बने हैं सिंह, हस्ति हंस बैल जो।
मयूर, चक्र, गरुड़, चंद्र सूर्य कमल जो।।3।।

इन दश प्रकार चिन्ह से चिह्नित हैं ध्वजायें।
जो भक्त गणों को सदा ही पास बुलायें।।
ये रत्नमयी होय के भी वायु से हिलें।
अद्‌भुत असंख्य रत्न हैं इस रूप में मिलें।।4।।

प्रत्येक जैनगेह में रचना अनंत है।
प्रत्येक में ही इक सौ आठ जैनबिंब हैं।।
प्रत्येक में तोरण दुवार[1] रत्न के बने।
जिनदेव मानतंभ[2] वहाँ मान को हनें।।5।।

ये जैनभवन हैं सदा सन्मार्ग के दाता।
निज आश्रितों को सत्य में हैं मुक्ति प्रदाता।।
इन नाम के जपे से नशे भूत की बाधा।
व्यंतर पिशाच प्रेत क्रूर, ग्रहों की बाधा।।6।।

इनके करें जो दर्श वे भवसिंधु तरे हैं।
जो भक्ति से पूजन करें वे सौख्य भरे हैं।।

1. रेशमी। 2. द्वार। 3. मानस्तम्भ।

इस लोक में धन धान्य पुत्र पौत्र को पाते।
चक्रेश की सी संपदा पा मौज उड़ाते है।।7।।

जिनधर्म में अतिगाढ़ प्रेम धारते सदा।
पर लोक में इंद्रादि विभव पावते मुदा।।
पश्चात यहाँ तीर्थ की पदवी को धरा के।
तीर्थंकरों का धर्म चक्र जग में चलाके।।8।।

आर्हन्त्य विभव पाय के भगवंत बनेंगे।
वे मुक्ति वल्लभा के भी तो कंत बनेंगे।।
इस विध से नाथ आपकी कीर्ति को मैं सुनी।
अतएव शरण आपकी ली सुन के तुम धुनी।।9।।

बस एक आश आज मेरे पूरिये प्रभो।
मोहादि कर्म बैरियों को चूरिये प्रभो।।
बस मैं स्वयं निज आत्मा को शुद्ध करूंगा।
सम्यक्त्व शुद्ध 'ज्ञानमती' सिद्धि वरूँगा।।10।।

दोहा

प्रभु तुम महिमा अगम है, तुम गुणरत्न अनंत।
इस गुण लव भी पाय मैं, तरूँ भवाब्धि अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुश्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-31

पश्चिमपुष्करार्धपर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

पश्चिम सुपुष्करद्वीप के छह कुलगिरी पर जिनगृहा।
गजदंत चउ वक्षार सोलह के जिनालय अघदहा।।
चौंतीस रजताचल जिनालय सर्व की पूजा करूँ।
आह्वानन कर मैं थापहूँ मन में अतुल श्रद्धा धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूपप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूपप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूपप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-(चाल-शेर)

गंगा नदी सुनीर स्वर्ण भृंग में भरूँ।
प्रभुपाद में त्रय धार दे भव वार्धि से तिरूँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव रोग को हरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंध चर्ण चर्चते।
भवताप दाह दूर हो प्रभु आप अर्चते।।हे.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोती समान श्वेत शालि पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अखंड पद को प्रभु अर्चते पाऊँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव रोग को हरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बेला गुलाब पुष्प वर्ण वर्ण के लिये।
प्रभु चर्ण में चढ़ाय सर्व संपदा किये।।हे.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पायस व बालूसाही हलुआ चढ़ायके।
उदराग्नि को प्रशमित करूँ प्रभु को रिझायके।।हे.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे मैं आरती करूँ।
अज्ञान अंधकार नाश भारती भरूँ।।हे.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वर धूप खेय धूपघट में धूम्र उड़ाऊँ।
जो दुःख दे रहे हैं ऐसे कर्म जलाऊँ।।हे.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

पिस्ता बदाम काजू अखरोट चढ़ाऊँ।
बस एक मोक्ष फल की ही आश लगाऊँ।।हे.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरादि अर्घ लेय रजत पुष्प मिलाऊँ।
निज आत्मनिधि हेतु आप अर्घ चढ़ाऊँ।।हे.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजलि करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पश्चिम पुष्कर द्वीप, साठ जिनालय सोहते।
नमूँ नमूं धर प्रीत, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबोल छंद

विद्युन्माली दक्षिण दिश में, हिमवन गिरि कलधौत समान।
ग्यारह कूटों में अनुपम इक, सिद्धकूट जिनमंदिर जान।।
बीचों बीच पद्म सरवर में, कमल बीच श्रीदेवी थान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि दक्षिण दिश में, चांदी सदृश 'महाहिमवान'।
बीच सरोवर महापद्म में, कमल मध्य ह्रीं देवी मान।।
आठ कूट में पूर्व दिशा पर, सिद्धकूट अविचल गुणखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कनकाचल पंचम दक्षिण दिश, 'निषध' तप्त सुवरण छवि मान।
बीज तिगिंछ सरोवर मध्ये, कमल बीच धृति देवी जान।।
नवकूटों में पूर्वदिशा का, सिद्धकूट शिव मारग मान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरू उत्तर, 'नीलाचल' वैडूर्य समान।
मध्य केशरी द्रह में पंकज, बीच कीर्ति देवी द्युतिमान।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर, मणि रत्नों से खचित वखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनीलपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पंचम सुरनग के उत्तर में, रजतवर्ण 'रूक्मीगिरि' जान।
मध्य सरोवर पुंडरीक में, कमल बीच बुद्धिसुरि मान।।
आठ कूट में पूर्व दिशागत, सिद्धकूट शिवपंथ महान्।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरूक्मीपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्णाचल पंचम के उत्तर, 'शिखरी' पर्वत स्वर्ण समान।
मध्य महापुंडरीक सरोवर, जलज, बीच लक्ष्मी सुरि मान।।
ग्यारह कूटों में पूरब गत, सिद्धकूट शाश्वत सुख खान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशिखरीपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य-चौबोल छंद

मेरू के ईशान कोण में, 'माल्यवंत' गजदंत रहे।
छवि वैडूर्य मणीसम अनुपम, नवकूटों युत संत कहें।।

सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृह शाश्वत सिद्ध कहीं।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमाल्यवद्‌गजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरगिरि के आग्नेय विदिश में, 'सौमनस्य' गजदंत कहा।
रतनमयी यह पर्वत सुंदर सात कूट से शोभ रहा।।
मेरु निकट श्री सिद्धकूट पर, जिनमंदिर छवि रतनमयी।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्णाचल नैऋत्य विदिश में, 'विद्युत्प्रभ' गजदंत दिपे।
नवकूटों युत तप्त कनकछवि, दिनकर लज्जित संत छिपे।।
सुरगिरि सन्निधि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर शिव गमन मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि के वायव्ये, 'गंधमादनाचल' सोहे।
स्वर्णवर्णमय सात कूटयुत, सुरनर किन्नर मन मोहे।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृह अनुपम अचल मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वक्षार के अर्घ्य-नरेन्द्र छंद

पश्चिम पुष्करअर्ध द्वीप में, सुरगिरि पूर्व दिशा में।
सीता नदि के उत्तर तट पे, भद्रसाल ढिग तामे।।
'चित्रकूट' वक्षार अचल पर, जिनमंदिर सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचित्रकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नलिन कूट वक्षार दूसरा, 'पुष्करार्ध' में जानो।
उसमे चार कूट में अनुपम, सिद्धकूट इक मानो।।
जिन चैत्यालय शाश्वत अविचल, पूजूँ कर्म विडारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिन वक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार अतुल है, पाप पंक मल धोवें।
जो जन इसके सिद्धवृक्ष को, पूजें सब दुःख खोवें।।
जिनगृह की छवि अतिशय प्यारी, भविजन मन सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार अनूपम, सुर किन्नर मन भावे।
सुवरण छवि से सूर्य तेजहर, जिनमंदिर मन भावे।।
विद्याधर विद्याधरियाँ भी, गुण गावें चित हारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिएकशैलवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य समीपे।
नग 'त्रिकूट' वक्षार सुवर्णिम, चार कूट से दीपे।।
सिद्धकूट जिनमंदिर अद्‌भुत, मुनिमन सम अविकारी।
सरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधित्रिकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गिरि 'वैश्रवण' कहा वक्षारा, भूधर मुकुट मणी हैं।
सिद्धकूट का श्रीजिनमंदिर, चिंतारत्नमणी हैं।।

वंदन करते वाले भवि के, भव भय संकटहारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अंजन' नग वक्षार अकृत्रिम, अमर गणों से सोहे।
इस ऊपर परमात्मनिरंजन, का जिनमंदिर सोहे।।
वन वेदी वापी तोरण से, सुरगृह से चित हारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिअंजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार आठवाँ, अतुल निधी को धारे।
इस पे सिद्धकूट को जो जन, पूजें मोक्ष सिधारें।।
मृत्युंजयि जिनवर का मंदिर, अखिल अमल गुणधारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरु के पश्चिम दिश में है, अपर विदेह कहाता।
सीतोदा सरिता बहने से, उभय भाग बँट जाता।।
सरिता दक्षिण भद्रसाल के, ढिग वक्षार गिरी है।
'श्रद्धावान' उपरि जिनमंदिर,पूजूं पाप हरी है।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिश्रद्धावानवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विजटावान्' अचल वक्षारा, चार कूट युत सोहे।
कनककांति से सिद्धकूट से, अतुल अपूरव सोहे।।
जिनमंदिर में मृत्युंजयि की, प्रतिमा सौख्यकारी है।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, भव भय ताप हरी है।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविजटावानवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार स्वर्णसम, विविधि गृहों को धारे।
सिद्धकूट पे श्रीजिनमंदिर, कर्म कालिमा टारे।।
पद्मासन जिनप्रतिमा सुंदर, सिंहासन पे राजें।
जो जन पूजन वंदन करते, कर्म अरीदल भाजें।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआशीविषवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अचल 'सुखावह' बहु सुखदाता, चार कूट से सोहे।
जो जन सिद्धकूट को वंदे, त्रिभुवन के पति होहें।।
साधू जन आकाश मार्ग से, जिनवंदन को आते।
जो जन पूजें श्रद्धा धर मन, वे अनुपम सुख पाते।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुखावहवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट में, भूतारण्य निकट में।
'चंद्रमाल' वक्षार मनोहर, देव रमें उस तट में।।
चार कूट में सिद्धकूट इक, जिनमंदिर अभिरामा।
मैं इत अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, पाऊँ शिव विश्रामा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचंद्रमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार अनोखा, सूरजतेज लजावे।
सिद्धकूट में जिनवर मंदिर, मुनिमन कुमुद खिलावें।।
भव विजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसूर्यमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नागमाल' वक्षार भूमिधर, नवनिधि वैभव शाली।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, अनुपम छवि मणिमाली।।
भव विजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनागमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार सोलवाँ, स्वर्गपुरी सम शोभा।
चार कूट में एक कूट पर, जिनगृह अतुल अनोखा।।
भव विजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिदेवमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

सीतानदि उत्तर तरफ, भद्रसाल वन पास।
'कच्छा' देश रजतगिरि, जिनगृह जजूँ हुलास।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' मध्य में, रूपाचल मनहार।
सिद्धकूट में जिनभवन, जजूँ सदा सुखकार।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' मधी, रूपाचल अभिराम।
सिद्धकूट का जिनभवन, पूजूं करूँ प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूटजिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'कच्छकावति' विषें, विजयारध सुखकार।
भवविजयी के जिनभवन, पूजूँ भव दुखटार।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतिदेशमध्यस्थितविजयार्ध–गिरि सिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आवर्ता' सुविदेह में, रूपाचल रजताभ।
ताके श्री जिनगेह को, पूजूँ करो कृतार्थ।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआवर्तादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्त' में, रजताचल सुखकार।
सिद्धकूट पर जिनभवन, पूजूँ सुयश उचार।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिलांगलावर्तादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्पकला' में अचल, विजयारध मनहार।
ताके श्री जिनगेह को, पूजूं शिव सुखकार।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मधि, रूपाचल सुखधाम।
जिनगृह के जिनबिंब को, पूजूं नित शिवधाम।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि सिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सीता के दक्षिण तरफ, देवारण्य समीप।
'वत्सा' के विजयार्ध का, जिनगृह जजूँ पुनीत।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' मध्य में, विजयारध गुणधाम।
उसपे जिनमंदिर जजूँ, परमानंद प्रदाम्।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधी, रूपाचल मनहार।
जिनमंदिर के बिंब को, पूजूँ शिव करतार।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'वत्सकावति' देश में, रूपाचल सुखधाम।
तापे जिनगृह जिनछवी, पूजूँ भुवन ललाम।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरि–सिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह में, रजताचल गुणमाल।
जिनगृह के जिनबिंब को, पूजूँ जग प्रतिपाल।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' मध्य में, रूपाचल अभिराम।
जिन चैत्यालय को जजूं, पाऊँ मोक्ष निकाम।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'रमणीया' सुविदेह में रूप्यागिरि रूपाभ।
जिनगृह की जिनमूर्ति को, जजूँ नमाऊँ माथ।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

''मंगलावति' देश में, खग पर्वत सुखपाल।
जिनमंदिर में मूर्ति की, पूजा करूं त्रिकाल।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमंगलावतिदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोला छंद

भद्रसाल वन पास, सीतोदा नदि दायें।
'पद्मादेश' विदेह, मधि रूपाद्रि कहाये।।
तापे श्रीजिनगेह, सब भवचक्र विनाशे।
जो पूजें धर नेह, केवलज्ञान प्रकाशें।।43।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' माहिं, रजताचल मन मोहे।
तापे श्री जिनधाम, सुर किन्नर मन मोहे।।

ताके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुपद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालयजिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'महापद्मा' सुविदेह, तामें रजतगिरी है।
उसपे श्री जिनवेश्म, अद्भुत सौख्यगिरि है।।ताके.।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहापद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती', मधि में रूप्यगिरी है।
त्रयकटनी युत रम्य, जिनगृह अतुलश्री है।।ताके.।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह, शंख ध्वनी जहं गूंजे।
बीच रजतगिरि एक, जिनमंदिर सुर पूजें।।ताके.।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशंखादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नलिनादेश' अपूर्व, शाश्वत सिद्धकहा है।
बीच रजतगिरि शीश, जिनगृह नित्य कहा है।।ताके.।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिनादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कुमुदा' देश अनूप, शिव का मार्ग प्रकाशे।
बीच रजतगिरी श्रेष्ठ, जिनगृह अनुपम भासे।।ताके.।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुमुदादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सरिता' देश विदेह, छह खंडों युत सोहे।
बीच कहा विजयार्ध, जिनगृह से मन मोहे।।ताके.।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसरितादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नदि के उत्तर माहिं, भूतारण्य समीपे।
'वप्रादेश' विदेह, बीच रजतगिरि दीपे।।ताके.।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' मध्य, रूपाचल अविकारी।
नव कूटों में एक, जिनमंदिर सुखकारी।।ताके.।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'महावप्रा' शुभ देश, अगणित विभव धरे हैं।
बीच रजतगिरि श्वेत, जिनवर सद्म धरे है।।ताके.।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'वप्रकावतिदेश' बीच रतजगिरि धारे।
नवकूटों में एक, जिनगृह भवदधि तारे।।ताके.।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रकावतिदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधादेश' विदेह, रौप्य अचल से सोहे।
त्रयकटनीयुत रम्य, ऊपर जिनगृह सोहे।।ताके.।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' मध्य, खगपर्वत मन मोहे।
इंद्रादिक से वंद्य, जिनमंदिर इक सोहे।।ताके.।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुगंधादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देश 'गंधिला' बीच, रजतगिरी रजताभा।
नवकूटों में एक, जिनमंदिर मणि आभा।।ताके.।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधिलादेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश, रूप्यगिरी मधि धारे।
रत्नमयी इक कूट, जिनमंदिर को धारे।।
ताके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमालिनीदेशमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, सुरगिरि दक्षिण जानो।
भरतक्षेत्र के मध्य रूप्यगिरि, नवकूटों युत मानो।।
सिद्धकूट के जिनमंदिर में, रतनमयी प्रतिमा हैं।
जो जन अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, लहें अतुल महिमा हैं।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विद्युन्माली के उत्तर में, ऐरावत शुभ जानो।
मध्य रजतगिरि पे इकसौ दश, खग नगरी सरधानो।।सिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रमध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय-जिनबिंम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-गीताछंद

पश्चिम सु पुष्कर द्वीप के कुलगिरि व गजदंताद्रि हैं।
वक्षार रूप्याचल इन्हों पर साठ जिनवर गेह हैं।।
ये मोह अहि के विष उतारन हेतु गारुत्मणि कहें।
इनको जजूँ ये भक्त लोहा हेतु पारमणि कहें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयेबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन धाम में चौंसठ शतक अस्सी जिनेश्वर मूर्तियाँ।
इनको जजें वे बन सकें चैतन्य धातू मूर्तियाँ।।
मृत्युंजयी इन मूत्रियों को कोटि कोटी वंदना।
मैं जजूँ नित प्रति भाव से हो जाय यम की वदंना।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूट-जिनालयमध्य-विराजमानषट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्कर द्वीप में वरमेरु विद्युन्मालि है।
पुष्करतरू शाल्मलितरू कुलपर्वतादि विशाल हैं।।
इन पर अकृत्रिम अठत्तर जिनधाम पुण्य निधान हैं।
इनको जजूँ वर भक्ति से ये मोक्ष सुख की खान हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन मेरु तरुवर पर्वतों पर जैन मंदिर सोहते।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ आठ मुनिमन मोहते।।
चौरासि सौ चौबिस जिनेश्वर को यहाँ मैं नित जजूँ।
निज सौख्य परमानंद हेतू आपको अतिशय भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविराज–मानअष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप के, जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शत शत करूँ प्रणाम।।

शंभू छंद

जय जय कुलगिरि के जिनमंदिर, जय गजदंताचल के मंदिर।
जय वक्षाराचल के मंदिर, जय रूप्याचल के जिनमंदिर।।
जय जय जय जिनवर प्रतिमायें, अज्ञान अंधेरा हरती हैं।
वे भक्तों के मन मंदिर में, सज्ज्ञानज्योति को भरती हैं।।2।।

हिमवन पर्वत वर चार सहस, दो सौ दस योजन विस्तृत है।
महाहिमवन सोलह सहस आठ सौ ब्यालिस योजन विस्तृत है।।

नग निषध सु सड़सठ सहस तीन सौ अड़सठ योजन विस्तृत है।
नग नील निषध सम फिर आधे आधे होते दोनों नग हैं।।3।।

ये पर्वत सौ दोसौ चउसो योजन तक ऊँचे माने हैं।
इन पर पद्मादि सरोवर में, भूकायिक कमल वखाने हैं।।
उन कमलों में श्री ह्री धृति अरु कीर्ति बुद्धी लख्मी रहतीं।
जिनमाता की सेवा करने, आतीं अति गूढ़ प्रश्न करतीं।।4।।

गजदंत वहाँ पर मेरु की, विदिशा में नग को छूते हैं।
पूर्वापर उभय विदेहों में, वक्षाराचल अति लंबे हैं।।
इनसे व विभंगा नदियों से, बत्तिस विदेह हो जाते हैं।
वहाँ पर तीर्थंकर प्रभु विहरें, नित धर्मामृत बरसाते हैं।।5।।

इन बत्तीसों हि विदेहों में, भरतैरावत में रजताचल।
विद्याधर की शुभनगरी से, त्रय कटनी से सोहें अविचल।।
ये क्षेत्र बराबर लंबे हैं, योजन पचीस ही ऊँचे हैं।
योजन पचास चौंड़े सुंदर, चांदी के बने अनोखे हैं।।6।।

इन पर्वत के जिनमंदिर को, हम भी परोक्ष वंदन करते।
इनकी जिनवर प्रतिमाओं का, वंदन कर दुख खंडन करते।।
निज अल्प ज्ञानमति बुद्धी से, जिनवर का गुण कीर्तन करते।
बस पूर्ण 'ज्ञानमति होने तक, प्रभु का पूजन अर्चन करते।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-32

पुष्करार्धद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

पुष्करार्ध में दक्षिण-उत्तर, इष्वाकार गिरी हैं।
कनकवर्णमय शाश्वत अनुपम, धारें अतुलसिरी हैं।।
इन दोनों पे दो जिनमंदिर, पूजत पाप पलानो।
आह्वानन कर जिनप्रतिमा का, विधिवत् पूजन ठानो।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छंद

तीन लोक भर जाय प्रभो मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी प्यास बुझी नहिं, किंचित्, यातें शरण लिया है।।
हृदय ताप उपशांति हेतू, शीतल जल ले आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मोह राग की दावानल में, चिर से झुलस रहा हूँ।
किंचित मन की दाह मिटी नहिं, अब तुम पास खड़ा हूँ।।
रागदाह हर शीतल हेतू, हरि चंदन घिस लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

जन्म मरण के बहु दुःखों से, अब मैं शांत हुआ हूँ।
अन्य नहीं निरवारण समरथ, यातें पूज रहा हूँ।।

अक्षय अव्यय निजपद हेतू, उज्ज्वल अक्षत लिया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।3।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मकरध्वज[1] ने चिर भव भव में, मुझको अधि छला है।
मारविजेता[2] तुमको सुनके, ली अब शरण भला है।।
काममोहयमत्रिपुरारी[3] हर[4]! विविध कुसुम मैं लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

संख्यातीते तीन लोक सम, अन्न प्रभो! खाया मैं।
फिर भी भूख अगनि नहिं, बुझती, इससे अकुलाया मैं।।
स्वात्म अमृत स्वाद हेतु मैं, बहुविध व्यंजन लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बहुविध दीपक विद्युत आदी, तम हरने हित लाया।
फिर भी अंतर अंधकार को, दूर नहीं कर पाया।।
स्वपर भेदविज्ञान हेतु मैं, मणिदीपक ले आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।6।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अष्ट कर्म दुःख देते जग में, इनको शीघ्र जलाऊँ।
धूप सुगंधित अग्निपात्र में, श्रद्धासहित जराऊँ।।
आतम शुद्धी करने हेतु, पूजन करने आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

---

1. कामदेव। 2. कामदेव विजयी।
3. कामदेव, मोह और मृत्यु ये तीन पुर सदृश है इनको जीतने वाले। 4. महादेव।

बहुविध सरस मधुर फल खाये, फिर भी तृप्ति न पाई।
आत्मसुधारस अनुभव पाने, प्रभु तुम पूज रचाई।।
ज्ञानानंद स्वभावी हो तुम, यह सुन शरणे आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदि ले, अर्घ्य सजाकर लाया।
नित्य निरंजन चिच्चिन्तामणि, रत्न कमाने आया।।
तुमसे हे प्रभु अखिल ज्ञान निधि, प्राप्त हेतु मैं आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा[1] सम श्वेत।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।1।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

शाश्वत जिन आगार[2], मणिरत्नों से परिणमें।
प्रभु करिये भवपार, नित प्रति अर्चूं भाव से।।1।।

इति पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारगिरिस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

पुष्करार्ध वर द्वीप, ताके दक्षिण माहीं।
इष्वाकार गिरीश, अद् भुत अतुल कहाहीं।।

1. आकाशगगा। 2. भवन।

तापे सिद्ध सुकूट, जिन प्रतिमा अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थारी।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तृतिय द्वीप में माहिं, उत्तर दिश में जानों।
इष्वाकार नगेश, अनुपम रूप बखानो।।
तापे जिनवरगेह, सिद्धकूट मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थाली।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थउत्तरदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

कंचनदेह सुकांति, दो पर्वत मन मोहे।
चार चार हैं कूट, सुर किन्नर गृह सोहें।।
उनमें इक इक सिद्ध-कूट जिनालय दो हैं।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय, पूजूँ शिवसुख हो हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशायांसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दो नग के जिनगेह, तिनमें जिनवर प्रतिमा।
दो सौ सोहल मान्य, नमूँ नमूँ गुण महिमा।।
मुनिवर गण शिर नाय, वंदें नित सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, शीघ्र वरूँ शिवनारी।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमानद्विशत-षोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

अशरण के प्रभु तुम शरण, निराधार आधार।
तुम गुण गण मणि मालिका, लेऊँ कंठ में धार।।1।।

तोटक छंद

जय इष्वाकार जिनेश गृहं, जय मुक्ति वधू परमेश गृहं।
जय नाथ त्रिलोकपति तुम हो, जय नाथ अनंत गुणांबुधि हो।।1।।

जय साधु मनोम्बुज भानु समं, जय भव्य कुमोदनि चंद्र समं।
जय भक्त मनोरथ पूरक हो, जय सर्व दुखांकुर चूरक हो।।2।।

जय कल्पतरू सम सौख्य भरो, जय वांछित वस्तु प्रदान करो।
जय संसृति रोग महौषधि हो, जय तारक भव्य भवोदधि हो।।3।।

जय तुंग चतुःशत योजन है, जय विस्तृत सहस सुयोजन है।
जय लंबे आठ सु लाख कहे, द्वय शैल सुवर्णिम कांति लहे।।4।।

मुनिवृंद वहां नित भक्ति करें, नित आतम बोध विकास करें।।
खगवृंद वहां नित आवत हैं, जिनपाद सरोरुह ध्यावत हैं।।5।।

सुर अप्सरियां बहु नृत्य करें, गुण गावत चित्त उमंग भरे।
करताल मृदंग बजावत हैं, निज कर्म कलंक नशावत हैं।।6।।

द्वय पे जिनमंदिर स्वर्णमयी, जिनबिंब मणीयम रत्नमयी।
छवि सौम्य विराग विदोष कही, द्युति से रवि रश्मि लजें सबहीं।।7।।

जिनपाद सरोरुह शर्ण लिया, प्रभु अर्ज सुनो हमरी कृपया।
यमपाश विपाश हरो प्रभुजी, सब भाव विभाव हरो प्रभुजी।।8।।

हम आश धरें तुम पाद प्रभो, अब वेग उबार भवोदधि सो।
मुझ 'ज्ञानमती' सुख शांति करो, जिनदेव! सभी गुण पूर्ण करो।।9।।

घत्ता

जय इष्वाकारा पर्वत सारा, जय जिनमंदिर नित्य नमूँ।
जय जिनगुण गाके, कर्म नशाके, नित्य निरंजन सिद्ध बनूँ।।10।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-33

मानुषोत्तर जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

वर द्वीप सोलह लाख योजन नाम पुष्कर जानिये।
इस मध्य चूड़ी के सदृश नग मानुषोत्तर मानिये।।
इस पर चतुर्दिश चार अनुपम शाश्वते जिनगेह हैं।
उनके जिनेश्वर बिंब पूजूँ धार मन अति नेह हैं।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चाल-नंदीश्वर पूजा

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
पर बुझी न मन की प्यास, आखिर ऊब गया।।
इस हेतू से जल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यःजलं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु मोह अग्नि की दाह, मुझको दहन करो।
हिमकण चंदन बर्फादि, नहिं भव ताप हरे।।
इस हेतू चंदन लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धन धान्य विभव को पाय, नहिं व्यय को चाहूँ।
पर अब तक इनकी नाथ, रक्षा नहिं पाऊँ।।
इसलिये धवल ले शालि, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मन नयन घ्राणहर पुष्प, सुरभी खूब लिया।
पर भगवन्! तुम गुण गंध, अब तक नाहिं लिया।।
इसलिये विविध सुम लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

भव भव में बहु पकवार, खाके तृप्ति नहीं।
तुमने प्रभु क्षुध की व्याधि, नाशी तृप्ति लही।।
इसलिये मधुर चरु लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मैं चाहूँ दीपक सूर्य, मन का तपन हरे।
पर झूठ हुई सब आश, समकित पाय खरे।।
निज द्युति हित दीपक लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दुख दूर करन हित नाथ! बहुते यत्न करे।
पर दुःख हरन में अन्य, कोई नाहिं अरे।।
इस हेतू धूप जलाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

भव भव के सुख फल हेतु, बहुते देव यजे।
पर अब तक कोई नाहिं, शिवफल देय सके।।
इसलिये सरस फल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

बहुमूल्य अतुल फल हेतु, सब जग घूम चुका।
पर मिली न अब तक तृप्ति, बहु पद चूम चुका।।
शिव फल हित अर्घ चढ़ाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

स्वच्छ बावड़ी नीर, धार देय जिनपद कमल।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शम करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती फूल, सुरभित करते दश दिशा।
मार मल्लहार देव, तुम पद अर्पूं मैं सदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मनुजोत्तर नग चार दिश, जिन चैत्यालय सार।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, करो सकल सुखसार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

नग मानुषोत्तर से परे नहिं, मनुज जा सकते कभी।
इस हेतु सार्थक नाम पर्वत, शास्त्र हैं कहते सभी।।
इस अद्रि पर पूरब जिनालय, मूर्तियाँ जिनराज की।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नर अद्रि पर दक्षिण दिशी, जिनधाम शाश्वत सोहता।
आकाशऋद्धीधर मुनीश्वर, विहरते मन मोहता।।
जिन मूर्तियों की वंदना से, शांति हो आत्यंतिकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पर्वत नरोत्तर पर अपरदिश, रत्नमय जिनगेह है।
संसार सागर पार हेतु, मैं जजूं धर नेह है।।
षट्क्रिया आवश्यक प्रपूरण, हेतु पूजा आपकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नर अद्रि पर उत्तर दिशी, जिनधाम स्वर्णिम मन हरे।
इसमें जिनेश्वर मूर्तियाँ, नर नारियाँ वंदन करें।।
वर सप्त परम स्थान देती, है सुभक्ती आपकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इस मानुषोत्तर के जिनालय, चार शाश्वत मणिमयी।
चारण ऋषी वदंन करें, निजध्याय पाते निज मही।।

विद्याधरों की टोलियाँ, आकर प्रभू वंदन करें।
सौ इंद्र पूजित मंदिरों की, हम सदा अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिकचतुःसिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में, जिनमूर्तियाँ वर रत्न की।
ये चार सौ बत्तीस हैं, पद्मासनों से राजतीं।।
इन वीतरागी नग्न जिनवर, मूर्तियों की वंदना।
जो भव्य भक्ती से करें, वे करें यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिकचतुःसिद्धकूटजिनालयमध्यविराजमान-चतुःशतद्वात्रिंशत् जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

समयसार शुद्धात्मा, चिच्चैतन्य प्रधान।
जिन प्रतिमा अमलात्मा, नमूँ नमूँ गुण खान।।1।।

शंभु छंद

जय जय मनुजोत्तर नग जग में, जय जय जिनगृह की अति महिमा।
जय जय जय जिनवर की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर गुण गरिमा।।
यह नग सत्रह सौ इक्किस ही, योजन उत्तुंग कहा श्रुत में।
इक हजार बाइस योजन ही, नीचे विस्तृत घटना क्रम में।।2।।

यह मध्य भाग में सात शतक, तेईस मात्र योजन जानो।
ऊपर में चार शतक चौबिस, योजन स्वर्णिम है सरधानो।।
भीतर टंकोत्कीर्ण सदृश, बाहिर तरफी घटता दीखे।
इस पर हैं बाइस कूट कहें, चहुँदिश जिनगृह ऊँचे दीखे।।3।।

इस जंबूद्वीप में मेरु सुदर्शन, एक लाख चालिस योजन।
ऊँचा है उस पर पांडुक वन, तक जाते नर खग अरु ऋषिगण।
यह मनुजोत्तर नग कुछ ऊँचा, इससे आगे नर नाहिं जाते।
यह मात्र नियोग समझ लीजे, जो इसको लांघ नहीं पाते।।4।।

इस पर्वत तक पैंतालिस लाख, सुयोजन मावन लोक कहा।
इस तक ही मनुष जन्मते हैं, आगे नहिं मानव जन्म कहा।।
नग मनुजोत्तर के जिनमंदिर, श्री सिद्धकूट पर माने हैं।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उनके सब पातक हाने हैं।।5।।

रत्नों की बनी ध्वजायें हैं, जो पवन झकोरे हिलती हैं।
मणि कनक कुसुम की मालायें, वे चारों तरफ लटकती हैं।।
मंगलघट पूर्ण कलश शोभें, धूपों के घट महकाते हैं।
वसु मंगलद्रव्य प्रत्येक एक सौ आठ-आठ चमकाते हैं।।6।।

वसु प्रातिहार्य शोभें अनुपम, भामंडल रत्नमयी कोरे।
त्रय छत्र फिरें चौंसठ चमरों, को यक्ष युगल मिलकर ढोरें।।
रत्नों के सिंहासन ऊपर, पद्मासन प्रतिमा राजें।
जिनके दर्शन वंदन करते, भव भव के पाप तुरत भाजे।।7।।

तुम पूजन करके नाथ! अभी, मेरे मन एक हुई वांछा।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो बोधी लाभ यही यांचा।।
नित सुगति गमन होवे मेरा, संन्यास विधी से मरना हो।
जिनगुण संपति मिल जाय मुझे, फिर कभी न यांचा करना हो।।8।।

दोहा

अकृत्रिम जिनरूप को, प्रणमूँ बारंबार।
'ज्ञानमती' निजरूप को, तुरतहिं लेउं निहार।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-34

नंदीश्वद्वीप जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

वर द्वीप नंदीश्वर सु अष्टम, तीन जग में मान्य है।
बावन जिनालय देवगण से, वंद्य अतिशयवान है।।
प्रत्येक दिश तेरह सु तेरह, जिनगृहों की वंदना।
थापूँ यहाँ जिनबिंब को, नितप्रति करूँ जिन अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चामर छंद

स्वर्णभृंग में सुशीत गंगनीर लाइये।
शाश्वते जिनेन्द्र बिंब पाद में चढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्रदेव आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।1।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

अंतरंग ताप ज्वर विनाश हेतु गंध है।
नाथ पाद पूजते मिले निजात्म गंध है।।आठवें.।।2।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोतियों के हारवत् सफेद धौत शालि हैं।
आप को चढ़ावते निजात्म सौख्यमालि हैं।।आठवें.।।3।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मालती गुलाब कुंद मोगरा चुनाइये।
आप पाद पूजते सुकीर्ति को बढ़ाइये।।आठवें.।।4।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मालपूप खज्जकादि पूरियाँ चढ़ाइये।
भूख व्याधि जिष्णु को, अनंतशक्ति पाइये।।आठवें.।।5।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनादि काल से लगे अनंत मोहध्वांत को।
दीप से जिनेश पूज नाशिये कुध्वांत को।।आठवें.।।6।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप लाल चंदनादि मिश्र अग्नि में जले।
आतमा विशुद्ध होत कर्म भस्म हो चलें।।आठवें.।।7।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

इक्षुदंड सेव दाड़िमादि थाल में भरें।
मोक्ष संपदा मिले जिनेश अर्चना करें।।आठवें.।।8।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले अनर्घ्य मूर्तियों को पूजिये।
अष्ट कर्म नाश के त्रिलोकनाथ हूजिये।।आठवें.।।9।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

अमल बावड़ी नीर, जिनपद में धारा करूँ।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प, हर्षित मन से लाइके।
जिनवर चरण समर्प्य, सर्व सौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अघ्य

दोहा

बावन जिनगृह चार दिश, पूजूं चित्त लगाय।
श्रावक की त्रेपन क्रिया, पूर्ण करो जिनराय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

नंदीश्वर वर द्वीप, चारों दिश मधि जानो।
अंजनगिरि गुण नाम, अतिशय रम्य बखानो।।
ईश निरंजन सिद्ध प्रभु का निलय कहा है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मन संताप दहा है।।1।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेपूर्वदिक्अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजनगिरि की चार, दिश में चउ द्रह जानो।
नीर भरे कमलादि, कुमुदों से पहचानों।।
पूरब नंदा वापि, दधिमुख नग जिनगेहा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मेटूँ मन संदेशा।।2।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदवती द्रह माहिं, दधिमुख दधिसम सोहे।
तापे जिनवर धाम, सुर किन्नर मन मोहे।।
तिन में श्रीजिनबिंब, सुवरण रतनमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय पाऊँ, मोक्ष मही है।।3।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दावतीवापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदोत्तरा सुवापि, मधि दधिमुख नग भारी।
पश्चिम दिश में जान, लख योजन द्रह भारी।।
तापे श्रीजिनधाम, शाश्वत सिद्ध सही है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्षमही है।।4।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदीघोषा वापि, उत्तर दिश में जानो।
तामधि दधिमुख आदि, उसपे जिनगृह मानो।।
त्रिभुवनपति जिनबिंकब, अनुपम रत्नमयी है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्षमही है।।5।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नंदिघोषावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नंदा द्रह ईशान कोण में, रतिकर नग रक्ताभा।
ताके ऊपर सिद्धकूट है, जिनमंदिर रत्नाभा।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदा द्रह आग्नेय दिशा में, रतिकर दुतिया कहा है।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, अतिशय रम्य कहा है।।रति.।।7।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदवती द्रह अग्निकोण में, रतिकर तृतिय सुहाता।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, इंद्रादिक तन भाता।।रति.।।8।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दवतीवापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदवती वापी नैऋत्य में, रतिकर नग अति सोहे।
सिद्धकूट जिन आलय तापे, सुर वनिता मन मोहे।।रति.।।9।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दवतीवापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम वापी नंदोत्तर है, नैऋत्यकोण सुहावे।
रतिकर नग पर सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भावे।।रति.।।10।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरवापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापी नंदोत्तरा अपर दिश, ता वायव्य दिशा में।
रतिकर, स्वर्ण अचल के ऊपर, सिद्धकूट अभिरामें।।रति.।।11।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी विदिशा, वायु कोण में जानो।
रतिकर पर्वत सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भावो।।रति.।।12।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दिघोषवापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्रह नंदीघोषा ईशाने, रतिकर पीत सुहाता।
तापे सिद्धकूट चैत्यालय, पूजत मन हरषातो।।रति.।।13।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दिघोषवापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कुसुमलता छंद

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, मधि 'अंजनगिरि' तुंग महान।
इंद्रनीलमणि सम छवि ऊपर, नित्य निरंजन का गृह मान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभु आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परम स्थान।।14।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजनगिरि के पूरब 'अर्जा', वापी सजल कमल की खान।
ताके मधि-दधिमुख पर्वत पर, जिनमंदिर अविचल सुखदान।।जल.।।15।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन नग दक्षिण दिश वापी, विरजा कही अमल जल खान।
मध्य अचल दधिमुख के ऊपर, जिन चैत्यालय पावन जान।।जल.।।16।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिविरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन नग पश्चिम दिश वापी, नाम अशोक शुच उपहार।
बीच अचल दधिमुख के ऊपर, शोक रहित जिनगृह सुखकार।।जल.।।17।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिश में अंजनगिरि के, वापि वीतशोका अमलान।
दधिमुख पर्वत सिद्धकूट पर, वीतशोक जिनमंदिर जान।।जल.।।18।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिवीतशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अरजाद्रह ईशान कोण पर, रतिकर पर्वत सुंदर जान।
सिद्धकूट जिन चैत्यालय में, रतनमयी जिनबिम्ब महान।।जल.।।19।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअरजावापिकाईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अरजा वापी अग्निकोण में, रतिकर दुतिय पदम द्युतिमान।
सिद्धकूट जिनमंदिर सुंदर, जिनप्रतिमा सब सौख्य निधान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभु आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्त परम स्थान।।20।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअरजावापिकाआग्नेयकोणेरतिकरपर्वत–सिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विरजावापी आग्नेय पर, रतिकर नग अद्भुत मणिमान।
सिद्धकूट जिननिलय अकृत्रिम, मणिमय जिन अकृत्रिम शिवदान।।जल.।।21।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिविरजावापिकाआग्नेयकोणेरतिकरपर्वत–सिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विरजावापी नैऋत दिश में, रतिकर पर्वत पीत सुहाय।
सिद्धकूट जिनभवन अकृत्रिम, जिनवर छवि वरणी नहिं जाय।।जल.।।22।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिविरजावापिकाऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नाम अशोकद्रह नैऋत में, रतिकर पर्वत अतुल निधीश।
सिद्धकूट जिनमहल अनूपम, जिनवर प्रतिमा त्रिभुवन ईशा।।जल.।।23।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअशोकवापिकानैऋत्यकोणेरतिकरपर्वत–सिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापि अशोका वायुविदिश में, रतिकर नग शोभे स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनवेश्म अमल है, श्रीजिनबिंब अतुल रत्नाभ।।जल.।।24।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिअशोकावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वत–सिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापी सजल वीतशोका के, वायु कोण रतिकर रतिनाथ।
रतिपतिविजयी जिनमंदिर में, रुचिकर जिन छवि त्रिभुवननाथ।।जल.।।25।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिवीतशोकावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वत-सिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वीतशोकद्रह में ईशान पर, रतिकर तप्तस्वर्ण सम कांत।
सिद्धकूट जिन आलय दुखहर, जिनवर बिंब सौम्य छवि शांत।।जल.।।26।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिवीतशोवापिकाईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

द्वीप आठवें पश्चिम दिश अंजनगिरी।
तापे जिनगृह अतुल सौख्य संपति भरी।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरूँ भक्ति की नाव से।।27।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयावापी मध्य दधीमुख जानिये।
सिद्धकूट पर शाश्वत जिनगृह मानिये।।स्वयं।।28।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन दक्षिण वैजयंति वापी कही।
बीच अचल दधिमुख पे जिनगृह सुखमही।।स्वयं।।29।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तीवापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन पश्चिम वापि जयंती सोहती।
मधि दधिमुख पे जिनगृह से मन मोहती।।स्वयं।।30।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिजयतीवापीकामध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजनगिरि उत्तर वापी अपराजिता।
मधि दधिमुख पर्वत पे जिनगृह शासता।।स्वयं।।31।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिअपराजितावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयावापी रुद्रकोण पे रतिकरा।
तापे सिद्धकूट जिनगृह भवि मनहारा।।स्वयं।।32।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिविजयावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विजयाद्रह आग्नेय कोण रतिकरगिरी।
सिद्धकूट जिनमंदिर से अनुपम सिरी।।स्वयं।।33।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वैजयंतिवापी के अग्निकोण में।
रतिकर गिरि पर श्रीजिनवर के वेश्म में।।स्वयं।।34।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीआग्नेयकाणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वैजयंतिद्र के नैऋत में जानिये।
रतिकर नग में अकृत्रिम गृह मानिये।।स्वयं।।35।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिवैजयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापि जयंती नैऋत में रतिकर कहा।
सिद्धकूट जिनमंदिर निज सुखकर कहा।।स्वयं।।36।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिजयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापि जयंती वायु विदिश रतिकर महा।
सिद्धकूट अकृत्रिम जिनगृह दुःख दहा।।स्वयं।।37।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिजयंतीवापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अपराजिता सुवापी वायवकोण में।
रतिकर पर्वत पे जिनगृह अतिरम्य में।।स्वयं।।38।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिअपराजितावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्रह अपराजित की विदिशा ईशान है।
तापे रतिकर चामीकर छवि शान है।।स्वयं।।39।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिअपराजितवापीईशानकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

उत्तरदिश इस द्वीप में, अंजनगिरि नीलाभ।
सिद्धकूट जिनसद्म को, पूज मिले शिवलाभ।।40।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजननग पूरबदिशी, रम्यावापी स्वच्छ।
मधि दधिमुख गिरि जिनभक्त, पूजत कर्म विपक्ष।।41।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिरम्यावापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन के दक्षिण दिशी, रमणीया द्रह जान।
दधिमुख नग पर जिननिलय, पूजत हो निजथान।।42।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिरमणीयावापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजन के पश्चिम दिशी, द्रह सुप्रभा अनूप।
दधिमुख ऊपर जिनभवन, पूजत हो शिवभूप।।43।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिसुप्रभावापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजननग उत्तर दिशी, सर्वतोभद्रा वापि।
मधि दधिमुख पे जिनसदन, जजत न जन्म कदापि।।44।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिसर्वतोभद्रावापीमध्यदधिमुख पर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रम्याद्रह ईशान में, रतिकरनग स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनगेह को, पूजत हो निष्पाप।।45।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिरम्यावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रम्याह्रद आग्नेयदिशि, रतिकर गिरि अमलान।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिलें नवों निधि आन।।46।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिरम्यावापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रमणीया द्रह अग्नि दिशि, रतिकर नग सिरताज।
सिद्धकूट पर जैनगृह, जजत मोक्ष साम्राज।।47।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रमणीया द्रह नैऋते, रतिकरनग सुखदान।
शाश्वत जिनमंदिर, जजूँ, मिले स्वपर विज्ञान।।48।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीनैऋत्याकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापिसुप्रभा नैऋते, रतिकर पर्वत सिद्ध।
मणिमय जिनमंदिर जजूँ, पाऊँ ऋद्धि समृद्ध।।49।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभानैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्रह सुप्रभा सुवायु दिशि, रतिकरनगर रतिकार।
तापे जिनगृह निज जजूँ, मिले स्वपद अविकार।।50।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशिसुप्रभावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर वायव कोण।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिले भवोदधि कोण।।51।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर दिशि ईशान।
तापे जिनगृह पूजते, हो अनंत श्रीमान्।।52।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नंदीश्वर में चार दिश, बावन जिनगृह सिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्संबंधिद्वापंचाशत्जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

छप्पन सौ सोलह कहीं, जिनप्रतिमा अभिराम।
पूजूँ अर्घ चढ़ायके, शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशतजिनालयमध्यविराजमानपंचसहस्रषट्शतषोडश जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

चाल-शेर

जय आठवां जो द्वीप नाम नंदिश्वरा है।
जय बावनों जिनालयों से पुण्यधरा है।।
इक सौ तिरेसठे करोड़ लाख चुरासी।
विस्तार इतने योजनों से द्वीप विभासी।।2।।

चारों दिशी के बीच में अंजनगिरी कहे।
जो इंद्रनील मणिमयी रत्नों से बन रहे।।
चौरासी सहस योजनों विस्तृत व तुंग हैं।
जो सब जगह समान गोल अधिक रम्य हैं।।3।।

इस गिरि के चार दिश में चार चार वापियां।
जो एक लाख योजन जलपूर्ण वापियां।।
पूर्वादिक्रम दिशा से नंदा नंदवती हैं।
नदोत्तरा व नंदिघोषा नाम प्रभृति हैं।।4।।

प्रत्येक वापियों में कमलफूल रहे हैं।
प्रत्येक के चउ दिश में भी उद्यान घने हैं।।
अशोक सप्तपत्र चंप आम्र वन कहे।
पूर्वादि दिशा क्रम से अधिक रम्य दिख रहे।।5।।

दधिमुख अचल इन वापियों के बीच में बने।
योजन हजार दश उतुंग, विस्तृते इतने।।
प्रत्येक वापियों के दोनों बाह्य कोण में।
रतिकर गिरी हैं शोभते जो आठ आठ हैं।।6।।

योजन हजार एक चौड़े तुंग भी इतने।
सब स्वर्ण वर्ण के कहे रतिकर गिरी जितने।।
दधिमुख दधी समान श्वेत वर्ण धरे हैं।
ये बावनों ही अद्रि सिद्धकूट धरे हैं।।7।।

इनमें जिनेन्द्र भवन आदि अंत शून्य हैं।
जो सर्व रत्न से बने जिनबिंब पूर्ण हैं।।
उन मंदिरों में देव इंद्रवृंद जा सकें।
वे नित्य ही जिनेन्द्र की पूजादि कर सकें।।8।।

आकाशगामी साधु मनुज खग न जा सकें।
वे सर्वदा परोक्ष में ही भक्ति कर सकें।।
मैं भी यहाँ परोक्ष में ही अर्चना करूँ।
जिनमूर्तियाँ की बारबार वंदना करूँ।।9।।

प्रभु आपके प्रसाद से भवसिंधु को तिरूं।
मोहारि जीत शीघ्र ही जिनसंपदा वरूँ।।

हे नाथ! बार मेरी अब न देर कीजिये।
अज्ञानमती विघ्न में अब फेर दीजिये।।10।।

दोहा

नंदीश्वर के चार दिश, जिनमंदिर जिनदेव।
उनको पूजूं भाव से, 'ज्ञानमती' हित एव।।11।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वद्वीपे चतुर्दिग् द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-35

कुण्डलगिरि जिनालय पूजा

अथ स्थापन-अडिल्ल छंद

द्वीप ग्यारवां कुंडल नाम प्रमानिये।
ताके मधि में कुंडल पर्वत जानिये।।
वलयाकृति गिरि पे चउ दिश जिनधाम हैं।
इनके जिनवर बिंब जजूँ इह ठाम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं चाल-मराठी पूजा

सिंधु स्त्रोतस्विनी का जल है, जो स्वातम का हरता मल है।
पूजते ही मिले मोक्ष फल है, जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा, जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा, जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध कर्पूर केशर मेला, सौगंधित सुमिश्रित एला।
तापसंताप हरत अकेला, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

हार मोती सदृश तंदुल हैं, पुंज धारे हृदय निर्मल है।
लाभ होता सुगुण उज्ज्वल है, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंद मंदार सुमनस माला, काम मल्ल निमूल कर डाला।
आत्म संपद गुणों की माला, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्य पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती भरके, पूजते भूख रोगादि हरके।
आत्म पीयूष अनुभव करके, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।5।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हेम दीपक शिखा उज्ज्वल है, आरती ये हरे मोह मल है।
होय आत्मा अपूर्व विमल है, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।6।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खंऊँ सुरभि दशगंधी, धूप फैले दशों दिश गंधी।
होय कर्म अरी शत खंडी, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

आम्र अंगूर दाड़िम फल हैं, जो उत्तम फल दें सुफल हैं।
तीन रत्नों की संपत्ति फल हैं जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।8।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरगंधादि द्रव्य मिलाके, पूर्ण सौख्यादि होवे चढ़ाके।
अष्ट कर्मारि बंधन हटाके, जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।9।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

तीर्थंकर परमेश, तिहुँजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांतीहेत, शांतीधार मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पद पद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

स्वयंसिद्ध जिनबिंब, सर्वसिद्ध में हैं निमित्त।
नमूँ नमूँ हर द्वंद, कुसुमांजलि कर भक्ति से।।11।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

कुंडलगिरि पर पूर्वदिशा में, पाँच कूट मनहारी।
अभ्यंतर के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर सुखकारी।।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ, संयम पूर्ण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तुंग पचहत्तर सहस सुयोजन कुंडलनग वलयाकृति।
दक्षिण दिश में पांचकूट हैं अभ्यंतर जिनगृह नित।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अकृत्रिम कुंडल भूधर पर, पश्चिम दिश जिनगेहा।
पांचकूट में अभ्यंतर पर, सिद्धकूट जिनगेहा।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

महिमावंत अचल कुंडल पर, उत्तरदिश अभिरामा।
स्वयंसिद्ध जिनधाम अनूपम जजत मिले निजधामा।।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

कुंडलगिरि के जिनभवन, वांछित फल दातार।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले भवोदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्‌सिद्धकूटजिनालयेजिनबिम्बेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंडलगिरि जिनगेह में, जिनप्रतिमायें सिद्ध।
चार-शतक बत्तीस हैं, जजत कार्य सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्जिनालयमध्यविराजमानचतुःशतद्वात्रिंशत् जिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, वांछित फल दातार।
गाऊँ गुणमालिका, मिले सौख्य भंडार।।1।।

नरेन्द्र छंद

कुण्डलद्वीप कहा ग्यारहवाँ, कुंडलनग मधि राखे।
एक खरब अठ अरब, पचासी, कोटि छियत्तर लाखे।।
इतने योजन विस्तृत द्वीपे, बीचों बीच गिरी है।
वलयाकार हजार पचत्तर, योजन तुंग गिरी है।।1।।

तल में विस्तृत दश हजार दो, सौ बिस योजन गाया।
मध्य सुव्यास बहत्तर सौ अरु तीस प्रमाण बताया।।
ऊपर चौड़ा व्यालिस सौ चालिस योजन तुम जानो।
पर्वत ऊपर चारों दिश में बीस कूट सरधानों।।2।।

दिशा दिशा में पांच कूट हैं, चउ पर सुर गेहा।
अभ्यंतर के सिद्ध कूट पर, अकृत्रिम जिनगेहा।।

कुंडल पर्वत हेम वर्णमय, शाश्वत तीर्थ कहाता।
देवदेवियां अप्सरियों के इंद्रों के मन भाता।।3।।

चारदिशा के सिद्धकूट में, जिनवर बिंब विराजें।
मैं परोक्ष ही वंदन करता, कर्मअरी डर भाजें।।
जिनवंदन से आत्म विशुद्धि हो परमात्म प्रकासे।
जिनवर प्रवचन हृदय महल में, समयसारमय भासे।।4।।

प्रभू यही अब मेरी इच्छा, रत्नत्रय निधि पाऊं।
नित व्यवहार रतनत्रय बल से, निश्चय शिवपथ पाऊं।।
वीतराग निश्चयरत्नत्रय, निर्विकल्प निज आत्मा।
परमसमाधि में तन्मय हो, बनूँ सिद्ध परमात्मा।।5।।

यही कामना पूरी करिये, कल्पवृक्ष सम दाता।
त्रिभुवन की संपत देने में, तुम हो जग विख्याता।।
प्रभु अज्ञानमयी हर मेरी, सम्यग्ज्ञान प्रकासो।
पुनरपि केवल 'ज्ञानमती' कर ज्ञानभानु घट भासो।।6।।

दोहा

गणपति नरपति सुरपती, खगपति रुचि मन धार।
त्रिभुवनपति गुणगणमणी, तुम गुण गावत सार।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्‌सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-36

रुचकगिरि जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

वर द्वीप तेरहवां रुचकवर, बहुरुचिक विख्यात है।
इस मध्य वलयाकार सुंदर, रुचकवर नग ख्यात है।।
योजन चुरासी सहस विस्तृत, तुंग भी इतना कहा।
चारों दिशा के जिनभवन को, भक्ति वश पूजूँ यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-राग टप्पा-मोहिराखो हो शरना

सुरसरिता का मधुर सलिल ले, कनक कलश में भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा,श्री स्वयं सिद्ध जिनराजजी।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयज केशर गंध सुगंधित, कनक कटोरी भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

उज्ज्वल तंदुल धोय अखंडित, पुंज चरण ढिग चरणा।।रु.।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंद कमल मचकुंद चमेली, ले आयो तुम चरणा।।रु.।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, कनक थाल में भरना।।रु.।।5।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपक में कर्पूर जलाकर, अंतरंग तम हरना।।रु.।।6।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्निपात्र में, खेवत ही अघ हरना।।रु.।।7।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रीफल सेव कपित्य सुपारी, पूर्ण थाल फल भरना।।रु.।।8।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

सलिल गंध अक्षत आदिक ले, अर्घ्य करूँ जिन चरणा।।रु.।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

जिनपद सरसिज मांहि, मैं जल से धारा करूँ।
भव जल को जल देय, परम शांति पाऊँ सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हर सिंगार सुलेय, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
आतम गुण की सुरभि, फैले चारों दिश विषें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

चिच्चेतन चिंतामणी, अनुपम सुख दातार।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले सर्व सुखसार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

जो मुक्तिकन्या परिणयन हित, अतुल मंडप सम दिखे।
जिनवर जिनालय सासता, सुरगण जहाँ पर नित वसे।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते सब सुख मिले।
मन कामना सब पूर्ण हों, भविजन हृदय सरसिज खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिरत्न कंचन से जड़ित, शाश्वत जिनालय सोहता।
पर्वत रुचकवर के उपरि, दक्षिणदिशी मन मोहता।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियां मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस रुचकपर्वत के उपरि, पश्चिम दिशा में जानिये।
वर सिद्धकूट सुवर्णमय पर, जैन मंदिर मानिये।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियां मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सौ इंद्र से पूजित चरण पंकज जिनेश्वर देव हैं।
ईप्सित पदारथ हेतु भविजन, करें तुमपद सेव हैं।।

नगररुचकगिरि उत्तरदिशीजिनगृह जजत निधियां मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर हृदय की कलियां खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इस तेरवें पर्वत उपरि, चारों दिशी जिनधाम हैं।
ये विघ्नपर्वत चूर्ण हेतू, वज्रसम सुखधाम हैं।।जल.।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में, जिनमूर्तियाँ मणिरत्न की।
सब चार सौ बत्तीस हैं, सुर अप्सरायें वंदतीं।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्जिनालयमध्यविराजमानचतुःशतद्वात्रिंशत् जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

रुचकवराद्रि स्वर्णमय, महातीर्थ महनीय।
गाऊँ जयमाला सुखद, महाताप हरणीय।।1।।

शंभु छंद

वर द्वीप तेरवें के मधि में, स्वर्णाभ रुचवर अद्री है।
योजन चौरासी सहस तुंग, इतना ही विस्तृत अद्री है।।
इसपे सु चवालिस दिव्यकूट, जिनका वर्णन है मन भाता।
पूरब दिश आठ सुकूट जहाँ, दिक्कन्याओं का नित वासा।।1।।

विजया विजयंत जयंता अरु, अपराजित नंदा नंदवती।
नंदोत्तर नंदीषेणा जिनजन्मोत्सव में झारी धरतीं।।
दक्षिण दिश आठ कूट ऊपर, इच्दा रु समाहारा देवी।
सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मी, अर शेषवती चित्रगुप्ता भी।।2।।

अष्टम हैं वसुंधरा देवी, ये दिक्कन्यायें रहती हैं।
जिन जनमकल्याणक के आकर, दर्पण को धारण करती हैं।।
पश्चिम के आठ कूट ऊपर, हैं इला सुरादेवी पृथ्वी।
पद्मा अरु इकनासा नवमी, सीता भद्रा आठों देवी।।3।।

जिनजन्मोत्सव में जिनमाता, के ऊपर छत्र लगाती हैं।
उत्तरदिश आठों कूटों की, दिक्कन्या चंवर ढुराती हैं।।
इन नाम अलंभूषा दूजी, मिश्रकेशि तथा पुंडरीकिणी हैं।
वारुणी रु आशा सत्या ह्री, श्री देवी ये अतिरूपिणि हैं।।4।।

इन कूट वेदि के अभ्यंतर, उत्तर दिश के क्रम से जानों।
वर चार महाकूटों पे भी, दिक्कन्याओं को पहचानों।।
सौदामिनि कनका शत्तपदा, औ कनकसुचित्रा रहती हैं।
जिनजन्म कल्याणक में ये सब, दशदिश को निर्मल करती हैं।।5।।

इन कूटों अभ्यंतर भागे, पूर्वादि दिशाओं के क्रम से।
चारों कूटों पे दिक्कन्या, रहती हैं अगणित वैभव से।।
रुचका औ रुचककीर्ति देवी, सुरुचककान्ता अरु रुचकप्रभा।
जिनभगवन का ये जातकर्म, करती हैं भक्ती भरित शुभा।।6।।

इन चालीस कूटों की चालीस, देवी जिन जन्म कल्याणक में।
निजनिज परिवार विभव संयुत, बहु पुण्य कमाती हैं सच में।।
इन कूटों के अभ्यंतर में, श्रीसिद्धकूट हैं चार कहे।
जो पूरब दक्षिण अपरोत्तर, चारों दिश मणिमय भास रहें।।7।।

इनपे शाश्वत जिन चैत्यालय, अकृत्रिम जिनवर प्रतिमायें।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनको शिव मारग दर्शायें।।

मैं श्री श्रद्धा से आ करके, जिनवर की पूजन करता हूँ।
निज केवल 'ज्ञानमती' हेतू, सब विघन करम को हरता हूँ।।8।।

दोहा

अचल रुचकवर चारदिश, जिनवर भवन विशाल।
विघ्नहरण मंगलकरण, नमूँ नमूँ नत भाल।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-37

व्यंतरदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

व्यंतर सुरों के गेह में जिनधाम शाश्वत स्वर्ण के।
प्रत्येक में जिन बिंब इक सौ आठ शाश्वत रत्न के।।
सब असंख्याते जैनमंदिर जैन प्रतिमा को जजूँ।
आह्वानन कर पूजूँ यहाँ निज आत्मसुख संपति भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

नीर गंगानदी का भरा भृंग में।
तीन धारा करूँ नाथ के चर्ण में।।
व्यंतरों के यहाँ जैन मंदिर दिपें।
रत्नमय बिंब को पूजत भव खिपे।।1।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्ण रस के सदृश गंध सौगंध्य ले।
नाथ के पाद अरविंद चचूँ भले।।व्यंतरों.।।2।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शालि अक्षत धुले थाल भरके लिये।
पुंज से पूजहूँ आत्मसुख के लिये।।व्यंतरों.।।3।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंद मंदार चंपा चमेली चुने।
पाद पंकज जजूं इष्ट सुख हों घने।।व्यंतरों.।।4।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मालपूआ अंदरसा भरे थाल में।
व्यंजनों से जजूँ तृप्ति को स्वात्म में।।व्यंतरों.।।5।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्योति कर्पूर की ज्वाल आरति करूँ।
मोहतम नाश के दिव्य भारति भरूँ।।व्यंतरों.।।6।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप दशगंध खेऊं अगनि पात्र में।
कर्म की भस्म हो नाथ के पास में।।व्यंतरों.।।7।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

आम्र दाड़िम अनंनास ले थाल में।
आपको पूजते मोक्षफल आप में।।व्यंतरों.।।8।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंधादि ले अर्घ अर्पण करूँ।
रत्नत्रय हेतु स्वातम समर्पण करूँ।।व्यंतरों.।।9।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिनपद धार करंत।
तिहुँ जग में हो शांति सुख, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोंगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्म सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

व्यंतर देवों के यहां, असंख्यात जिनधाम।
रत्नमयी प्रतिमा वहाँ, कोटी कोटि प्रणाम।।1।।

गीता छंद

जैवंत हों अकृत्रिम जिनालय स्वर्ण चांदी रत्न के।
जैवंत हों जिनबिंब मणिमय सौम्यछवि सुर वंदते।।
जैवंत हों सब चैत्यतरु जिनबिंब अनुपम रत्न के।
जैवंत मानस्तंभ हों सौ इंद्र जिनको वंदते।।2।।

व्यंतर सुरों के आठ विध किन्नर दुतिय किंपुरुष हैं।
सुर महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस व भूत पिशाच हैं।।
प्रत्येक में दो दो अधिप ये आठ द्वीपों में रहें।
समभूमि में इन इंद्र के वहं पाँच पाँच नगर कहे।।3।।

द्वीपांजनक में दक्षिण दिश किंपुरुष अधिपति रहें।
इस द्वीप के उत्तर दिशा में इंद्र किन्नर नगर हैं।।
पुनि वज्रधातुक द्वीप के दक्षिण अधिप सत्पुरुष हैं।
उत्तर दिशा में महापुरुष अधीश निजपुर बसत हैं।।4।।

सुवर्ण द्वीप सुदक्षिणी दिश महाकाय अधीश हैं।
उत्तर दिशी अतिकाय इंद्र बसें जजें जिनईश हैं।।
पुनि मनःशिलक सुद्वीप में सुरगीतरति दक्षिणदिशी।
सुर गीतयश हैं इंद्र रहते वहीं पे उत्तरदिशी।।5।।

वर वज्र द्वीप सुदक्षिणी दिश माणिभ्रद अधिप रहें।
उत्तर दिशा में पूर्णभद्र सुरेन्द्र निज पुर में रहें।।
भीमेंद्र रजत सुद्वीप दक्षिण में रहें जिन भक्त हैं।
उत्तर दिशी में महाभीम अधीश नित निवसंत हैं।।6।।

हिंगुलक द्वीप सुदक्षिणी दिश इंद्र नाम सुरूप हैं।
उत्तर दिशी प्रतिरूप स्वामी के नगर अभिरूप हैं।।
हरिताल द्वीप सुदक्षिणी दिश काल इंद्र निवास है।
उत्तर दिशा में महाकाल सुरेन्द्र का अधिवास है।।7।।

व्यंतर निवास त्रिविध भवनपुर भवन पुनि आवास हैं।
उत्कृष्ट गृह के मध्य कूट सुशोभते स्वर्णाभ हैं।।
ये तीन सौ योजन सुविस्तृत शतक योजन तुंग हैं।
लघुगृहों में इक कोश चौड़े इकबटे[1] त्रय तुंग हैं।।8।।

इन कूट ऊपर रत्न चांदी स्वर्णमय जिनधाम हैं।
प्रतिधाम इक सौ आठ प्रतिमा शाश्वती रत्नाभ हैं।।
झारी कलश दर्पण ध्वजा चामर व्यजन[1] त्रयछत्र हैं।
ठोना ये इक सौ आठ-आठ प्रतेक मंगलद्रव्य हैं।।9।।

जिन भवन में घंटा मृदंगी दुंदुभी वीणा बजें।
सिंहासनों पे जैन प्रतिमा पद्मआसन से दिपें।।
सम्यक्त्वधारी देव अतिशय भक्ति से वंदन करें।
'कुलदेवता हैं' समझ मिथ्यादृष्टि भी प्रणमन करें।।10।।

धन धन्य हैं वे भव्य जो सुरगृह जिनालय वंदते।
धन धन्य उन जीवन सफल वे पाप पर्तत खंडते।।

जिनराज पाद प्रसाद से तब तक हृदय में भक्ति हो।
जब तक न निजपद मिले मुझको रत्नत्रय नहिं व्यक्त हो।।11।।

घत्ता

जय जय जिन आलय, सर्व सुखालय, व्यंतर सुर के रत्नमयी।
जय 'ज्ञानमती' मुझ, पूर्ण करो शुभ, हो जाऊँ प्रभु मृत्युजयी।।12।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-38

किन्नरदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-शंभु छंद

व्यंतर देवों के आठ भेद, उनमें किन्नर सुर पहले हैं।
इन सुर के भवन भवनपुर अरु आवास तीन विध महले हैं।।
ये असंख्यात द्वीप सागर तक निज महलों से फैले हैं।
सब गृह के असंख्यात मंदिर पूजत निजगुण यश फैले हैं।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं चाल-नंदीश्वर पूजा

जिन यश सम उज्ज्वल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
प्रभु मिले भवांबुधि तीर, तुम पद धार करूँ।।
किन्नर सुर के जिनधाम, पूजूँ मन लाके।
प्रभु मिले निजातम धाम, हर्षूं सुख पाके।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन तनु सम सुरभित गंध चर्चूं प्रभु पद में।
मिल जावे आत्म सुगंध, बंदूं तुम पद मैं।।किन्नर.।।2।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनवच सम धवल अखंड, तंदुल पुंज धरूँ।
मिल जावे ज्ञान अखंड, गुणमणि पुंज भरूँ।।किन्नर.।।3।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन तुम सम सुरभित पुष्प, चंपक कमल खिले।
तुम चरण कमल में अर्प्य, मनकी कली खिले।।किन्नर.।।4।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनवच सम मधुर सुवास, घेवर फेनी हैं।
जिनचरण चढ़ावत खास, समरस देती हैं।।किन्नर.।।5।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनदीप्ति सदृश मणिदीप, ज्योति जगमगती।
आरति करते मन बीच ज्योती जगमगती।।किन्नर.।।6।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनयश सम धूप सुगंध, फैले दशदिश में।
जल जावे कर्मन बंध, खेऊँ अग्नी में।।किन्नर.।।7।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनवच सम मधुर रसाल, आम अनार भले।
अर्पत सुख मिले विशाल, शिवफल तुरत फले।।किन्नर.।।8।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन गुण सम अर्घ अनर्घ, रत्न मिलाय लिया।
प्रभु तुम पद अग्र समर्प्य, अनवधि सौख्य लिया।।किन्नर.।।9।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवरपद पद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुख सद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

व्यंतर किन्नर जाति में, दोय इंद्र अभिराम।
उनके जिन गृह पूजहूँ, पुष्पांजलिकर मान्य।।1।।

इति मण्डलस्योपरि अंजनकद्वीपस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

'अंजनक' द्वीप के दक्षिण में, किंपुरुष इंद्र के पाँच नगर।
मधि नगर किंपुरुषपुर पूरब, दिश क्रम से किंपुरुष प्रभादि नगर।।
दक्षिण 'किंपुरुषकांत' किंपुरुषावर्त पुनः किंपुरुषमध्य।
दक्षिण में हैं 'किंपुरुषइंद्र' इनके जिनगृह शतइंद्र वंद्य।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अंजनद्वीपस्थितकिंपुरुषेंन्द्रस्य संख्यातीभवनपुरवाससंबंधि-संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अंजनक द्वीप के उत्तर में किन्नर अधिपति के पाँच नगर।
उत्तरी नगर में रहें इंद्र, इनके भी असंख्यात हैं घर।।
उन सब में जिनमंदिर शाश्वत मणिमय रत्नों के बने हुये।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके ये भक्तसुरों से भरे हुये।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अंजनद्वीपस्थितकिन्नरेन्द्रस्य संख्यातीभवनपुरवाससंबंधि-संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इन दो इंद्रों के दो प्रतीन्द्र, सामानिकादि अठविध परिकर।
सबके निलयों में जिनमंदिर, हैं संख्यातीत कहें मुनिवर।।
उन सबके जिनमंदिर पूजूँ, इन भक्ती कामधेनु मानी।
यह इष्ट वियोग अनिष्ट योग दुख नाशकरन में कुशलानी।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अंजनद्वीपस्थितकिन्नरजातिव्यंतरदेवभवनपुरावाससंबंधि-संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सोरठा

किन्नरसुर कुल वृक्ष, 'तरु अशोक' है चैत्यतरु।
मन वच तन कर स्वच्छ, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

नरेन्द्र छंद

मरकत मणिमय चैत्य वृक्ष, तरुवर अशोक अति शोभें।
पूरबदिश में मूल भाग में, चउ जिन प्रतिमा शोभें।।
पर्यंकासन जिनवर प्रतिमा, प्रातिहार्य से शोभें।
उनकी पूजा करते भविजन, निजगुणमणि से शोभें।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।,

चार चार योजन लंबी शाखाओं से तरु सोहे।
दक्षिण दिश में चार जिनेश्वर प्रतिमा से मन मोहे।।पर्यंकासन.।।2।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पद्म राग मणि के फूलों से, मरकत मणि पत्तों से।
कोंपल डाली तना मनोहर, चैत्यवृक्ष अति भासे।।पर्यंकासन.।।3।।

1. सामानिक, आत्मरक्ष, पारिषद, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषक ये सातभेद हैं। व्यंतर और ज्योतिषी में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल ये दो प्रकार नहीं है।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पृथ्वीकायिक चैत्यवृक्ष में, उत्तर दिश जिनप्रतिमा।
जो जन पूजें भक्ति भाव से पावें सौख्य अनुपमा।।पर्यंकासन.।।4।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति जिनप्रतिमाओं के आगे, मानस्तंभ सुशोभें।
जिनबिंबों से युक्त देवगण, वंदित जन मन लोभें।।
इन सोलह मानस्तंभों को, झुक झुक शीश नमाऊँ।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर निजप्रति, जिनगुण महिमा गाऊं।।5।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षसिथतषोडशजिनप्रतिमासन्मुखस्थित-षोडशमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चैत्य वृक्ष की सोलह प्रतिमा, जिनवर सम सुखदायी।
सोलह मानस्तंभों के जिनबिंब जजूँ गुणगायी।।
गणधर मुनि गण सुरनर वंदित, सर्व जिनेश्वर प्रतिमा।
इनको पूजूँ भक्ति भाव से, पाऊँ निज गुण महिमा।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवस्थाने अशोकतरुचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमातत्सन्मुख-स्थितषोडशमानस्तभ्यजिनप्रतिमाभ्य पूर्णार्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय शाश्वत जिननिलय, जिन प्रतिमा जिनसाम्य।
गाऊँ गुणमणि मालिका, मिले सौख्य जिनसाम्य।।1।।

कुसुमलता छंद

जय जय जिनवर रूप अनूपम, जय जय चैत्य वृक्ष मनहार।
जय जय मानस्तंभ अकृत्रिम, जय जय सिद्धबिंब सुखकार।।
जय जय मंगलमय लोकोत्तम, शरणभूत जिनवर के धाम।
जय जय जय त्रैलोक्य हितंकर, शिरनत शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

किन्नर सुर के दशविध में, किंपुरुष व किन्नर हृदयंगम।
रूपपालि किन्नरकिन्नर, अनिंदित व्यंतर व मनोरम।।
किंनरोत्तम रतिप्रिय व ज्येष्ठ, ये दशजाती किन्नर सुर मध्य।
इनमें हैं किंपुरुष व किन्नर, इंद्र दोय इन विभव घनेय।।3।।

अवतंसा अरु केतुमती दो प्रथम इंद्र की बल्लभिका।
रतिसेना अरु रतिप्रिया ये द्वितिय इंद्र की बल्लभिका।।
एक इंद्र की दो हजार देवी, दो गणिका महत्तरी।
नाना विध विक्रियरूपों से, क्रीड़ा करतीं चित्तहरी।।4।।

सामानिक सुर चार सहस हैं, तनु रक्षक सोलह हज्जार।
आठ सहस दस सहस व बारह, सहस पारिषद् त्रय क्रम सार।।
अनीक सातहिं दो कोटी, अड़तालिस लाख ब्यानवे हजार।
देव प्रकीर्णक आभियोग्य, किल्विषक देव मानें श्रुतसार।।5।।

एक पल्य की आयु दस धनुष ऊँचे ये दो इंद्र प्रतीन्द्र।
किन्नर देह नीलमणिसम, किंपुरुष स्वर्णसम देह अनिंद्य।।
लाख इक्यावन योजन विस्तृत बने भवनपुर उत्कृष्टांत।
जघन्य पुर इक योजन विस्तृत इनमें घने देव प्रासाद।।6।।

बारह हजार दो सौ योजन, उत्कृष्टे शाश्वत आवास।
जघन्य माने तीन कोश के, इनमें व्यंतरसुर के वास।।
कम ऊँचाई तीन बटे चउ, उत्कृष्ट योजन तीन शतक।
ऊँचाई के तृतिय भाग हैं, कूट अकृत्रिम सब गृह मध्य।।7।।

कूटों ऊपर जिनमंदिर हैं, मणिमय शाश्वत त्रिभुवन पूज्य।
चउतरफे वेदी व चार वन, चैत्यवृक्ष जिन प्रतिमा पूज्य।।
बहुविध तप कर समकित बिन, नर व्यंतर सुर में लेते जन्म।
जिनवर भक्ती के प्रसाद से, सम्यक्त्वी बन होते धन्य।।8।।

दोहा

हे भगवन्! तुम भक्ति से, नहिं छूटे सम्यक्त्व।
मिले आत्मनिधि साथ में, ज्ञानमती सर्वस्व।।9।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-39

किंपुरुष जिनालय पूजा

अथ स्थापन-अडिल्ल छंद

व्यंतर में किंपुरुष द्वितीय प्रकार है।
इनमें दो अधिपती सर्व गुणधार हैं।।
इनके संख्यातीत जिनालय वंद्य हैं।
आह्वानन कर जजूँ सर्व सुखकंद हैं।।1।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं किंपुरुषभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं किंपुरुषभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं -अडिल्ल छंद

जन्म जरा मृति क्षय करने हित जल लिया।
जिनचरणांबुज में रुचि से धारा किया।।
व्यंतर गृह के जिनमंदिर जो वंदते।
रोग शोक दुख दारिद संकट खंडते।।1।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

भव भव में संताप त्रिविध दुख दे रहा।
जिनचरणांबुज गंध चर्चते सुख महा।।व्यंतर.।।2।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

सांसारिक सुख क्षण भंगुर क्षण में क्षये।
अक्षत से जिन पूजत अक्षय सुख भये।।व्यंतर.।।3।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कामदेव ने त्रिभुवन को निजवश किया।
पुष्प चढ़ाकर जिन पूजत निजवश किया।।व्यंतर.।।4।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

बहुविध भोजन किये नहीं तृप्ती हुई।
नेवज प्रभु को अर्पत मन पुष्टी भई।।व्यंतर.।।5।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप रतन ज्योती से बाहिर तम नशे।
जिनवर आरति करते अंतर तम नशे।।व्यंतर.।।6।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

कैसे कर्म जलें यह युक्ति विचारते।
धूप अग्नि में खेते कर्म जलावते।।व्यंतर.।।7।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सब देवों के पास गया फल आश ले।
जिनवर को फल से अर्चूं शिव फल फले।।व्यंतर.।।8।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ बनाकर ले लिया।
फल अनर्घ के हेतु प्रभो अर्पण किया।।व्यंतर.।।9।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।
शांतये शांतिधारा।
बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

व्यंतर सुर किंपुरुष के, दोय इंद्र अभिराम।
तिनके जिनगृह पूजने, पुष्प चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि वज्रधातुद्वीपस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

शुभ वज्रधातुक द्वीप में, दक्षिण दिशी 'सत्पुरुष' हैं।
वहाँ पे नगर हैं पाँच उनके, सर्व में जिननिलय हैं।।
इस इंद्र के बहु भवनपुर, आवास मध्यम लोक में।
इनमें असंख्य जिनेन्द्र मंदिर, जजूँ दे पग धोक मैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थितसत्पुरुषेन्द्रस्य संख्यातीतभवनभवन–पुरावास संबंधिसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस वज्रधातुक द्वीप उत्तर, 'महापुरुष' अधीश हैं।
इनके अकृत्रिम भवनपुर, आवास संख्तीत हैं।।
सबमें जिनालय रत्न के, सब पाप ताप विनाशते।
जो करें नित वंदन यहाँ वे ज्ञान ज्योति प्रकाशते।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थितमहापुरुषेन्द्रस्य संख्यातीतभवनभवन–पुरावास संबंधिसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

किंपुरुष व्यंतर जाति में, दशभेद में दो इंद्र हैं।
दो हैं प्रतीन्द्र व सात विध[1], परिवार देव असंख्य हैं।।

सर्वत्र द्वीप समुद्र संख्यातीत में ये बस रहे।
इनके जिनालय जैन प्रतिमा, पूजते भव दुख दहें।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थितकिंपुरुषजातिव्यंतरदेवभवनभवनपुरावास संबंधिसर्वसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

सोरठा

व्यंतर सुर किंपुरुष, चैत्यवृक्ष 'चंपकतरु'।
जिनवर बिंब स्वरूप, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

चंपकतरु के पूर्वदिश, जिनवर प्रतिमा चार।
वंदूँ रुचि से प्रति दिवस, करो हमें भव पार।।1।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष दक्षिण दिशी, जिनवर बिंब महान्।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, बनूँ स्वात्म धनवान्।।2।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष पश्चिम दिशी, शाश्वत जिनवर रूप।
प्रातिहार्य युत मैं नमूँ, मिले स्वात्म चिद्रूप।।3।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष उत्तर दिशी, मणिमय जिनवर बिंब।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, लहूँ निजात्म अनिंद्य।।4।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन प्रतिमा के सामने, इक इक मानस्तंभ।
इन सोलह को नित जजूँ, ये निज ज्ञान स्तंभ।।5।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षचतुर्दिग्जिनप्रतिमासन्मुख–विराजमान-षोडशमानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

चैत्यवृक्ष के चतुर्दिश, सोलह जिनवर बिंब।
सोलह मानस्तंभ के, जजूँ सर्व जिनबिंब।।1।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवनिलयस्थितचंपकचैत्यवृक्षचतुर्दिक षोडशजनप्रतिमातत्स सन्मुखस्थितषोडशमानस्तम्भसंबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

रोला छंद

जय जय जिनवर धाम, अकृत्रिम मनहारी।
त्रिभुवन तिलक महान्, अनुपम शिव सुखकारी।।
नमूँ नमूँ जिनबिंब, जन्म मृत्यु भय नाशें।
गणधर मुनिगण वंद्य, निजपर ज्ञान प्रकाशें।।1।।

किंपुरुषन दश भेद, पुरुष[1] व पुरुषोत्तम[2] सुर।
सत्पुरुष[3] रु महापुरुष[4], पुरुष[5] प्रभअति पुरुष[6] मरू[7]।।
सुर मरुदेव[8] मरुत, प्रभ[9] माने यशस्वाना[10]।
इन व्यंतरसुर मध्य, अधिपति दोय बखाना।।2।।

सुत्पुरुषेंद्र की दोय, रोहिणी नवमी देवी।
महापुरुष की ह्री, पुष्पवती प्रियदेवी।।
गणिका महत्तरी भी, दो-दो हैं इंद्रों की।
दो-दो हजार सुरललनायें हैं इनकी।।3।।

सातविधे परिवार, देव असंख्य कहाये।
सबके बहुत भवन, पुर आवास बताये।।
सबमें जिनवर गेह, मुक्तिरमा वश आलय।
नमूँ नमूँ धर नेह, मिले सर्व सुख आलय।।4।।

किंपुरुषों का देह, स्वर्ण सदृश अभिरामा।
दस धनु ऊँचा देह, आयू पल्य बखाना।।
इंद्र देव गण नित्य, जिनपद में अनुरागी।
सम्यग्दर्शन रत्न, पाय बनें बड़भागी।।5।।

प्रभु ऐसी दो युक्ति, मुझ सम्यक्त्व अचल हो।
संयम में अनुरक्ति, अंत समाधि सफल हो।।
देवों के जिनवेश्म, नित परोक्ष ही वंदूँ।
तुम पद अविचल प्रेम, नित्य रहे यम खंडूँ।।6।।

घत्ता

जय जय जिन धामा, जय जिन प्रतिमा, चैत्यवृक्ष मा, नित वंदूँ।
अज्ञानमती हर, 'ज्ञानमती' कर, निज संपतिभर गुण मंडूँ।।7।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-40

महोरगदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

व्यंतर महोरगके निलय, सब द्वीप सागर तक कहें।
इनके भवनपुर और बहु, आवास अकृत्रिम रहें।।
सबमें जिनालय राजतें, जिनबिंब मणिमय शाश्वते।
हम पूजतें आह्वानन कर, निज आत्म विभव चकासते।।1।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

भरा नीर भृंगार में क्षीर जैसा।
करूँ पाद में धार पीयूष जैसा।।
मिल पूर्ण शांती महाज्ञान धारा।
सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।1।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

घिसा गंध चंदन प्रभूपाद चर्चूं।
सभी देह संताप मेटो जिनेन्द्रा।।मिले.।।2।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धुले शालि के पुंज से नाथ पूजूँ।
मिले पूर्ण आनंद जो नष्ट ना हो।।मिले.।।3।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही मोंगरा नीलवर्णी कमल हैं।
चढ़ाते तुम्हें नाथ! होऊं विमल मैं।।मिले.।।4।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पुआ पूरियं और गुणिया समोसे।
चढ़ाऊँ प्रभु की क्षुधा व्याधि नाशे।।मिले.।।5।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशें।
करूँ आरती भारती को प्रकाशे।।मिले.।।6।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

जलाऊँ अगनि पात्र में धूप अब मैं।
जलें कर्म की धूम्र फैले दिशा में।।मिले.।।7।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अनंनास नींबू व अखरोट काजू।
चढ़ाऊँ प्रभो! मोक्ष फल हेतु फल ये।।मिले.।।8।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

मिले नीर गंधादि चांदी कुसुम भी।
चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ पूरो अभीत्सित।।मिले.।।9।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

महोरगों में इंद्र दो, महाकाय अतिकाय।
इनके जिन मंदिर जजूँ, पुष्पांजलि चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

महाकाय अधिपति निलयों में, कहें भवनपुर बहुते।
नगर सुवर्ण द्वीप दक्षिण में, महाकाय वहं रहते।।
इनके सभी निलय में जिनगृह, रत्न मयी शाश्वत हैं।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति, जिनप्रतिमा भासत हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपदक्षिणदिक्स्थितमहाकायेन्द्रस्यसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इसी द्वीप के उत्तर दिश में, पांच नगर अति सुंदर।
उनमें उत्तर दिश में रहते, अतिकायाधिप व्यंतर।।
इनके भवनपुरावासों में, जिनमंदिर सुख दाता।
उनकी जिन प्रतिमा को पूजूं, मेटो सर्व असाता।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपदक्षिणदिक्स्थितअतिकायेन्द्रस्यसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

महोरगों में प्रदीन्द्रा, सामानिक तनुरक्षक।
सेनादेव प्रकीर्णक आभियोग्य देव किल्वीषक।।
इनके भवनपुरा आवासा, जितने भी जिन गेहा।
सबमें जिनवर बिंब एकसौ, आठ जजूँ धर नेहा।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपस्थितमहोरगजातिव्यंतरदेवएतत्परिवारदवेनिलयस्थितसर्वजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सोरठा

महोरगों में मान्य, चैत्यवृक्ष है नागद्रुम।
बढ़े सौख्य धनधान्य, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोरठा

नागद्रुम के पर्व, चार जिनेश्वर बिंब हैं।
जजते सौख्य अपूर्व, मिले निजातम संपदा।।1।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्य वृक्ष के अवर, दिश में जिनप्रतिमा दिपें।
वंदें मुनिगण सर्व, पूजत नव निधि संपदा।।2।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष में नित्य, जिनवर बिंब अनूप हैं।
जजूँ भक्ति से नित्य, रोग शोक संकट टलें।।3।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नाग केसर तरु चैत्य, उत्तर दिश जिन बिंब हैं।
जजत मिले सुख शैत्य, पद्मासन जिनबिंब को।।4।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनवर बिंब समक्ष, इक इक मानस्तंभ हैं।
नमते सौख्य प्रतक्ष, सोलह मानस्तंभको।।5।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षचतुर्दिग्जिनप्रतिमासन्मुख-षोडशमनास्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष जिनबिंब, सोलह शाश्वत मणिमयी।
सोलह मानस्तंभ, जजूँ सर्व जिनबिंब को।।1।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थितनागद्रुमचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमासन्मुख-षोडशमनास्तम्भसंबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

स्रग्विणी छंद

मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व जिनमंदिरा।
जैनमूर्ती नमूँ सर्व दीगंबरा।।
नाथ! मेरे तुम्हीं एक माता पिता।
कीजिये पूर्ण रक्षा प्रभो! कर कृपा।।1।।

ये महोरग भुजगा भुजंगशालि हैं।
ये महाकाय अतिकाय स्कंध शालि हैं।।
ये मनोहर अनशिजव महैश्वर्य हैं।
देव गंभीर प्रियदर्शनं सर्व हैं।।2।।

भेद दश में महाकाय अतिकाय दो।
इंद्र मानें इन्हों के प्रतीन्द्रा हि दो।।
प्रथम भोगा व भोगवती देवियाँ।
द्वितियके पुष्पगंधी अनिंदितप्रिया।।3।।

देह श्यामल वरण दस धनू तुंग हैं।
आयु एक पल्य है[1] दस सहस वर्ष है।।

1. आयु उत्कृष्ट 1 पल्य, जघन्य दश हजार वर्ष है।

इंद्र के देव परिकर असंख्यात हैं।
सर्व द्वीपोदधी में भि आवास हैं।।4।।

इंद्र के पाँच पाँचहिं नगर द्वीप में।
ये भ्रमें सर्व सागर व सब द्वीप में।।
पुण्य वैभव धरें ये सुखी देव हैं।
किन्तु सम्यक्त्व के बिन दुखी देव हैं।।5।।

ये मरण काल में बहुतविध शोक से।
एक इंद्रियगती में जनम धर सकें।।
शत्रु मिथ्यात्व सबसे बड़ा विश्व में।
मित्र सम्यक्त्व ही मोक्ष सुख दे हमें।।6।।

नाथ! यावत् न मुक्ती मुझे मिल सके।
नाथ! तब एक तेरी भक्ति चित में बसे।।
नाथ! पूरो यही एक मुझ कामना।
आप पादाब्ज में लीन होवे मना।।7।।

दोहा

महोरगों के अगणिते, जिनवर गृह सुदवंद्य।
'ज्ञानमती' हो शाश्वती, नमूँ नमूँ सुखकंद।।8।।

ॐ ह्रीं महोरगव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-41

गंधर्व जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

गंधर्व व्यंतर देव के, संख्या बिना आवास हैं।
उनमें असंख्ये जिनभवन शाश्वत मणीमय ख्यात हैं।।
इन सब जिनालय जैन प्रतिमा को नमूँ नित भाव से।
आह्वानन कर पूजूँ यहाँ मन में मुदित को चाव से।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-गीता छंद

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी बहुत ही दुख रे रही।
अब मेट दीजे इसलिये त्रय धार दे पूजूँ यहीं।।
गंधर्व सुर के जैन मंदिर मणिमयी जिनमूर्तियाँ।
जो पूजते वे प्राप्त कर लेते स्वयं चिन्मूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में चर्चूं सुगंधित गंध ये।।गंधर्व.।।2।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के बहु खंड खंड हुये यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तुंदुल पुंज से पूजूँ यहाँ।।गंधर्व.।।3।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्व जेता आपही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।गंधर्व.।।4।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूखव्याधी मेट दो इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।गंधर्व.।।5।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी मन का अंधेरा ना भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही ज्ञान का सूरज उगा।।गंधर्व.।।6।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे भस्म हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेऊँ अग्नि में ये कर्म वैरी भस्म हों।।गंधर्व.।।7।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिये फल सरस तुम अर्पण किया।।गंधर्व.।।8।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! निजके रत्नत्रय अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो शीघ्र ही इस हेतु अर्घ समर्प्य है।।गंधर्व.।।9।।

ॐ ह्रीं गंधर्वव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

गंधर्वों के निलय में, जिनमंदिर अभिराम।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले स्वात्म विश्राम।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

मनः शिलक द्वीपमें दक्षिण, दिश में पाँच नगर हैं।
इंद्र गीतरित रहें वहाँ पे, गावें गीत मधुर हैं।।
बहुत द्वीप सागर सरवर में, इनके बने निलय हैं।
उनमें जिनमंदिर बहुतेरे, पूजत पाप विलय हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके मनःशिलकद्वीपदक्षिणदिक्स्थितगीतरतिइन्द्रस्यसंख्यातीत जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इसी द्वीप के उत्तर दिश में, गीतयशा अधिपति हैं।
इनके बहुत भवनपुर हैं आवास बहुत सब जग हैं।।
सबमें जिनगृह उनमें जिनवर, प्रतिमा शाश्वत राजें।
हम पूजें नित अर्घ चढ़ाकर, कर्म अरी डर भाजें।।2।।

पूर्णार्घ्य

गंधर्वों के इंद्र प्रतीन्द्रा, सामानिक परिवारा।
इनके निलय द्वीप सागर में, फैले बहुत प्रकारा।।

सबमें जिनगृह उनमें प्रतिमा, इकसौ आठ विराजें।
जो पूजें नित भक्ति भाव से, निजआतम सुख साजें।।1।।

ॐ ह्रीं मनःशिलकद्वीपस्थितगंधर्वजातिव्यंतरदेवतत्परिवारदेवनिलयस्थित–संख्यातीत जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

दोहा

तुंबरु तरुवर चैत्यतरु, सुरगंधर्व निकेत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले भवोदधि सेतु।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

गंधर्वों के वेश्म, 'तुंबरु' चैत्यतरु है।
पूजूँ धर अतिप्रेम, जिन प्रतिमा सुखतरु हैं।।
चार चार जिनबिंब, प्रातिहार्य संयुत हैं।
नमूँ नमूँ सुखकंद, देवें निज संपति हैं।।1।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तुंबरु तरु जिनबिंब, पद्मासन से राजें।
नमें मुनीश्वर वृंद, पाप शत्रु डर भागें।।चार.।।2।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मरकत मणिमय वृक्ष, पृथ्वी कायिक सोहे।
कोंपर पत्ते पुष्प, शाखा से मन मोहे।।चार.।।3।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चैत्य वृक्ष जिनबिंब, गणधर मुनिगण वंदे।
करें कर्म शत खंड, निज सुख में आनंदे।।चार.।।4।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मानस्तंभ उतुंग, एक एक जिन आगे।
रत्नन किरण अमंद, दर्शन से अघ भागे।।
सिद्धों के प्रतिबिंब, जजूँ भक्ति से नित ही।
हरूँ सकल दुखद्वंद, मिले सर्वसुख इत ही।।5।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षचतुर्दिग्स्थितषोडशजिनप्रतिमा–सन्मुख-षोडशमनास्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चैत्यवृक्ष जिनबिंब, सोलह रत्नमयी हैं।
सोलह मानस्तंभ, उनमें बिंब सही हैं।।
पूजूँ मन वच काय, जिनपद शीश झुकाऊँ।
पुनर्जन्म नश जाय, फेर न भव में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमातत्सन्मुख-षोडशमानस्तम्भसंबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

हे नाथ! आप तीन लोक में महान् हो।
हे नाथ! आप सर्व सौख्य के निधान हो।।
हे नाथ आप नाम सर्व मंत्र रूप है।
हे नाथ! आप जाप सकल पुण्य रूप है।।1।।

हे नाथ! आप मूर्तियाँ चिंतामणी कहीं।
ये भक्त के समस्त अर्थ पूर्ण कर रहीं।।हे नाथ.।।2।।

हे नाथ! आप मूर्तियाँ पारसमणी कहीं।
ये भक्त को कंचन नहीं पारस बना रहीं।।हे नाथ.।।3।।

हे नाथ! आप मूर्तियाँ ही कल्पवृक्ष हैं।
ये भक्त के संपूर्ण मनोरथ पदार्थ हैं।।हे नाथ.।।4।।

गंधर्व के दश भेद में हा हा प्रथम कहें।
हूहू तथा नारद व तुंबरु कदंब हैं।।हे नाथ.।।5।।

वासव व महास्वर तथैव गीतरति हैं।
ये गीतयशा इनमें दोय इंद्र प्रमुख हैं।।हे नाथ.।।6।।

गंधर्व देव आप कीर्ति गावते सदा।
निजधाम के जिनधाम को नित ध्यावते मुदा।।हे नाथ.।।7।।

गंधर्व देव देह तपे स्वर्ण सम दिपे।
इक पल्य आयु दश धनुष उत्तुंग तनु दिपे।।हे नाथ.।।8।।

इन देव के नगर के चारों ओर बनी हैं।
अशोक सप्तपर्ण चंप आम्र बनी हैं।।हे नाथ.।।9।।

प्रत्येक वन के मध्य चैत्य वृक्ष शोभते।
अर्हंत बिंब से ये वृक्ष चित्त मोहते।।हे नाथ.।।10।।

चारों दिशामें एक एक बिंब विराजें।
ये आठ प्रतिहार्य से शशिसूर्य को लाजें।।हे नाथ.।।11।।

गंधर्व देव नित्य भक्ति भाव करे हैं।
संगीत गीत नृत्य से गुणगान करें हैं।।हे नाथ.।।12।।

वीणा मृदंग बांसुरी बहु वाद्य बजाते।
ये सातस्वरों में प्रभू की कीर्ति को गाते।।हे नाथ.।।13।।

सम्यक्त्व रत्न पायके निज आत्म सजाते।
मिथ्यात्व विष वमन करें अध्यात्मको भाते।।हे नाथ.।।14।।

हे नाथ! आप पाय मैं निहाल हो गया।
सम्यक्त्वरत्न से ही मालामाल हो गया।।हे नाथ.।।15।।

हे नाथ! आप पाद कमल चित्त में राजें।
जब तक ना मुक्ति होय चित्त में हि विराजें।।हे नाथ.।।16।।

दोहा

जिनमंदिर जिनबिंब को, नमूँ नमूँ नत शीश।
'ज्ञानमती' सुख संपदा, दीजे हे जगदीश।।17।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-42

यक्षदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

व्यंतर यक्षदेव के गृह में, शाश्वत जिन मंदिर हैं।
मणिमय रत्नमयी जिन प्रतिमा पुण्यमयी सुंदर हैं।।
भक्ति भाव से मैं नित पूजूँ आह्वानन विधि करके।
सप्त परमस्थान प्राप्त कर, तृप्त बनूँ शिव वरके।।1।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नाराच छंद

गंग नीर भृंग में भरा पवित्र स्वच्छ है।
आत्म शुद्धि हेतु तीन धार देत पाद में।।
शाश्वते जिनेन्द्रधाम पूजहूँ अबे यहां।
स्वात्म सौख्य पूरिये न देर कीजिये प्रभो।।1।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध में कपूर मिश्र आप चर्ण चर्चहूँ।
मोह ताप शांत हो पूर्ण शांति लाभ हो।।शाश्वते.।।2।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धौत शालि सिंधु फेन के समान ले लिया।
पुंज को चढ़ावते अखंड सौख्य चाह है।।शाश्वते.।।3।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मोंगरा जुही गुलाब बहु सुगंध पुष्प ले।
आप को चढ़ावते समस्त संपदा मिले।।शाश्वते.।।4।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

घेवरादि मोदकादि दालमोठ ले लिया।
आप को चढ़ाय भूख व्याधि को शमन करूँ।।शाश्वते.।।5।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप लौ जले प्रकाश हो कुछेक क्षेत्र में।
आरती करूँ प्रभो निजात्मज्ञान ज्योति हो।।शाश्वते.।।6।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेवते सुगंध फैलती दशों दिशी।
कर्म भस्म होयेंगे इसीलिये जजूँ अबे।।शाश्वते.।।7।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव आम संतरा अनार फल मंगा लिये।
आपको चढ़ाय मोक्ष सौख्य प्राप्त होयगा।।शाश्वते.।।8।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को चढ़ावते।
प्राप्त हो अनर्घ श्रेष्ठ संपदा अपूर्व जो।।शाश्वते.।।7।।

ॐ ह्रीं यक्षव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

व्यंतर यक्षों के यहाँ, अधिपति दोय प्रसिद्ध।
पुष्पांजलिकर पूजहूँ, मिले रिद्धि नव निद्ध।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

वज्रद्वीप में दक्षिण दिश में, पाँच नगर अति सुंदर।
माणिभद्र हैं यक्ष देव के, अधिपति वहाँ हितंकर।।
बहुत द्वीप सागर में इनके निलय असंख्य कहाये।
उनके सब जिनमंदिर पूजूँ पाप प्रलय हो जावे।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपदक्षिणदिक्स्थितमाणिभद्रेंद्रस्यसंख्यातीत जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इसी द्वीप के उत्तर दिश में, पाँच नगर मन हरते।
पूर्णभद्र अधिपति वहां रहते, मनहर क्रीड़ा करते।।
इनके निलय सर्व जग में हैं, उनके जिनगृह पूजूँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के सर्व दुखों से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपउत्तदिक्स्थितपूर्णभद्रेंद्रस्यसंख्यातीत जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

यक्ष देव के दोय इंद्र हैं, दोय प्रतीन्द्र कहे हैं।
सामानिक तनुरक्ष अनीके ये सुर संख्य कहे हैं।।
बाकी के परिवार देव हैं संख्यातीत बताये।
इन देवों के जिन मंदिर को जजत स्वात्मनिधि पायें।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपस्थितयक्षव्यंतरदेवतत्परिवारदेवनिलयस्थितसंयातीत जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सोरठा

चैत्य तीरु न्यग्रोध, जिन प्रतिमायें चहुँदिशी।
शिर नत देऊँ धोक, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौपाई

चैत्य वृक्ष वट[1] तरुवर ऊँचा, लंबी शाखा से नभ छता।
पूर्व दिशी जिन प्रतिमा पूजूँ, सर्व दुखों से तुरतहिं छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन–प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मरकत मणि के पत्र घनेरे, फल अरु पुष्ल लगे बहुतेरे।
दक्षिण दिश जिन प्रतिमा पूजूँ, सर्व दुखों से तुरतहिं छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हिलते तरु वर पवन झकोरे, पृथिवीमय फिरभी तरु कोरे।
पश्चिम दिश जिन प्रतिमा पूजूँ, सर्व दुखों से तुरतहिं छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गणधर गुरु भी नितप्रति वंदे, सुरगण नमते मन आनंदे।
उत्तर दिश जिनप्रतिमा पूजूँ, सर्व दुखों से तुरतहिं छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन प्रतिमा के आगे आगे, मानस्तंभ दिपें तम भागे।
मानस्तंभ सोलहों पूजूँ, सर्व दुखों से तुरतहिं छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षचतुर्दिक्स्थितजिनप्रतिमासन्मुखषोडश मानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

चैत्यवृक्ष की चार दिशा में, चार चार जिनप्रतिमा तामें।
सोलह मानस्तंभ जजूँ मैं, सर्व जिनेश्वर बिंब भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमातत्सन्मुखस्थित-षोडशमानस्तंभसंबंधिसर्वजिनप्रतिमाभयःपूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फल दातार।
गाऊँ गुण जय मालिका, भरो सौख्य भंडार।।1।।

नाराच छंद

नमूँ नमूं जिनेन्द्र के पदारविंद आज मैं।
जपूँ जपूँ जिनन्द्र देव जाप मंत्र आज मैं।।
करूँ करूँ जिनेन्द्र बिंब की सदैव वंदना।
तिरूँ तिरूँ भवाब्धि से करूँ स्वमृत्यु खंडना।।2।।

समस्त यक्ष भेद बारहों प्रसिद्ध शास्त्र हैं।
सु माणिभद्र पूर्णभद्र शैलभद्र आदि में।।
मनोयभद्र भद्रका सुभद्र सर्वभद्र हैं।
सु मानुषे व धन्यपाल औ सरूपयक्ष।।3।।

यक्षोत्तमा मनोहरा इन्होमें दोय इंद्र हैं।
प्रतीन्द्र दोय हो रहें असंख्य यक्ष वृंद हैं।।
सुयक्ष व्यंतरा सभी जिनेन्द्र भक्तिलीन हैं।
निजालयों में जैनधाम भक्ति में प्रवीण हैं।।4।।

सु देह श्याम वर्ण तुंग दश धनू प्रमाण हैं।
अनेक विक्रिया करें भ्रमें सदा प्रसन्न हैं।।
जिनेन्द्र कीर्ति गावते अपूर्व पुण्य पावते।
निजात्मज्ञान पायके आनंद को मनावते।।5।।

महान समकिती निधी धरें धनी बने घने।
सुधन्य जन्म मानके जिनेन्द्र भक्ति में सने।।
जयो जयो जिनेन्द्र धाम साधु वृंद वंदते।
जयो जयो जिनेन्द्र धाम भक्त पाप खंडते।।6।।

दोहा

जय जय जिनमंदिर सभी, जिनप्रतिमा अभिराम।
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, शत शत करूँ प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-43

राक्षसदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

प्रथम भूमि के द्वितीय भाग में राक्षस भवन बने हैं।
सोलह सहस भवन उन सबमें जिनवर धाम बने हैं।।
मध्य लोक में बहुत भवनपुर अरु आवास कहाये।
सब जिनगृह का आह्वानन कर पूजन विधी रचाये।।1।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छंद

क्षीरोदधि का उज्ज्वल जल ले सुवरण भृंग भराऊँ।
जिनपद चरणों धारा करके भव भव तृषा बुझाऊँ।।
शाश्वत जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
आत्म सुधारस अनुभव पाऊँ, भक्तिप्रसून चढ़ाके।।1।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कंचन द्रव सम गंध सुगंधित भरी कटोरी लाऊँ।
जिनपद चरणों धारा करके भव भव तृषा बुझाऊँ।।शा.।।2।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

तंदुल धवल अखंडित लेकर तुम पद पुंज कराऊँ।
निजपद सौख्य अखंडित अक्षय पा निजमें रम जाऊँ।।शा.।।3।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही मोंगरा कमल केतकी पुष्प सुगंधित लाऊँ।
प्रभु के चरण कमल में रखकर निज समरस सुख पाऊँ।।शा.।।4।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरण पोली हलुआ बरफी रसगुल्ला भर थाली।
आप चरण में अर्पण करते नहीं मनोरथ खाली।।शा.।।5।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कनक दीप में घृत भर करके दीप जले जगमग हो।
करूँ आरती मोहतिमिर नश ज्ञान ज्योति प्रगटित हो।।शा.।।6।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में खेऊँ कर्म जलाऊँ।
धूम्र उड़े दशदिश में निज की कीर्ति सुरभि फैलाऊँ।।शा.।।7।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव संतरा मोसंबी फल सरस मधुर भर लाऊँ।
जिनपद आगे अर्पण करके निजसमरस फल पाऊँ।।शा.।।8।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ बनाकर सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
प्रभु के चरण समर्पित करके मन की कली खिलाऊँ।।शा.।।9।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

व्यंतर राक्षस के यहाँ, अधिपति दोय प्रसिद्ध।
उनके जिनमंदिर जजूँ, पुष्पांजलि से नित्य।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

रत्नप्रभा के पंकभाग में राक्षस भवन बने हैं।
संख्या सोलह सहस सभी में जिनवर भवन बने हैं।।
रजत द्वीप के दक्षिण दिश में भीम इंद्र की नगरी।
इन सबके जिनमंदिर पूजूँ नशें व्याधियां सगरी।।1।।

ॐ ह्रीं अधोमध्यालोकेरजतद्वीपदक्षिणदिक्स्थितभीमेंद्रस्य संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चित्राभू के नीचे सुर गृह भवन कहे हैं श्रुत में।
द्वीप जलधि में कहे भवनपुर पांच नगर मुख उनमें।।
पर्वत नदी सरोवर तरु पर हैं आवास इन्होंके।
रजत द्वीप में महाभीम हैं जजूँ जिनालय सबके।।2।।

ॐ ह्रीं अधोमध्यालोकेरजतद्वीपउत्तरदिक्स्थितभीमेंद्रस्य संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

राक्षस सुर के भवन भवनपुर अरु आवास अगणिते।
अधोलोक में मध्यलोक में जिनगृह संख्या रहिते।।
सबमें इक सौ आठ-आठ जिन प्रतिमा शाश्वत होहें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचिसे सुर नर खग मन मोहें।।1।।

ॐ ह्रीं अधोमध्यालोके पंकभागस्थितनभवनरजतद्वीपस्थितभवन-भवनपुरनाना-स्थलस्थितावाससंबंधी संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

दोहा

कंटक द्रुम है चैत्य तरु, जिनवर बिंब समेत।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, निज आतम सुख हेत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सखी छंद

राक्षस सुर के जिन गृह में, कंटक तरु पूरब दिश में।
हैं चार जिनेश्वर प्रतिमा, मैं पूजूँ गाऊँ महिमा।।1।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

राक्षस सुर निलय अनूपम, वहं चैत्यतरु अकृत्रिम।
दक्षिणदिश जिनवर प्रतिमा, पूजूँ गाऊँ जिन महिमा।।2।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कंटकद्रुम चैत्य तरु है, मरकत मणि पत्र भरित है।
पश्चिम दिश जिनवर प्रतिमा, पूजूँ गाऊँ जिन महिमा।।3।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान–चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर चैत्यतरु उत्तर में, जिन प्रतिमा पद्मासन में।
वर प्रातिहार्ययुत सोहें, सुरगण इंद्रन मन मोहें।।4।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनप्रतिमा के सन्मुख में,वर मानस्तंभ सुशोभें।
ये सोलह मानसतंभ हैं, पूजत ही पाप नशत हैं।।5।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षचतुर्दिग्जिनप्रतिमासन्मुखस्थित–षोडश मानस्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

तरु चैत्य वृक्ष की महिमा, सोलह शोभें जिनप्रतिमा।
सोलह मानस्तंभों में, जिनप्रतिमा नमूँ सदा मैं।।1।।

ॐ ह्रीं राक्षसदेवनिलयस्थितकंटकतरुचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमातत्सन्मुख स्थितषोडशमानस्तंभ संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

भुजंगप्रयात छंद

नमूँ मैं नमूँ मैं सदा जैन धामा।
नमूँ जैन प्रतिमा सदा सौख्य धामा।।
नमूँ मैं सदा शासते चैत्य वृक्षा।
नमूँ चैत्यप्रतिमा मिले सौख्य अच्छा।।1।।

सुर भीम महाभीम विघ्नंविनाशक।
उदक राक्षसा राक्षसाराक्षसं तक।।
कहे ब्रह्मराक्षस ये राक्षस हैं सतविध।
इन्हों में कहे भीम महभीम अधिपति।।2।।

कहीं देवि पद्मा वसूमित्रका दो।
तथा रत्न आढ्या सुकनकप्रभा दो।।
प्रमुख इंद्र की दो सहस देवियां हैं।
प्रतीन्द्रादि परिवार सुर देवियाँ हैं।।3।।

तनू शुद्ध काला तथापी दिपे है।
धनुष दश ऊँचाई वयस पल्य इक है।।

दिवस पांच नंतर सुमानस अहारा।
झरें कंठ पीयूष तृप्ती अपारा।।4।।

नहीं मांस भोजी न ये मद्य पीते।
सदा पुण्य वैभव भरें देव जीते।।
नहीं राक्षसी वृत्ति राक्षस सुरों की।
बने कोइ वहं पे सुसम्यक्त्व दृष्टी।।5।।

करें देव जिनदेव की नित्य भक्ती।
करें गीत संगीत नर्तन स्व शक्ती।।
जिनालय में जाके प्रभू कीर्ति गाते।
करें अर्चना बीन वंशी बजाके।।6।।

इन्होंके जिनालय सदा वंदते जो।
कभी राक्षसों में जनम ना धरें वो।।
महाघोर मिथ्यात्व विष ना पियें वो।
निजानंद अमृत पियें समकिती वो।।7।।

दोहा

शाश्वत जिनमंदिर नमूँ, शाश्वत सुखके हेतु।
'ज्ञानमती' लक्ष्मी मिले, जाँ न दुख लवलेश।।8।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवभवनभवनपुरावासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-44

भूतदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-अडिल्ल छंद

व्यंतरसुर में भूत जाति के देव हैं।
रत्नप्रभा खरभाग में इनके गेह हैं।।
चौदह सहस भवन में जिनगृह शाश्वते।
भवनपुरादिक जिनगृह पूजूँ थापके।।1।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्त्रग्विणी छंद

स्वर्णभृंगार में नीर प्रासुक भरूँ।
आपके पाद में तीन धारा करूँ।।
जैन मंदिर जजूँ सर्व दुख से बचूँ।
आत्म पीयूष पीके महासुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध चंदन घिसा के कटोरी भरूँ।
नाथ के पाद में चर्चते सुख भरूँ।।जैन.।।2।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शालि उज्ज्वल भरे थाल में ले लिया।
सौख्य अक्षय करो पुंज अर्पण किया।।जैन.।।3।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

लाल नीले कमल मौलश्री पुष्प हैं।
पाद में अर्पते कामशर चूर्ण हैं।।जैन.।।4।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मालपूआ अंदरसा समोसे लिये।
आपको पूजते व्याधि शांती किये।।जैन.।।5।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप में ज्योति कर्पूर की जगमगे।
आरती मैं करूँ भारती जगमगे।।जैन.।।6।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी अगनि पात्र में।
कर्म जालूँ सभी आपके सामने।।जैन.।।7।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

आम अंगूर केला मुसंबी लिये।
आपको अर्पते आश शिव की लिये।।जैन.।।8।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंधादि से अर्घ ले थाल में।
आप अर्पूं मिले सौख्य तत्काल में।।जैन.।।9।।

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

भूतदेव के निलय में, जिनवर सद्म अनूप।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले स्वात्म चिद्रूप।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

द्वीप हिंगुलक के दक्षिण में भूत जाति के अधिपति।
नाम 'सुरूप' नगर उनके हैं पाँच कहाये सुखप्रद।।
इनके भवन भवनपुर पुनि आवास बहुत द्वीपों में।
सबमें जिनमंदिर जिनप्रतिमा भक्ती से पूजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके हिंगुलकद्वीपदक्षिणदिक्स्थितसुरूपेंन्द्रस्य संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इसी द्वीप में उत्तर में प्रतिरूप इंद्र की नगरी।
इनके निलय बने द्वीपों में पंकभाग में अधरी।।
सबमें जिनमंदिर अकृत्रिम मणिमय सुंदर सोहें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नितप्रति सुरनर खग मन माहें।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके हिंगुलकद्वीपउत्तरदिक्स्थितप्रतिरूपेंन्द्रस्य संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भूतदेव के भवन अधों में भवनपुर द्वीपों में।
बहुतेरे आवास नगों पर सबमें जिनगृह शोभें।।
जो इनके जिनगृह पूजें नहिं भूत सुरों में जन्में।
सम्यग्दर्शन रत्न पाय के वैमानिक में जन्में।।1।।

ॐ ह्रीं अधोमध्यलोके खरभागस्थितभवनहिंगुलकद्वीपस्थितभवनभवनपुर-नानास्थलावाससंबंधिसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

दोहा

भूतदेव के निलय में, 'तुलसी' तरु शोभंत।
चैत्यवृक्ष प्रतिमा जजूँ, पुष्पांजलि करंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल-हे दीनबन्धु......

तुलसी तरु है चैत्यवृक्ष रत्नमय दिपे।
पद्मासनों में प्रतिमा अतिसौम्य छवि दिपें।।
चामर व छत्र घंटा मुक्ताफलों की माला।
जो पूजतें रुची से उन सौख्य हो विशाला।।1।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन चैत्यवृक्ष दक्षिण जिनबिंब शोभते हैं।
वहं आठ महामंगल वर द्रव्य शोभते हैं।।
जो भक्त पूजते हैं नहिं भूत उन सतावें।
सब विध उपद्रवों से भक्ती उन्हें बचावें।।2।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान–चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शाखायें चैत्य तरु की योजन चतुष्क लंबी।
वायू से लहलहायें अतिशय धरें सुगंधी।।
हैं चार जैन प्रतिमा पश्चिम दिशा में शाश्वत।
गाऊँ गुणों की महिमा आरोग्य लाभ शाश्वत।।3।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ये भूतदेव संतत जिनदेव को जजे हैं।
कुलदेव मानकरके जिन बिंब को भजे हैं।।
इन चैत्यवृक्ष प्रतिमा पूजूं हरस हरस के।
सब भूतप्रेत बाधा ना हो प्रभू भगत के।।4।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान-चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रत्येक बिंब आगे जिनमानथंभ सोहें।
सोलह कहाये इनमें जिनबिंब चित्त मोहें।।
ये रत्नमयी सुंदर दर्शन से मान खंडे।
जो पूजते इन्हें नित वे गुणमणी से मंडें।।5।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षदिक जिनप्रतिमासंमुखस्थित–षोडशमान स्तम्भेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जिन चैत्यवृक्ष प्रतिमा, सोलह रतनमयी हैं।
मानस्सुथंभ सोलह, मानें रतनमयी हैं।।
इनमें जिनेन्द्र प्रतिमा, बहुभक्ति से जजूँ मैं।
निजआत्म सौख्य पाके, निजधाम को भजूं मैं।।1।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थिततुलसीतरुचैत्यवृक्षचतुर्दिक्षोडशजिनप्रतिमा तत्सन्मुखस्थितमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

व्यंतर भूतों के यहाँ, जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुण मणि मालिका, पाऊँ अतिशय धाम।।1।।

शंभु छंद

जय भूत सुरों के जिनमंदिर, जय जय जिन प्रतिमा रत्नमयी।
जय जय जय चैत्यवृक्ष संदर, जय जय जिन प्रतिमा सौख्यमयी।।
जय जय जिनभक्ति कामधेनु, संपूर्ण मनोरथ फलती है।
जय भक्तों के आगंतुकादि, संपूर्ण उपद्रव हरती है।।2।।

इन भूत सुरों में सात भेद, सूरूप प्रतिरूप भूतोत्तम।
प्रतिभूत महाभूत प्रतिछन्न, आकाशभूत ये सुर शुभतम।।
इनमें दो इंद्र सुरूप और, प्रतिरूप उन्होंकी दो दो हैं।
वर रूपवती बहुरूपा और सुसीमा सुमुखा देवी हैं।।3।।

सुर देह वर्ण श्यामल मनहर, विक्रिय से रूप धरें बहुते।
आयू इकपल्य कही उत्तम, दस धनुष देह ऊँचे दिखते।।
परिवार देव हैं, असंख्यात, दो दोय महत्तरि गणिकायें।
दो दो हजार देवियां मधुर, स्वर से संगीत गीत गायें।।4।।

नानाविध तप करके मानव, मिथ्यात्व सहित यहं जन्म लहें।
वहं जातिस्मरण, देवऋद्धी देखे या जिनवर दर्श लहें।।
कुछ कारण या सम्यग्दर्शन, पाकर अतिशय जिनभक्त बनें।
जिनवंदन पूजन भक्ति करें, नानाविध पुण्य उपार्ज्य घने।।5।।

नर तन पाकर मुनि बनकरके, रत्नत्रय से निज पद पावें।
फिर शाश्वत मुक्तिधाम पाकर, नहिं यहं पर फेर फेर आवें।।
जो भूतदेव के जिनमंदिर भक्ति से नित प्रति जजते हैं।
ये भूतदेव जिन भक्तों के, संपूर्ण उपद्रव हरते हैं।।6।।

नहिं भूत प्रेत बाधा उनको, नहिं रोग शोक दुख दारिद हो।
जो भव्य जिनेश्वर भक्ति करें, उनकी सब विध सुख संपति हो।।
मैं नमूँ नमूँ जिनवर प्रतिमा, मेरे मनवांछित कार्य फलें।
जिन 'ज्ञानमती' सुख संपत्ती, मिल जावे चित्त सरोज खिले।।7।।

दोहा

धन्य धन्य इस विश्व में, शाश्वत जिनवर धाम।
हाथ जोड़ शिरसा करूं, कोटी कोटि प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनभवनपुरवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-45

पिशाचदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

व्यंतर पिशाच सुरों यहाँ, जिन धाम शाश्वत भासते।
मणिमय जिनेश्वर बिंब उनमें, सौम्य छवि से राजते।।
आह्वानन कर मैं पूजहूँ, ये सर्व संकट टालते।
गणधर मुनीश्वर वंद्य मंदिर, भक्त गण को पालते।।1।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नंदीश्वर पूजा

शुचि पद्म सरोवर नीर, कंचन भृंग भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधितीर, तुम पद धार करूँ।।
व्यंतर पिशाचके गेह, उनमें जिनधामा।
मैं पूजूँ धर मन नेह, पाऊँ निज धामा।।1।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मलयागिरि गंध सुगंध, कंचन पात्र भरूँ।
जिन पद पंकज चर्चंत, भव संताप हरूँ।।व्यंतर.।।2।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

सित तंदुल धौत अखंड, तुम ढिग पुंज धरूं।
निवनिधि धन धान्य अखंड, अक्षय पुण्य भरूँ।।व्यंतर.।।3।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

वर मौल श्री मचकुंद, चरणों पुंज धरूँ।
निज गुण कीर्ती महकंत, आतम शुद्ध करूं।।व्यंतर.।।4।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

घेवर फेनी रसपूर, निकट चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा वेदनी दूर, सम सुख पाऊँ मैं।।व्यंतर.।।5।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीपक लौ जले अखंड, आरति कर पूजूँ।
निज ज्ञान सुज्योति जलंत, अघ तम से छूटूँ।।व्यंतर.।।6।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वर धूप दशांगी लेय, अगनी में खेऊँ।
निज साम्य संपदा लेय, आतम सुख लेऊँ।।व्यंतर.।।7।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर सरीफा सेव, द्राक्ष बदाम लिये।
शिव फल की वांछा एव, आप चढ़ाय दिये।।व्यंतर.।।8।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल वसु अर्घ बनाय, रत्न मिलाय लिया।
तुम चरणन अर्घ चढ़ाय, समकित लाभ लिया।।व्यंतर.।।9।।

ॐ ह्रीं पिशाचव्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।
शांतये शांतिधारा।
बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अघ्य

दोहा

व्यंतर देव पिशाच सब, वैक्रिय देह धरंत।
इनके जिन मंदिर जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

हरिताल द्वीप कि दक्षिणी, दिश में नगरियां पांच हैं।
सुरगण पिशाचों के अधीपति, काल इंद्र विख्यात हैं।।
इनके असंख्यों निलय में, जिन धाम अतिशय शोभते।
मैं पूजहूँ नित अर्घ लेकर, जिनभवन मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपदक्षिणदिक्स्थितकालइन्द्रस्य संख्यातीतजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हरिताल द्वीपहिं उत्तरी दिश, महाकाल अधिप रहें।
इनके भवनपुर और बहु, आवास इस जग में कहें।।
सबमें जिनालय शासते, हम भक्ति से अर्चा करें।
व्यंतर पिशाचों के उपद्रव, एक क्षण में परिहरें।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपउत्तरदिक्स्थितमहाकालइन्द्रस्य संख्यातीत–जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सुरगण पिशाचों के भवनपुर, और बहु आवास हैं।
बहु द्वीप सागर तक बनें, सुर भवन आसंख्यात हैं।।
सबमें जिनालय शाश्वते, जिनबिंब मणिमय शोभते।
जो पूजते वे सर्व व्याधी, संकटों से छूटते।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपस्थितपिशाचदेवतत्परिवारदेवनिलयस्थित–संख्यातीत-जिनालयजिनजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सोरठा

देव पिशाच निकेत, तरु 'कदंब' शाश्वत दिपे।
चैत्यवृक्ष शुभ हेतु, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तोटक छंद

तरुचैत्य हरिन्मणि सुंदर है, नित वंदत साधु गणीश्वर हैं।
दिशि पूर्व जिनेश्वर की प्रतिमा, हम पूजत सौख्य लहें सुषमा।।1।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तरु चैत्यकदंब सुगंधि धरे, दिश दक्षिण बिंब धरें लहरें।
हम पूजत आप कलंक हरें, सब भूत पिशाचन कष्ट हरें।।2।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बहु वर्णमयी कुसुमावलियां, बहु कोंपल अंकुर से भरियां।
हम पूजत पाप कलंक हरें, सब भूत पिशाचन कष्ट हरें।।3।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चउबिंब प्रतेक दिशा धरतीं, पद्मासन राजत दुख हरतीं।
हम पूजत पाप कलंक हरें, सब भूत पिशाचन कष्ट हरें।।4।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षमूलभागउत्तरदिग्विराजमान चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

प्रति प्रतिमा के सामने, मानस्तंभ लसंत।
सोलह मानस्तंभ को, जजूँ जजूँ सुख कंत।।5।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षचतुर्दिक्षोडशजिनप्रतिमा सन्मुखस्थितषोडशमानस्तंभेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

चैत्य वृक्ष जिनबिंब हैं, सोलह शाश्वतरूप।
सोलह मानस्तंभ के, जजूँ बिंब जिनरूप।।1।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थितकदंबतरुचैत्यवृक्षचतुर्दिक्षोडशजिनप्रतिमा तत्सन्मुखस्थितषोडशमानस्तंभसंबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जिनवर बिंब अमोघ हैं, विघ्नविनाशक सिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भाव से, करो कार्य सब सिद्ध।।1।।

नरेन्द्र छंद

जय जय जय जिनदेवदेव जय, घाति कर्म संहारा।
जय जय जय नित करुं सेव मैं, विघ्न शत्रु परिहारा।।
जय जय जय शाश्वत जिन मंदिर, जय जय जय जिनप्रतिमा।
सर्व अमंगल दोष हरो मुझ, जय जय जय जिन महिमा।।2।।

व्यंतर सुरपिशाच जाती में, चौदह भेद बखाने।
कूष्मांड यक्ष राक्षस, संमोह व तारक जाने।।
अशुचि काल महाकाल शुचि सतालक देह महादेहा।
तूष्णीक अरु प्रवचन नामा, ये हैं पिशाच देवा।।3।।

काल महाकाल इंद्र दोय हैं, इनके दो दो देवी।
कमला कमलप्रभा उत्पलका, तथा सुदर्शना देवी।।
एक इंद्र के दो हजार देवियां, मुख्य दो गणिका।
देव देवियां विक्रिय देह, विविध अणिमादिक युक्ता।।4।।

इन देवों का कृष्ण वर्ण है, फिर भी सुंदर मानो।
देह ऊँचाई दश धनुषों की, आयुअल्प इन जानो।।
एक इंद्र के इक प्रतीन्द्र, सामानिक चार हजारा।
सोलह सहस आत्मरक्ष परिषद् सहस[1] अठदस बारा।।5।।

दो करोड़ अड़तालिस लाख रु, ब्यानवे सहस अनीका।
देव प्रकीर्णक आभियोग्य, किल्बिषकहिं संख्यातीता।।
सबके गृह में जिनमंदिर हैं, शाश्वत मणिमय सुंदर।
इक सौ आठ-आठ जिन प्रतिमा, वंदे सर्व मुनीश्वर।।6।।

जो नर इन प्रतिमा को वंदे, सर्व अमंगल नाशें।
व्यंतर भूत पिशाच लगे हों, इक ही क्षण में भागें।।
नहिं किंचित् बाधा कर सकते, बल्कि सहाय करे हैं।
जिन भक्तों पे संकट आवे, आके शीघ्र हरे हैं।।7।।

जिन भक्ती में तत्पर नर के, शत्रु मित्र बन जाते।
विष अमृत बन जावे तत्क्षण, सर्प हार हो जाते।।
जो पिशाचसुर सम्यग्दृष्टी, जिनशासन चमकाते।
शासन और भक्त के किंचित् कष्ट नहीं सह पाते।।8।।

1. परिषद देव आठ हजार, दस हजार और बारह हजार ये अभ्यंतर, मध्य और बाह्य में है।

धन्य धन्य हैं वे नर रानरी, जो जिन वंदन करते।
सर्व विघ्न को मूल नाशकर, मनवांछित फल लभते।।
नर सुर के अभ्युदय भोगकर, मुक्ति वल्लभा वरते।
'सम्यग्ज्ञानमती' के बल से, मृत्युंजय पद धरते।।9।।

घत्ता

जय जय अरहंता, जय भगवंता, शिवतिय कंता, तुमहिं नमूँ।
जय विघ्न हरंता, इष्ट भरंता, शांति करंता, नित प्रणमूँ।।10।।

ॐ ह्रीं व्यंतरपिशाचदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-46

ज्योतिष्कदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-शंभू छंद

पृथ्वी से सात शतक नब्बे, योजन ऊपर ज्योषिक सुर हैं।
रवि शशि ग्रह नखत और तारे, ये पाँच भेद ज्योतिष सुर हैं।।
सबके विमान में जिनमंदिर, मणिमय शाश्वत जिनप्रतिमायें।
उनको आह्वानन कर पूजूँ, ये मोक्षमार्ग को दिखलायें।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

पयोसिंधु का नीर झारी भराऊँ।
प्रभू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
रवी चंद ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

सुगंधित चंदन घिसा भर कटोरी।
चढ़ाऊँ चरण में कटे कर्म डोरी।।रवी.।।2।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल धरूं पुंज आगे।
मिले आत्म सम्पति सभी दुःख भागें।।रवी.।।3।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही मोंगरा केवड़ा पुष्प लाऊं।
प्रभू चर्ण में अर्प्य निजसौख्य पाऊँ।।रवी.।।4।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पुआ सेमई खीर लाडू बनाके।
प्रभू को चढ़ाऊं क्षुधा व्याधि नाशे।।रवी.।।5।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशे।
करूं आरती ज्ञान की ज्योति भासे।।रवी.।।6।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊं सुगन्धी।
जलें कर्म फैले सुयश की सुगंधी।।रवी.।।7।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अनंनास अंगूर फल थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें मोक्ष फल आश धरके।।रवी.।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

मिला अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम को।
चढ़ाऊँ तुम्हें आत्मनिधि पूर्ण कर दो।।रवी.।।9।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिनपद धार करंत।
भविजन का मन हो अमल, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोंगरा सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत मिले आत्मसुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ज्योतिष देव विमान के, जिनगृह संख्यातीत।
नमूँ नमूँ कर जोड़ के, बनूं स्वात्म के मीत।।1।।

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर धाम जगमें, इंद्र सौ से वंद्य हैं।
जय जय जिनेश्वर मूर्तियां, चिंतामणी शुभ रत्न हैं।।
जय जय गणाधिप साधुगण, नित ध्यावते हैं चित्त में।
जय भव्य पंकज बोध भास्कर, मूर्तियां रवि बिंब में।।2।।

इस भू से इकतिस लाख साठ हजार मील सुगगन में।
तारा विमान सुशोभते नित, घूमते हैं अधर में।।
बत्तीस लाख सुमील ऊपर, रवि विमान सदा रहें।
पैंतीस लाख सुबीस सहस, सुमील पे चंदा रहें।।3।।

नक्षत्र पैंतीस लाख छत्तिस, सहस मीलों पे रहें।।
बुध लाख पैंतिस सहस बावन, मील पे भ्रमते कहें।।
फिर लाख पैंतिस सहस चौंसठ, मील पे ग्रह शुक्र हैं।
पैंतीस लाख सहस छियत्तर, मील पर गुरु बिंब हैं।।4।।

मंगल सुपैंतिस लाख अठ्ठासी सहस ही मील पे।
शनि ग्रह सुछत्तीस लाख मीलों के उपरि अति उच्च पे।।
चित्रा धरा से सात सौ, नब्बे से नौ सौ योजनों।
तक एक सौ दस योजनों में, ज्योतिषी जग है भणों।।5।।

शशि सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, के विमानहिं चमकते।
ये अर्ध गोलक सम इन्हीं में, सुर नगर में सुर बसें।।
सबसे बड़े शशि बिंब तारा, के विमान लघू रहें।
त्रय सहस इक सौ सयेंतालिस, मील कुछ अधिकहिं कहें।।6।।

ये बड़े हैं तारा लघु दो सौ पचासहिं मील के।
इनमें बने हैं महल उनमें, देवगण रहते सबे।
ये देव देवी मनुज सम अतिरूप वान् वहां रहें।
इनके विमानहिं चमकते दिन रात इनसे बन रहें।।7।।

बस पाँच सौ दस सही, अड़तालिस बटे इकसठ[1] कहे।
योजन महा यह जानिये, इनका गमन का क्षेत्र है।।
इसमें गली इकसौ तिरासी, सूर्य की मानी गईं।
पंद्रह गली हैं चंद्र की, दो पक्ष में विचरें यहीं।।8।।

इन सब विमानहिं मध्य में, उत्तुंग स्वर्विम कूट हैं।
उनपर जिनेश्वर भवन शाश्वत, शोभते अति पूत[2] हैं।।
सब में जिनेश्वर बिंब इकसौ आठ इक सौ आठ हैं।
जो देवगण इनको जजें नित, भजें मंगल ठाठ हैं।।9।।

जो नर बहुत विध तप तपें, बहु पुण्य संचय भी करें।
सम्यक्त्वनिधि नहिं पासकें, वे ही यहां पर अवतरें।।
जिनदर्श करके तृप्त हों, जातिस्मृती वृष श्रवण से।
जिन पंचकल्याणक महोत्सव, देखते अन विभव से।।10।।

सम्यक्त्वलब्धी प्राप्त कर, निज में मगन जिन भक्त हों।
भव पंच परिवर्तन मिटा कुछ, ही भवों में मुक्त हों।।
सम्यक्त्वनिधि अनुपम निधी, भक्त ही करते सुलभ
सुख भोग कर नर तन धरें फिर, आत्म निधि उनको सुलभ।।11।।

धन धन्य है य शुभ घड़ी, धन धनय जीवन सार्थ है।
जिन अर्चना का शुभ समय आया उदय में आज है।।

जिन वंदना से आज मेरे चित्त की कलियां खिलों।
मैं 'ज्ञानमति' विकसित करूँ, अब रत्नत्रय निधियां मिलीं।।12।

घत्ता

जय जय जिन मंदिर, भव्य हितंकर, पूजत त्रिभुवन पूज्य बनें।
जय जय जिनप्रतिमा, जिनगुण महिमा, पूजत ही हो सौख्य घने।।13।।

ॐ ह्रीं चंद्रसूर्यग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकताराज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीत-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-47

चंद्रमा जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

जंबु दीप लवणोदधि से ले, असंख्यात द्वीपोदधि।
अंतिम जलधि स्वयंभूरमणं, तक फैले ये ज्योतिषि।।
चंद्र इंद्र हैं ये भी संख्यातीत कहाये जग में।
इनकें बिंबों के जिनगृह हो, पूजूँ रुचिधर मन में।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चंद्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छंद

जल धारा से जिनपद जजते, जन्म जरा मृति नाशें।
आतम अनुभव सम रस पीकर, सुख स्वातंत्र्य प्रकाशें।
चंद्र विमानों के जिनमंदिर, पूजूँ मन वच तन से।
सम्यग्ज्ञान कली विकसित हो, फैले सुरभि सुयश से।।1।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध सुगंधित चंदन लेकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
नाना सुख सौभाग्य प्राप्त हों, भव भव तपन बुझाऊँ।।चंद्र.।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंद्र किरण सम उज्ज्वल अक्षत, सन्मुख पुंज चढ़ाऊँ।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्तकर, अक्षय सुख पा जाऊँ।।चंद्र.।।3।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

वकुल कमल नीलोत्पल सुरभित, सुमन चढ़ाऊँ प्रभु को।
रोग शोक दुख दारिद विघटें, काम देव सम तनु हो।।चंद्र.।।4।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

घेवर फेनी मादक हलुआ, चरु चढ़ाऊँ रुचि से।
तनु की शक्ति कांति बढ़ जावे, शिव सुख हो निज बल से।।चंद्र.।।5।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत दीपक की लौ जगमगती, करूँ आरती रुचि से।
हृदय मोह अज्ञान हटाकर, भरूँ भारती सुख से।।चंद्र.।।6।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप सुगंधित खेय अग्नि में, धूम्र उड़ाऊँ नभ में।
अशुभकर्म को भस्म करूँ यश सुरभी फैले जग में।।चंद्र.।।7।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव आम अंगूर व कमरख, अर्पूं सरस मधुर फल।
सर्व मनोरथ पूरण होवें, मिले शीघ्र ही शिव फल।।चंद्र.।।8।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, अर्घ चढ़ाऊँ प्रभु कौ।
रत्नत्रय पदवी अनर्घ जो, अब मिल जोव मुझको।।चंद्र.।।9।।

ॐ ह्रीं चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधार मैं करूँ।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले सर्वसुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

शशिविमान के मध्य में, दिव्य कूट दीपंत।
उस पर शाश्वत जिनभवन, जजूँ पुष्प विकिरंत।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

गीता छंद

चित्रा धरा से आठ सौ अस्सी सुयोजन गगन में।
शशि के विमान सुशोभते ये अर्ध गोलक सम बने।।
इस प्रथम जम्बूद्वीप में दो चंद्रमा गतिमान हैं।
इनके अकृत्रिम जिनभवन मैं जजूँ सौख्य निधान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रविमानस्थितद्विजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लवणोदधी में चार माने चंद्रमान गतिशील हैं।
इनके विमान अधर गमन में दें परिक्रम नित्य हैं।।
प्रत्येक में जिनधाम हैं जो मुनिगणों से वंद्य हैं।
प्रत्येक मं जिनबिंब इकसौ आठ-आठ अनिंद्य हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लवणसमुद्रस्थचतुश्चन्द्रविमानस्थितचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर द्वीप धातकि खंड में बारह शशी विख्यात हैं।
ये चंद्र ज्योतिषदेव में हैं इंद्र निशि में कांत हैं।।

इन अर्ध गोलक बीच में वर दिव्य कूट उतुंग है।
उसपे जिनेश्वरधाम अनुपम शिखरबंद उतुंग हैं।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशचन्द्रविमानस्थितद्वादशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कालोदधी में चंद्र ब्यालिस रात्रि में अति चमकते।
देते सुमेरु की प्रदिक्षण दिव्य सुख से दमकते।।
प्रत्येक चंद्र विमान में जिनधाम शाश्वत शोभते।
उन पूजते सब व्याधि संकट दूर से मुख मोड़ते।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिद्विचत्वारिंशत्चन्द्रविमानस्थिताचत्वारिंशत्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में शशि हैं बहत्तर घूमते।
इनके जिनालय में सुराधिप भक्ति से नत झूमते।।
इन मंदिरों की अर्चना सब पाप ताप निवारती।
जो वंदना भक्ती करें उनको भवोदधि तारती।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्वासप्ततिचन्द्रविमानस्थितद्वासप्ततिद्विजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नग मानुषोत्तर से परे शशि बिंब स्थिर राजते।
बारह शतक चौंसठ शशी वसु[1] वलय में प्रतिभासते।।
इनके जिनालय को जजूँ जिनबिंब की अर्चा करूँ।
सब पाप पंकिल धोय कर नित आत्मा की चर्चा करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अपरपुष्पकरार्धद्वीपस्थद्वादशशतचतुःपष्टिचन्द्रविमानस्थितद्वादश शतचतुः पष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्कर समुद्र में वलय बत्तिस प्रथम वलये संख्यिये।
पच्चीससौ अठ्ठाइसे प्रतिवलय चउ-चउ वर्धिये।।
ब्यासी हजार व आठ सौ अस्सी सभी शशि जानिये।
प्रत्येक के जिनधाम को पूजत अतुल सुख ठाानिये।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्रस्थद्वयशीतिसहस्रअष्टशताशीतिचन्द्रविमानस्थितएतावत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

है वारुणी वर द्वीप चौथा वहां चौंसठ वलय हैं।
पुष्कर समुद्र से द्विगुण शशि पहले वलय में कथित हैं।।
प्रतिवलय चउ-चउ बढ़ रहें यह क्रम सभी द्वीपोदधी।
सब चंद्र संख्यातीत के जिनधाम पूजूँ धर रुची।।8।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपप्रभृतिस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थित संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इस प्रथम जंबूद्वीप से लेकर अढ़ाई द्वीप तक।
शशि एकसौ बत्तीस हैं मेरु प्रदिक्षण देंय सब।।
नग मानुषोत्तर से परे ये वृद्धि गत होते हुये।
संख्यारहित हैं चंद्रमा इनके जिनालय पूजिये।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रत्येक जिनगृह में जिनेश्वर बिंब इक सौ आठ हैं।
चौदह सहस दो शतक छप्पन ढाईद्वीप के ख्यात हैं।।
संपूर्ण चंद्र विमान के जिनबिंब संख्यातीत हैं।
मैं पूजहूं नित अर्घ ले ये मुक्तिरमणी मीत हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतचन्द्रविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयमध्यविराजमानसंख्यातीतजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय चंद्रविमानों के, जिनमंदिर मुनिगण नित वंदें।
जय जय जिन प्रतिमायें मणिमय, वंदत ही पापतिमिर खंडे।।

जय जय मंदिर के मानस्तंभ, जय जय तोरण की जिनप्रतिमा।
जय वनभूमी के चैत्य वृक्ष, जय पद्मासन सोहें प्रतिमा।।1।।

यह शशिविमान है अर्धगोल, चमकीलि धातु से बना हुआ।
पृथ्वीकायिक उद्योत कर्म वाले जीवों से सना हुआ।।
यह लगभग तीन सहस छह सौ बाहत्तर मील व्यास धारे।
इसकी बारह हजार किरणें, जो शीत चांदनी विस्तारें।।2।।

सोलह हजार अभियोग्य देव, विक्रिय से वाहन बनते हैं।
दिशक्रम से केशरि गज व वृषभ हय रूप धार के जुतते हैं।।
ये सतत खींचते हैं विमान, ये मेरु परिक्रमा करते हैं।
इनसे दिन रात विभाग बने, ये बिंब घूमते रहते हैं।।3।।

शशि के नीचे राहु विमान नित, अपनी गति से चलता है।
एकेक कला ढकता क्रम से, फिर एकहि एक छोड़ता हे।।
इसके ही कृष्ण पक्ष अरु शुक्ल पक्ष हो जाते महिने में।
छह छह महिने में ग्रहण पड़े, राहु से शशि के ढकने में।।।4।।

इस चंद्र इंद्र के चार महादेवी सुंदरता से सोहें।
चंद्राभा और सुसीमा प्रभंकरा व अर्चिमालिनी हैं।।
सोलह हजार देवियां हैं बहुतेरे परिकर देव कहें।
शशि देह सात धनु तुंग आयु इक पल्य एक लख वर्ष रहे।।5।।

इस शशिविमान के मध्य कूट पर, शाश्वत जिनमंदिर सोहें।
चउदिश में शशि के भवन बनें, जिसमें शशि इंद्र राजते हैं।।
सामनिक तनुरक्षक प्रकीर्ण, किल्विषक देववहं रहते है।।
ये देव विक्रिया के तनु से, सर्वत्र विचरते रहते है।।6।।

जिनवर के पंच कल्याणक में, नंदीश्वर मेरु जिनालय में।
जाते बहु पुण्य करें अर्जन, क्रीड़ा से विचरें बहुथल में।।
जातिस्मृति धर्मश्रवण करके, जिनमहिमा या देवर्द्धि लखें।
सम्यग्दर्शन निधि पा जाते निज आतमसुख पीयूष चखें।।7।।

जिनमंदिर रत्न चंदोवों से, अठ मंगल द्रव्यों से शोभें।
घंटा किंकिणि वंदनमाला, चामर छत्रादिक से शोभें।।
मंगलघट धूप घड़े वहां पे, मुक्ता सुवरण की मालायें।
जिन प्रतिमा इक सौ आठ वहां, भव्यों को शिवपथ दिखलायें।।8।।

दोहा

मणिमय शाश्वत जिनभवन, जिनवर बिंब अनूप।
नमूँ नमूँ मुझको मिले, 'ज्ञानमती' निजरूप।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चन्द्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-48

सूर्य जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

इस प्रथम जंबू द्वीप में दो सूर्य दिन दिन चमकते।
ये ढाईद्वीपों तक सु इक सौ बत्तिसे दिनकर दिपें।।
ये अर्ध गोलक सम सभी भास्कर विमान प्रकाशते।
इन मध्य जिनमंदिर जजूँ ये आत्म ज्योति प्रकाशते।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चाल-नंदीश्वर पूजा

मुनि मन सम जल अति स्वच्छ, चरणों धार करूं।
निज आतम हो प्रत्यक्ष, भवदधि शीघ्र तिरूं।।
भास्कर विमान जिनधाम, संख्यातीत कहें।
पूजत पाऊँ निज धाम, शिवतिय प्रीति गहे।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

काश्मीरी केशर गंध, चरणों लेप करूँ।
हो आतम गुण की गंध, भव संताप हरूं।।भास्कर.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोती सम तंदुल स्वच्छ, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम गुण प्रत्यक्ष, निज पद पाऊँ मैं।।भास्कर.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सुर तरु के सुमन सुगंध, चरण चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम कीर्ति अमंद, पा हरषाऊँ मैं।।भास्कर.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

घेवर फेनी पकवान, आप चढ़ाऊँ मैं।
कर आत्म सुधारस पान, निज सुख पाऊँ मैं।।भास्कर.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर शिखा चमकेय, जग का ध्वांत हरे।
आरति से मन हरषेय, ज्ञान विकास करे।।भास्कर.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

सित चंदन मिश्रित धूप, खेऊं अगनी में।
मिले निजानंद रस कूप, शिवतिय परणूँ मैं।।भास्कर.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

काजू पिस्ता अखरोट, आप चढ़ाऊँ मैं।
सक कार्य सरें बेरोक, बलि बलि जाऊं मैं।।भास्कर.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अर्घ चढ़ाऊं आज, तुम चरणों आगे।
निज तीन रतन के काज, पूजूँ अघ भागे।।भास्कर.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

रवि विमान के मध्य में, दिव्य कूट दीपंत।
उनपे जिन गृह नित जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप के भीतर इकसौ अस्सी योजन जानों।
लवणोदधि में तीन शतक तीसे योजन अधिकानों।।
इतने में इकसौ चौरासी गलियों में ये चलते।
दो रवि के विमान में दो जिनगृह पूजत दुख ढलते।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयसूर्यविमानस्थितद्वयजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लवणोदधि के चार दिवाकर मेरु प्रदिक्षण देते।
अर्ध गोले सम ये विमान नीचे से खूब चमकते।।
सम भागों पर जिन मंदिर हैं रवि के भवन बने हैं।
जिन प्रतिमाओं को मैं पूजूँ देतीं सौख्य घने हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिस्थितचतुःसूर्यविमानस्थितचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धातकिखंड द्वीप में बारह सूर्य विमान चले हैं।
मेरू की प्रदक्षिणा क्रम में नित ही भ्रमण करे हैं।।
इनकी गति से दिन रात्री हो ये विमान ही चमके।
इनके जिनमंदिर मैं पूजूँ आत्म ज्योति अति चमके।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशसूर्यविमानस्थितद्वादशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कालोदधी में चंद्र ब्यालिस रवि हैं नित्य भ्रमण करते हैं।
बारह सहस उग्र किरणों के जगप्रकाश करते हैं।।
सबही सूर्य प्रतीन्द्र कहाते सब विमान चमकीले।
सबमें जिनमंदिर मैं पूजूँ अशुभ कर्म हों ढीले।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिद्विचत्वारिंशत्सूर्यविमानस्थिताचत्वारिंशत्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप में भास्कर कहे बहत्तर भ्रमते।
नित्य मेरु की करें प्रदिक्षण जगत् अंधेरा हरते।।
इनके जिनमंदिर को पूजूँ मोह अंधेरा भागे।
आत्म ज्योति से जगे उजेला मोक्ष महल हो आगे।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्वासप्ततिसूर्यविमानस्थितद्वासप्ततिद्विजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मनुजोत्तर पर्वत से बाहर पुष्करार्ध पश्चिम में।
आठ वलय हैं सूर्य गमन के, रवि शशि घूमें उनमें।।
बारह सौ चौंसठ भास्कर वहं जहं ते तहं स्थिर हैं।
उनके जिनमंदिर मैं पूजूँ देते पद सुस्थिर हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अपरपुष्पकरार्धद्वीपस्थद्वादशशतचतुःपष्टिसूर्यविमानस्थितद्वादशशतचतुः पष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करवर समुद्र में बत्तिस वलय ज्योतिषी सुर के।
प्रथम वलय में पच्चीस सौ अट्ठाइस सूरज चमकें।।
ब्यासी सहस आठ सौ अस्सी सभी वलय के मानें।
इनके जिन मंदिर को पूजूँ ये सब अघ तम हाने।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्रस्थद्वयशीतिसहस्रअष्टशताशीतिसूर्यविमानस्थितएतावत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्वीप वारुणीवर चौथे में प्रथम वलय में दूने।
चउ चउ बढ़ते चौंसठ वलयों तक सब रवि तम लूने[1]।।

1. आठ।

आगे असंख्यात द्वीपोदधि तक ये बढ़ते जाते।
संख्यातीत सूर्य के जिनगृह पूजत निज पद पाते।।8।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपप्रभृतिस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थित संख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

जंबूद्वीपसे अंत स्वयंभूरमण वार्धि पर्यंते।
असंख्यात रवि के विमान हैं मध्य लोक पर्यंते।।
मनुज लोक में इक सौ बत्तिस सूर्य विमान चमकते।
सबके जिनमंदिर मैं पूजूँ ज्ञान ज्योति विलसंते।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मनुज लोक के रवि के जिनगृह इक सौ बत्तिस वंदूँ।
सबमें इकसौ आठ-आठ जिन प्रतिमा शत शत वंदूँ।।
चौदह हजार दो सौ छप्पन ये जिनप्रतिमा गिनने।
सब रवि जिनगृह की जिनप्रतिमा संख्यातीत सुनमनें।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपात्स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतसंख्यातीतसूर्यविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयमध्यविराजमानसंख्यातीतजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सूर्य बिंब जो दिख रहे, देव विमान विशाल।
इनमें श्री जिनभवन को, नमूँ नमूँ त्रयकाल।।1।।

शंभु छंद

जय जय जय रवि विमान के मधि, जिनमंदिर शाश्वत सुंदर हैं।
जय जय जय मणिमय अकृत्रिम, जिनप्रतिमा भव्य हितंकर हैं।।

जय जय पद्मासन जिन प्रतिमा, नासाग्रदृष्टि छवि सौम्य धरें।।
जय जय जिनवर सम जिनप्रतिमा, वंदत ही आतम सौख्य भरें।।2।।

ये रवि विमान पृथिवी कायिक, चमकीलि धातु से बने हुये।
जो आतप नाम कर्म वाले, वे जीवकाय ले जनम लिये।।
इनकी किरणें बस उष्ण रहें, नहिं मूल में किंचित् गर्मी है।
ये लगभग तीन सहस[1] इकसौ सैंतालिस मील के विस्तृत हैं।।3।।

मोटाई इससे आधी है, समतल में नगर बसा सुंदर।
मधि तुंग कूट पर जिनमंदिर, वंदन करते गणधर मुनिवर।।
मंदिर के चारों तरफ महल, उनमें भास्वान प्रतीन्द्र रहें।
उनके सामानिक आत्म रक्ष, प्राकीर्णकादि सब देव रहें।।4।।

मुखदेवी द्युतिश्रुति प्रभंकरा, सूर्य प्रभा अर्चिमालिनी हैं।
प्रत्येक के चउ चउ सहस प्रमित, परिवार देवियाँ मानी हैं।।
रवि देव की आयू एक पल्य, इक सहस वर्ष की होती है।
देवी की आयु निज पति की, आयु से आधी होती है।।5।।

ये रविविमान इक मिनट में हि, बहु दूर गमन कर लेते हैं।
चउ लख सैंतालिस हजार छह सौ तेइस मील चल लेते हैं।।
इस जंबूद्वीप में दो सूरज, इक यहां द्वितिय ऐरावत में।
ये दोनों मेरु परिक्रम दें, पहुँचे विदेह तब रात्रि बनें।।6।।

जब सूर्य प्रथम गलि में आता, जब नगर अयोध्या के चक्री।
निजगृह की छत से रविविमान, जिनबिंब दर्श करते चक्री।।
सैंतालिससहस[1] दो सौ त्रेसठ योजन कुछ अधिक नेत्र विषया।
इतनी दूरी से चक्रवर्ति, जिन दर्श करें हर्षित हृदया।।7।।

जो रवि के जिनमंदिर वंदे, उनके भवताप शांत होते।
वे रवि सम चमकें त्रिभुवन में, अतिशय सुख कीर्ति कांत होते।।
अज्ञान तिमिर की दूर भगा, निज आत्म सूर्य को पा लेते।
निज 'ज्ञानमती' शुभ ज्योती से, त्रिभुवन में प्रकाश छा देते।।8।।

दोहा

सूर्य विमान असंख्य में, जिनवर धाम महान्।
कोटि कोटि वंदन करूँ, बनूँ पूर्ण धनवान्।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-49

ग्रह जिनालय पूजा

अथ स्थापन-शंभु छंद

एकेक चंद्र के अट्ठासी-अट्ठासी ग्रह श्रुत में माने।
ये ज्योतिर्वासी देव अर्ध गोलक विमान में सरधाने।।
इन सब विमान में दिव्यकूट उन पर शाश्वत जिनमंदिर हैं।
जिन प्रतिमा इकसौ आठ-आठ, जिन वंदन करें मुनीश्वर हैं।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-सखी छंद

गंगाजल शीतल भरिये, जिनपद में धारा करिये।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसके, जिन चरणों लेपन करके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शशिकिरण सदृश तंदुल हैं, पूजत ही पुण्य अमल है।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बहुविधके कुसुम खिले हैं, अर्पत मन कमल खिले हैं।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

रसभरी जलेबी भरके, अर्पूं मैं मन सुख भरके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर जले जगमगते, आरति करते हम हरते।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वर धूप अगनि में खेऊ, निज आतम अनुभव लेऊँ।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर अनार चढ़ाऊँ, शिव फल की आश लगाऊँ।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

वर अर्घ समपूँ रुचि से, निज से रत्नत्रय चमके।
ग्रहदेवन के जिनधामा, पूजत निजपद विश्रामा।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

इक शशि के परिवार सुर, अट्ठासी ग्रह जान।
असंख्यात ग्रह के गृहे, जिनगृह जजूँ महान।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

बुध ग्रह के विमान कुछ ही कम पाँच शतक मीलों के।
इसमें देव देवियों सह परिवार सहित हैं नीके।।
सब बुध ग्रह में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।1।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुक्र ग्रहों के रजत विमाना एक सहस मीलों के।
किरण पचीस शतक हैं शीतल मंद मंद ये चमकें।।
इनके गृह में जिनमंदिर हैं जिनप्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'बृहस्पती' ग्रह के विमान सब कुछ कम मील सहस हैं।
मंद किरण युत नित्य चमकते स्फटिक मणी निर्मित हैं।।
इनके गृह में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।3।।

ॐ ह्रीं बृहस्पतिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'मंगल' ग्रह के पद्मराग मणिमय विमान अति शोभे।
पाँच शतक मील विस्तृत ये इससे आधे मोटे।।
इन विमान में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।4।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शनि' विमान कंचनद्युति सुंदर मील पाँच सौ विस्तृत।
इनमें आधी मोटाई है अर्ध गोल सम चकमक।।
इन विमान में जिन मंदिर हैं जिन प्रतिमा से सुंदर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित प्रति ये हैं सर्व हितंकर।।5।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'काल' ग्रहों के सर्वविमानों में सुर गण नित हरते।
इनके महल अकृत्रिम सुंदर पुण्य विभव को धरते।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'लोहित' ग्रह विमान में लोहित देव सपरिवार रहते।
विक्रिय से बहुविध तनु धरते जगमें विचरण करते।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं लोहितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कनकदेव' ग्रह के विमान में शाश्वत शोभा न्यारी।
देव देवियों के महलों में पुण्य विभव अति भारी।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं कनकदेवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नीलदेव' ग्रह के विमान में दिव्य कूट वेदी हैं।
अनुपम रत्नमयी सब रचना मणिमय तट वेदी हैं।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं नीलदेवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'ग्रह विकाल' के विमान आधे गोले सम अति शोभें।
पृथिवी कायिक अनादि अनिधन विमान सुर मन लोभें।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं विकालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'केश' ग्रहों के विमान अनुपम देव देवियां रहते।
इन विमान की मंद किरण हैं रात्रि में अति चमकें।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं केशग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कवयव' ग्रह के विमान सुंदर भूकायिक चमकीले।
सुरगण विक्रिय भूषा धरते सदा दिव्यसुख ही लें।।इन.।।12।।

ॐ ह्रीं कवयवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

एक एक चंद्रके ये ग्रह चंद्र असंख्ये जग में।
अतः 'कनकसंस्थान' ग्रहों के बिंब असंख्ये जग में।।इन.।।13।।

ॐ ह्रीं कनकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह विमान 'दुंदुभक' देव का मंद किरण से चमके।
देव देवियां रहते उसमें दिव्य विभव इन सबके।।इन.।।14।।

ॐ ह्रीं दुंदुभकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निज निज पुण्य उदय से सुरगण इन विमान में जन्में।
देव 'रक्तनिभ' ग्रह विमान में दिव्य सुखों को परणें।।इन.।।15।।

ॐ ह्रीं रक्तनिभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नीलाभास' ग्रहों के सुंदर देव विमान चलाते।
ज्योतिष में जन्में ये सुर गण जिनवर के गुण गाते।।इन.।।16।।

ॐ ह्रीं नीलाभासग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'अशोक' संस्थान' इन्हों के बहु विमान नभपथ में।
विक्रिय तनु से सुरगण जाते जिनवर कल्याणक में।।इन.।।17।।

ॐ ह्रीं अशोकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कंस' ग्रहों के विमान अनुपम चमक रहें नभपथ में।
देव देवियों के बहु सुंदर महल बने हैं उनमें।।इन.।।18।।

ॐ ह्रीं कंसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'रूपनिभ' ग्रह विमान बहुद्वीप असंख्यों तक हैं।
विक्रिय तनु से देव विहरते मूलरूप निज गृह है।।इन.।।19।।

ॐ ह्रीं रूपनिभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कंसकवर्ण' ग्रहों के सुंदर बने विमान चमकते।
अर्ध गोल इनक समतल पर देव देवियां रहते।।इन.।।20।।

ॐ ह्रीं कंसकवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'शंखपरिणाम' नाम ग्रह इन विमान नभ पथ में।
ज्योतिषसुरगण क्रीड़ा करते मूल देह निज गृह में।।इन.।।21।।

ॐ ह्रीं शंखपरिणामग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'तिलपुच्छ' विमान असंख्यों द्वीप सागरों तक हैं।
आयु पूर्णकर सुर मर जाते विमान नित स्थिर हैं।।इन.।।22।।

ॐ ह्रीं तिलपुच्छग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई

'शंखवर्ण ग्रह' देव विमान, सुर परिवार रहें निधिमान्।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।23।।

ॐ ह्रीं शंखवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पंचवर्ण' ग्रह पुण्यनिधान। देव विमान बने अमलान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।24।।

ॐ ह्रीं पंचवर्णग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'उत्पात' विमान अनिंद। जिनवर बिंब सुरासुर वंद्य।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।26।।

ॐ ह्रीं उत्पातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'धूमकेतु' ग्रह देव विमान। जिनवर बिंब नमें गुणवान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।27।।

ॐ ह्रीं धूमकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'तिल' नामक ग्रह देव विमान। देव देवियों से सुखखान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।28।।

ॐ ह्रीं तिलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नभ' ग्रह देव विमान दिपंत। देव देवियां सुख विलसंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं नभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'क्षारराशि' ग्रह देव विमान। नभ पथ में है अधर सुजान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।30।।

ॐ ह्रीं क्षारराशिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'विजिष्णू' ग्रह गुणवान। ज्योतिषसुर के सुख अमलान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।31।।

ॐ ह्रीं विजिष्णूग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सदृशदेव' का विभव महान्। ग्रह हो पुण्य ग्रहें सुखदान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।32।।

ॐ ह्रीं सदृशदेवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

संधि नाम ग्रह देव विमान। संधिदेव परिवार महान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं संधिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'कलेवर' नाम धरंत। ग्रह होकर विग्रह[1] न करंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।34।।

ॐ ह्रीं कलेवरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'अभिन्न' बहु पुण्य प्रसाद। देव विभव सुख है न विषाद।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।35।।

ॐ ह्रीं अभिन्नग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'ग्रंथिविमान' ग्रहों का मान्य। जिन भक्ती भरती धनधान्य।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।36।।

ॐ ह्रीं ग्रंथिग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'मानवक' देव अभिराम। जिनवर भक्त स्वात्म विश्राम।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।37।।

ॐ ह्रीं मानवकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कालक' ग्रह विमान चमकंत। देव देवियां वहां रमंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।38।।

ॐ ह्रीं कालकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कालकेतु' ग्रह जिनवर भक्त। काल महाविकाराल नशंत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।39।।

ॐ ह्रीं कालकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'निलय' देव आलय सुखधाम। देव करे जिनबिंब प्रणाम।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।40।।

ॐ ह्रीं निलयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अनय' ग्रहों के देव विनीत। सदाचार से करते प्रीत।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।41।।

ॐ ह्रीं अनयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विद्युज्जिह्व' विमान विशाल। सुरगण वंदे जगप्रतिपाल।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।42।।

ॐ ह्रीं विद्युज्जिह्वग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सिंह' नाम ग्रह देव प्रसन्न। जिनगुण गावें चित्त प्रसन्न।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।43।।

ॐ ह्रीं सिंहग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अलक' विमान अलौकिक जान। पृथिवी कायिक जीव निदान।
इन विमान में जिनवर धाम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम।।44।।

ॐ ह्रीं अलकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चाल-शेर

'निर्दुःख' ग्रह विमान में ग्रह देव बसंता।
नाना सुखों को भोगते दुख रोग के हंता।।

इनके असंख्य द्वीप जलधि तक विमान हैं।
उनमें जिनेन्द्रधाम नमूँ सुख निधान हैं।।45।।

ॐ ह्रीं निर्दुःखग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'काल' के विमान में सुरगण निवास हैं।
ये ढाई द्वीप में भ्रमें फिर अचल खास हैं।।इन.।।46।।

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'महाकाल' नाम के नहिं दुःख दें कभी।
निज पुण्य पाप उदय से सुख दुख भरें सभी।।इन.।।47।।

ॐ ह्रीं महाकालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'रुद्र' रौद्र ध्यान से निज को बचावते।
सुर सौख्य भोगते वहां समकित उपावते।।इन.।।48।।

ॐ ह्रीं रुद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह के विमान 'महारुद्र' नाम बहुत से।
ये ज्योतिषी सुर पुण्य विभव भरें वहां पे।।इन.।।49।।

ॐ ह्रीं महारुद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'संतान' नाम ग्रह सुरों के सौख्य घने हैं।
विक्रिय शरीर से भ्रमें जिनभक्त बने हैं।।इन.।।50।।

ॐ ह्रीं संतानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्योतिष विमान 'विपुल' ग्रह आकाश में रहें।
बहु देव देवियां वहाँ आनंद से रहें।।इन.।।51।।

ॐ ह्रीं विपुलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'संभव' ग्रहों अधिपति संभव हि नाम के।
परिवार सहित रहते जिनभक्ति भावते।।इन.।।52।।

ॐ ह्रीं संभवग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सर्वार्थी' ग्रह देव दिव्य सौख्य भोगते।
जिनबिंब की पूजा करें अति पुण्य योगतें।।इन.।।53।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ये 'क्षेम' ग्रह जगत में क्षेम हेतु विचरते।
जिनभक्ति संस्तवन से क्षेम शब्द उचरते।।इन.।।54।।

ॐ ह्रीं क्षेमग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'चंद्र' नाम के असंख्य मध्य लोक में।
ये चंद्रमा के ही रहें परिवार विश्व में।।इन.।।55।।

ॐ ह्रीं चंद्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'निर्मंत्र' ग्रह विमान गगन में सुशोभते।
देवों के महल बीच दिव्य कूट शोभते।।इन.।।56।।

ॐ ह्रीं निर्मंत्रग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'ज्योतीष्मान' यह विमान अभ्र में चमकें।
सुरगण वहां पे जन्मते निज पुण्य से दमकें।।इन.।।57।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्मद्ग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'दिशसंस्थित' ग्रह में विमान पुण्य से मिलें।
जिनभक्ति के बल से सुरों की मनकली खिले।।इन.।।58।।

ॐ ह्रीं दिशसंस्थितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हैं देव 'विरत' नाम के ग्रह जाति में हुये।
ये पाप से विरक्त पुण्य में निरत हुये।।इन.।।59।।

ॐ ह्रीं विरतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'वीतशोक' चंद्र के परिवार देव हैं।
जिनराज को 'कुलदेव' मान करें सेव हैं।।इन.।।60।।

ॐ ह्रीं वीतशोकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'निश्चल' ग्रहों में जैन धाम शोभते घने।
जो पूजते उनके समस्त पाप को हने।।इन.।।61।।

ॐ ह्रीं निश्चलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्योतिष 'प्रलंब' देव सौख्य दिव्य पावते।
जिनराज वंदना करें निजात्म भावते।।इन.।।62।।

ॐ ह्रीं प्रलंबग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'भासुर' ग्रहों के बिंब मंद रश्मि धारते।
जिन भक्ति से भवसिंधु से निजको उबारते।।इन.।।63।।

ॐ ह्रीं भासुरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह नाम 'स्वयंप्रभ' विमान अभ्र में दिपें।
जो पूजते जिनेन्द्र धाम पुण्य से दिपें।।इन.।।64।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विमान 'विजय' ग्रह के दिव्य रत्न से भरे।
वंदे जिनेंद्रबिंब उनके पाप को हरें।।इन.।।65।।

ॐ ह्रीं विजयग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'वैजयंत' के विमान नभ में अधर हैं।
जो पूजते जिनेन्द्रबिंब वो हि अमर हैं।।इन.।।66।।

ॐ ह्रीं वैजयंतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

'सीमंकर' ग्रह के दिपें, शुभ्र विमान असंख्य।
उनके जिन मंदिर जजूँ, गुण मणि मिले असंख्य।।67।।

ॐ ह्रीं सीमंकरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अपराजित' ग्रह के यहां, जिन मंदिर अभिराम।
जिनप्रतिमा को पूजहूँ, मिले स्वात्म विश्राम।।68।।

ॐ ह्रीं अपराजितग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'जयंत' के गेह में, जिनगृह सुरगण वंद्य।
नमूँ नमूँ जिनबिंब को, मिले सौख्य अभिनंद।।69।।

ॐ ह्रीं जयंतग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विमल' देव ग्रह मान्य हैं, मल से रहित शरीर।
इनके जिनगृह को जजूं, मिटे शीघ्र भवपीर।।70।।

ॐ ह्रीं विमलग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अभयंकर' ग्रह के यहां, जिनगृह मणिमय कांत।
जिन प्रतिमा अतिसौम्य छवि, नमत बने शिवकांत।।71।।

ॐ ह्रीं अभयंकरग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विकस' नाम के ग्रह यहां, शाश्वत जिनवर गेह।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, जिनपद अतुल सनेह।।72।।

ॐ ह्रीं विकसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'काष्ठी' ग्रह के गेह में, जिन आलय स्वर्णाभ।
जो पूजें नित भाव से, लहें स्वात्म रत्नाभ।।73।।

ॐ ह्रीं काष्ठीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विकट' नाम ग्रह के यहाँ, अनुपम निधि जिनधाम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, शत शत करू प्रणाम।।74।।

ॐ ह्रीं विकटग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'कज्जली' ग्रह कहें, पुण्य उदय से होय।
इनके जिनगृह पूजहूँ, करें निजात्म उद्योत।।75।।

ॐ ह्रीं कज्जलीग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अग्निज्वाल' ग्रह गेह में, मणिमय जिनवर सद्म।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले शीघ्र शिवसद्म।।76।।

ॐ ह्रीं अग्निज्वालग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'अशोक' के गेह में, शोकरहित जिनगेह।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, जिनवर में धर नेह।।77।।

ॐ ह्रीं अशोकग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'केतु' महाग्रह लोक में, इनके जिनवर धाम।
ग्रह अरिष्ट सब दूर हों, पूजूँ विश्व ललाम।।78।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'क्षीरस' ग्रह के बिंब में, जिनवर भवन अनूप।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले स्वात्म चिद्रूप।।79।।

ॐ ह्रीं क्षीरसग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अर्घ' ग्रह के जिनराज गृह, करें सर्व अघ नाश।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले सुज्ञान प्रकाश।।80।।

ॐ ह्रीं अर्घग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'श्रवण' महाग्रह के यहां, जिनवर भवन विशाल।
जो पूजें वे सुख लहें, छुटें सर्व जंजाल।।81।।

ॐ ह्रीं श्रवणग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'जलकेतु' विमान में, शाश्वत जिनवर धाम।
ग्रह अरिष्ट के नाशने, कोटी कोटि प्रणाम।।82।।

ॐ ह्रीं जलकेतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'केतु' विमानों में दिपें, जिनमंदिर मणिमंत।
जो पूजें वो शिव लहें, निज गुणमणि विलसंत।।83।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्रह 'अंतरद' विमान में, जिनप्रतिमा राजंत।
मैं पूजूं नितभाव से, स्वपर ज्ञान भासंत।।84।।

ॐ ह्रीं अंतरदग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'एक संस्था' ग्रह, इनके ग्रह जिनगेह।
मैं पूजूँ नितभाव से, करूँ मुक्ति से नेह।।85।।

ॐ ह्रीं एकसंस्थानग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अश्व' नाम ग्रह बिंब में, जिन प्रतिमा राजंत।
जो पूजें उन रोग दुख, क्षण में ही भागंत।।86।।

ॐ ह्रीं अश्वग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'भावग्रह' के यहां, जिन मंदिर सुखधाम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले निजातम धाम।।87।।

ॐ ह्रीं भावग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव 'महाग्रह' बिंब में, जिन मंदिर अभिराम।
महा मोक्ष फल हेतु मैं, करूँ अनंत प्रणाम।।88।।

ॐ ह्रीं महाग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

प्रत्येक चंद्र के अट्ठासी ग्रह परिकर देव कहाये हैं।
नरलोक में इक सौ बत्तिस शशि के ग्रह गिनती में आये हैं।।
ग्यारह हजार छह सौ सोलह इन सब में ही जिन मंदिर हैं।
नरलोक बाह्य ग्रह असंख्यात उन सब जिन गृह को वंदन हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति जिन मंदिर में जिन प्रतिमायें, इक सौ आठ विराजें हैं।
ये शाश्वत रत्नमयी सुंदर वंदन से पातक भाजे हैं।।
जिनबिंब पास में श्रीदेवी श्रुतदेवी मूर्तिमयी शोभें।
सर्वाण्ह व सानत्कुमार यक्ष मूर्ती सुरगण का मन लोभें।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालययेषुविरामान संख्यातीतजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ग्रह विमान के मध्य में, दिव्य कूट विलसंत।
उस पर शाश्वत जिनभवन, नमूँ नमूं सुखवंत।।1।।

शंभु छंद

इसचित्रा भू से आठशतक, अट्ठासी योजन पर नभ में।
बुध ग्रह रहते इससे ऊपर, ग्रह शुक्र गुरु मंगल शनि हैं।।
इन पाँचोंके अतिरिक्त तिरासी, ग्रह विमान नभ में ही हैं।
ये बुध अरु शनि के अंतराल में, सदा रहे नित भ्रमते हैं।।2।

राहु केतु ग्रह के विमान, कुछ कम चउ सहस मील के हैं।
ये चंद्र सूर्य से बड़े कहे, इनके नीचे ही चलते हैं।।
इनकी ही गति से शशि रवि के, छह-छह महिने में बिंब ढकें।
इसको ही ग्रहण कहें श्रुत में, दीक्षादिक कार्य न हों इसमें।।3।।

इन ग्रह के आठ हजार देव, वाहन जाती के होते हैं।
केहरि गज वृषभ अश्व विक्रिय, धरके चउ दिश में जुतते हैं।।
सुर होकर भी पशु रूप धरें, जीवन भर वाहन बने रहें।
जो नर गुरु का अविनय करते, वे तप से वाहन गती लहें।।4।।

जो निज चारित्र मलिन करते, बहुविध मिथ्या तप करते हैं।
जिनधर्म की आसादन करते, वे ही ज्योतिष सुर बनते हैं।।
वहं जाकर जिन महिमादि देख, सम्यक्त्व ग्रहण कर सकते हैं।
फिर नर हो मुनि बन तप करके, निजआत्म सुधारस चखते हैं।।5।।

बुध शुक्र गुरु मंगल व शनी, राहू केतू ये ग्रह माने।
शशि रवि दो को भी गिन लीजे, ये नवग्रह हैं सब जग जाने।।
जो ग्रह के जिनगृह नित पूजें, उनको ग्रह कष्ट न दे सकते।
जो इनकी जिन प्रतिमा वंदे, नवग्रह उनको अभीष्ट फलते।।6।।

जिनभक्ति अकेली ही जन के, सब ग्रह अनुकूल बना देती।
जिनभक्ति अकेली ही जन को, दुर्गति से शीघ्र बचा लेती।।
जिनभक्ति अकेली ही जन के, तीर्थंकर आदि पुण्य पूरे।
जिनभक्ति अकेली ही जन को, शिवसुख देकर भव दुख चूरे।।7।।

मैं नमूँ अनंतों बार प्रभो! मेरे सब दुःख विनाश करो।
मैं नमूँ अनंतो बार प्रभो! मुझ में निजज्ञानप्रकाश भरो।।
मैं नमूँ अनंतो बार प्रभो! सम्यग्दर्शन अक्षय कीजे।
बस 'ज्ञानमती' पूरी होने तक, चरण शरण में रख लीजे।।8।।

दोहा

जय जिनगृह चिंतामणी,चिंतित फलदातार।
एक मुक्ति के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-50

नक्षत्र जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

एकेक शशि के नखत अट्ठाईस नभ में चमकते।
सब अर्ध गोलक सदृश निचले भाग से ही दमकते।।
इन सब विमानन मध्य स्वर्णिम कूट पर जिनधाम हैं।
पूजूँ जिनेश्वर बिंब मैं आह्वान कर इत ठाम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-वसंततिलका छंद

गंगा नदी जल भरा कनकाभ झारी।
धारा करूँ त्रय जिनेश्वर पाद में मैं।।
नक्षत्र के जिननिकेतन नित्य पूजूँ।
स्वामिन्! अनंत भव दुःख हरो अभी ही।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर संग घिस चंदन गंध लाया।
पादारबिंद प्रभु के चर्चूं अभी मैं।।नक्षत्र.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धारूँ।
मेरा अखंड पद नाथ मिले मुझ जब।।नक्षत्र.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

बेला गुलाब सुरभी करते दशों दिक्।
पादारविंद जिनके अर्पण करूँ मैं।।नक्षत्र.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

फेनी सुहाल गुझिया बरफी बनाके।
हे नाथ! अर्पण करूँ क्षुध रोग नाशो।।नक्षत्र.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान चमके।।नक्षत्र.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सुअग्नि में मैं।
संपूर्ण कर्म झट भस्म बनें न दुख दें।।नक्षत्र.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

केला अनार वर द्राक्ष बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें सब मनोरथ पूर्ण कीजे।।नक्षत्र.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरादि अर्घ भर थाल चढ़ाय देऊँ।
मेरा अनर्घ पद नाथ मुझे दिलादो।।नक्षत्र.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सब नक्षत्र विमान में, जिनगृह जिनवर बिंब।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिटे सर्व छल डिंभ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

कृत्तिका नक्षत्र के छह तारे, इनका आकार वीजना सम।
परिवार तारका सहित सभी, छह हजार छह सौ बहत्तरम्।।
इन सबमें जिनमंदिर शाश्वत, वंदन से सारे पाप हरें।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे निज आतम संपत्ति भरें।।1।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतकृत्तिकानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रोहिणी नखत के पण तारे, गाड़ी की उद्धिका समाकार।
परिवार तारका सहित सकल, पचपन सौ साठ सुश्रुताधार।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतरोहिणीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मृगशीर्षा के त्रय तारा हैं, मृग के शिर सम आकार धरें।
तेतीस सौ छत्तिस सब तारे, ये सब विमान अकृत्रिम खरे।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमृगशीर्षानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आर्द्रा नक्षत्र के इक तारा, दीपक समान आकार धरे।
सब तोर ग्यारह सौ बारह, ज्योतिष विमान की मंद करें[1]।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतआर्द्रानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उडु पुनर्वसू के छह तार, तोरण समान आकार कहा।
छयासठ सौ बहत्तर सब तारे, चमकें विमान ये अधर अहा।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपुर्नवसुनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र पुष्य के त्रय तारा, आकार छत्र सदृश कहे।
सब तारे तेतिस सौ छत्तिस, इनके विमान अति चमक रहें।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपुष्यनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आश्लेषा छह तारा संयुत, बांमी की शिखा सदृश मानें।
तारे छयासइ सौ बहत्तर, परिवार समेत मुनी जानें।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतआश्लेषानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उडु मघा चार तारा संयुत, गोमूत्र पंक्ति आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे निशि में सुप्रकाश करें।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमघानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्वा फाल्गुनि के दो तारे, आकार बाण सम तुम जानो।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, इनमें जिन प्रतिमा सरधानों।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरा फाल्गुनी दो तारे, आकार कहा युग सम नभ में।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, इनके विमान गगनांगण में।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराफाल्गुनिनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र हस्त पांच तारा, आकार हाथ सम तुम जानों।
पचपन सौ साठ सकल तारे, इनमें जिन प्रतिमा सरधानों।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतहस्तनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चित्ररा नक्षत्र का इक तारा, आकार नील पंकज सम है।
ग्यारह सौ बारह सब तारे, भूकायिक धातु विनिर्मित हैं।।इन.।।12।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतचित्रानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वाती नक्षत्र का इक तारा, दीपक सम अतिशय शोभ रहा।
ग्यारह सौ बारह सब तारे, बहु देवी देव निवास वहाँ।।इन.।।13।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतस्वातिनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिना- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र विशाखा चउ तारे, अधिकरण सदृश आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे बहु मंद प्रकाश करें।।इन.।।14।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतविशाखानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनुराधा के छह तारे ये, मोती माला आकार धरें।
छयासठ सौ बाहत्तर तारे, परिवार देवनित वास करें।।इन.।।15।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअनुराधानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्येष्ठा नक्षत्र के त्रय तारे, ये वीणा श्रृंग समान कहे।
तेतिससौ छत्तिस सब तारे, परिवार देव इन मध्य रहें।।इन.।।16।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतज्येष्ठानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र मूल के नौ तारे, बिच्छू समान आकार धरें।
दस सहस आठ सब तारे हैं, आधे गोकल सु विमान धरें।।इन.।।17।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतमूलनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्वाषाढ़ा के चउ तारे, दुष्कृत वापी आकार धरें।
चौवालिस सौ अड़तालिस सब, तारे ये मंदप्रकाश करें।।इन.।।18।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वाषाढानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्राषाढा के चउ तारे, ये सिंह कुंभ सम माने हैं।
चौवासिल सौ अड़तालिस सब, तारे ये मंद प्रकाशे हैं।।इन.।।19।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराषाढनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अभिजित् नक्षत्र के त्रय तारे, हाथी के शिर सम दिखते हैं।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, इनके विमान ही दिखते हैं।।इन.।।20।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअभिजित्नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र श्रवण के त्रय तारे, आकार मृदंग समान धरें।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, शाश्वत हैं इन में देव भरें।।इन.।।21।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतश्रवणनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नक्षत्र धनिष्ठा पण[1] तारे, गिरते पक्षी सम दिखते हैं।
पचपन सौ साठ सर्व तारे, जये जन मन प्रमुदित करते हैं।।इन.।।22।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतनिष्ठानक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शतभिषज नखत इक सौ ग्यारह, तारे ये सैन्य सदृश दिखते।
इक लाख सु तेइस सहस चार सौ बत्तिस सब तारे दिपते।।इन.।।23।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतशतभिष्नक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन- बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उडुपूर्वा भाद्रपाद के दो, तारे जग पूर्व शरीर समा।
बाइससौ चौबिस सब तारे, नभ में रात्रि में चमक घना।।इन.।।24।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतपूर्वभाद्रनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरा भाद्रपद दो तारे, हाथी के पूर्व शरीर सदृश।
बाइस सौ चौबिस सब तारे, नभ में चमचमते सभी नखत।।इन.।।25।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतउत्तराभाद्रनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रेवति उडु के बत्तिस तारे, ये नाव समान दिखें नभ में।
पैतिस हजार अरु पाँच शतक, चौरासी सब तारे गिनने।।इन.।।26।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतरेवतीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अश्विनी नखत के पाँच तारका, घोड़े के शिर सम दिखते।
पचपन सौ साठ सभी तारे, रात्री में किंचित तम हरते।।इन.।।27।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतअश्विनीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भरणी नक्षत्र त्रय तारा युत, चूल्हे के सम नभ में दिखते।
तेतिस सौ छत्तिस सब तारे, रात्रि में मंद मंद चमकें।।इन.।।28।।

ॐ ह्रीं परिवारतारासमेतभरणीनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सब नखत सूर्य के गमन क्षेत्र, में ही नित विचरत करते हैं।
ढाई द्वीपों के बाहर के, नक्षत्र गमन नहिं करते हैं।।
नर लोक मध्य इक सौ बत्तिस, शशि के छत्तिस छ्यानवे हैं।
इस आगे संख्यातीत नखत, सबमें जिनगृह को वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातनक्षत्रविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रत्येक नखत के छह आदि, मूल तारा बतलाये हैं।
ग्यारह सौ ग्यारह से गुणिते, परिकर तारा कहलाये हैं।।
इन सब ताराओं की संख्या, इस मध्य लोक में असंख्य हैं।
सब के विमान में जिन मंदिर, ये मुनिगण से भी वंदित हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कृत्तिकादिनक्षत्रसम्बन्धिमूलतारापरिवारताराविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयजिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सबही नक्षत्र विमानों में, समतलपर दिव्य कूट शोभें।
परिवार तारका के विमान उनमें भी दिव्य कूट शोभें।।

इनपर जिनमंदिर बने हुये जिन प्रतिमा इक सौ आठ-आठ।
इन सब असंख्य जिनप्रतिमा को पूजत हो मंगल ठाठ-वाट।।3।।

ॐ ह्रीं असंख्यातनक्षत्रसंख्यातपरिवारतारकाविमानस्थितजिनालयेषुविरामान संख्यातीतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सब नक्षत्र विमान में, पद्मासन जिनबिंब।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, हरो सकल जग दंभ।।1।।

चाल-शेर

जय जय जिनेन्द्र धाम सर्व पाप हरंता।
जय जय जिनेन्द्र धाम श्रेष्ठ पुण्य भरंता।।
जय जय जिनेन्द्र बिंब रत्न मणिमयी बनें।
चेतन इन्हें नमें स्वयं चिन्मूर्ति परिणमें।।2।।

नक्षत्र के विमान पृथिवी काय धातु के।
एकेंद्रि जीव इनमें जन्म धारते मरते।।
इन जीव के उद्योत नाम कर्म उदय से।
ये बिंब नित्य चमकते हैं शीश किरण से।।3।।

इनके हैं चउ हजार देव विक्रिया करें।
सिंहादि रूप धार के वाहन बना करें।।
ये अल्प पुण्य से यहां नित क्लेश धारते।
सम्यक्त्व यदि मिले तो चित्त शांति पावते।।4।।

सम्यक्त्व की महिमा अचिन्त्य पार नहीं है।
सम्यक्त्व के बिना जगत की पार नहीं है।।

सम्यक्त्वरत्न शीघ्र मुक्ति प्राप्त करावे।
सम्यक्त्वरत्न आत्म सुधापूर पिलावे।।5।।

जो नित्य इन विमान के जिनगेह वंदते।
वे निज अनंत गुण से स्वयं को हि मंडते।।
वे मोह को यमराज को भि खंड खंडते।
बस तीन रत्न से हि स्वयं स्वात्म मंडते।।6।।

देवाधिदेव! आपकी मैं वंदना करूँ।
सम्यक्त्वरत्न ना छुटे ये प्रार्थना करूँ।।
बस बार बार इसी हेतु अर्चना करूॅं।
'सुज्ञानमती' पूर्ण करो याचना करूँ।।7।।

घत्ता

जय ज्योतिषि जिनगृह, हरत अशुभ ग्रह, नवग्रह सुरगण तुम पूजें।
जिन वंदत नव ग्रह, होते शुभ ग्रह, मिलता निजगृह जिन पूजें।।

ॐ ह्रीं असंख्यातग्रहविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-51

प्रकीर्णक तारका जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

एकेक शशि के प्रकीर्णक, तारे चमकते गगन में।
छ्यासठ सहस नौ सौ पचहत्तर कोटिकोटी अधर में।।
ये अर्ध गोलक सम इन्हों के, मध्य ऊँचे कूट हैं।
उन पर जिनेश्वर धाम पूजूँ, जैन प्रतिमा युक्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्त्रग्विणी छंद

स्वात्म का सम्यरस नाथ दीजे मुझे।
नीर से पाद मे तीन धारा करूँ।।
तारका बिंब की जैन प्रतिमा जजूँ।
स्वात्म चैतन्य चिन्मूर्ति पाऊँ अबे।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वात्मसौरभ मिले चित्त उसमें रमें।
गंध से आप के पाद चर्चन करूँ।।तारका.।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्ञान अक्षय बनें नाथ! कीजे कृपा।
शालि के पुंज से पूजहूँ भक्तिसे।।तारका.।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सौख्य पीयूष पीऊँ सुतृप्ती मिले।
पुष्प मंदार माला चढ़ाऊँ तुम्हें।।तारका.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

भूख व्याधी मिटादो प्रभो! मूल से।
मैं चढ़ाऊँ तुम्हें खीर लाडू अबे।।तारका.।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मोह अंधेर से आत्म निधि ना मिले।
आरती मैं करूँ ज्ञान ज्योती भरो।।तारका.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेऊं सुगंधी उड़े लोक में।
स्वात्मगुण गंध फैले प्रभो! शक्ति दो।।तारका.।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वात्मकी संपदा दीजिये हे प्रभो।
आम्र अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।।तारका.।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अर्घ अर्पण करूँ स्वात्मपद के लिये।
नाथ! पूरो हमारी सभी कामना।।तारका.।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक प्रकीर्णकतारकाविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में सुखशांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

ताराओं के बिंब में, जिनवर बिंब अनूप।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले निजातमरूप।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप में दो शशि के परिवार तारका जोड़ी।
इक लख तेतिस हजार नवसौ पचास कोड़ा कोड़ी।।
नभ में टिम टिम करते मेरु प्रदक्षिणा करते हैं।
इनमें सब जिनमंदिर पूजूँ ये भव दुःख हरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रपरिवारएकलक्षत्रयस्त्रिंशत्सहस्रनवशतपंचाशत्कोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दो लख सड़सठ हजार नव सौ कोड़ा कोड़ी तारे।
लवणोदधि के चार चंद्र के ये परिकर टिमकारें।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिचतुश्चन्द्रपरिवारद्विलक्ष सप्तषष्टिसहस्रनवशत्कोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धातकि खंड के बारह शशि के चमकें परिकर तारे।
आठ लाख त्रय सहस सात सौ कोड़ाकोड़ी सारे।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वादशचन्द्रपरिवारअष्टलक्षसहस्रसप्तशत्कोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कालोदधि में अट्ठाइस लख बारह हजार पुनरपि।
नव सौ पचास कोड़ा कोड़ी तारे चमकें नितप्रति।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिद्विचत्वारिंशत् शिपरिवारअष्टाविंशतिलक्षद्वादशसहस्रनवशत्पंचाशतकोटिकोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करार्ध में अड़तालिस लख बाइस हजार दो सौ।
कोड़ाकोड़ी तारे चमकें इनमें सुर हैं सुख सों।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थद्विसप्ततिचन्द्रपरिवारअष्टचत्वारिंशल्लक्षद्वाविंशति सहस्रद्विशतकोटि कोटिताराविमानस्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम से लेकर अंतिम द्वीपोदधि तक।
चंद्र असंख्य उनके परिकर तारे असंख्य चकमक।।
ये सब स्थिर रहें न चलते मंद प्रकाश करे हैं।
इनके संख्यातीत जिनालय पूजत पाप हरे हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपात्अंतिमस्वयंभूरमणसमुद्रपर्यंतअसंख्यातचन्द्रपरिवार संख्यातीततारा‍विमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेीयः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ध्रुवतारा जिनालय के अर्घ्यं

जंबूद्वीप में ध्रुव तारा है छत्तिस स्थिर नभ में।
अर्ध गोल सम इनमें अतिशय दिव्य कूट हैं मधि में।।
इन पर जिन मंदिर अकृत्रिम मणिमय रत्नमयी हैं।
उनमें जिन प्रतिमायें अनुपम पूजत सौख्य मही हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थषट्त्रिंशत्ध्रुवताराविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लवणोदधि में इक सौ उनतालिस ध्रुव तारे चकमें।
इन विमान के ठीक मध्य में तुंग कूट स्वर्णिम के।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिएकशतएकोनचत्वरिंशत्ध्रुवताराविमानस्थितजिनालय–जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धातकिखंड में इक हजार दश ध्रुवतारा नित चमकें।
ये विमान शाश्वत भू कायिक दिव्य कूट से दमकें।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थएकसहस्रध्रुवताराविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. तिलोयपण्णत्ति पृ. 760।

इकतालिस हजार एक सौ बीस कहे ध्रुव तारे।
कालोदधि में ये नित चकमें तुंगकूट से प्यारे।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिएकचत्वारिंशत्सहस्रएकशतविंशतिध्रुवताराविमानस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करार्ध में त्रेपन हजार दो सौ तीस सु तारे।
ये ध्रुवतारे इनके मधि में कूट दिव्य मनहारे।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थत्रिपंचाशत् सहस्रद्विशतत्रिंशत्ध्रुवताराविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभुछंद

अट्ठासी लाख चालिस हजार सात सौ कोड़ाकोड़ी[1] ये।
सब तारे मनुज लोक में हैं इस आगे संख्यातीत भये।।
पंचानवे सहस पाँच सौ पैंतिस ध्रुव तारे नरलोक में हैं।
इन सबके जिन मंदिर पूजूँ ये आत्मशुद्धि में कारण हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असख्यातताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति ज्योतिष गृह में जिन मंदिर, प्रति जिनगृह में जिनप्रतिमायें।
हैं इक सौ आठ-आठ मणिमय, शाश्वत प्रतिमायें मन भायें।।
प्रति प्रतिमा सन्निध द्रव्य मंगल हैं, आठ सु इकसौ आठ-आठ।
मंगल घट मुक्तामालादि, जिनप्रतिमा वंदत भरें ठाठ।।2।।

ॐ ह्रीं असख्यातताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयेषु विराजमानसंख्यातीत जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर देव तुमने, घातिकर्म विनाशिया।
जय जय जिनेश्वर देव तुमने, सर्व दोष विघातिया।।

जय जय जिनेश्वर देव तुमको, इंद्र शत मिल वंदते।
जय जय जिनेश्वर देव तुम, प्रतिमा मुनी भी वंदते।।1।।

ज्योतिष सुरों में तारका, सब से प्रथम आकाश में।
सबसे जघन्य विमान इनके, मील द्विशत पचास में।।
इनके सुवाहदेव दो हजार चउदिश में जुते।
ये बिंब मंद सुमंद किरणों, से उजेला कर सकें।।2।।

हैं गमन में शशि मंद उनसे, शीघ्रगामी सूर्य हैं।
ग्रह शीघ्रतर चलते उन्होंसे, शीघ्रतर नक्षत्र हैं।
इनमे अधिक भी शीघ्रतर, ये तारका गण विचरते।
नर लोक से आगे सभी, तारे गमन नहिं कर सकें।।3।।

इस प्रथम जम्बूद्वीप में दो, चंद्र परिकर तारका।
इस भरत में हैं सातसौ पण[1] कोड़ि कोड़ी तारका।।
हिमवत् पे चौदह सौ देश, तारे सु कोड़ा कोड़ि हैं।
ये क्षेत्र[2] पर्वत से द्विगुण, वीदेह तक फिर अर्ध हैं।।4।।

इन बिंब के मधि कूट पर, जिनगेह शाश्वत शोभते।
उनके चतुर्दिश महल में सब, देव देवी राजते।।
इन देव की उत्कृष्ट आयू, पाव पल्य सुख्यात है।
तनु तुंग सात धनुष कहा, विक्रिय तनू बहु भांति है।।5।।

ताराओं के जिनधाम में, जिनबिंब इकसौ आठ हैं।
विध आठ मंगलद्रव्य प्रत्येक इकसौ आठ हिं आठ हैं।।
बहु धूप घट मंगल घड़े, मालयों मोती स्वर्ण की।
चंदवा चंवर छत्रादि तोरण, ध्वज पताका शोभतीं।।6।।

वर धूप घट में अग्नि शाश्वत, जल रही जिन गेह में।
खेवें सुगंधित धूप सुरगण, धुआं फैले अभ्र में।।

1. पाँच, 2. आगे हैमवत क्षेत्र में दूने, इससे दूने महाहिमवान् पर, इससे दूने हरिक्षेत्र में, इससे दूने निषध पर, इससे दूने विदेह क्षेत्र में पुनः आगे पर्वत क्षेत्रों में आधे-आधे होते हुये ऐरावत क्षेत्र में 705 कोड़ाकोड़ी तारे हैं।

सब देव गण अति भक्ति से, जिन देव अर्चन कर रहे।
वीणा मृदंगी बांसुरी, संगीत नर्तन कर रहे।।7।।

ये देव पंच कल्याणक में, आते महात्म्य विलोकते।
देवर्द्धिदर्शन आदि से, मिथ्यात्व कर्म विलोपते[1]।।
सम्यक्त्वनिधि को पाय कर, संसार छोटा कर रहे।
जिन भक्ति में अति मग्न हो, जिन आत्म संपति भर रहे।।8।।

मिथ्या तपस्या आदि से, ज्योतिष सुरों में जन्म हो।
सम्यक्त्वनिधि को पायके, फिर श्रेष्ठ मानव जन्म हो।।
मुनि व्रत धरें शुचि तप करें, निर्वाण लक्ष्मी को वरें।
सम्यक्त्व रत्न महान यह, जिन भक्ति से अर्जन करें।।9।।

हे नाथ! आप प्रसाद से, सम्यक्त्व मेरा दृढ़ रहे।
जब तक नहीं हो मोक्ष तब तक, आपमें मन रमि रहे।।
प्रभु अंतक्षण तक आप का नाम स्मरण हो कंठ में।
बस 'ज्ञानमती' हो पूर्ण तबतक, रहूँ जिनवर पंथ में।।10।।

दोहा

ताराओं के जिन भवन, हैं असंख्य परिणाम।
नमूँ अनंतों बार मैं झुक झुक करूँ प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके असंख्यातताराविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

1. नष्ट करते हैं।

पूजा नं.-52

वैमानिक देव जिनालय पूजा

अथ स्थापन-शंभु छंद

ऊर्ध्वलोक में वैमानिक की चिमान संख्या मानी है।
चौरासि लाख सत्तानवे हजार तेइस मानी है।।
इन सब में एक एक जिन गृह शाश्वत मणिमय सुर वंदित हैं।
इन सब में इकसौ आठ-आठ जिन प्रतिमा पूजूँ शिवप्रद हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयो–विंशति जिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयो–विंशति जिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रया–`विंशति जिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-गीता छंद

हे नाथ! मेरी ज्ञान सरिता पूर्ण भर दीजे अबे।
इस हेतु जल से आप के पद कमल पूजूँ मैं अबे।।
वैमानिकों के जिन भवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्म गुण संपति मिले मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

नित्य आत्म में संपूर्ण शीतल सलिल धारा पूरिये।
तुम चरण युगल सरोज में चंदन चढ़ाऊँ इसलिये।।वैमा.।।2।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षय अखंडित सौख्य निधि भंडार भर दीजे प्रभो।
इस हेतु अक्षत पुंज से मैं पूजहूँ तुम पद विभा।।वैमा.।।3।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मुण अत्म गुण सौगंध्य सागर पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले पूजहूँ तुम पद विभो।।वैमा.।।4।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मेरी प्रभो! परिपूर्ण तृप्ती आत्मसुख पीयूष से।
कीजे अतः नैवेद्य से पूजूँ चरण युग भक्ति से।।वैमा.।।5।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं आरती रुचि से करूँ अज्ञान तम तुरतहि भगे।।वैमा.।।6।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

मुझ आत्म यश सौरभ गगन में व्याप्त कर दीजे प्रभो।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं कटु कर्म भस्म करो विभो।।वैमा.।।7।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

निज आत्म गुण संपत्ति को अब पूर्णभर दीजे प्रभो।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ आपके सन्निध विभो।।वैमा.।।8।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अनमोल गुण निज में अनंते किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ अर्पण करत ही सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।वैमा.।।9।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय तीर्थंकर जिनवर, जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो।
जय जय हित उपदेशी जिनवर, जय परम पिया परमेश्वर भो।।
तुम नाम मंत्र भी अतिशायी, तुम प्रतिमायें जन सुखदायी।
जय उर्ध्व लोके जिन मंदिर, जिन प्रतिमायें मुनि मन भायीं।।1।।

वैमानिक के कल्पोपपन्न, अरु कल्पातीत भेद दो हैं।
कल्पोपपन्न के बारह विध, बारह ही इंद्र प्रतीन्द्र कहे।।
सौधर्म कल्प ऐशान तथा, सान्त्कुमार माहेन्द्र कल्प।
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर का पंचम वा लांवत कापिष्ठ का छठा कल्प।।2।।

सातवां कल्प शुक्र महाशुक्र, अष्टम शतार सहस्रार कल्प।
आनत प्राणत आरण अच्युत, इन चार स्वर्ग के चार कल्प।।
बारह कल्पों के द्विदश इंद्र, द्वादश प्रतीन्द्र जिन भक्त कहें।
सौधर्म इंद्र सबमें प्रधान, जिन पंच कल्याणक में रत है।।3।।

प्रत्येक इंद्र के सामानिक, त्रायस्त्रिंश लोकपाल होते।
तनु रक्ष पारिषद अरु अनीक, प्राकीर्णक आभियोग्य होते।।

किल्विषक देव सब असंख्यात, परिवार देव माने जाते।
निजनिज इंद्रों की आज्ञा से, सब वैभव सहित चले आते।।4।।

सत्ताइस कोटि अप्सरियां, ऐरावत गज पर नृत्य करें।
जब सौधर्मेंद्र विभव लेकर, चलते विस्मय सब विश्व करे।
कल्पातीतों में ग्रैवेयक, नव नव अनुदिश पंचानुत्तर।
कल्पातीतों में ग्रैवेयक, नहिं देवी हैं नहिं सुर परिकर।।5।।

जो समकित सहित पुण्य करते, इन इंद्रों का वैभव पाते।
नंदीश्वर मेरु जिनालय के, वंदन करते अतिहरषाते।।
जिनवर के पंचकल्याणक में, अतिशायी पुण्य कमाते हैं।
तीर्थंकर की भक्ती करके, इक भव ले शिव पद पाते हैं।।6।।

दक्षिण के इंद्र इंद्राणी को, मिलता है यह सौभाग्य अहो।
जो जिन भक्ती में दृढ़ रहते, वे पा लेते निजराज्य अहो।।
जो जिनमुद्रा धारण करके, दृढ़तर चारित्र पालते हैं।
सोलह स्वर्गों के ऊपर में बस वो ही जनम धारते हैं।।7।।

ये मध्य लोक में नहिं आते, वाहिं से जिनवंदन करते हैं।
निज के गृह जिन चैत्यालय की, पूजा कर आनंद भरते हैं।।
बहुगीत नृत्य संगीत करें, जिन गुण कीर्ति को गा गाके।
निज आत्म तत्त्व से प्रीति करें, जिनसम निज को भी ध्या ध्याके।।8।।

सौधर्म स्वर्ग में दो सागर, कुछ अधिक आयु उत्कृष्ट रहे।
सर्वार्थसिद्धि में तेतिस ही, सागर आयू जिनराज कहें।।
सौधर्म स्वर्ग में सात हाथ, ऊँचे तनु धारक देव कहे।
सर्वार्थसिद्धि में एक हाथ, तनु के ही सुंदर देव कहें।।9।।

सब इंद्र देव निज औपपाद, शय्या से जनम ग्रहण करते।
घंटा ध्वनि आदिक से उठकर, क्षण में हि अवधिज्ञानी बनते।।
स्नान आदि से हो पवित्र, जिन मंदिर में पहले जाते।
नाना स्तुति भक्ति वंदन करते जिनवर को शिर नाते।।10।।

क्षीरोदधि के[1] जल से पूरित, इक सहस आठ सुवरण कलशे।
पंकज से ढके इन्हों सु सुर, जिनबिंबों का सुन्हवन करते।।
मर्दल घंटा दुंदुभि वीणा, बहुविध वाद्यों की उच्च ध्वनी।
संगीत गीत नर्तन करते, जिनवर गुण गाते मधुर ध्वनी।।11।।

भृंगार कलश दर्पण चामर, त्रय छत्र आदि बहु द्रव्यों को।
अर्पण करते अठ मंगलमय शुभ द्रव्य विविध तोरण ध्वज को।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, दीपक वरधूप सरस फल से।
जिन पूजा करते हर्ष भरे, अतिशायी भक्ति करें रुचि से।।12।।

मैं भी जिन मंदिर को पूजूँ, वंदूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
जिन प्रतिमाओं के चरणों में, मैं बारंबार प्रणाम करूँ।।
प्रभु ऐसी शक्ति दो मुझ को, जिन आत्म सुधारसपान करूँ।
निज में निज 'ज्ञानमती' ज्योती पाकर निज में विश्राम करूँ।।13।।

दोहा

जय जय जय श्री जिनभवन, जिन प्रतिमा मुनिवंद्य।
कोटि कोटि वंदन करूँ, पाऊँ परमानंद।।14।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयो विंशतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-53

सौधर्म ऐशान जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

सौधर्म अरु ऐशान में सब साठ लाख विमान हैं।
सबमें जिनेश्वर धाम अनुपम सासते अभिराम हैं।।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ आठ-आठ विराजते।
पूजूँ यहाँ आह्वान कर ये स्वात्मसिद्धि करावते।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चाल-नन्दीश्वर पूजा

जिन पद में धारा हेतु, शीतल नीर भरूँ।
निज आतम पावन हेतु, जल से धार करूँ।।
शाश्वत श्रीजिनवर धाम, जिनवर बिंब सही।
मैं पूजूँ विश्व ललाम, पाऊँ मोक्ष मही।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनपद में चन्दन हेतु, गंध सुगंध लिया।
निज आतम अनुभव हेतु, आप चढ़ाय दिया।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

तंदुल मोतीसम श्वेत, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज गुण अखंड के हेतु, भक्ति बढ़ाऊँ मैं।।शाश्वत.।।3।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु चरण कमल सुख कंद, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
निज में ही परमानंद, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा तृषा से दूर, खीर चढ़ाऊँ मैं।
प्रभु मिले साम्यरस पूर, भूख नशाऊँ मैं।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु लोकालाक विलोक, ज्ञान प्रकाश भरे।
मैं पाऊँ निज आलोक, दीप प्रजाल करें।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु गुण अनंत की गंध, फैली त्रिभुवन में।
मिल जावे आत्म सुगंध, धूप सु खेऊँ मैं।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

मैं गया बहुत के पास, बहुफल आश लिये।
अब पूरो शिव फल आश, सुफल चढ़ाय दिये।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अर्घ चढ़ाऊँ आज, फल अनमोल मिले।
मिल जावे निज साम्राज्य, मन की कली खिले।।शाश्वत.।।9।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानकल्पयुगलषष्टिलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

इंद्रक श्रेणीबद्ध, तथा प्रकीर्ण विमान हैं।
सब में जिनवर सद्म, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

'ऋतु' नामक है पहला इंद्रक, इसके चारों दिश में।
बासठ बासठ विमान श्रेणीबद्ध नाम प्रति दिश में।।
पहला इद्रंक पैंतालिस लख योजन विस्तृत सुंदर।
श्रेणीबद्ध असंख्ये योजन पूजूँ जिन गृह सुंदर।।1।।

ॐ ह्रीं ऋतुइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्द्वाषष्टिद्वाषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'विमल' नाम इंद्रक विमान के चारों दिश में गिनिये।
इकसठ इकसठ विमान श्रेणीबद्ध नाम से भणिये।।
इन सबमें जिनमंदिर शाश्वत रत्नमयी जिन प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से पाऊँ सौख्य अनुपमा।।2।।

ॐ ह्रीं विमलनामइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक् एकषष्टिएकषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'चंद्र' विमान चतुर्दिश श्रेणीबद्ध विमाना।
साठ साठ ये शाश्वत सुंदर असंख्य योजन माना।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं चंद्रनामइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्षष्टिषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'वल्गु' विमान चतुर्दिश श्रेणीबद्ध बने हैं।
उनसठ उनसठ चारों दिशमें असंख्य योजन में हैं।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं वल्गुइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकोनषष्टिएकोनषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'वीर' नाम के चहुंदिश श्रेणीबद्ध विमाना।
अट्ठावन अट्ठावन मानें असंख्य योजन माना।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं वीरइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्अष्टपंचाशत्अष्टपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'अरुण' विमान चतुर्दिक, श्रेणीबद्ध बने हैं।
सत्तवन-सत्तावन शाश्वत उनमें देव घने हैं।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं अरुणइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्सप्तपंचाशत्सप्तपंचाशत्श्रेणीबद्धविमान-स्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'नंदन' इंद्रक उसके चारों दिश में श्रेणीबद्धा।
छप्पन छप्पन विमान शोभें देव रहे उन मध्या।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं नंदकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्षट्पंचाशत्षट्पंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'नलिन' विमान स्वर्ग में इक इक के ऊपर ये।
श्रेणीबद्ध कहें चहुँदिश में पचपन पचपन हैं ये।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं नलिनइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्पंचपंचाशत्पंचपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'कंचन' इंद्रक अतिशय सुंदर, इसके चारों दिश में।
चौवन चौवन विमान श्रेणीबद्ध कहें स्वर्गन में।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं कंचनइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्चतुःपंचाशत्चतुःपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'रोहित' सुरमन हारी, इसके चारों दिश में।
त्रेपन त्रेपन श्रेणी बद्धे, विमान सोहें दिव में।।इन.।।10।।

ॐ ह्रीं रोहितइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रिपंचाशत्त्रिपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'चंचत्' इंद्रक अतिशय सुंदर, इसके चारों दिश में।
बावन बावन श्रेणी बद्धे, विमान सोहें दिव में।।
इन सबमें जिनमंदिर शाश्वत रत्नमयी जिन प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से पाऊँ सौख्य अनुपमा।।11।।

ॐ ह्रीं चंचत्इंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्द्विपंचाशत्द्विपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'मरुत्' मणीमय शाश्वत, इसके चारों दिश में।
इक्यावन इक्यावन सोहें देव विमान अधर में।।इन.।।12।।

ॐ ह्रीं मरुत्इंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकपंचाशत्एकपंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक है 'ऋद्धीश' अकृत्रिम, इसके चारों दिश में।
सुरविमान पच्चास पचासहिं श्रेणी बद्ध अधर में।।इन.।।13।।

ॐ ह्रीं ऋद्धीशइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्पंचाशत्पंचाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर इंद्रकं 'वैडूर्य' रत्नमय, शाश्वत के चहुँदिश में।
श्रेणी बद्ध रहें उनचासे, उनचासहिं स्वर्गों में।।इन.।।14।।

ॐ ह्रीं वैडूर्यइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकोनपंचाशत्एकोनपंचाशत्श्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'रुचक' रुचे सुरगण को, इसके चारों दिश में।
अड़तालिस अड़तालिस श्रेणी बद्ध विमान अधर में।।इन.।।15।।

ॐ ह्रीं रुचकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्अष्टचत्वारिंशत्अष्टचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'रुचिर' रुचे इंद्रों को, इसके चारों दिश में।
सैतालिस सैंतालिस सुंदर श्रेणी बद्ध गगन में।।इन.।।16।।

ॐ ह्रीं रुचिरइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्सप्तचत्वारिंशत्सप्तचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गीता छंद

है 'अंक' इंद्रक मध्य में, इसके चतुर्दिश शोभते।
छ्यालीस छ्यालीस श्रेणी बद्ध, विमान दिव मन मोहते।।
इनमें जिनेश्वर धाम शाश्वत, इंद्र मिल पूजा करें।
गणधर गुरु भी वंदते, हम भक्ति से पूजा करें।।17।।

ॐ ह्रीं अंकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्षट्चत्वारिंशत्षट्चत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'स्फटिक' इंद्रक रत्नमय, इसके चतुर्दिश अधर में।
पैंतालिसे पैंतालिसे, सुविमान श्रेणी बद्ध में।।इन.।।18।।

ॐ ह्रीं स्फटिकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्पंचचत्वारिंशत्पंचचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तपनीय इंद्रक अकृत्रिम, इसके चतुर्दिश स्वर्ग में।
चौवालिसे चौवालिसे, सुविमान श्रेणी बद्ध में।।इन.।।19।।

ॐ ह्रीं तपनीयइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्चतुश्चत्वारिंशत् चतुश्चत्वारिंशत्श्रेणी बद्धविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'मेघ' इंद्रक रम्य है, इसके चतुर्दिश स्वर्ग में।
तेतालिसे तेतालिसे, सुविमान श्रेणी बद्ध में।।इन.।।20।।

ॐ ह्रीं मेघइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रिचत्वारिंशत्त्रिचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक सु 'अभ्र' विमान शाश्वत, स्वर्ग में सुरगण रहें।
ब्यालीस ब्यालिस श्रेणीबद्धे, चार दिश में दिख रहें।।इन.।।21।।

ॐ ह्रीं अभ्रइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्द्विचत्वारिंशत्द्विचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'हारिद्र' इंद्रक रत्नमय के, चार दिश में शोभते।
इकतालिसे इकतालिसे, सुविमान सुरमन मोहते।।इन.।।22।।

ॐ ह्रीं हारिद्रइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकचत्वारिंशत्एकचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक अकृत्रिम 'पद्ममाल', विमान के चारों दिशी।
चालीस चालिस श्रेणीबद्धे, शोभते दिन अरु निशी।
इनमें जिनेश्वर धाम शाश्वत, इंद्र मिल पूजा करें।
गणधर गुरु भी वंदते, हम भक्ति से पूजा करें।।17।।

ॐ ह्रीं पद्ममालइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्चत्वारिंशत्चत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'लोहित' सु इंद्रक अकृत्रिम के, चार दिश सुरगण बसें।
उनचालिसे उनचालिसे, सुविमान श्रेणी से लसें।।इन.।।24।।

ॐ ह्रीं लोहितइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकोनचत्वारिंशत्एकोन चत्वारिंशत्श्रेणी बद्धविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'वज्र' इंद्रक रत्नमय के, चार दिश सुविमान हैं।
अड़तीस अड़तीस श्रेणीबद्धों, में सुरों के थान हैं।।इन.।।25।।

ॐ ह्रीं वज्रइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्अष्टत्रिंशत्अष्टत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक सु 'नंद्यावर्त' में, इंद्रादिगण्सा के वास हैं।
सैंतीस सैंतीस श्रेणीबद्ध, विमान देव निवास हैं।।इन.।।26।।

ॐ ह्रीं नंद्यावर्तइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्सप्तत्रिंशत्सप्तत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'प्रभंकर' अकृत्रिम के, चार दिश सुविमान हैं।
छत्तीस छत्तीस श्रेणी बद्ध सुरेन्द्र गण के थान हैं।।इन.।।27।।

ॐ ह्रीं प्रभंकरइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्षट्त्रिंशत्षट्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'पृष्टक' सु इंद्रक रत्नमय के, चार दिश सुरगण बसें।
पैंतीस पैंतिस श्रेणिबद्ध, विमान इनके शुभ लसें।।इन.।।28।।

ॐ ह्रीं पृष्टकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्पंचत्रिंशत्पंचत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'गज' नाम इंद्रक सासता के, चार दिश सुविमान हैं।
चौतींस चौतिंस श्रेणीबद्ध, सुदेव देवी स्थान हैं।।इन.।।29।।

ॐ ह्रीं गजइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्चतुस्त्रिंशत्चतुस्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वर 'मित्र' इंद्रक मध्य में, इस चार दिश सुविमान हैं।
तेतीस तेतिस श्रेणिबद्ध, असंख्य योजन मान हैं।।इन.।।30।।

ॐ ह्रीं मित्रइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रयस्त्रिंशत्त्रयस्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'प्रभ' नाम इंद्रक मध्य में, इस चार दिश सुविमान हैं।
बत्तीस बत्तिस श्रेणी बद्ध, असंख्य योजन मान हैं।।
दक्षिणदिशी अट्ठारहवें में, सौधर्म इंद्र निवास हैं।
उत्तरदिशी अट्ठारवें में, ईशान इंद्र निवास है।।

दोहा

इंद्रक श्रेणीबद्ध में, इंद्रों के सुविमान।
इनमें जिनवर धाम को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।31।।

ॐ ह्रीं प्रभनामकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्द्वात्रिंशत्द्वात्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णकविमान चैत्यालय अर्घ्य-शंभु छंद

इकतिस लख पंचानवे हजार, पाँच सौ अट्ठानवे कहें।
सौधर्म कल्प में ये विमान, प्रकीर्णक नाम प्रसिद्ध गहें।।
इनमें छहलख चालीस सहस संख्याते योजन प्रमाण के।
बाकी के असंख्यात योजन, सबमें जिन गृह वंदूँ रुचि से।।33।।

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्गसंबंधिएकत्रिंशत्लक्षपंचनवतिसहस्रपंचशतअष्टनवतिप्रमाण प्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सत्ताइस लाख अट्ठानवे हजार, पाँच सौ तेतालिस माने।
ईशान स्वर्ग में ये विमान, सु प्रकीर्णक से जाते जाने।।
ये पाँचलाख अरु साठ सहस, संख्यात योजने विस्तृत हैं।
बाकी के असंख्यात योजन, सब में जिनगृह को वंदन है।।34।।

ॐ ह्रीं ईशानस्वर्गसंबंधिसप्तविंशतिलक्षअष्टनवतिसहस्रपंचशतत्रिचत्वारिंशत्–प्रमाण प्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सौधर्म इंद्र के भवन अग्र, न्यग्रोध वृक्ष अतिशय ऊँचे।
ये पृथिवीकायिक रत्नमयी, हैं चैत्य वृक्ष अतिशय शोभें।।
इन वृक्ष मूल में चारों दिश, जिन प्रतिमा एक एक सोहें।
गणधर मुनिगण भी नित वंदे, मैं पूजूँ ये सुरमन मोहें।।35।।

ॐ ह्रीं सौधर्मइंद्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ईशान इंद्र के भवन अग्र, न्यग्रोध चैत्यतरु शोभ रहा।
मरकतमकणिमय पत्ते सुंदर कोंपल फूलों से शोभ रहा।।
इस मूल भाग में चारों दिश, जिन प्रतिमायें पद्मासन हैं।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, ये आत्म कमल विकसावन हैं।।36।

ॐ ह्रीं ईशानइंद्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अट्ठारवें श्रेणी विमान में, सौधर्म इंद्र का नगर बना।
चौरासी हजार योजन यह, पण वेदी से चहुँओर घना।
अतिदूर दिशाक्रम से अशोक, सप्तच्छद चंपक आम्र वनी।
चारों में चैत्य वृक्ष सुंदर जिनप्रतिमा पूजूँ भक्ति घनी।।37।।

ॐ ह्रीं सौधर्मइंद्रनगरसंबंधिचतुर्दिकचतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविराजमान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इकतीसवें इंद्रक के उत्तर, श्रेणी अठारवें विमान में।
ईशान इंद्र का नगर सु अस्सी, हजार योजन है उसमें।।
चौतरफी पाँच वेदियाँ हैं, अतिदूर चार दिशि चउ वन हैं।
इनके शुभ चार चैत्यद्रुम में, जिन प्रतिमायें सुर वंदित हैं।।38।।

ॐ ह्रीं ईशनइंद्रनगरसंबंधिचतुर्दिकचतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविराजमान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

सौधर्म इंद्र के ऋतु आदिक, इकतीसों इंद्रक विमान हैं।
पूरब पश्चिम दक्षिण दिश के, सब श्रेणीबद्ध इन्हीं के हैं।।

नैऋत्य अग्नि दिश प्रकीर्ण के, ये सब सौधर्म इंद के हैं।
ये इकतिस लख पंचानवे सहस पाँच सौ अट्ठानवे कहें।।

दोहा

चार हजार व तीन सौ इकहत्तर परिणाम।
श्रेणीबद्ध कहे नमूँ, जिनगृह सबके मान्य।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्मकल्पस्थितएकत्रिंशत् इन्द्रकविमानचतुःसहस्रत्रिशतएकसप्ततिश्रेणी बद्धविमानएकत्रिंशल्लक्षपंचनवतिसहस्रपंचशतअष्टनवतिप्रकीर्णकविमानस्थित सर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिश के सब श्रेणिबद्ध, वायव्य ईशान के प्राकीर्णक।
चौदह सौ सत्तावन श्रेणी के, विमान पुनरपि प्राकीर्णक।।
सत्ताइस लख अट्ठानवे हजार पाँचसौ तेतालिस।
ये सब ईशान इंद्र के हैं, इन सबके जिनगृह वंदूँ नित।।

दोहा

ये ईशान सुइंद्र के, श्रेणी बद्ध प्रकीर्ण।
इनके जिनगृह नित नमूँ, करूँ सर्व दुख क्षीण।।2।।

ॐ ह्रीं ईशानकल्पस्थितचतुर्दशशतसप्तपंचशतश्रेणीबद्धविमानसप्तविंशतिलक्ष अष्टनवतिसहस्रपंचशतत्रिचत्वारिंशत्तिप्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सौधर्मैशान के जिन मंदिर, शाश्वत मणिरत्नों से निर्मित।
जिन प्रतिमा इकसौ आठ-आठ, अकृत्रिम मणि रत्नों निर्मित।।
चौंसठ करोड़ अस्सी सुलक्ष, जिन प्रतिमाओं को नित वंदूँ।
निज आतम अनुभव प्राप्त हेतु, शत शत वंदूँ शत शत वंदूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानयुगलस्वर्गस्थितषष्टिलक्षविमानसंबंधिप्रतिजिनालयविराजमान चतुःषष्टिकोटिअशीतिलक्षजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय सौधर्म स्वर्ग के सब, जिनमंदिर बत्तिस लाख नमूँ।
जय जय ऐशान स्वर्ग के सब, जिनगृह अट्ठाइस लाख नमूँ।।
जय जय शाश्वत जिनप्रतिमायें, जय चैत्य वृक्ष जिन प्रतिमायें।
जय जय मानस्तंभों की प्रतिमा, जय जय जिनवर की प्रतिमायें।।1।।

सौधर्म इंद्र ईशान इंद्र, इनके एकेक प्रतीन्द्र कहें।
चौरासी सहस सौधर्म सुरेश्वर के सामानिक देव रहें।।
तेतिस ही त्रायस्त्रिंशदेव, हैं लोकपाल बस चार कहें।
त्रयलाख सुछत्तिससहस आत्मरक्षक सुरपति का विभव कहें।।2।।

बारह चौदह सोलह हजार, क्रम से त्रय पारिषद सुर हैं।
सब सात कोटि छ्यालिस लाख छीयत्तर सहस अनीक सुर हैं।।
प्राकीर्णक आभियोग्य किल्विषका देव असंख्य बताये हैं।
इक लाख साठ हज्जार देवियाँ, विक्रिय बहुत बनाये हैं।।3।।

सत्ताइस कोटि देवियाँ हैं, कोई आचार्य बताते हैं।
सह सम्यक्तप का ही फल है, ऐसा जिन आगम गाते हैं।।
मुख्या देवी हैं आठ शची, पद्मा व शिवा श्यामा नामा।
कालिंदी सुलसा तथा अंजुका, भानु देवि से शुभ नामा।।4।।

सौधर्म इंद्र की वर आयु, दो सागर के कुछ अधिक रहे।
इंद्राणी की है पाँच पल्य, शचि इक भव धर के मोक्ष लहे।।
इक सुरपति की चालीस नील, परिमाण शची शिव पा लेतीं।
तब इंद्र मनुज हो शिव पावे, यह आयु सागरोपम सेती।।5।।

है ऊर्ध्व लोक सात राजू, सौधर्म ईशान डेढ़ राजू।
बस एक लाख चालिस योजन, यह मध्यलोक सो[1] कम राजू।।
मेरु पर्वत से बाल मात्र का, अंतर ऋजु विमान में है।
यह मध्यलोक की ऊँचाई, इस ऊर्ध्व लोक से ही ली है।।6।।

ये सब विमान हैं पाँच वर्ण, घन उदकं के आधर रहें।
सौधर्म इंद्र का मुकुट चिन्ह, वाराह[2] ईशान का हरिण कहें।।
सौधर्म इंद्र का आभियोग्य, बालक सुर ऐरावत बनता।
जिन जन्म ज्ञान कल्याणक में, सुरपति उसपे चढ़कर चलता।।7।।

यह एक[1] लाख योजन विस्तृत, इसके बत्तिस मुख होते हैं।
ये दिव्य रत्नमालाओं से, किंकिणि से रुन झुन करते हैं।।
एकेक मुखों के चार दांत, उनपर जल भरे सरोवर हैं।
एकेक सरों में कमलवनी, विकसित कमलों से शोभें हैं।।8।।

एकक कमल खंड में बत्तिस बत्तिस महाकमल खिले शोभें।
इक इक योजन के महाकमल, ये कनकमयी सुरभित शोभें।।
एकेक कमल पर एक एक, शुभ नाटकशालायें सुंदर।
एकेक नाट्यशाला में बत्तिस अप्सरियां नाचें सुंदर[2]।।9।।

सौधर्म इंद्र का यह वैभव, कुछ कम ईशान इंद्र का है।
इन देव देवि का उपपादिक, शय्या से जन्म सु होता है।।
छह लाख प्रथम दिव में विमान, ईशान स्वर्ग में चार लाख।
इनमें केलव देवी जन्में[3], ऊपर ले जाते देव आप।।10।।

बाकी के यहाँ विमानों सब, देव देवियां भी जन्में।
ये अंतर्मुहूर्त में ही तनु, सोलह वर्षीय लहें उनमें।।
वहाँ जन्मत ही घंटा बजते, सब परिकर देव चले आते।
जय जय कोलाहल ध्वनि करते, आनंद महोत्सव करवाते।।11।।

ये इंद्र जन्मते ही अवधी, पाते द्रह में स्नान करें।
तत्क्षण ही मंगल वस्त्र पहिन, जिनमंदिर आते भक्ति भरे।।
सम्यग्दृष्टि अतिशय भक्ती, करके क्षीरोदधि जल लाते।
वर एक हजार आठ कलशों से, जिन का न्हवन करें गाते।।12।।

1. यह चार कोश वाले लघु योजन से ही है। ति. पृष्ठ 810।
2. तिलोयपण्णत्ति, पृ. 810।
3. सानत्कुमार आदि ऊपर के चौदह स्वर्गों की देवियाँ यहीं दो स्वर्गों में जन्म लेती हैं ऊपर के इन्द्र व देव आकर ले जाते हैं।

जो कोई मिथ्यादृष्टि देव, वे भी जिनदर्शन करते हैं।
'कुलदेव' मान कर भक्ति करे, जिनवर चरणों में नमते हैं।।
सौधर्म इंद्र सम त्रिभुवन में, नहिं जिनभक्ती कोई कर सकते।
तीर्थंकर प्रभु का किंकर यह, प्रभु आज्ञा को नित शिर धरते।।13।।

जिन भक्ती गंगा महानदी, सब कर्म मलों को धो देती।
मुनिगण का मन पवित्र करके, तत्क्षण शिव सुख भी दे देती।।
सुर नर के लिये काम धेनु, सब इच्छित फल को फलती है।
मेरे भी 'ज्ञानमती' सुख को, पूरण में समरथ बनती है।।14।।

दोहा

जय जय जय जिनवर भवन, जय जय जय जिनरूप।
नमूँ अनंतों बार मैं, मिले चिदानंदरूप।।

ॐ ह्रीं सौधर्मैशानस्वर्गसंबंधिषष्टिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-54

सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्ग जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

सानत्कुमार दिव में बारह लाख जिनालय शोभें।
दिव माहेन्द्र कल्प में जिनगृह आठ लाख मन लोभें।।
ये सब शाश्वत रत्नमयी हैं पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
आह्वानन स्थापन करके नमूँ नमूँ रुचि लाके।।1।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-वसंततिलका छंद

संपूर्ण पाप मल क्षालन हेतु पूजूँ।
धारा करूँ चरण में जल शुद्ध लेके।।
जैनेन्द्र धाम जिन बिंब जजूँ रुची से।
पाऊँ अनंत सुख संपति स्वात्म की मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

संसार दाह मन को तनु को तपावे।
पादाब्ज गंध चरचूँ सब दाह जावे।।जैनेन्द्र.।।2।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षय अनंत सुख हेतु जजूँ प्रभू को।
अक्षत सुपुंज रचना करके रिझाऊँ।।जैनेन्द्र.।।3।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

सौभाग्य पुण्य सुख हेतु जजूँ प्रभू को।
नाना सुगंध वर पुष्प चढ़ाय देऊँ।।जैनेन्द्र.।।4।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मेटो प्रभो उदर रोग समस्त मेरे।
क्षीरान्न मोदक चरू बहुते चढ़ाऊँ।।जैनेन्द्र.।।5।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मोहांधकार हरने हित दीप लेके।
मैं आरती करत हूँ प्रभु भारती दो।।जैनेन्द्र.।।6।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सुअग्नि घट में।
हे नाथ! कर्म मुझ भस्म करो तुरंते।।जैनेन्द्र.।।7।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर सेव अखरोट बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें फल मिले शिव आश ये ही।।जैनेन्द्र.।।8।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीरादि अर्घ भरके प्रभु गीत गाके।
सम्यक्त्व रत्न वर हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।जैनेन्द्र.।।9।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयुगलमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनलायजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

सानत्कुमार युग्म, जिन मंदिर को पूजहूँ।
पुष्पांजलि पद पद्म, अर्पण करके भक्ति से।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

'अंजन' इंद्रक विमान तेइस लाख सुयोजन विस्तृत।
इकतिस इकतिस विमान श्रेणीबद्ध बने हैं चतुँदिश।।
इनमें शाश्वत जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा से शोभें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर इत मैं इंद्रों के मन लोभें।।1।।

ॐ ह्रीं अंजनइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकत्रिंशत्एत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक है 'वनमाल' रत्नमय देव देवियों से युत।
तीस तीस श्रेणीबद्ध हैं विमान इसके चउदिक्।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं वनमालइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रिंशत्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'नाग' विमान मध्य में उसके चारों दिश में।
श्रेणीबद्ध विमान सुउनतिस उनतिस शोभें दिव में।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं नागइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकोनत्रिंशत्एकोनत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'गरुड़' विमान अकृत्रिम इसके चारों दिश में।
अट्ठाइस अट्ठाइस श्रेणीबद्ध विमान स्वरग में।।
इनमें शाश्वत जिनमंदिर हैं जिन प्रतिमा से शोभें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर इत मैं इंद्रों के मन लोभें।।4।।

ॐ ह्रीं गरुड़इन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्अष्टाविंशतिअष्टाविंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'लांगल' इंद्रक के चारों दिश श्रेणीबद्ध विमाना।
सत्ताइस सत्ताइस इनमें देवमहल अभिरामा।।इन.।।5।।

ॐ ह्रीं लांगलइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्सप्तविंशतिसप्तविंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक है, 'बलभद्र' मध्य में इसके चारों दिश में।
छब्बिस छब्बिस श्रेणीबद्धे विमान शोभें दिव में।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं बलभद्रइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्षट्कविंशतिषट्विंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'चक्र' नाम इंद्र के चहुंदिश पच्चिस पच्चिस सोहें।
दक्षिण में सोहलवें श्रेणीबद्ध में इंद्र तृतिय हैं।।
उत्तर दिश सोहलवें में माहेन्द्र इंद्र रहते हैं।
इन सबके जिनमंदिर पूजूँ ये भव दुख हरते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चक्रइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् पंचविंशतिपंचविंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक विमान चैत्यालय अर्घ

ग्यारह लाख निन्यानवे हजार चार सौ पांच गिनीजे।
सानत्कुमार सुरपति के प्राकीर्ण विमान लखीजै।।
नव लख उनसठ हजार चउ सौ बाहर विमान मानो।
असंख्यात योजन के बाकी संख्या योजन मानो।।

दोहा

इन सबमें जिनवर भवन, शाश्वत सौख्य निधान।
पूजूँ मन वच काय से, मिले स्वपर विज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारस्वर्गसंबंधिएकादशलक्षनवनवतिसहस्रचतुःशतपंचप्रमाण प्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सात लाख निन्यानवे हजार आठ शतक चउ गिनिये।
इनमें छह लख उनतालिस हज्जार आठ सौ चउ ये।।
असंख्यात योजन के माने बाकी संख्ये योजन।
इंद्र महेन्द्र के सु प्रकीर्णक सबके जिनगृह प्रणमन।।9।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रस्वर्गसंबंधिसप्तलक्षनवनवतिसहस्रचतुःशतपंचप्रमाण प्रकीर्णक विमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सानत्कुमार गृह के आगे तरु न्यग्रोध सुहाने।
चैत्यवृक्ष ये इनके चहुंदिश जिन प्रतिमा दुख हाने।।
प्रातिहार्य से शोभित प्रतिमा गणधर मुनिगण वंदित।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर सुख पाऊँ अभिनंदित।।10।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिक्चतुर्जिन प्रतिमाभ्यःअर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सुरपति माहेन्द्र प्रासादे आगे तरु न्यग्रोधा।
चैत्य वृक्ष ये इसके चहुंदिश जिनप्रतिमा की शोभा।।प्राति.।।11।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रइन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिक्चतुर्जिन प्रतिमाभ्यःअर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सहस बहत्तर योजन विस्तृत सनत्कुमार नगर हैं।
पाँच वेदियां चारों तरफ नंतर सुंदर वन हैं।।
अशोक सप्तच्छद चंपक अरु आम्र वनी के बीचे।
चार चैत्य तरु की जिन प्रतिमा पूजत ही सुख नीके।।12।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारइन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक्चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग विराजमानचतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चक्रेंद्रक के सोलहवें श्रेणी सुबद्ध के बीचे।
सत्तर हजार योजन विस्तृत इंद्र नगर अति दीपे।।

इस माहेन्द्र नगर के बाहर पांच वेदि के नंतर।
चारों वन में चैत्यवृक्ष चउ जजूँ बिंब श्री जिनवर।।13।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रइन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक्चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग विराजमान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

अंजन आदिक सात इंद्रक पूर्वापर दक्षिण श्रेणी के।
नैऋत आग्नेय प्रकीर्णक ये सानत्कुमार सुरपति के।।
सब बारह लाख विमान इन्हीं में जिनमंदिर शाश्वत सोहें।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ा करके ये इंद्रों का भी मन मोहें।।1।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारस्वर्गस्थितसप्तइन्द्रविमानपंचशतअष्टाशीतिश्रेणीबद्धविमान–एका दशलक्षनवनवतिसहस्रचतुःशतपंचप्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चक्रेंद्रक की उत्तर श्रेणी वायव्य इशान प्रकीर्णक सब।
ये आठ लाख शाश्वत विमान माहेन्द्र इंद्र के हैं आश्रित।।
इन सबमें जिनमंदिर शाश्वत मणिरत्न विनिर्मित शोभ रहें।
जो पूजें भक्ति भाव से नित वे सब मनवाछिंत सिद्धि लहें।।2।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रस्वर्गस्थितएकशतषण्णवतिश्रेणीबद्धविमानसप्तलक्षनवनवतिसहस्र अष्टशतचतुःप्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन बीस लाख जिन भवनों में जिन प्रतिमा इक सौ आठ-आठ।
इक्कीस कोटि अरु साठ लाख जिनप्रतिमा वंदूँ नाय माथ।।
सब जिन प्रतिमा के सन्मुख में सब मंगल द्रव्य आठ विध हैं।
सब इक सौ आठ-आठ सौ हैं ये भक्तों को मंगलप्रद हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रयुगलस्वर्गस्थितविंशतिलक्षविमानसंबंधि प्रतिजिनालय विराजमानएकविंशतिकोटिषष्टिलक्षजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

जय जय जिनेन्द्र देव सर्व विघ्न के हंता।
जय जय जिनेन्द्र देव मुक्ति नारि के कंता।।
जय जय जिनेन्द्र मूर्तियाँ पारसमणी कहीं।
भव्यों को स्वर्ण ही तो क्या पारस बना रहीं।।1।।

सानत्कुमार इंद्र व माहेन्द्र इंद्र के।
सारे विमान पावन के आधार पे रुके।।
ये पीत लाल नील और श्वेत वर्ण के।
शाश्वत विमान नाना मणि रत्न के दिपें।।2।।

सानत्कुमार मौलि महिष चिन्ह खरे हैं।
माहेन्द्र के मुकुट में मत्स्य चिन्ह खरे हैं।।
उत्कृष्ट आयु सात सागरोपमा कही।
विक्रिय शरीर बहुत भेद के धरें सही।।3।।

सौधर्म युगल में सुरेन्द्र महल के आगे।
शाश्वत सु मानस्तंभ बने रत्नकरंडे।।
सुरत्न पिटारों में आभूषण लटक रहें।
तीर्थेश शिशु भरत ऐरावत के लिये हैं।।4।।

सानत्कुमार युगल में भि मानथंभ हैं।
ये रत्नमय सींकों से सहित इंद्र वंद्य हैं।।
पूरब अपर विदेह के तीर्थेश शिशू के।
भूषण वसन लटक रहे हैं शाश्वते नीके।।5।।

तीर्थंकरो के हेतु हंद्र वस्तु लावते।
ये पुण्य के निधान नहीं अंत पावते।।
इंद्रों के भवन अग्र चैत्य वृक्ष शोभते।
जिनबिंब पूज्य राजते भव पंक धोवते।।6।।

इन इंद्र का वैभव अपार पुण्य से मिले।
सम्यक्त्व के बिना न कभी इंद्र पद मिले।।
दो इंद्र के ये बीस लाख जैनधाम हैं।
उन सबको कोटि कोटिशः मेरा प्रणाम है।।7।।

जिनबिंब वहाँ पाँच सौ धनुष उतुंग हैं।
पद्मासनों से राजते सौ इंद्र वंद्य हैं।।
नासाग्र दृष्टि सौम्य छवि शोभ रही हैं।
वंदन करें जो उनके चित्त मोह रही हैं।।8।।

मैं भक्ति से जिन मूर्तियों की वंदना करूँ।
संपूर्ण कर्म क्षय निमित्त अर्चना करूँ।।
हे नाथ! शक्ति दीजिये निज संपदा भरूँ।
सज्ज्ञानमती पूर्ण हो भव आपदा हरूँ।।9।।

दोहा

जय जय तीर्थंकर प्रभो! नाम मंत्र सुखधाम।
तुम प्रतिमा भी तुम सदृश, देती अविचल धाम।।10।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारमाहेन्द्रयुगलस्वर्गमध्यस्थितविंशतिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-55

ब्रह्मकल्प जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर युगल स्वर्ग में, चार लाख जिनमंदिर।
मणिमय रत्नमयी जिनप्रतिमा, पूजा करें पुरंदर।।
मैं भी इनका आह्वानन कर, भक्ति भाव से पूजूँ।
आतम अनुभव अमृत पीकर, जन्म मरण से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पमध्यस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पमध्यस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पमध्यस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छंद

पद्म सरोवर जल सुरभित ले, कंचन भृंग भराया।
निज आतम पावन करने को, जिनपद धार कराया।।
ब्रह्म कल्प के जिन मंदिर को, पूजूँ निज गुण गाऊँ।
आत्मब्रह्म में चर्या करके, परम ब्रह्मपद पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

कंचन द्रव सम चंदन सुरभित, जिनपद कमल चढ़ाऊँ।
सुख संपति सौभाग्य प्राप्त कर, निज समरस सुख पाऊँ।।ब्रह्म.।।2।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

बासमती चावल अति उज्ज्वल, जिनपद पुंज रचाऊँ।
जग के सब अभ्युदय प्राप्त कर, निज अखंड पद पाऊँ।।ब्रह्म.।।3।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

हरसिंगार गुलाब चमेली, सुरभित पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव का दर्प दूर कर, स्वात्म सुधारस पाऊँ।।ब्रह्म.।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरणपोली खाजे ताजे, खीर मलाई लाऊँ।
जिनवर आगे चरू चढ़ाके, आत्म तृप्ति को पाऊँ।।ब्रह्म.।।5।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कनक दीप में घृत भर करके, जगमग ज्योति जलाऊँ।
करूँ आरती मोह नाश कर, ज्ञान भारती पाऊँ।।ब्रह्म.।।6।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप घड़े में सुरभि धूप को, खेऊँ गंध उड़ाऊँ।
कर्म भस्म कर दुःख दूर कर, दिव्य सुखों को पाऊँ।।ब्रह्म.।।7।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रीफल केला एला पिस्ता, काजू द्राक्ष चढ़ाऊँ।
महामोक्षफल की आशा से, बार-बार शिर नाऊँ।।ब्रह्म.।।8।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, अर्घ चढ़ाऊँ रुचि से।
निज अनर्घ पद प्रभु दे दीजे, छूटूँ भव भव दुख से।।ब्रह्म.।।9।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पस्थितचतुर्लक्षजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

ब्रह्मकल्प के देव, शाश्वत जिनमंदिर जजें।
मिले ब्रह्मपद एव, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इंद्रक नाम 'अरिष्ट', मध्य विमान सुसोहें।
चौबीस चौबिस श्रेणिबद्ध चहुँदिश सोहें।।
इन सबमें जिनधाम, शाश्वत रत्नमयी हैं।
जिन प्रतिमा अभिराम, पूजत सौख्य मही हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अरिष्टइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् चतुर्विंशतिचतुर्विंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'सुरसमितीय', देव देवियाँ उसमें।
तेइस तेइस श्रेणिबद्ध कहें चहुंदिश में।।
इन सबमें जिनधाम, शाश्वत रत्नमयी हैं।
जिन प्रतिमा अभिराम, पूजत सौख्य मही हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुरसमितीयइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् चतुर्विंशतिचतुर्विंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'ब्रह्म' विमान, इसके चारों दिश में।
बाईस बाइस श्रेणि, बद्ध विमान सुरग में।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् द्वाविंशतिद्वाविंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'ब्रह्मोत्तर' शुभ नाम इंद्रक के चहुंदिश में।
इक्कीस इक्किस श्रेणिबद्ध कहें इस दिव में।।

दक्षिण श्रेणीबद्ध चौदहवें में सुरपति।
ब्रह्म इंद्र का वास नमूँ जिनालय नित प्रति।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् एकविंशतिएकर-विंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक विमान चैत्यालय अर्घ्य-नरेन्द्र छंद

तीन लाख निन्यानेव हजार, छह सौ छत्तिस जानो।
ब्रह्म कल्प के कहे प्रकीर्णक, विमान शाश्वत मानो।।
तीन लाख उन्निस हजार, छह सौ चालिस गिनने।
संख्यातीत योजनों के ये, सबमें जिनगृह नमनें।।5।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरस्वर्गसंबंधित्रयलक्षनवनवतिसहस्रषट्शतषट्त्रिंशत् प्रमाणप्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

इंद्र भवन के सन्मुख सुंदर, तरु न्यग्रोध सुसोहे।
मरकत मणिमय पत्र पुष्प से, सुरगण का मन मोहे।।
चारों दिश में जिनवर प्रतिमा, सौम्य छवी अति शोभें।
आत्म सुधारस आस्वादी मुनि उनका भी मन लोभें।।6।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधतरुचैत्यवृक्षचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

साठ हजार योजनों विस्तृत, इंद्र नगर अतिशायी।
चारों तरफ पांच वेदी से, आगे वन सुखदायी।।
क्रम से अशोक सप्तछंद, चंपक तरु आम्रवनी है।।
इनके चैत्य वृक्ष जिन प्रतिमा पूजत सौख्यधनी हैं।।7।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविराजमान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लौकांतिक देव चैत्यालय अर्घ्य-गीताछंद

जो ब्रह्म स्वर्ग सु पांचवे के अंत में रहते सदा।
वे देव लौकांतिक कहाते, नर बनें शिव लें मुदा।।

ये देव सारस्वत प्रकीर्णक, में रहें ईशान में।
ये सात सौ अरु सात इनके, जैन मंदिर हम नमें।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तशतसप्तप्रमाणसारस्वतनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आदित्य' लौकांतिक प्रकीर्णक, में रहें दिश पूर्व में।
ये सात सौ अरु सात हैं, इनके विमान सुगोल हैं।।
इनके जिनालय मणिमयी, शाश्वत बने सुविशाल हैं।
जिनबिंब इक सौ आठ को, हम पूजते नत भाल हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सप्तशतसप्तआदित्यलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आग्नेय 'बह्नी' नाम लौकांतिक प्रकीर्ण विमान में।
ये सात सहस सुसात माने, एकभव ले मनुज में।।
इनके जिनालय मणिमयी, जिनमूर्तियां शाश्वत कहीं।
जो पूजते हैं भक्ति से, वे प्राप्त करते शिव मही।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तसहस्रासप्तबह्निनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इन 'अरूण' कुल के अरुण नामक, देव लौकांतिक रहें।
ये सात सहस सुसात हैं, सब दक्षिणीदिश में रहें।।
ये प्रकीर्णक सुविमान में, मणिमय जिनालय शोभते।
जो पूजते जिनबिंब को वे, शिवरमा को मोहते।।4।।

ॐ ह्रीं सप्तसहस्रसप्तअरुणानामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नैऋत दिशा में 'गर्दतोय', सुरर्षि लौकांतिक रहें।
ये नव सहस नव हैं प्रकीर्ण, विमान में दिव सुख लहें।।
जिनधाम अनुपम शाश्वते को, पूजहूं नत भाल मैं।
जिनमूर्तियां मणिमय अकृत्रिम, नमत सुख तत्काल मैं।।5।।

ॐ ह्रीं नवसहस्रनवगर्दतोयनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम दिशा में 'तुषित' लौकांतिक प्रकीर्णक में रहें।
ये नव हजार सुनव कहें, ये नाम निज कुल सम लहें।।
जिनधाम अनुपम शाश्वते को पूजहूँ नत भाल मैं।
जिन मूर्तियां हैं कामधेनू, नमत सुख तत्काल में।।6।।

ॐ ह्रीं नवसहस्रनवतुषितनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वायव्य दिश में देव 'अव्याबाध' लौकांतिक रहें।
ग्यारह सहस ग्यारह इन्हों के, प्रकीर्णक सुविमान हैं।।
जिन धाम अनुपम सासते को, पूजूँ नत भाल मैं।
जिन मूर्तियां चिंतामणी, वंदत लहूँ सुख हाल में।।7।।

ॐ ह्रीं एकादशसहस्रएकादशअव्याबाधनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तर दिशा में श्रेणिबद्ध, विमान में हि 'अरिष्ट' हैं।
ग्यारह सहस ग्यारह सुरर्षी, नाम लौकांतिक लहें।।
इनके अकृत्रिम जिन भवन, जिन मूर्तियों की वंदना।
जो करें भक्ती से सतत वे, करें भव दुख खंडना।।8।।

ॐ ह्रीं एकादशसहस्रएकादशअरिष्टनामलौकांतिकदेवविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

सारस्वत आदित्य मध्य में, दो कुल इन देवों के।
'अग्न्याभ रु सूर्याभ' देव ऋषि, लौकांतिक सुरगण ये।।
सात हजार सात हैं पहले, नव हजार नव दूजे।
इनके जिन मंदिर जिनबिंबों, को हम रुचि से पूजें।।9।।

ॐ ह्रीं सप्तसहस्रसप्तअग्न्याभनामलौकांतिकदेवविमानस्थितनवसहस्र नवसूर्याभनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आदित्य रु बन्हि के मध्ये, दो कुल लौकांतिक के।
'चंद्राभ रु सत्याभ' नाम ये, निज विमान में रहते।।

पहले ग्यारह हजार ग्यारह, सुर चंद्राभ कहाये।
तेरह हजार तेरह दूजे, इन जिनगृह गुण गायें।।10।।

ॐ ह्रीं एकादशसहस्रएकादशचंद्राभनामलौकांतिकदेवविमानस्थितत्रयोदशसहस्र त्रयोदशसत्याभनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बह्नि अरुण के बीच रहें, 'श्रेयस्कर' क्षेमंकर है।
पंद्रह हजार पंद्रह सुर श्रेयस्कर देवऋषी हैं।।
सत्रह हजार सत्रह सुर, क्षेमंकर कुल में मानें।
इनके जिनगृह जिन प्रतिमा को, पूजत भव दुख हानें।।11।।

ॐ ह्रीं पंचदशसहस्रपंचदशश्रेयस्करनामलौकांतिकदेवविमानस्थितसप्तदशसहस्र सप्तदशक्षेमंकरनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अरुण-गर्दतोयों के मधि में, कुल 'वृषभेष्ट' कामधर।
उन्निस हजार उन्निस पहले, सुर वृषभेष्ट नामधर।।
इक्किस हजार इक्किस मानें देव कामधर दिव में।
इनके जिनगृह जिन प्रतिमा को, वंदत सुख इक क्षण में।।12।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशतिसहस्रएकोनविंशतिवृषभेष्टनामलौकांतिकदेवविमानस्थित एकविंशतिसहस्रएकविंशतिकामधरनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गर्दतोय अरु तुषित मध्य में, सुर 'निर्वाणरजस' हैं।
तेइस हजार तेइस ये हैं पुनि 'दिगंतरक्षित' हैं।।
पच्चिस हजार पच्चिस ये सब लौकांतिक सुर गाये।
इनके जिनगृह जिन प्रतिमा को, हम नित शीश झुकायें।।13।।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिसहस्रत्रयोविंशतिनिर्वाणरजोनामलौकांतिकदेवविमानस्थित पंचविंशतिसहस्रपंचविंशतिदिगंतरक्षितनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तुषित रु अव्याबाध बीच में, देव 'आत्मरक्षित' हैं।
सत्ताइस हजार सत्ताइस, पुनः सर्वरक्षित हैं।।

ये उनतीस हजार उनतिस, सब देवर्षि कहाते।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को पूजत पाप नशाते।।14।।

ॐ ह्रीं सप्तविंशतिसहस्रसप्तविंशतिआत्मरक्षितनामलौकांतिकदेवविमानस्थित एकोनत्रिंशत्सहस्रएकोनत्रिंशत् सर्वरक्षितनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अव्याबाध अरिष्ठ देव के, अंतराय में दो हैं।
'मरुत' देव इकतिस हजार इकतिस प्रकीर्णकों में हैं।।
तेतिस हजार तेतिस हैं, वसुदेव सुरर्षि कहाते।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को, हम नित शीश झुकाते।।15।।

ॐ ह्रीं एकत्रिंशत्सहस्रएकत्रिंशत्मरुत्नामलौकांतिकदेवविमानस्थितत्रयस्त्रिंशत् सहस्रत्रयस्त्रिंशत्वसुनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अरिष्ट रु सारस्वत सुर बीचे, अश्व-विश्व के कुल हैं।
पैंतिस हजार पैंतिस पहले, अश्व देव के कुल हैं।।
सैंतिस हजार सैंतिस दूजे, विश्व देव के मानें।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को, पूजत सब सुख ठानें।।16।।

ॐ ह्रीं पंचत्रिंशत्सहस्रपंचत्रिंशत्अश्वनामलौकांतिकदेवविमानस्थितसप्तत्रिंशत् सहस्रसप्तत्रिंशत् विश्वनामलौकांतिकदेवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

चौबिस कुल के लौकांतिक ये, निज कुल सम नाम धराते हैं।
चउ लाख सात हज्जार आठ, सौ बीस[1] प्रमाण कहाते हैं।
ये देवों द्वारा पूज्य देवऋषि, जिन भक्ति करें अतिशायी हैं।
इनके जिन मंदिर को पूजूं, ये भक्तों को सुखदायी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्लक्षसप्तसहस्रअष्टशतविंशतिप्रमाणलौकांतिकदेवविमान स्थितसर्व जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. त्रिलोकसार गाथा 534 से 538।

इन ब्रह्म ब्रह्मोत्तर स्वर्गों में, इंद्रक विमान मधि चार कहे।
त्रय शतक साठ श्रेणीबद्धे, ये असंख्यात योजन के हैं।।
त्रय लाख निन्यानवे हजार छह सौ, छत्तिस कहें प्रकीर्णक हैं।
इन सबके जिन मंदिर पूजूँ, जो शिवसुख हेतू शाश्वत हैं।।2।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरस्वर्गसंबंधिचतुःइन्द्रकविमानत्रिशतषष्टिश्रेणीबद्धविमानत्रय-लक्ष नवनवतिसहस्रषट्शतषट्त्रिंशत् प्रकीर्णकविमानसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति जिनगृह में जिनप्रतिमायें, सब इक सौ आठ-आठ राजें।
सब चार कोटि बत्तीस लाख, जिनप्रतिमायें अनुपम भासें।।
पद्मासन मुद्रा सौम्य छवी, नासाग्र दृष्टि अति शोभ रहीं।
मैं पूजूँ वंदूँ गुण गाऊँ, पा जाऊँ अनुपम मोक्ष मही।।3।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरस्वर्गसंबंधिचतुर्लक्षजिनालयमध्यविराजमान चतुःकोटि द्वात्रिंशल्लक्षजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर तीर्थंकर, मुनिवृंद वंदित आप हैं।
जय जय जिनेश्वर तीर्थंकर, त्रैलौक्य पूजित आप हैं।।
जय जय जिनेश्वर आप नाम, महान् मंत्र त्रिलोक में।
जय जय जिनेश्वर आप प्रतिमा, साधुगण नित ही नमें।।1।।

ब्रह्मेंद्र की दश सागरोपम, आयु उत्तम जानिये।
सौधर्म इंद्र समान वैभव, कुछहि न्यून बखानिये।।
वर मुख्य देवी आठ चौंतिस, सहस सुंदर देवियां।
ये धरें सुंदर रूप विक्रिय, से हजारों देवियां।।2।।

इन मुकुट में मेंढक सुचिन्ह, धरें रतनमय शोभते।
इनके विमान सुपीत लाल, सफेद मणिमय शोभते।।
जय वायु के आधार ये, शाश्वत विमान बने वहां।
दश भेद के परिवार सुर, वैभव अतुल इनका कहा।।3।।

इस ब्रह्म पंचम स्वर्ग में, देवर्षि लौकांतिक रहें।
इनके नहीं देवी नहीं, परिवार सुर कोई कहे।।
ये ब्रह्मचारी श्वेत वस्त्राभरण धारें शोभते।
चौदह सु पूरब ज्ञानधर, निज तत्त्व चिंते माहते।।4।।

चउ लाख सात हजार अठ शत, बीस संख्या जानिये।
चौबीस कुल के देव एक, भवावतारी मानिये।।
जब तीर्थंकर वैराग्य हो, ये देव तत्क्षण आवते।
वैराग्य की संस्तुति करें, अनुमोदतें सुख पावते।।5।।

ये देव विषय विरक्त हैं, इंद्रादिकों से पूज्य हैं।
सब आठ सागर आयु धर, पीते निजात्म पियूष हैं।।
अष्टम अरिष्ट सुरर्षि की नव सागरोपम आयु है।
ये सतत बारह भावना, भाते मुदित मन माहिं हैं।।6।।

जो मुनि यहाँ निर्दोष समकित, युक्त चारित पालते।
ईर्ष्या असूया से रहित गुरु की विनय अति धारते।।
ब्रह्मचर्य पालें पूर्णतः, निज ब्रह्म-आत्मा में रमें।
परिषह सहें नित धैर्य से, उपसर्ग में अविचल बनें।।7।।

निज देह के निरपेक्ष निर्मम, परम साम्य सुधा पियें।
सुख दुःख शत्रु मित्र जीवन, मरण में सुख से जियें।।
सम्यक्त्व संयम शील और, समाधि में तत्पर रहें।
वे ही मुनी देवेन्द्र पूजित, सुपद लौकांतिक लहें।।8।।

हे नाथ! मैं भी विषय और, कषाय सबही छोड़ दूँ।
निज आत्म सुख पीषूष पीकर, अन्य से मुख मोड़ लूँ।।

प्रीाु शक्ति ऐसी दीजिये, आनन्त्य शक्तिपग्रट हो।
निज 'ज्ञानमति' गुण पूर्ण होने, तक सुभक्ती अडिग हो।।9।।

दोहा

जय जय जिनवर जिन भवन, जिन प्रतिमा अभिराम।
जय लौकांतिक देवगण, जिनपद भक्त ललाम।।10।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्मोत्तरस्वर्गसंबंधिचतुर्लक्षजिनलायतन्मध्यविराजमानसर्वजिन–बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-56

लांतव कापिष्ठ जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

लावंत तथा कापिष्ठ स्वर्गों में पचास हजार हैं।
जिनधाम शाश्वत मणिमयी जिनमूर्तियाँ अविकार हैं।।
जिन आत्म सुख पीयूष का आस्वाद लेते मुनिवरा।
वे भी इन्हें नित वंदते मैं पूजहूँ गुण रुचि धरा।।1।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठ स्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठ स्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठ स्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

नीर से तीन धारा करूँ पाद में।
कर्म मल धोवने आत्म शुचि कारने।।
जैन मंदिर जजूँ भक्ति भावे यहीं।
लब्धि सम्यक्त्व की प्राप्त हो आज ही।।1।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध से आपके पाद पंकज जजूँ।
देह संताप हर स्वात्म शीतल भजूँ।।जैन.।।2।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

शालि के पुंज से आप अर्चन करूँ।
आत्म के गुण अखंडित अनंते भरूँ।।जैन.।।3।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

कुंद मंदार की माल अर्पण करूँ।
सौख्य भंडार पूरो ये आशा धरूँ।।जैन.।।4।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

खीर मोदक पुआ चरु चढ़ाऊँ प्रभो।
सर्व व्याधी हरो स्वास्थ्य देवो विभो।।जैन.।।5।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप की लौ जले ध्वांत जग का टले।
आरती मैं करूँ ज्ञान ज्योति मिले।।जैन.।।6।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

अग्नि में धूप खेऊँ धुआं दश दिशी।
आत्म सौरभ उड़े कर्म भागें सभी।।जैन.।।7।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

सेव अंगूर दाड़िम मुसम्बी लिये।
आपको अर्पते मोक्ष फल वांछिये।।जैन.।।8।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंधादि चांदी कुसुम थाल में।
अर्घ अर्पण किये सौख्य तत्काल में।।जैन.।।9।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गमध्यस्थितपंचाशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

लांतव इंद्रविमान, सबमें जिनमंदिर दिपें।
नमूँ भक्ति प्रधान, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

'ब्रह्महृदय' इंद्रक अकृत्रिम, इसके चारों दिश में।
बीस बीस श्रेणीबद्धे हैं, असंख्यात योजन में।।
सबमें जिन मंदिर अविनश्वर, मणिमय जिन प्रतिमायें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से, आतमनिधि प्रगटायें।।1।।

ॐ ह्रीं ब्रह्महृदयइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् विंशति विंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'लांतव' इंद्रक अतिशय सुंदर, उसके चारों दिश में।
उन्निस उन्निस श्रेणीबद्धे, विमान शाश्वत दिव में।।
दक्षिण दिश में बारहवें में, लांतव इंद्र निवासा।
इनके सब जिन मंदिर पूजूँ, धरें मोक्ष की आशा।।2।।

ॐ ह्रीं लांतवइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्एकोनविंशतिएकोनविंशतिश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक विमान जिनालय अर्घ्य

उनंचास हज्जार आठसौ, ब्यालिस कहें प्रकीर्णक।
संख्याते योजन के कुछ कुछ, असंख्यात योजन तक।।
इन सबमें जिन मंदिर शाश्वत, प्रतिमा रत्नमयी हैं।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, पावें स्वर्ग मही हैं।।3।।

ॐ ह्रीं लांतवयुगलस्वर्गसंबंधिएकोनपंचाशत्सहअष्टशतद्विचत्वारिंशत् प्रकीर्णक विमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्यं

इंद्रभवन के आगे सुंदर, तरु न्यग्रोध सुहाना।
मरकत मणिमय पत्र पुष्प हैं, माणिक रत्न खजाना।।
मूल भाग के चारों दिश में, पद्मासन जिन प्रतिमा।
वंदत मिले निजातम अनुभव, होवे सौख्य अनुपमा।।4।।

ॐ ह्रीं लांतवइन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधवृक्षचैत्यवृक्षचतुर्दिक्विराजमान चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सहस पचास योजनों विस्तृत, लांतव इद्र नगर है।
पाँच वेदियों से परिवेष्टित, रहें इंद्र परिकर है।।
इनसे आगे चारों दिश में चार बनी अति सोहें।
चैत्यवृक्ष जिनप्रतिमाओं से सुरपति का मन मोहें।।5।।

ॐ ह्रीं लांतवइन्द्रसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविराजमान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

लांवत युगलों में दो इंद्रक श्रेणीबद्धे इक सौ छप्पन।
उनंचास हज्जार आठ सौ, ब्यालिस प्रकीर्णक शुभतम।।
ये सर्व पचास हजार कहें इन सबमें जिन मंदिर सुंदर।
मैं इष्ट वियोग अनिष्ट योग नाशन हेतू पूजूँ सुखकर।।1।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गसंबंधिद्वयइन्द्रकाविमानएकशतषट्पंचाशत् श्रेणीबद्ध विमानएकोनपंचाशत्सहस्रअष्टशतिद्विचत्वारिंशत्प्रकीर्णकविमानस्थित सर्व जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमायें शुभ इक सौ आठ विराजे हैं।
सब चौवन लाख जैन प्रतिमा पूजत ही पातक भाजे हैं।।
सम्यग्दर्शन को प्रकटित कर ये कर्म कुलाचल चूरे हैं।
जो पूजें वंदें भक्ति करें उनके सब मनरथ पूरे हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गसंबंधिपंचाशत्सहस्रजिनालयमध्यविराजमानचतुः पंचाशल्लक्षनिप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

पंचचामर छंद

जयो जयो जिनेन्द्र धाम इंद्र वृंद वंद्य हैं।
जयो जयो जिनेन्द्र धाम सर्व सौख्यमंत हैं।।
जयो जिनेन्द्र मूर्तियां अपूर्व कामधेनु हैं।
जयो जिनेन्द्र मूर्तियां निजात्म सौख्य देन हैं।।1।।

सु लांतवेन्द्र के विमान पीत लाल शुक्ल है।।
अनेक रत्न से जड़े सुरम्य हैं विचित्र हैं।।
सुनीर वायु पे टिके अधर विमान शोभते।
सुरेन्द्र मौलि में सुसर्प चिन्ह चित्त मोहते।।2।।

सु सोलहों हजार औ पचास देवियाँ कहीं।
सु आठ मुख्य देवियाँ अनेक रूप धर रहीं।।
सुरेन्द्र के दशों प्रकार परीवार देव हैं।
सु आयु चतुर्दश्य सागरो पमा उत्कृष्ट हैं।।3।।

जिनेन्द्र भक्ति मैं भरें सुरेन्द्र वंदना करें।
सु बार बार हाथ जोड़ शीश नाय पग परें।।
सु अष्ट द्रव्य लेय के जिनेन्द्र अर्चना करें।
अनंत पाप नाश के सुपुण्य अर्चना करें।।4।।

नमो जिनेन्द्र वाक्य गंग नीर से पवित्र हैं।
नमो जिनेन्द्र वाक्य चंद्र रश्मि से भि शीत हैं।।
नमो जिनेन्द्र वाक्य मोतिहार से भि शीत हैं।
नमो जिनेन्द्र वाक्य चंदनादि से भि शीत हैं।।5।।

नमो जिनेन्द्र वाक्य मोह ताप को निवारते।
नमो जिनेन्द्र वाक्य जन्म व्याधि को भि टारते।।
नमो जिनेन्द्र वाक्य मृत्यु मल्ल हेतु वज्र हैं।
नमो जिनेन्द्र वाक्य आत्म को करें पवित्र हैं।।6।।

नमो नमो जिनेन्द्र नाम मंत्र पाप नाशने।
नमो नमो जिनेन्द्र बिंब सर्व सौख्य पावने।।
नमो नमो जिनेन्द्र देह आत्म शुद्धि कारणे।
नमो नमो जिनेन्द्र पुण्य गुण निजात्म कारणें।।7।।

जिनेन्द्र! आप भक्ति ही निगोद नर्क वारती।
जिनेन्द्र! आप भक्ति ही समस्त सौख्य कारती।।
जिनेन्द्र! आप भक्ति स्वर्ग मोक्ष में धरे सदा।
जिनेन्द्र! आप भक्ति 'ज्ञानमती' पूरती सदा।।8।।

दोहा

जय जय जय जिनराज प्रभु, अरि रज रहस विधात।
परमानंदामृतमगन, किया आत्सुख सात।।9।।

ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गसंबंधिपंचाशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-57

शुक्र महाशुक्र जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

चालिस हजार विमान शुक्र व महाशुक्र सुकल्प में।
इनमें जिनेन्द्र निकेत शाश्वत शोभते अति मध्य में।।
गणधर मुनीश्वर इंद्र शत सुर नर खगाधिप वंदते।
मैं पूजहूँ आह्वान कर ये कर्म पर्वत खंडते।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चाल-नंदीश्वर पूजा

जिनपद त्रय धारा देत, आतम शुद्ध करूँ।
निज शिवपद प्राप्ती हेतु, नितप्रति नमन करूँ।।
पूजूँ जिनवर जिन धाम, जिनवर प्रतिमा को।
पाऊँ निज में विश्राम, निज गुण महिमा को।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनपद में चंदन चर्च, भव भव दाह हरूँ।
निज समरस प्राप्ती अर्थ, भक्ती भाव करूँ।।पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

तंदुल के पुंज चढ़ाय, अक्षय सुख पाऊँ।
निज साम्य सुधारस पाय, भव दुख विनशाऊँ।।पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री जिनवर पद अरविंद, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
निजपद पाऊँ अभिनंद, शोक नशाऊँ।।पूजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनवर आगे पकवार, अर्पत सुख पाऊँ।
हो क्षुधा व्याधि की हानि, समता सुख पाऊँ।।पूजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मैं करूँ आरती नाथ! दीपक जगमगता।
खिले जोव ज्ञान प्रभात, मोह तिमिर भगता।।पूजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

वरधूप धूपघट खेय, धूम्र उड़ाऊँ मैं।
निज आतम अनुभव लेय, शोक नशाऊँ मैं।।पूजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

पिस्ता किसमिस बादाम, अर्पूं जिन आगे।
निज मुक्तिरमा अभिराम, पाऊँ सुख जाके।।पूजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

वर अर्घ चढ़ाऊँ आज, नाना बाद्य बजा।
म्लि जावे निज साम्राज, गुणमणि रत्न सजा।।पूजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गमध्यस्थितचत्वारिंशत्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तीर्थंकर की प्रतिकृती, तीन जगत में वंद्य।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले सौख्य अभिनंद्य।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

'महाशुक्र' इंद्रक विमान हैं शाश्वत रत्न विनिर्मित।
इसके चउदिश श्रेणीबद्धे अठरह अठरह शोभित।।
इंद्रक के उत्तर दिश दशवें श्रेणीबद्ध विमाने।
महाशुक्र इंद्र रहता है जजूँ सर्वजिनधामे।।1।।

ॐ ह्रीं महाशुक्रइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्अष्टादशअष्टादशश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक विमान जिनालय अर्घ्य

उनतालीस हजार सु नव सौ सत्ताइस सुविमाना।
नाम प्रकीर्णक शाश्वत सुंदर रत्न जड़ित हैं नाना।।
इनमें आठ हजार विमाना संख्याते योजन के।
शेष असंख्याते योजन के जिनगृह पूजूँ रुचि से।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गसंबंधिएकोनचत्वारिंशत्सहस्रनवशतसप्तविंशति–प्रकीर्णक विमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

इंद्र भवन के आगे सुंदर तरु न्यग्रोध सु सोहे।।
चैत्यवृक्ष के चारों दिश में जिन प्रतिमा मन मोहें।।

वर्ण गंध रस फास विवर्जित चिन्मय धातु विनिर्मित।
निज आतम प्रतिमा को पाऊँ जिन प्रतिकृति पूजूँ नित।।3।।

ॐ ह्रीं महाशुक्रेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चालिस हजार योजन विस्तृत इंद्र नगर अतिसुंदर।
पांचों वेदी के बाहर में चहुंदिश उपवन मनहार।।
अशोक सप्तच्छक चंपक अरु आम्र बगीचे सोहें।
उनके चैत्यवृक्ष को पूजँ मुनिगण का मन मोहें।।4।।

ॐ ह्रीं महाशुक्रेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक्चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविरामान चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-नरेन्द्र छंद

शुक्र महाशुक्र दो स्वर्गों में, इन्द्रक एक विमाना।
श्रेणीबद्ध बहत्तर सुंदर शाश्वत सौख्य निधाना।।
उनतालिस हजार सु नव सौ सत्ताइस सु प्रकीर्णक।
इनके चालिस हजार जिनगृह पूजत लहूँ नवों निधि।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गस्थितएकइंद्रविमानद्वासप्ततिश्रेणीबद्धविमानएकोनचत्वारिंशत्सहस्रनवशतसप्तविंशतिप्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रति जिनगृह की जिन प्रतिमायें शाश्वत रत्नमयी हैं।
तेतालीस लाख अरु बीस हजार प्रमाण कही हैं।।
इनका वंदन करते भविजन सात भयों को नाशें।
सप्त परमस्थान प्राप्त कर आतम ज्योति प्रकाशें।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गस्थितचत्वारिंशत् सहस्रजिनालयमध्यविरामानत्रिचत्वारिंशल्लक्षविंशतिसहस्रजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

जय जय जिनेन्द्र बिंब जो अनादि अनंता।
जय जय जिनेन्द्र बिंब मुक्ति बल्लभा कंता।।
जय जय जिनेन्द्र बिंब सौम्य दृष्टि धरंता।
जय जय जिनेन्द्र बिंब सर्व सोख्य करंता।।1।।

महाशुक्र इंद्र के अमित परिवार देव हैं।
ब्यासी शतक पचास देवि करें सेव हैं।।
हैं आठ मुख्य देवियां सौंदर्य की खनी।
सब विक्रिया से बहुत रूप धरें मोहनी।।2।।

इनके विमान पीत शुक्ल रत्न के बने।
जलवायु के आधार पे तिष्ठे हैं अधर में।।
उत्कृष्ट आयु सोहल सागर प्रमाण है।
सब रिद्धि सिद्धियों से ये महिमा निधान है।।3।।

जो भव्य गण जिनबिंब का अभिषेक करे हैं।
उनका सुरेन्द्र भी स्वयं अभिषेक करे हैं।।
जो छत्र चंवर ध्वजा को मंदिर में चढ़ावें।
आश्चर्यमयी संपदा को शीघ्र ही पावें।।4।।

जल धार दे प्रभु पाद की जो अर्चना करें।
स्वर्गादि विभव पाय सुधापान वे करें।।
जो गंध सुगंधित लिये प्रभु चर्ण चर्चते।
सुर अप्सरा के बीच में आनंद से रमते।।5।।

उज्ज्वल अखंड तंदुलों के पुंज जो करें।
अक्षय अनंत सौख्य के भंडार वो भरें।।
जो पुष्प माल ले जिनेन्द्र चरण चढ़ाते।
नवनिधि अतुल सौभाग्य को वे शीघ्र ही पाते।।6।।

बरफी मलाई खीर ले नैवेद्य चढ़ाते।
वे आत्म सुखामृत पिवंत तृप्ति को पाते।।

कर्पूर ज्योति से प्रभू की आरती करें।
संपूर्ण मोह नाश ज्ञान भारती भरें।।7।।
वर धूप खेय अग्नि में गुण की सुरभि भरें।
आकाश व्याप्तकर अपूर्व सुयश बिस्तरें।।
श्रीफल अनार आदि मुधर फल जो चढ़ाते।
मुक्त्यंगना वरें त्रिलोक राज्य वो पाते।।8।।
धनिया के पत्र सदृश जो जिनधाम बनाते।
सरसों समान बिंब को जो उसमें रखाते।।
उनके अनंत पुण्य की न कल्पना यहाँ।
तीर्थेश सदृश पुण्य उपार्जन करें यहाँ।।9।।
फिर जो उत्तुंग जिनभवन निर्माण कराते।
अतिशायि जैनबिंब की प्रतिष्ठा कराते।।
उनके अपूर्व पुण्य को न कह सके कोई।
मां शारदा न कह सके क्या कह सके कोई।।10।।
त्रैलोक्य में त्रिकाल में व्रत तप व दान से।
जो पुण्य हो वह भी बराबरी न कर सकें।
जिनबिंब दर्श में अनंत उपवास फल मिले।
जिनबिंब दर्श से तुरत समकित सुमन खिले।।11।।

दोहा

कृत्रिम अकृत्रिम सभी, जिनवर बिंब महान।
'ज्ञानमती' सुख पूर्ण हो, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।12।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गसंबंधिचत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-58

शतार सहस्रार जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

स्वर्ग शतार व सहस्रार में, छह हजार जिनधामा।
शाश्वत मणिमय जिनप्रतिमा से, शोभित अविचल धामा।।
चिन्मय मूर्ति निजानंद अनुभव, करें निरंतर मुनिगण।
वे भी इन मूर्ती को वंदें, मैं पूजूँ धर रुचि मन।।1।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

प्रभू के चरण तीन धारा चढ़ाऊँ।
सभी पाप मल धोय पावन कहाऊँ।।
जजूँ जैन के बिंब शाश्वत विराजें।
भजूँ आत्म के देव को दुःख भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभूपाद में गंध चंदन चढ़ाऊँ।
भवाताप नाशूँ महा शांति पाऊँ।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल धरूँ पुंज आगे।
निजानंद पाऊँ सभी शोक भागें।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

जुही मोंगरा माल चरणों चढ़ाऊँ।
स्वपरभेदविज्ञान आनंद पाऊँ।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

समोसे व गुझिया चढ़ाऊँ प्रभू को।
उदर रोग नाशूँ हरूँ क्षुध व्यथा।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशे।
करूँ आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशे।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

जले धूप घट अगनि धूप खेऊँ।
मिले आत्म संपद प्रभू पाद सेवूँ।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

मुसम्बी अनारादि फल को चढ़ाऊँ।
मिले मोक्षफल नाथ! तुमको रिझाऊँ।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जलादी अरघ ले चढ़ाऊँ प्रभू को।
रतन तीन मेरे दिला दीजे मुझको।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिषट्सहस्रजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

स्वर्गों में सुविमान, इनमें जिनगृह शासते।
नमूँ नमूँ गुणखान, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

'सहस्रार' इंद्रक है शाश्वत, इसके चारों दिश में।
सत्रह सत्रह श्रेणीबद्धे, विमान शोभें दिव में।।
उत्तर दिश में अष्ट श्रेणीबद्ध विमान उसी में।
'सहस्रार' इंद्र रहता है, जजूँ सर्व जिनगृह मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सहस्रारइन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक् सप्तदशसप्तदशश्रेणीबद्धविमान स्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक जिनालय अर्घ्य

पाँच हजार सुनव सौ इकतिस, कहें विमान प्रकीर्णक।
इनमें ग्यारह सौ निन्यानवे, योजन संख्याते तक।।
शेष प्रकीर्णक संख्यातीते, योजन विस्तृत मानें।
इनके जिनगृह जिनप्रतिमा को, वंदत सब अघ हानें।।2।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधिपंचसहस्रनवशतएकत्रिंशत् प्रकीर्णकविमानस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

इंद्र भवन के आगे सुंदर, तरु न्यग्रोध सु सोहे।
मूल भाग में जिनवर प्रतिमा, पद्मासन मन मोहे।।

चिच्चिंतामणि निज आत्मा को, पा जाऊँ निज घट में।
इसीलिये जिनप्रतिमा पूजूँ राजें चैत्य तरु में।।3।।

ॐ ह्रीं सहस्रारइन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षमूलभागविरामानचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तीस हजार सु योजन विस्तृत, इंद्र नगर अतिसुंदर।
इसको बेढ़े पांच वेदियाँ, इसके चहुँ दिश बाहर।।
तरु अशोक सप्तछद चंपक, आम्र बगीचे सोहें।
इनमें चैत्य वृक्ष जिनप्रतिमा, वंदूँ सुर मन मोहें।।4।।

ॐ ह्रीं सहस्रारइन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक्चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूल भागविराज मानचतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

कल्प शतार अरु सहस्रार में, इंद्रक एक सुसोहे।
अड़सठ श्रेणीबद्ध विमाना असंख्य योजन के हैं।।
पाँच हजार सुनव सौ इकतिस, कहें विमान प्रकीर्णक।
इनके छह हजार जिनमंदिर, पूजत लहुँ नवों निधि।।1।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गस्थितएकइंद्रकविमानअष्टषष्टिश्रेणीबद्धविमानपंच–सहस्र नवशतएकत्रिंशत्प्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रतिजिनगृह में जिनप्रतिमायें, इक सौ आठ विराजें।
ये छह लाख सु अड़तालिस, हजार नमत दुख भाजें।।
नासादृष्टि सौम्य छवी के, दर्शन से मुख होवे।
मोह कर्म के सौ सौ टुकड़े, हों समकित प्रगटावे।।2।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गस्थितषट्सहस्रजिनालयमध्यविराजमानषट्लक्षअष्ट चत्वारिंशत्सहस्रजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय सहस्रार सुरपति, के जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय जय मणिमय जिनप्रतिमा, शिवरमा सहेली गुणमाली।।
जय जय सुरपति विमान जलवायू, के आधार अधर राजें।
ये पीत शुक्ल रत्नों निर्मित, जिनमंदिर से अतिशय राजें।।1।।

सुरपति के आठ महादेवी, नाना विध विक्रिय रूप धरें।
इकतालिस सहस पचीस देवियाँ, जिनभक्ती में नृत्य करें।।
सुरपति मौली में वृषभ चिन्ह, आयू अठरह सागर तक है।
सामानिक आदिक दश विध, परिवार देव आज्ञारत हैं।।2।।

बारह स्वर्गों तक अन्यलिंगि, मुनि परमहंस भी जा सकते।
इसके ऊपर जिनधर्मी ही, श्रावक नर क्या पशु जा सकते।।
कोई कोई मिथ्यादृष्टि, यहाँ से च्युत हो पशु बन सकते।
मिथ्यात्व सदृश नहिं शत्रु कोई, इसको त्यागो जिनवच सुनके।।3।।

जिनप्रतिमा के दर्शन का फल, सुरपति भी नहिं कह सकते हैं।
दर्शन करने का भाव करें, वे बेला का फल लभते हैं।।
चलने के उद्यम की इच्छा, तेला का फल मिल जाता है।
चलने का आरंभ करते ही, चौला का फल मिल जाता है।।4।।

जो जाने लगते जिनमंदिर, उपवास पाँच का फल मिलता।
कुछ दूर पहुँचते ही बारह, उपवासों का भी फल मिलता।।
बस बीच मार्ग में पहुँचे जब, पंद्रह उपवास सदृश फल है।
मंदिर का दर्शन होते ही, मासोपवास सदृश फल है।।5।।

मंदिर के आंगन में घुसते, छह मास उपास सदृश फल है।
मंदिर के द्वार प्रवेश करे, वर्षोपवास का शुभ फल है।।
जो प्रदक्षिणा देते भविजन, सौ वर्ष उपास सदृश फल लें।
जिनदेव देव के दर्शन से, हज्जार वर्ष उपवास फलें।।6।।

जो जिन सन्मुख स्तुति करके, उपवास अनंतों का फल लें।
जिन भक्ती सम नहिं पुण्य कोई, रत्नत्रय निधि का भी फल लें।।
जिन सम निज आत्मा को ध्याके, जिन के अनंत गुण पा जाते।
अर्हंत 'ज्ञानमती' लक्ष्मी से, त्रैलोक्य शिखर पर जा राजें।।7।।

दोहा

जिनप्रतिमा निर्माण सम, पुण्य नहीं जग मध्य।
नमूँ नमूँ जिनबिंब सब, मिले स्वात्म सुख नव्य।।8।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गस्थितषट्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-59

आनत प्राणत आरण अच्युत जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

आनत प्राणत आरण अच्युत, चार स्वर्ग में जानो।
सात शतक जिनमंदिर शाश्वत, मणि रत्नों के मानों।।
जिनप्रतिमायें मंद हास्य मुख, वंदत निजनिधि देवें।
आह्वानन कर हम नित पूजें, सर्व संपदा लेवें।।1।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतकल्पविमानस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतकल्पविमानस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतकल्पविमानस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नाराच छंद

जन्म मृत्यु औ जरा त्रि ताप शांति हेतु मैं।
तीन धार देत हूँ प्रभो! पदार विंद में।।
शाश्वते जिनेद्र धाम भक्ति भाव से जजूँ।
स्वात्म संपदा मिले समस्त दुःख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

मानसादि ताप तीन शांति हेतु आज मैं।
गंध चर्च हूँ अबे प्रभो! पदार विंद में।।शाश्वते.।।2।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंद्र रश्मि के समान पुंज को चढ़ाय के।
ज्ञान गुण अखंड हो प्रभो! तुम्हें रिझाय के।।शाश्वते.।।3।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मल्लिका गुलाब पारिजात पुष्प माल से।
नाथ! को जजूँ मिले अनंत सौख्य आपसे।।शाश्वते.।।4।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

खीर पूरियां कचौड़ियां भराय थाल में।
आपको चढ़ावते भगे क्षुधा पिशाचि मे[1]।।शाश्वते.।।5।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दीप लौ जले प्रकाश हो समस्त विश्व में।
आरती करूँ प्रकाश खिल उठे निजात्म में।।शाश्वते.।।6।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेवते सु अग्नि पात्र में सुभक्ति से।
धूम फैलता चहूँदिशी सुगंधि कीर्ति से।।शाश्वते.।।7।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

आम्र संतरा अनार नाथ! को चढ़ाय के।
मुक्ति बल्लभा मिले प्रभो! तुम्हें मनाय के।।शाश्वते.।।8।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को चढ़ावते।
रत्न तीन भी मिलें स्वकांति को बढ़ावते।।शाश्वते.।।9।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. मेरी।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

जिनवर धाम अनूप, आनत आदिक स्वर्ग में।
नमत मिले चिद्रूप, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

'आनत' इंद्रक शाश्वत मणिमय, इनके चारों दिश में।
सोलह सोलह श्रेणीबद्धे, विमान सोहें दिव में।।
दक्षिण[1] दिश में छट्ठे श्रेणी, में आनत सुरपति है।
उत्तर के छट्ठे में प्राणत, इंद्र जजूँ जिनगृह मैं।।1।।

ॐ ह्रीं आनतइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्षोडशषोडशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'प्राणत' इंद्रक विमान सुंदर, उसके चारों दिश में।
पंद्रह पंद्रह श्रेणीबद्धे, विमान सोहें दिव में।।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को, पूजें भक्ति बढ़ाके।
सर्व उपद्रव रोग दूर कर, सुख पाऊँ शिव पाके।।2।।

ॐ ह्रीं प्राणतइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्पंचदशपंचदशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. त्रिलोकसार, सिद्धान्तसार के आधार से इस इंद्रक के श्रेणीबद्ध में इंद्रनगर हैं, तिलोयपण्णत्ति में खुलासा नहीं है।

'पुष्पक' इंद्रक विमान अनुपम, इसके चारों दिश में।
चौदह चौदह श्रेणीबद्धे, विमान सौहें दिव में।।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को, जजूँ हर्ष उर लाके।
सुख संपति सौभाग्य बढ़ाकर, सुख पाऊँ शिव पाके।।3।।

ॐ ह्रीं पुष्पकइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक् चतुर्दशचतुदर्शश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'शातंकर' इंद्रक विमान के, चहुँदिश तेरह तेरह।
श्रेणीबद्ध विमान शोभते, सबमें शाश्वत जिनगृह।।
इनको पूजूँ भक्ति भाव से, सर्व अमंगल नाशूँ।
निज में निज को निज के द्वारा, पाकर स्वात्म प्रकाशूँ।।4।।

ॐ ह्रीं शातंकरइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रयोदशत्रयोदशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आरण' इंद्रक विमान अनुपम, इसके चारों दिश में।
श्रेणीबद्ध सु बारह बारह, दक्षिण दिश छठवें में।।
'आरण' इंद्र बसे उत्तर दिश, छठवें में अच्युत है।
इन इंद्रों के जिनगृह पूजूं, मिले स्वपद अच्युत है।।5।।

ॐ ह्रीं आरणइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक्द्वादशद्वादशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अच्युत' इंद्रक मणिमय शाश्वत, इसके चारों दिश में।
ग्यारह ग्यारह श्रेणीबद्धे, विमान सोहें दिव में।।
इनके जिनगृह जिनबिंबों को, वंदत ही अघ हानें।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य चतुष्टय, पाकर शिवसुख ठानें।।6।।

ॐ ह्रीं अच्युतइंद्रकविमानतच्चतुर्दिक् एकादशएकादशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक जिनालय अर्घ्य

तीन शतक सत्तर विमान हैं, नाम प्रकीर्णक धारें।
आनत प्राणत आरण अच्युत, चार स्वर्ण के सारे।।

इनके शाश्वत जिनगृह उनमें, जिनप्रतिमायें सोहें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से, ये मुनिगण मन मोहें।।7।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतस्वर्गसंबंधित्रिशतसप्ततिप्रकीर्णक विमानस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

सखी छंद

'आनतसुरपति' गृह आगे, न्यग्रोध चैत्यतरु लागे।
तरु में चहुँदिश जिनप्रतिमा, वंदूँ गाऊँ जिन महिमा।।8।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षमूलभागविराजामनचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'प्राणत' देवेंद्र' महल के, न्यग्रोध चैत्यतरु चमके।
तरु में चहुँदिश जिनप्रतिमा, वंदूँ गाऊँ जिन महिमा।।9।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षमूलभागविराजामनचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आरण सुरपति' गृह सन्मुख, न्यग्रोध चैत्यतरु अद्भुत।
तरु में चहुँदिश जिनप्रतिमा, वंदूँ गाऊँ जिन महिमा।।10।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षमूलभागविराजामनचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अच्युत देवेन्द्र' भवन के, सन्मुख न्यग्रोध सुचमके।
तरु में चहुँदिश जिनप्रतिमा, वंदूँ गाऊँ जिन महिमा।।11।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षमूलभागविराजामनचतुर्दिक् चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौपाई

आनत इंद्र नगर अति सोहे। योजन बीस हजार जु होवे।।
पाँच वेदि के बाह्य बगीचे। जजूँ चैत्य तरु अतिशय ऊँचे।।12।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग विराजमान चतुश्चतचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्राणत इंद्र नगर सुखकारी। योजन बीस सहस विस्तारी।
वेदी बाहर वन अति सोहें। जजूँ चैत्य तरु सुरमन मोहें।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभागविराजमान चतुश्चतचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'आरण इंद्र' नगर अतिशायी। बीस सहस योजन सुखदायी।
चौतरफे उद्यान सुसोहें। चैत्यवृक्ष वंदत सुख होहे।।14।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग विराजमान चतुश्चतचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अच्युत इंद्र' नगर अति प्यारा। रहें देव देवी परिवारा।
चौतरफे उद्यान कहाये। चैत्यवृक्ष पूजत सुख पायें।।15।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रनगरसंबंधिचतुर्दिक् चतुर्वनस्थितचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग विराजमान चतुश्चतचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

आनत आदि चउ स्वर्गों के छह इंद्रक शाश्वत शोभे हैं।
त्रय शत चौबिस विमान श्रेणीबद्धे चहुँदिश में शोभे हैं।।
त्रय शत सत्तर सुविमान प्रकीर्णक सब मिल सप्त शतक ही।
इक सौ चालिस संख्याते योजन शेष असंख्य योजनों हैं।।

दोहा

इनके शाश्वत जिनभवन, सात शतक विख्यात।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, मिले सर्वसुख सात।।1।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणअच्युतसवर्गस्थितषट्इंद्रकविमानत्रयशत चतुर्विंशतिश्रेणी बद्धविमान त्रयशतसप्ततिप्रकीर्णकविमानस्थितसर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौबोल छंद

पचहत्तर हजार छह सौ जिनप्रतिमायें पद्मासन सोहें।
सबके सन्निध श्रीदेवी श्रुतदेवी आजू बाजू में हैं।।

सर्वाण्हयक्ष सानत्कुमार वर यक्ष मूर्तियां शोभ रहीं।
सौ इंद्रों से वंदित जिनवर प्रतिमायें पूजूँ सौख्य मही।।

ॐ ह्रीं आनतादिचतुःस्वर्गस्थितसप्तशतकजिनालयमध्यविराजमानपंचसप्तति सहस्रषट्शतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय जिनवर देव की, महिमा अपरंपार।
जिनकी मूर्ती भी यहां, चिंतित फल दातार।।1।।

आनत व प्राणत आरणाच्युत के विमान सु शाश्वते।
सित कुंद पुष्प स्फटिक मणि सम श्वेत अतिशय चमकते।।
आकाश के आधार ये निधिभृत अनादि अनंत हैं।
इन इंद्र के वर मौलि में वर कल्पवृक्ष सुचिन्ह है।।2।।

इक इंद्र के दो सहस इकहत्तर सुदेवी सोहतीं।
सौंदर्य गुण की खानि विक्रिय करें सुर मन मोहतीं।।
वर बीस सागर आयु आनत प्राणतेंद्रों की कही।
बाईस सागर आयु आरण अच्युतेंद्रों की कही।।3।।

आनत युगल के साढ़े तीन हि हाथ तुंग शरीर है।
आरण युगल के साढ़े हाथ उतुंग रम्य शरीर है।।
सब देव मूल शरीर से वहिं पर रहें नहिं जावते।
विक्रिय शरीर अनेक सुंदर धार कर यहां आवते।।4।।

सौधर्म सानत[1] ब्रह्म अरु महाशुक्र आनत आरणे।
छह दक्षिणेन्द्र प्रसिद्ध एक भवावतारी मुनि भणें।।

1. सानत्कुमार इन्द्र।

इनकी प्रमुख देवी इन्हीं के लोकपाल सुपुण्य से।
बस एक भव लें मुनि बनें शिव प्राप्त करते धन्य ये।।5।।

अणुव्रत धरें नर नारियां अरु महाव्रतिनी आर्यिका।
अच्युत सुरग तक जन्मते नहिं उपरि जाते चेलका[1]।।
समकित अणुव्रत युक्त पशु भी अच्युते तक जा सकें।
चउ स्वर्ग में मिथ्यात्व लिंगी नहिं कदाचित् जा सकें।।6।।

इन सोलहों ही स्वर्ग तक के देव गमनागम करें।
वर मेरु आदिक जिनगृहों की वंदना भक्ती करें।।
जिन पंच कल्याणक महोत्सव में यहाँ पर आवते।
अन्यत्र द्वीप समुद्र में धूमें यहाँ वहाँ जावते।।7।।

अच्युत सुरग तक देवियां दश विधों परिकर देवगण।
इससे उपरि नहिं हो सकें ये कल्पवासी देवगण।।
इनके अतुल सुख विभव को नहिं कोइ मुख से कह सकें।
धन धन्य हैं वे इंद्र गण जो मनुज हों शिव लहि सकें।।8।।

मैं नित नमूँ जिनगेह को जिनमूर्तियों को नित नमूँ।
सम्यक्त्व अमृतरस चखूँ मिथ्यात्व हालाहल वमूँ।।
वर चैत्यवृक्षों को नमूँ जिननाथ गुण चिंतन करूँ।
जिननाम मंत्र प्रभाव से इस मोहफणि को वश करूँ।।9।।

हे नाथ! ऐसी शक्ति दो अज्ञान बेल उखाड़ दूँ।
इस पुनर्भव का मूल कारण मृत्यु मल्ल पछाड़ दूँ।।
निज आत्मा को आप पदरज से हि परमात्मा करूँ।
क्षायिक विशुद्धी 'ज्ञानमती' से पूर्ण गुण संपद भरूँ।।10।।

घत्ता

जय जय श्री जिनवर, सर्व सौख्यकर, परमचिदंबर पुरुष तुम्हीं।
निज के गुण दे दो, निजपद दे दो, सब सुख दे दो नाथ! तुम्हीं।।11।।

1. वस्त्र सहित वेष से।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतआरणाच्युतस्वर्गस्थितसप्तशतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-60

नव ग्रैवेयक जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

नव ग्रैवेयक में जिनमंदिर, तीन शतक नौ जानो।
शाश्वत स्वर्णिम जिनमंदिर में, जिनप्रतिमा सरधानो।।
परम दिगंबर मुनिव्रत धारी, वहाँ जन्म लेते हैं।
उनके जिनमंदिर को पूजूँ, वे निज सुख देते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-वसंततिलका छंद

हे नाथ! जन्म मृति और जरा त्रयों को।
दीजे निवार जल से तुम पाद पूजूँ।।
शाश्वत जिनालय जिनेश्वर बिंब पूजूँ।
आनंद धाम गुणखान निजात्म पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! देह मन आगंतुक त्रितापा।
दीजे निवार पद में प्रभु गंध चर्चूं।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! सौख्य शतखंड किया करम ने।
दीजे अखंड सुख तंदुल को चढ़ाऊँ।।शाश्वत.।।3।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! कामरिपु ने जग में भ्रमाया।
दीजे निवार सित पुष्प तुम्हें चढ़ाऊँ।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! भूख चिर से बहु दुःख देती।
दीजे मिटाय चरु अमृत के चढ़ाऊँ।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! मोहतम से घट में अंधेरा।
कीजे प्रकाश तुम आरति मैं उतारूँ।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! धूपघट में वर धूप खेऊं।
दीजे सुशक्ति गुण कीर्ति सुगंध फैले।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! आश बहु लेकर पास आया।
पूरो मनोरथ सरस फल को चढ़ाऊँ।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

हे नाथ! रत्नत्रय हेतु सुअर्घ लेके।
अर्पूं तुम्हें सकल सौख्य अनर्घ कीजे।।शाश्वत.।।9।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थितत्रयशतकनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

कुंद पुष्प सम श्वेत, मणिमय सर्व विमान हैं।
जिनवर चैत्य निकेत, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

इंद्रक 'सुदर्शन' मणिमयी उसके चतुर्दिश पंक्ति से।
दश दश सुश्रेणीबद्ध संख्यातीत योजन के दिपें।।
इन सर्व में जिनधाम चिंतामणि जिनेश्वर मूर्तियाँ।
मैं पूजहूँ अतिभक्ति से चैतन्य सुख दें मूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुदर्शनइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् दशदशश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'अमोध' विमान के चहुँदिश सुश्रेणीबद्ध हैं।
नव नव कहें नूतन गुणों के युक्त वहँ अहमिंद्र है।।इन.।।2।।

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयकेअमोघइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् नवनवश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सुप्रबुद्ध' विमान इंद्रक, रत्नमयि अति सोहता।
अपने चतुर्दिश आठ-आठ विमान से मन मोहता।।इन.।।3।।

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुप्रबुद्धइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् अष्टअष्टश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'यशोधर' शुक्ल है इसके चतुर्दिश सोहते।
वर सात सात विमान श्रेणीबद्ध सुरमन मोहते।।इन.।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यग्रैवेयके यशोधरइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् सप्तसप्तश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक 'सुभद्र' विमान है इसके चतुर्दिश में दिपें।
छह-छह विमान सुरत्न के अहमिंद्र सुर इनमें बसें।।
इन सर्व में जिनधाम चिंतामणि जिनेश्वर मूर्तियाँ।
मैं पूजहूँ अतिभक्ति से चैतन्य सुख दें मूर्तियाँ।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यग्रैवेयकेसुभद्रइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् षट्षट्श्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सुविशाल' इंद्रक फटिकमणि इसके चतुर्दिश शोभते।
शुभ पाँच पाँच विमान श्रेणीबद्ध सुर मन लोभते।।इन.।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यग्रैवेयके सुविशालइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् पंचपंचश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सुमनस' सुइंद्रक बर्फसम इसके चतुर्दिश में दिपें।
सित चार चार विमान श्रेणीबद्ध में सुरगण बसें।।इन.।।7।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सुमनइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् चतुश्चतुःश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सौमनस' इंद्रक शशिकिरण सम श्वेत उसके चार दिश।
त्रय त्रय विमान बने वहाँ अहमिंद्र गण सुख में निरत।।इन.।।8।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सौमनसइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् त्रित्रिश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इंद्रक सु 'प्रीतिंकर' फटिकमणि में सभी सुर प्रीति से।
रहते इन्होंके चतुर्दिश दो दो विमान सुपंक्ति से।।इन.।।9।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके प्रीतिंकरइन्द्रविमानतच्चुर्दिक् द्वयद्वयश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रकीर्णक जिनालय अर्घ्य

मध्यम त्रयों ग्रैवेयकों में प्रकीर्णक बत्तीस हैं।
इनमें रहें अहमिंद्र गण ये सर्व कल्पातीत हैं।।

इन सर्व में जिनधाम चिंतामणि जिनेश्वर मूर्तियाँ।
मैं पूजहूँ अतिभक्ति से चैतन्य सुख दें मूर्तियाँ।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यग्रैवेयकेषुद्वात्रिंशत् प्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

त्रय ऊर्ध्व ग्रैवेयक वहाँ बावन प्रकीर्णक शोभते।
इनमें सदा अहमिंद्र गण जिभक्ति से अघ धोवते।।इन.।।11।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयकेषुद्वापंचाशत्प्रकीर्णकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य शंभु छंद

त्रय अधस्तने ग्रैवेयक में इकसौ ग्यारह सित विमान हैं।
त्रय मध्यम में इक सौ सातहिं, त्रय ऊरध में इक्यानवे हैं।।
संख्याते योजन के विमान क्रम से त्रय अठरह सत्रह हैं।
बाकी के असंख्यात योजन इनके जिनगृह को वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं अधस्तनग्रैवेयकस्थितएकशतएकादशविमानमध्यग्रैवेयकस्थितएकशत–सप्त विमानऊर्ध्वग्रैवेयकस्थितएकनवतिविमानस्थितसर्वत्रयशतनवजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तेतीस हजार तीन सौ बाहत्तर जिनप्रतिमायें इनमें।
ये पद्मासन अतिशय सुंदर मणिमय रत्नों की मुनि प्रणमें।।
इनकी पूजा वंदन भक्ती भव भव के कल्मष धोती है।
जो मन में इनका ध्यान करें शिवरमणी उन वश होती है।।2।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकेषु त्रिशतनवजिनालयमध्यविराजमानत्रयस्त्रिंशत् सहस्रत्रिशतद्वास सप्ततिप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ग्रैवेयक के जिनभवन, जिनप्रतिमा अभिराम।
नमूँ नमूँ नव कोटि से, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

भुंजगप्रयात छंद

नमूँ मैं नमूँ मैं नमूं मैं जिनंदा।
नमूं मैं नमूं मैं नमूं सौख्य कंदा।।
दिगंबर मुनी जो सदा शील पालें।
त्रयोदशा चरित औ क्रिया को संभालें।।2।।

सु अंगादि पूरब महा शास्त्र ज्ञानी।
धरें शुद्ध सम्यक्त्व हैं आत्मध्यानी।।
निजानंद में मग्न शुद्धोपयोगी।
वनों में विचरते धरें योग योगी।।3।।

वरण गंध रस और स्पर्श हीना।
सुचैतन्य चिन्मय चमत्कार भीना।।
सदा साम्य पीयूष पीते स्वयं ही।
अरी मित्र जीवन मरण एक सम ही।।4।।

करो संस्तुती आरती भी उतारो।
करो पाप वंदन महा भक्ति धारो।।
करो कोई निंदा मरमभेदि बोलो।
करो शस्त्र से घात भी कष्ट दे लो।।5।।

नहीं जो करें राग क्रोधदि मन में।
सदा सर्व हितकर क्रिया आचरें वे।।
मुनी वेहि ग्रैवेयकों में जनमते।
सदा सौख्य अहमिंद्र बन के लहें वे।।6।।

मुनी कोइ सम्यक्त्व बिन द्रव्यलिंगी।
जनम लें सकें ना वहां अन्य लिंगी।।
महारत्न सम्यक्त्व ही है जगत् में।
प्रभो! ना गिरे ये कभी भव उदधि में।।7।।

वहां आयु तेईस सागर से लेके।
सु इकतीस सागर है उत्कृष्ट तक के।।
तनू ढाई कर दोय कर डेढ़ कर है।
सभी शुक्ल लेश्या वरण शुक्लतम हैं।।8।।

न परिवार सुर देवियां ना इन्हों के।
नहीं है गमन आगमन भी कहीं पे।।
सभी देव अहमिंद्र हैं एक सम हैं।
सभी जैन हैं तत्त्वचर्चा मगन हैं।।9।।

सभी जैनप्रतिमा जजें भक्ति भावे।
करें वंदना प्रेम से शीश नावें।।
अनंतों भवों के करम को नशावें।
भवाब्धी तिरें एक दो भव धरावें।।10।।

दोहा

नग्न दिगंबर मुनि नमूँ, नमूँ नमूँ जिनधाम।
'ज्ञानमती' पूरी करो, मिले स्वात्म विश्राम।।11।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकस्थितत्रिशतनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-61

नव अनुदिश जिनालय पूजा

अथ स्थापन-गीता छंद

नव अनुदिशों में नव जिनेश्वर धाम शाश्वत जानिये।
सब भावलिंगी मुनि वहाँ पर जन्मते यह मानिये।।
इनके जिनेश्वर बिंब को आह्वानन कर पूजूँ यहाँ।
बस धर्म ध्यान सदा रहे दुख आर्त से छूटूँ यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-गीता छंद

जग में अनादी से प्रभो! तृष्णा अधिक दुख दे रही।
इसलिये तुम पद कमल में त्रय धार दे पूजूँ यहीं।।
नव अनुदिशों के जिनभवन शाश्वत जिनेश्वर मूर्तियां।
पूजूँ उन्हें नवनिधि मिले हों सब मनोरथ पूर्तियां।।1।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

जग में तनू मन और आगंतुक त्रिताप दहें सदा।
इनके निवारण हेतु जिनवर गंध से अर्चूं मुदा।।नव.।।2।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

संसार सुख है कर्मवश शत खंड खंडों में बंटा।
अक्षय अखंडित सुख मिले नव पुंज धर पूजूँ मुदा।।नव.।।3।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

अपयश उदय से गुणों को दुर्गुण कहें दुर्जन सदा।
सुरभित कुसुम से पूजते गुण कीर्ति सौरभ हो सदा।।नव.।।4।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

तिहुँलोक का भी अन्न खाया भूख अबतक ना मिटी।
अतएव मोदक थाल भर ले पद जजूँ मनसा जगी।।नव.।।6।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

ये कर्म आठों दुःख देते किस विधी से नष्ट हों।
वर धूप खेऊँ अग्नि में ये कर्म वैरी भस्म हों।।नव.।।7।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

संसार सुख की आशा से बहु देव की शरणा लिया।
अब मोक्ष फल की आश से फल से जजूँ निर्णय किया।।नव.।।8।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

जल गंध आदिक अर्घ में नवरत्न धर अर्पण करूँ।
नव नव सुखों को प्राप्तकर त्रय रत्न निज कर में धरूँ।।नव.।।9।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थितनवजिनलायजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अनुदिश शुक्ल विमान, इनमें सुर अहमिंद्र हैं।
नव जिनगृह सुखखान, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल-शेर

'आदित्य' है इंद्रक विमान रत्न से बना।
इसमें जिनेन्द्र धाम साधु चित्त मोहना।।
शाश्वत जिनेन्द्र धाम की मैं अर्चना करूँ।
निज पद मिले जगत में पुनर्जन्म ना धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं आदित्यइन्द्रकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूरब दिशी 'लक्ष्मी' विमान श्रेणिबद्ध है।
योजन सु असंख्या धरे मणिनिबद्ध है।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं आदित्यइन्द्रपूर्वदिक् लक्ष्मीनामश्रेणीबद्धविमानस्थितजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दक्षिण में 'लक्ष्मी मालिनी' विमान शोभता।
अहमिंद्र सुरों का निवास चित्त मोहता।।शाश्वत.।।3।।

ॐ ह्रीं आदित्यइन्द्रविमानदक्षिणदिक् लक्ष्मीनामश्रेणीबद्धविमान स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आदित्य के पश्चिम में 'वज्र' नाम को धरे।
हीरक विमान में सदा अहमिंद्र सुख भरें।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं आदित्यइन्द्रविमानपश्चिमदिक्वज्रनामश्रेणीबद्धविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिशी 'वैरोचिनी' विमान सोहना।
उज्ज्वल सफेद रत्न से सुर चित्त मोहना।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं आदित्यइन्द्रविमानउत्तरदिक्वैरोचिनीनामश्रेणीबद्धविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'सोमार्य'[1] प्रकीर्णक इशान दिक् में दिपे है।
जिनगृह यहां पे मध्य में अहमिंद्र जजे हैं।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं सौमार्यप्रकीर्णकविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

आग्नेय में है 'सोमरूप' नाम का विमान।
जिनगृह यहाँ पे एक है अतिशायि गुण निधान।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं सौमरूपप्रकीर्णकविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नैऋत्य में सित अंक नाम का विमान है।
जिनगेह से जिनधर्म से गुणरत्न खान है।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं अंकनामप्रकीर्णकविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वायव्य में सित 'स्फटिक' नामा विमान है।
जिनगृह यहाँ पे एक भी शिव सुख निधान है।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रकीर्णकविमानस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नव अनुदिशों में नव विमान शोभ रहे हैं।
इंद्रक व श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक सु कहे हैं।।
संख्यात योजन इंद्रक आठों असंख्य के।
अहमिंद्र के जिनगृह नवों पूजूँ रुची धरके।।1।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशसंबंधिएकइन्द्रविमानचतुःश्रेणीबद्धविमानचतुःप्रकीर्णक विमान स्थितनवजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. त्रिलोकसार में नव अनुदिश के अचि, अर्चिमालिनी, वैर, वैरोचन, सोम, सोमरूप, अंक और स्फटिक ये नाम हैं। (त्रिलोकसार गाथा 456।) यहाँ तिलोयपण्णत्ति के अनुसार नामों में अंतर है।

जिनगेह में जिनबिंब इक सौ आठ-आठ हैं।
नव जिनगृहों में नव सौ बहत्तर विख्यात हैं।।
मणिमय जिनेन्द्र बिंब की मैं अर्चना करूँ।
संपूर्ण दुःख क्षय निमित्त प्रार्थना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशसंबंधिनवजिनालयमध्यविराजमाननवशतद्वासप्ततिजिन प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, जय जय जिनवर जिनप्रतिमायें।
जय सर्व हितंकर प्रीतिंकर, जय शाश्वत मणिमय प्रतिमायें।।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, मंगल करणी भवदधि तरणी।
जय चिन्मय चिंतामणि चेतन को परमानंद सुख निर्झरणी।।1।।

जय जय निर्ग्रंथ दिगंबर मुनि, रत्नत्रय गुण निधि के स्वामी।
जय नव अनुदिश में जन्म लहें, अहमिंद्र बने सुख विश्रामी।।
जय आत्म ज्योति अनुपम ज्योती त्रैलोक्य प्रकाशित करती है।
जय जय आतम सुख रस भोगी, मुनिमन को द्योतक करती है।।2।।

जय जय जिन ज्ञान ज्योति भास्कर,
भविजन मन कमल विकासी है।
अज्ञान अंधेरा दूर करे, सब लोकालोक प्रकाशी है।।
मैं सुखी दुखी मैं संसारी, मैं सुर नारक पशु मानव हूँ।
मैं बाल वृद्ध हूँ युवा तथा, स्त्री पुरुष नपुंसक दानव हूँ।।3।।

मैं रोगी शोकी नानविधि, व्याधी पीड़ा से पीड़ित हूँ।
मैं दुर्जन दुष्ट उपद्रव से, परिषह दुख से अति पीड़ित हूँ।।
नाना विध इन परभावों में, जब तब उपयोग लगा रहता।
नहिं आत्म सुधारस सुख मिलता, इनमें ही चित्त भ्रमा रहता।।4।।

हे नाथ! आपकी भक्ती से, बहिरात्म अवस्था को छोड़ूँ।
इन सब विभाव परभावों से, दुर्ध्यानों से मन को मोड़ूँ।।
प्रभु ऐसी शक्ती दो मुझको, निज आत्मा से नाता जोड़ूँ।
मैं सिद्ध सदृश परमात्मा हूं, निज आत्मा से नाता जोड़ूँ।।5।।

सोहं शुद्धोहं सिद्धोहं, चिन्मय चिंतामणि रूपोहं।
नित्योहं ज्ञान स्वरूपोहं, आनत्यचतुष्टय रूपोहं।।
मैं नित्य निरंजन परमात्मा का, ध्यान करूँ गुणगान करूँ।
सोहं सोहं रटते रटते, परमात्म अवस्था प्राप्त करूँ।।6।।

हे कृपासिंधु! करुणा करिये, बस यही आश पूरी करिये।
तुम चरणों में स्थान मिले, ऐसी युक्ती मुझमें भरिये।।
मैं अल्प ज्ञानमति हूँ स्वामिन्, बस पूर्ण 'ज्ञानमती' कर दीजे।
जब तक नहिं इष्ट फले मेरा, तब तक चरणों में रख लीजे।।7।।

दोहा

अनुदिश के अहमिंद्र सब, सम्यग्दृष्टि सिद्ध।
नमूँ इन्हों के जिनभवन, पाऊँ नव निधि रिद्धि।।8।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशसंबंधिनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-62

पंच अनुत्तर जिनालय पूजा

अथ स्थापन-नरेन्द्र छंद

विजय वैजयंता जयंत अपराजित चहुंदिश सोहें।
मध्य धवज सर्वार्थसिद्ध इंद्रक सुरगण मन मोहे।।
इन पाँचों के पाँच जिनालय, आह्वानन कर पूजूँ।
शिव कन्या के लिये स्वयंवर, मंडप सम नित पूजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलायजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-चामर छंद

बर्फ के समान शीत स्वच्छ नीर ले लिया।
चर्ण में त्रिधार दे निजात्म शांति पा लिया।।
पाँच आनुत्तरों के जैनगेह मैं जजूँ।
पांचवीं गती मिले अनंत सौख्य को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

गंध है सुगंध श्वेत चंदनादि मिश्र हैं।
चर्ण में चढ़ावते समस्त ताप नष्ट हैं।।पांच.।।2।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

चंद्र के समान श्वेत शालिपुंज से जजूँ।
स्वात्म के अखंड सौख्य गुणनिधान को भजूँ।।पांच.।।3।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

मल्लिका गुलाब श्वेत गंध को बिखेरते।
पुष्पमाल से जजूँ अपूर्व सौख्य घेरते।।पांच.।।4।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

सेमई मलाइ खीर को चढ़ाय हूँ तुम्हें।
समस्त भूख प्यास व्याधि शांत हो क्षणेक में।।पांच.।।5।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रत्नदीप की शिखा से आरती उतारते।
ज्ञान ज्योति आत्म में जगे तमो निवारते।।पांच.।।6।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

धूप खेवते सुगंधि धूम्र चार दिश उड़े।
पाप कर्म भस्म हों अपूर्व पुण्य भी बढ़े।।पांच.।।7।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

नारिकेल इक्षु मिष्ठ संतरादि फल लिये।
नाथ को चढ़ावते शिवांगना वशी किये।।पांच.।।8।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अर्घ में अनर्घ रत्न मोतियों के पुंज हैं।
नाथ को चढ़ावते निजात्म रत्न हेतु हैं।।पांच.।।9।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनलयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

मुनि मन सम पावन धवल, जल से धारा देत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म निकेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कुमुद बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

अनुत्तरों के पाँच, जिनगृह फटिकमणी बने।
मिले परमपद पाँच, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

'सर्वार्थ सिद्धी' नाम इंद्रक मध्य में अतिशोभता।
इक लाख योजन व्यास का अतिगोल है मन मोहता।।
इस मध्य जिनवर धाम शुभ सवार्थसिद्धी हेतु है।
जिनमूर्तियां हीरकरतनमयि पूजते शिव हेतु हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिइंद्रकविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सित 'विजय' नाम विमान संख्यातीत योजन पूर्व में।
इनमें रहे अहमिंद्र नरभव दो लहें फिर शिव गमें।।
इस मध्य जिनवर धाम शाश्वत स्वर्णमणिमय श्वेत है।
जिनमूर्तियां हीरकरतनमयि पूजते शिव हेतु हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिविमानपूर्वदिक्विजयनामश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दक्षिण दिशा में 'वैजयंत' विमान श्रेणीबद्ध हैं।
इसमें रहें अहमिंद्र सम्यग्दृष्टि जिनवर भक्त हैं।।
इस मध्य जिनवर धाम शाश्वत स्वर्णमणिमय श्वेत है।
जिनमूर्तियां हीरकरतनमयि पूजते शिव हेतु हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिदक्षिणदिक्वैजयंतनामश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पश्चिम दिशा में सित 'जयंत' विमान अतिशय गोल है।
इसमें रहें अहिमंद्र गण करते निजात्म किलोल हैं।।
इस मध्य जिनवर धाम शाश्वत स्वर्ण मणिमय श्वेत है।
जिनमूर्तियां हीरकरतनमयि पूजते शिव हेतु हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिपश्चिमदिक्जयंतनामश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तरदिशी 'अपराजिता' सुविमान अतिशय मान्य है।
अहमिंद्र गण द्विभवावतारी यहां लें विश्राम हैं।।

इस मध्य जिनवर धाम शाश्वत स्वर्णमणिमय श्वेत हैं।
जिनमूर्तियां हीरकरतनमयि पूजते शिव हेतु हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिउत्तरदिक्अपराजितनामश्रेणीबद्धविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सर्वार्थसिद्धिविमान एकहि लाख योजन गोल है।
विजयादि चार असंख्य योजन विस्तृतें अनमोल हैं।।
इनमें रहें अहिमंद्रगण ये मुक्ति के अतिनिकट हैं।
इनके जिनेश्वर धाम पूजूँ स्वात्मपद मुझ निकट है।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिइंद्रकविमानविजयवैजयंतजयंतापराजितनामचतुःश्रेणीबद्ध विमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनगेह में जिनमूर्ति इक सौ आठ-इक सौ आठ हैं।
हीरक रतनमय पाँच सौ चालिस सभी विख्यात हैं।।
गणधर मुनीश्वर चक्रवर्ती इंद्रगण से वंद्य हैं।
मैं पूजहूँ ये सिद्धि खुक की हेतु हैं अभिनंद्य हैं।।2।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनालयमध्यविराजमानपंचशतचत्वारिंशतजिन प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

पांच अनुत्तर के सुखद, पांच जिनालय नित्य।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले स्वात्मसुख नित्य।।1।।

स्राग्विणी छंद

मैं नमूँ मैं नमूँ नाथ की भक्ति से।
पाऊँ सर्वार्थसिद्धी प्रभू भक्ति से।।

हे प्रभो! पूरिये एक ही कामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

मध्य सर्वार्थसिद्धी सु इंद्रक वहाँ।
एक लख योजनों गोल विस्तृत वहाँ।।हे.।।3।।

श्रेणिबद्धे विमाना कहें चार हैं।
ये असंख्यात योजन सुविस्तार हैं।।हे.।।4।।

देव अहमिंद्र सब शुक्ल लेश्या धरें।
आयु तेतीस सागर सु उत्कृट भरें।।हे.।।5।।

इंद्र सर्वार्थसिद्धी के इक भव धरें।
देह मानव लहें मुक्ति कन्या वरें।।हे.।।6।।

इंद्र विजयादि के दो मनुज तन धरें।
फेर निर्णीत है मुति लक्ष्मी वरें।।हे.।।7।।

जो यहां साधु हो घोर तप आचरें।
शुद्ध उपयोग से स्वात्म चिंतन करें।।हे.।।8।।

चौदहों पूर्व के ज्ञान को धारते।
शुद्ध सम्यक्त्व चारित्र को पालते।।हे.।।9।।

साम्य पीयूष वाराशि को ग्राहते।
श्रेष्ठ सर्वार्थसिद्धि वही पावते।।हे.।।10।।

मैं नमूँ मैं नमूँ पंच जिनधाम को।
पाऊँ पंचम गती श्रेष्ठ निवार्ण को।।हे.।।11।।

मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व जिनबिंब को।
पाऊँ चिंतामणि स्वात्म चित्पिंड को।।हे.।।12।।

मैं नमूँ भावलिंगी महासाधु को।
पाऊँ स्वात्मैक सिद्धी निजी पास जो।।हे.।।13।।

घत्ता

शुभ पंच अनुत्तर, पंचम गतिकर, जिनवरगृहधर, पूज्य बने।
ये 'ज्ञानमती' हित, निज सुख संपत, देते सुखप्रद, नित्य नमें।।14।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-63

सिद्ध शिला पूजा

अथ स्थापन-शंभु छंद

श्री सिद्धशिला नरलोक मात्र पैंतालिस लाख सुयोजन है।
त्रैलोक्य शिखर पर अष्टम भू, पर रुक्मी[1] अर्ध चंद्र सम है।।
श्री सिद्ध अनंतानंत इसी पर तिष्ठें अष्ट गुणान्वित हैं।
आह्वानन कर इनको पूजूँ, ये देते सौख्य अपरिमित हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-शंभु छंद

श्री सिद्ध सुयशसम उज्ज्वल जल, लेकर झारी भर लाया हूँ।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्रीसिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पा करके, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अतिशीतल, चंदन घिसकर के आया हूं।
निज की शीतलता पाने को, प्रभू चरण चढ़ाने आया हूँ।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

---

1. चाँदी की सिद्धशिला है।

श्री सिद्ध सौख्य सम खंड रहित, उज्ज्वल तंदुल ले आया हूँ।
जिन आत्म सौख्य पाने हेतु, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्धगुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाया हूँ।
निज गुण सुगंधि पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाया हूँ।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध पुष्टि सम नानाविध, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आत्म तृप्ति पाने हेतु, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाया हूँ।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतु, मैं आरति करने आया हूँ।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों की सुरभि सदृश, वर धूप सुगंधित लाया हूँ।
निज आत्म सुरभि पाने हेतु, अग्नी में धूप जलाया हूँ।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध सुखामृत सदृश मधुर, रसभरे बहुत फल लाया हूँ।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवन्! फल आज चढ़ाने आया हूँ।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः फलं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों के सम अनर्घ, यह अर्घ सजाकर लाया हूँ।
निज तीन रत्न पाने हेतु, प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा

सिद्धशिला पर आज, मन से जल धारा करूँ।
पूर्ण शांति साम्राज्य, मिले त्रिजग में शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सिद्ध शिला पर आज, पुष्पांजलि मन से करूँ।
मिले सिद्धि साम्राज्य, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सिद्ध शिला को पूजते, सर्व कार्य हों सिद्ध।
पुष्पांजलि कर पूजते, हों प्रसन्न सब सिद्ध।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

इस जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र, में कर्म भोग भू आदिक हैं।
निज इच्छा से उपसर्गादिक, से सिद्ध हुये मुनि आदिक हैं।।
जिस जिस थल से निर्वाण गये, बस वहीं शिला पर पहुँच गये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं, मेरे सब वांछित सिद्ध भये।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस द्वीप में सत्रह लाख बानवे, हजार नब्बे नदियां हैं।
ये शाश्वत हैं कृत्रिम उपसागर, सरवर आदिक नदियाँ हैं।।
इन नदियों से उपसर्ग आदि से बहुत मुनीश्वर मुक्त हुये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं मेरे सब इच्छित पूर्ण हुये।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिअकृत्रिमनंदीकृतिमउपसागरनदीसरोवरतडागादिजल–स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस जंबूद्वीप में मेरु आदि त्रय शत ग्यारह पर्वत मानों।
ये शाश्वत हैं कृत्रिम बहुते सम्मेदशिखर आदिक जानों।।
इनसे इन मध्य गुफाओं से मेरु की मध्य गुफा से भी।
वृक्षादिक से जो सिद्ध हुये इन नभ सिद्धों को जजूँ अभी।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिअकृत्रिमसुमेर्वादिपर्वतकृत्रिमसम्मेदशिखरादिपर्वतेभ्यः सिद्ध पदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लवणोदधि में लंकादि द्वीप कूभोगभूमि बहु स्थल हैं।
वहाँ से जो मुनिवर मुक्त हुये उपसर्ग व इच्छा के वश हैं।।
इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये भव दुख हरने वाले हैं।
ये स्थलसिद्ध अनंतें हैं ये सब सुख करने वाले हैं।।4।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपकुभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपद प्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्वीपों के नदी सरोवर से लवणोदधि के जल ऊपर से।
उपसग आदि के कारण से बहुते मुनिवर शिवपुर पहुँचे।।
इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये परमानंदाबुधि में न्हावें।
ये जल से सिद्ध अनंतें हैं इनको वंदत निज सुख पावें।।5।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपमध्यस्थितनदीसरोवरकूपतडागादिजलसमुद्र जलस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लवणोदधि मध्य हंस आदिक लंकादि द्वीप में पर्वत हैं।
इन पर से सिद्ध हुये जो मुनि उपसर्ग आदि के कारण हैं।।
लवणोदधि वेदी ऊपर से या वहीं अन्य वृक्षादिक से।
जो सिद्ध हुये उनको पूजूँ जिससे निजात्म शक्ती प्रगटे।।6।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपस्थितत्रिकूटाचलादिपर्वतेभ्यः सिद्धपदप्राप्त सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वरद्वीप धातकी खंड द्वितिय में कर्मभूमि अरु भोगभूमि।
वन उपवन की भूआदि स्थल से सिद्ध हुये पावनभूमी।।
तीर्थंकरगण मुनिगण बहुते सब कर्म काटकर मुक्त हुये।
उपसर्ग आदि से सब थल से उन पूजत सौख्य अनंत लिये।।7।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्त सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस द्वीप धातकी में कृत्रिम अकृत्रिम अगणित नदियाँ हैं।
सब आर्यखंड में उपसागर सरवर कूपादिक नदियाँ हैं।।
इन सबके जल के ऊपर से बहुतेक साधु गण मुक्ति गये।
चारण ऋद्धीधर या उपसर्ग आदि से हम उन जजत भये।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमनदीउपसागरकूपतडागादिजल–स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस धातकि में दो मेरु अन्य अगणित पर्वत कूटादिक हैं।
धात्री तरु शाल्मलितरु आदि बहुविध उपवन तरु आदिक हैं।।
इन नभस्थान से सिद्ध हुये ऋद्धीबल उपसर्गादिक से।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं आतमनिधि मिल जावे जिससे।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिमेवादिपर्वतकृत्रिमपर्वतकृत्रिमअकृत्रिमवृक्षादिन भस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कालोदधि मध्य कुभोगभूमि से मागध आदि द्वीप थल से।
चारणऋशि या उपसर्ग आदि कारण से मुनि शिवपुर पहुँचे।।
वर द्वीप जलधि के वेदी के थल से भी जो मुनि सिद्ध हुये।
उन सब सिद्धों को पूजूं मैं ये मेरे सिद्धि निमित्त हुये।।10।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कालोदधि के जल से कुभोगभूमि के नदी सरोवर से।
चारण ऋषि मुनि या उपसर्गादिक से मुनिगण शिवपुर पहुंचे।।
इन जल से मुक्ति प्राप्त मुनि को मैं नितप्रति शीश झुकाता हूं।
इन सब सिद्धों को अर्घ चढ़ाकर शिव की आश लगाता हूँ।।11।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुलोगभूमिआदिमध्यस्थितनदीसरोवरसमुद्रजलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस सागर मध्य कुभोगभूमि मागध सुर आदि निवास बनें।
उनमें जो पर्वत कूट शिखर तरु आदि नभस्थल हों जितने।।

उन पर से जो मुनि सिद्ध हुये उन सबको वंदन करता हूँ।
सब इष्ट वियोग अनिष्ट योग टल जावे अर्चन करता हूँ।।12।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिमागधद्वीपादिमध्यस्थितपर्वतकूटवृक्षादि-स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्करवर द्वीप मध्य वलयाकृति मनुजोत्तर पर्वत सोहे।
इस परे मनुष नहिं जा सकते इस तक नरलोक चित्त मोहे।।
इसमें जो कर्मभूमि अरु भोगभूमि वन उपवन स्थल हैं।
उन सबमें सिद्ध हुये जिनवर मुनिगण उन सबको वंदन है।।13।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिवनउपवनवेदिकादिस्थलेभ्यः सिद्धपद प्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में गंगादिक अगणित अकृत्रिम नदियां हैं।
कृत्रिम सरवर कूपादि तथा उपसागर आदिक नदियां हैं।।
इन जल से चारण बल से या उपसर्ग आदि से सिद्ध हुये।
उन सबको पूजूँ अर्घ चढ़ा मेरे सब मनरथ सफल हुये।।14।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकृत्रिमअकृत्रिमनदीसरोवरउपसागरकूपतडागादि-जलेभ्यः सिद्धपद प्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

इस पुष्पकरार्ध में दो मेरु हिमवन आदिक बहुपर्वत हैं।
शाश्वत पर्वत कृत्रिम पर्वत इन गुफा कंदरा आदिक हैं।।
इन ऊपर से मुनि सिद्ध हुये पुष्कर शाल्मलि तरु आदिक से।
इन सब सिद्धों को पूजूँ मैं रत्नत्रय निधी मिले जिससे।।15।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिअकृत्रिमकृत्रिमपर्वततन्मध्यगुहादिवृक्षादि-स्थानेभ्यः सिद्धपद प्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

यह सिद्धशिला पैंतालिस लाख सुयोजन मनुज लोक प्रम है।
सर्वतत्र अनंतानंदत सद्धि से भरी अकृत्रिम अनुपम है।।
गणधर मुनिगण से वंद्य शिला इसको मेरा शत शत वंदन।
यह सिद्ध शिला जब तक न मिले, तब तक इसको शत शत वंदन।।16।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितपंचचत्वारिंशल्लक्षयोजनप्रमाणसिद्धशिलायै अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इन ढाई द्वीप दो सागर तक पैंतालिस लाख सुयोजन है।
यह मनुज लोक इसमें ही मानव मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।।
इसमें थल जल पर्वत चोटी आदिक सब थल से सिद्ध हुये।
अणुमात्र जगह नहिं रिक्त यहाँ सब सिद्धों को मैं धरूँ हिये।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपद्विसमद्रमितमनुष्यलोकस्थितसर्वजलस्थलपर्वतवृक्षगुहा दिस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

जय जय त्रिलोक शिखर अग्र सिद्ध शिला है।
जय जय त्रिलोक शिखर अग्र मोक्ष इला[1] है।।
जय जय अनंतानंत सिद्ध इसपे राजते।
जय जय त्रिकाल सिद्ध अनंत गुण से भासते।।1।।

सर्वार्थ सिद्धि इंद्रक के ध्वजादंड से।
बारह सुयोजनोपरि भू आठवीं लसे।।
यह पूर्व अपर दिश में सुएक राजू है।
उत्तर दखिन के कुछ कम यह सात राजु है।।2।।

योजन सुआठ मोटी वायूवलय घिरी।
घनउदधि घनवायु तनुवायु से घिरी।।
इस मध्य 'ईषत्प्राग्भार' नाम क्षेत्र है।
चांदी सुवर्ण रत्नपूर्ण सिद्धक्षेत्र है।।3।।

1. भूमि।

उत्तान धवल छत्र सदृश सिद्धशिला ये।
योजन सुपैंतालिसलाख सिद्धशिला ये।।
ये आठ योजन मध्य में फिर अंततक घटती।
नरलोक के प्रमाण है इस क्षेत्र की परिधी[1]।।4।।

यह अर्ध चंद्रसम त्रिलोक अग्रभाग में।
अनंत अनंत सिद्ध वहां राजते निज में।।
तीर्थेश होके सिद्ध अनंते वहाँ तिष्ठे।
तीर्थेश बिना सिद्ध अनंतानंत वहाँ पे।।5।।

जल थल व गगन से अनंत सिद्ध हुये हैं।
सामान्यकेवलि अंतकृत केवलि भि सिद्ध हैं।।
उत्कृष्ट पाँच सौ पचीस धनु शरीर से।
जघन्य साढ़े तीन हाथ देह मात्र से।।6।।

मध्यम अनके विधि की अवगाहना धरें।
ये सिद्ध हुये हम उन्हों को चित्त में धरें।।
जो उर्ध्व लोक अधोलोक तिर्यक लोक् से।
सब कर्म नाश सिद्ध हुये मर्त्यलोक से।।7।।

उत्सर्पिणि अवसर्पिणी के छहों काल से।
उपसर्ग निमित्त सिद्ध हुये नमूँ भाल से।।
उपसर्ग बिना सिद्ध चौथे काल से हुये।
इन पाँच भरत पांच ऐरावत से शिव गये।।8।।

दो ज्ञान त्रय व चार से कैवल्य पायके।
जो सिद्ध हुये हैं अनंत सौख्य पायके।।
जो साधु संहरण से सिद्ध हो गये यहां।
बिन संहरण अनंत सिद्ध हो रहे यहां।।9।।

1. तिलोयपण्णत्ति, अधिकार आठवां, गाथा 652 से।

कुछ साधु समुद्घात सिद्ध हुये है।
कुछ केवली बिन समुद्घात सिद्ध हुये हैं।।
खड्गासनो से सिद्ध भी अनंत हुये हैं।
पद्मासनों से भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।10।।

सब्र द्रव्य से पुंवेदी ही सिद्ध हुये हैं।
हां भाव से त्रश्य वेद से भी सिद्ध हुये हैं।।
प्रत्येक बुद्ध स्वयंबुद्ध सिद्ध हुये हैं।
बोधित प्रबुद्ध भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।11।।

सब आठ कर्म नाश करके सिद्ध हुये हैं।
वे इक सौ अड़तालीस प्रकृति नष्ट किये हैं।।
सब सिद्ध अंतिम देव से कुछ न्यून कहे हैं।
इस विध से अन्त्यदेह के आकार रहे हैं।।12।।

से सर्व सिद्ध गुण अनंतानंत धारते।
से सर्व सिद्ध सुख अनंतानंत धारते।।
से सर्व सिद्ध जन्म मरण शून्य हो गये।
ये सर्व सिद्ध ज्ञान गुण से पूर्ण हो गये।।13।।

इन ढाई द्वीप से अनंत सिद्ध हुये हैं।
दो ही समुद्र से अनंत सिद्ध हुये हैं।।
नरलोक में सब एकसौ सत्तर हैं कर्मभू।
नइमें जनम के प्राप्त करें मनुज मुक्तिभू।।14।।

नरलोक में अणुमात्र भी ना रिक्त थान है।
जहां से न हुये सिद्ध सब निर्वाण स्थान है।।
मेरु की चूलिका से भी सिद्ध हुये हैं।
वे मेरु की गुफा से ही सिद्ध हुये हैं।।15।।

अनंतानंत सिद्धों की वंदना करूँ।
मैं नित अनंतानंत बार वंदना करूँ।।

श्री सिद्धशिला को नमूँ मैं भक्ति भाव से।
ये सिद्धशिला प्राप्त करूँ भक्ति भाव से।।16।।

दोहा

नमूँ सिद्ध परमात्मा, सिद्धशिला मुनिवंद्य।
'ज्ञानमती' गुण पूर्णकर, पाऊँ परमानंद।।17।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-64

कृत्रिम जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

ढाई द्वीप में पाँच भरत हैं पाँच कहे ऐरावत।
पाँच महाविदेह क्षेत्रों में कर्मभूमि है शाश्वत।।
सुर नर निर्मापित बहु पूजित मुनि गण से नित वंदित।
जिनप्रतिमा जिनमंदिर अगणित थापूँ यहाँ जजूँ नित।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

मुनीचित्त सम नीर उज्जवल लिया है।
प्रभू पाद में तीन धारा किया है।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादि से मिश्र चंदन घिसाया।
प्रभूपाद अरविंद में मैं चढ़ाया।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले श्वेततंदुल धरूँ पुंज आगे।
मिले सौख्य अक्षय सभी दुःख भागे।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा केवड़ा पुष्प लाऊँ।
प्रभू को चढ़ाते निजी सौख्य पाऊँ।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ खीर मोदक इमरती चढ़ाऊँ।
क्षुधा व्याधि हरके अतुल तृप्ति पाऊँ।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणीदीप को ज्योति तम को हरे हैं।
करूँ आरती ज्ञानज्योती भरे है।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगी सुरभि धूप खेऊँ अगनि में।
जलें कर्म वैरी मिले शांति चित्त में।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास नींबू बिजौरा चढ़ाऊँ।
महामोक्ष की आश से शीश नाऊँ।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतपुष्प ले अर्घ अर्पण करूँ मैं।
प्रभो! रत्नत्रय हेतु अर्चन करूँ मैं।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

जिनप्रतिमा जिनरूप, चरणों में धारा करूँ।
मिले स्वात्म चिद्रूप, शांतीधारा शिव करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले स्वात्मसुख लाभ, चहुंगति भ्रमण विनाश हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

गणधर मुनिगण इंद्रगण, नित्य नमें नतशीश।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, नमूँ नमूँ जगदीश।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप के दक्षिण दिश में, भरत क्षेत्र सुखकारी।
छह खंडों में आर्यखंड इक कर्मभूमि अति प्यारी।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के उत्तर दिश में, ऐरावत अति सोहे।
छहखंडों में आर्यखंड इक कर्मभूमि जहँ होहैं।।इंद्र.।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के पूर्व अपर में क्षेत्र विदेह सुहावे।
बत्तिस कर्मभूमि में छह खंड आर्यखंड मन भावें।।इंद्र.।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वधातकी में दक्षिणदिश भरतक्षेत्र छह खंडा।
आर्यखंड में चौथे युग में तीर्थंकर सुखकंदा।।इंद्र.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में उत्तरदिश ऐरावत शुभ सोहे।
छह खंडों मधि आर्यखंड में कर्मभूमि मन मोहे।।इंद्र.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के पूर्वापर क्षेत्र विदेह सुहावे।
इसमें बत्तिस देश सभी में आर्यखंड मन भावे।।इंद्र.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालय-जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में दक्षिणदिश, भरतक्षेत्र छहखंडा।
आर्यखंड में छहपरिवर्तन कर्मभूमि सुखकंदा।।इंद्र.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालय-जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में उत्तर दिश, ऐरावत शुभक्षेत्रा।
छहखंडों मधि आर्यखंड में तृषित सुरों के नेत्रा।।इंद्र.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालय-जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में पूर्वापर महाविदेह कहावे।
उसमें बत्तिस देश सभी में कर्मभूमि मन भावे।।इंद्र.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्व-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर पूर्वपुष्करद्वीप में दक्षिण दिशी शुभ भरत है।
इसमें छहों खंड मध्य में इक आर्यखंड सुलसंत है।।

सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पूर्वपुष्करद्वीप में उत्तरदिशी ऐरावता।
छहखंड में इक आर्य है नर जन्म लेते सासता।।सुर.।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पूर्वपुष्करद्वीप में पूरब व पश्चिम दिक्क में।
बत्तीस देश विदेह में षट्खंड मध्ये आर्य में।।सुर.।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में दक्षिण दिशी शुभ भरत है।
इस मध्य आरजखंड में जब कर्मभू वर्तत है।।सुर.।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में उत्तरदिशी ऐरावता।
इस मध्य आरजखंड में जब कर्मभू हो शर्मदा[1]।।सुर.।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालय-जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में पूरब अपर सुविदेह हैं।
उनमें सदा है कर्मभूमी नर बनें गतदेह हैं।।सुर.।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सुख देने वाली।

पूर्णार्घ्य

इन ढाई द्वीपों में कही हैं कर्मभू पंद्रह शुभा।
इन मध्य आरज खंड में जिनधर्म भास्कर की प्रभा।।
कृत्रिम जिनालय अगणिते मणिरत्न पार्थिव हैं यहाँ।
मैं जजूँ अर्घ चढ़ायके देवें अतुल सुख निधि यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिमध्यइंद्रचक्रवर्तिमनुष्यादिनिर्मापित मणिरत्नस्वर्णपार्थिवघटितत्रैकालिक सर्वजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन ढाई द्वीपों के जिनालय सुर मनुजकृत अगणिते।
इन मध्य जिनवर बिंब राजें रत्नमणि के निर्मिते।।
चांदी कनक पाषाण आदि धातु की जिनमूर्तियाँ।
मैं नमूँ शीश नमायके ये भरें आत्म विभूतियाँ।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिमध्यसुरनरनिर्मापितजिनालयमध्य-विराजमानपर्वतदीगुहादिविराजमानमणिरत्नस्वर्णरजतअन्यधातुपाषाणघटित सर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रिलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय अर्हंतों की प्रतिमा, जय जय सिद्धों की प्रतिमायें।
जय जय आचार्यों की प्रतिमा, जय उपाध्याय की प्रतिमायें।।
जय जय साधूगण की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर प्रतिमायें।
जय जय तीर्थंकर की प्रतिमा, इन वंदत आत्म निधी पायें।।1।।

इस युग में सुरपति के आकर सब प्रथम अयोध्या पुरी रची।
इस मध्य जैनमंदिर रचके चहुँदिश में जिन रचना की।।
भरतेश्वर ने भि अयोध्या में बहुते जिनमंदिर बनवाये।
कैलाशगिरि पर त्रय चौबीसि बहत्तर मंदिर बनवाये।।2।।

हरिषेण चक्रपति ने रत्नों के अगणित मंदिर बनवाये।
श्रीरामचंद ने कुंथलगिरि पर बहुते मंदिर चिनवाये।।
युग आदी से अब तक लेकर जिनगृह असंख्य ही माने हैं।
उन सबकी जिनप्रतिमा पूजूँ ये भव भव के दुख हाने हैं।।3।।

जय पांच भरत के जिनमंदिर जय पाँच ऐरावत के मंदिर।
जय पाँच विदेहों के मंदिर जय मुनिगण वंदित जिनमंदिर।।
इन पाँच विदेहों के सब इक सौ साठ देश कहलाते हैं।
पण भरत पांच ऐरावत मिल इक सौ सत्तर बन जाते हैं।।4।।

इनमें भरतैरावत दश में षट् काल परावर्तन होते।
चौथे व पांचवें कालों में जिनमंदिर भविजन मल धोते।।
सब इक सौ आठ विदेहों में शाश्वत ही कर्मभूमि रहती।
जिनमंदिर वहाँ निरतंर हैं जिनधर्म ध्वजा वहां फरहरती।।5।।

सुरगण भी कभी कभी जिनगृह जिनप्रतिमा की रचना करते।
नरपति खगपति साधारण नर जिनगृह को निर्मापित करते।।
माणिक्य नीलमणि गरुत्मणी रत्नों की प्रतिमा बनवाते।
सोना चांदी पीतल तांबा पाषाण आदि की बनवाते।।6।।

फिर पंच कल्याण प्रतिष्ठाकर मूर्ती को पूज्य बनाते हैं।
जिनवर के गुण आरोपण कर वर प्राण प्रतिष्ठा करते हैं।।
ये मूर्ति अचेतन होकर भी चेतन भगवान बनें तब ही।
निज भक्तों को वांछित देकर चेतन भगवान करें तब ही।।7।।

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पांच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा जिनगृह मिल नवों देवता हैं।।
पांचों परमेष्ठी नवदेवों की मूर्ति मंदिरों में सोहें।।
माँ सरस्वती की मूर्ति मुनी गणधर की प्रतिमा मन मोहें।।8।।

निजमूर्ति सहस्रकूट मंदिर अरुतीस चौबीसी प्रतिमायें।
महाव्रत के पवित्र आर्यिकाओं की मूर्ति नमत ही सुख पाये।।

जिनशासन यक्ष यक्षिणी की मूर्ती जिनगृह में रहती हैं।
दिक्पाल क्षेत्रपालों की भी मूर्ती विघ्नों को हरती हैं।।9।।

इन पंद्रह कर्मभूमियों के सब जिनमंदिर मैं नमूँ नमूँ।
सब जिनवर की प्रतिमाओं को, मैं नित्य नमूँ मैं नित्य नमूँ।।
सब पंच परमगुरु आदि बिंब जितने भी कृत्रिम इस जग में।
मैं नमूँ नमूँ नित भक्ती से मुझ मनरथ पूरे हों क्षण में।।10।।

दोहा

जितने जिनमंदिर यहाँ, जिनप्रतिमा सुरवंद्य।
जजत स्वात्मसुख प्राप्त हो, ज्ञानमती आनंद।।11।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितसर्वकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

त्रैलोक्य चूड़ामणि चूलिका

बड़ी जयमाला

नरेन्द्र छंद (परम परंज्योति......)

जय जय तीर्थंकर त्रिभुवन के चूड़ामणि जिनस्वामी।
जय जय जिनवन केवलज्ञानी त्रिभुवन अंतर्यामी।।
जय जय चिंतामणि जिनप्रतिमा मनचिंतित फल देतीं।
जय जय जिनमंदिर शाश्वत उन भक्ती शिव फल देती।।1।।

जय जय भवनवासि के जिनगृह अधोलोक में शोभें।
जय जय सात करोड़ बहत्तर लाख भविक मन लोभें।।
जय जय असुरकुमार देव के चौंसठ लाख जिनालय।
जय जय नागकुमारों के चौरासी लाख जिनालय।।2।।

जय जय जय सुपर्णदेव के जिनगृह लाख बहत्तर।
जय जय द्वीपकुमार सुरों के जिनगृह लाख छियत्तर।।
जय जय उदधिकुमार इंद्र के लाख छियत्तर जिनगृह।
जय जय जय स्तनितदेव के लाख छियत्तर जिनगृह।।3।।

जय जय विद्युत्कुमारेंद्र के जिनगृह लाख छियत्तर।
जय जय दिक्कुमार इंद्रों के जिनगृह लाख छियत्तर।।
जय जय अग्निकुमारदेव के छयत्तर लाख जिनालय।
जय जय वायुकुमार इंद्र के छयानवे लाख जिनालय।।4।।

जय जय मध्यलोक के जिनगृह चारशतक अट्ठावन।
जय जय अकृत्रिम मणिमय जिनमंदिर जन मन भावन।।
जय जय पांचमेरु के अस्सी जिनमंदिर सुखकारी।
जय जंबूशाल्मलितरु आदिक दश जिनगृह दुख हारी।।5।।

जय जय कुलपर्वत के जिनगृह तीस अकृत्रिम शोभें।
जय जय गजदंतों के जिनगृह बीस भव्यमन लोभें।।

जय जय जय वक्षारगिरी के अस्सी जिनगृह सुंदर।
जय जय जय विजयार्ध अचल के जिनगृह इकसौ सत्तर।।6।।

जय जय इष्वाकार अचल के चार जिनालय शाश्वत।
जय जय मनुजोत्तर पर्वत के चार जिनालय भास्वत।।
जय जय नंदीश्वर के बावन जिनमंदिर अभिरामा।
जय कुंडलगिरि रुचगिरि के चार चार जिनधामा।।7।।

जय जय व्यंतर के जिनमंदिर संख्यातीत महाना।
भ्ळावन भवनपुर आवासों में जिनगृह सौख्य निधाना।।
भूत जाति देवों के नीचे चौदह सहस जिनालय।
राक्षस देवों के तल में हैं सोलह सहस जिनालय।।8।।

शेष व्यंतरों के न भवन है, भवन पुरावास[1] हैं।
सब व्यंतर के मध्यलोक में त्रयविध आवासा हैं।।
अथवा किन्नर आदि सात विध व्यंतर अधो लोक में।
असंख्यात जिनभवन इन्होंके रत्नप्रभा खरभू में।।9।।

पंकभाग में राक्षसेन्द्र के लाख असंख्य नगर हैं।
सबमें जिनमंदिर अकृत्रिम वंदे नित सुरगण हैं[2]।।
इन व्यंतर के मध्यलोक में द्वीप अचल सागर में।
देश नगर घर गली जलायश वन उपवन मंदिर में।।10।।

जल थल नभ में ये सब व्यंतर करें निवास निरंतर।
जय जय जय व्यंतर के जिनगृह असंख्यात अतिसुंदर।।
जय जय सूरज चंद्र नखत ग्रह तारा के जिनमंदिर।
जय जय नभ में विमान चमकें उनके मध्य सुमंदिर।।11।।

मध्यलोक के अंतिम तक ये ज्योतिर्वासि विमाना।
जय जय इनके असंख्यात जिनधाम सर्वसुख दाना।।

1. तिलोयपण्णत्ति, पृ. 644। 2. तत्त्वार्थराजवार्तिक, अ. 4 सूत्र 11।

जय जय ऊर्ध्वलोक के जिनगृह अकृत्रिम अभिरामा।
जय चौरासी लाख सत्यानवे हजार तेइस धामा।।12।।

जय सौधर्म स्वर्ग के बत्तिस लाख जिनालय सुंदर।
जय ईशान स्वर्ग के लाख अठाइस जिनगृह मनहर।।
जयज सानत्कुमार दिव में बारह लक्ष जिनालय।
जय जय जय माहेन्द्र स्वर्ग के आठ लक्ष जिनालय।।13।।

जय जय ब्रह्म कल्प में चार लाख मणिमय जिनआलय।
जय जय लांतव युग स्वर्ग के लाख पचास जिनालय।।
जय जय महाशुक्र युग दिव में छह हजार जिनआलय।।14।।

जय जय आनत प्राणत आरण अच्युत दिव के जिनगृह।
जय जय जय ये सा शतक हैं मणिमय शाश्वत जिनगृह।।
जय जय तीन अधोग्रैवेयक इक सौ ग्यारह जिनगृह।
जय मध्य त्रयग्रैवेयक में इक सौ सात सुजिनगृह।।15।।

जय उपरिम त्रय ग्रैवेयक में इक्यानवे जिनालय।
जय जय जय जय नव अनुदिश के जिनमंदिर सुख आलय।।
जय जय विजय आदि सर्वारथ सिद्धी के जिन आलय।
जय जय ये सर्वार्थसिद्धिकर पंचअनुत्तर आलय।।16।।

जय जय त्रिभुवन के जिनमंदिर आठ कोटि गुणराशि।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चारशतक इक्यासी।।
जय जय जय जिनगृह में प्रतिमा नवसौ पचीस कोटी।
त्रेपन लाख, हजार सताइस नवसौ अड़तालिस ही।।17।।

जय जय अकृत्रिम जिनमंदिर अकृत्रिम जिनप्रतिमा।
मणिमय रत्नमयी पद्मासन नमूँ नमूँ जिनमहिमा।।
जय जय जय कृत्रिम जिनमंदिर जय कृत्रिम जिनप्रतिमा।
इकसौसत्तर कर्मभूमि में त्रयकालिक जिनमहिमा।।18।।

जय पैंतालिस लाख सुयोजन सिद्धशिला सुखकारी।
सिद्ध अनंतानंत विराजें, नमूँ नमूँ भवहारी।।
नमूँ नमूँ मैं नित्य नमूँ मैं, हाथ जोड़ शिर नाऊँ।
नमूँ अनंतों बार नमूँ मैं, बार बार शिर नाऊँ।।19।।

हे प्रभु! मुझ पर कृपा करो अब, भवसमुद्र से तारो।
हे प्रभु! स्वात्मसंपदा देकर स्वात्मसौख्य विस्तारो।।
हे प्रभु! परमानंद सुखामृत देकर तृप्ती कीजे।
'ज्ञानमती' ज्योती प्रगटित हो सब अज्ञान हरीजे।।20।।

दोहा

णमोकार का ध्यान कर, आदिनाथ को वंद।
जिनगृह जिनप्रतिमा नमूँ, नमूँ सुखकंद।।21।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधिअष्टकोटिषट्पंचाशतलक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, तीन लोक जिनयज्ञ करें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर निज के तीन रत्न को पाके।
केवलज्ञानमती प्रकटित कर बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।

इत्याशीर्वादः।

तीन लोक विधान प्रशस्ति

शंभु छंद

श्री आदिनाथ युग के स्रष्टा, पुरुदेव आदिब्रह्मा जिनवर।
मैं नमूँ नमूँ तुम चरणकमल, जिससे होवे मुझ बुद्धि प्रखर।।
मैं शाश्वत जिनप्रतिमा वंदूँ जिनमंदिर प्रणमूँ बार बार।
गणधर गुरुवर के चरण नमूँ, सब साधु नमूँ मैं बार बार।।1।।

श्रीमूलसंघ में कुंद कुंद आम्नाय सरस्वतिगच्छ कहा।
विख्यात बलात्कार गण से गुरु आम्नायों में मुख्य रहा।।
इसमें अगणित आचार्य हुये उन सबको वंदन मेरा है।
सब परम्परा आचार्यों को नितप्रति अभिनंदन मेरा है।।2।।

चारित्र चक्रवर्ती प्रधान आचार्य शांतिसागर माने।
उन पट्टसूरि चउसंघनाथ गुरुवर्य वीरसागर माने।।
मुझ अज्ञमती को ज्ञानमयी कर दिया आर्यिकाव्रत देकर।
गंभीर धीर मितभाषी गुरु मैं नमूँ नमूँ नित अंजलि कर।।3।।

श्री देशभूषणाचार्यवर्य आचार्यरत्न मुझ आद्य गुरु।
गृह बंधन से उद्धार किया क्षुल्लिका बनाया आद्य गुरु।।
मैं इनको शत शत वंदन कर दीर्घायु कामना करती हूँ।
गुरु स्वास्थ्य लाभ करके भरपूर चिर जियें प्रार्थना करती हूँ।।4।।

श्री शांतिसागराचार्य आदि गुरुओं का कृपा प्रसाद मिला।
जिनवाणी की अनुकंपा से उर सम्यग्ज्ञान प्रभात खिला।।
वर अष्टसहस्री नियमसार मूलाचारादि ग्रंथों का।
अनुवाद किया निज भाषा में, श्रुतभक्ती ही भवदधि नौका।।5।।

वर नियमसारप्राभृत ऊपर, 'स्याद्वादचंद्रिका' टीका की।
निश्चय व्यवहाररत्नत्रय निधि मिल जाय यही इक वाछां की।।
इन्द्रध्वज महाविधान आज जग में प्रभावना करता है।
वर जंबूद्वीप विधान कल्पद्रुम यज्ञ भव्य मन हरता है।।6।।

यह तीन लोक जिनयज्ञ नाम उत्तम विधान रचना सुंदर।
शाश्वत जिनबिंब जिनालय की भक्ती ही इसमें हुई मुखर।।

बीराब्द पचीस शतक बारह वर शरद् पूर्णिमा के शुभ दिन।
इनको लिखना प्रारंभ किया कल्पद्रुम विधान कर पूरण।।7।।
इस जंबूद्वीप में भरतक्षेत्र का आर्यखंड अति शोभ रहा।
कुरुजांगल देश हस्तिनापुर में जंबूद्वीप मन मोह रहा।।
रत्नत्रयनिलय वसतिका में मैंने विधान यह रचा यहाँ।
यह भव्यकमल मन विकसावे कल्पांतकाल तक रहे यहाँ।।8।।
वीराबद पचीस शतक तेरह वर पौषशुक्ल तेरस तिथि को।
दिन सोमवार प्रातः मंगलबेला में पूर्ण किया इसको।।
इसमें चौंसठ पूजायें हैं वर अर्ध आठ सौ चौरासी।
पूर्णार्घ एक सौ चालिस मिल इक हजार चौबिस गुणराशी।।9।।
त्रिभुवन चूड़ामणि जयमाला त्रैलोक्य वंदनामाला है।
हे भव्य! कंठ में पहनो नित यह शिवकन्या वरमाला है।
यह अजर अमर करने हेतु भक्ती अमृत का प्याला है।
संपूर्ण सौख्य देने हेतु यह स्तुति मधुर रसाला है।।10।।
इसमें तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ आधार बनाया है मैंने।
त्रिलोकसार आदिक अनेक ग्रंथों का सार लिया मैंने।।
अज्ञान प्रमाद आदि वश से यदि इसमें कुछ भी त्रुटि होवे।
ईर्ष्यादि रहित वत्सलता से विद्वज्जन सूचित कर देवें।।11।।
जब तक नभ में रवि शशि चमकें, तब तक यहाँ जंबूद्वीप रहे।
जब तक जिनवर की भक्ति रहे, तब तक यह अमर विधार रहे।।
यह 'तीनलोक' नामक विधान, त्रिभुवन में मंगलकारी हो।
हो 'ज्ञानमती' को शरण भूत, लोकोत्तम सुख सुखकारी हो।।12।।

दोहा

श्रेष्ठ त्रिलोक विधान यह, करो करावो भव्य।
त्रिभुवन के सुख प्राप्त कर, निजसुख पावो नव्य।।13।।

इति पुष्पांजलिः।

इति श्री त्रिलोक विधान प्रशस्तिः सम्पूर्णम्।

भजन

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज-तुमसे लागी लगन............।

कर लो जिनवर भजन, प्रभु के पद में नमन, अवसर आया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया
आकर तेरी शरण, होकर आतम मगन, तुमको ध्याया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया
तीनों लोकों में जितने जिनालय, सिद्ध प्रतिमा से संयुत जिनालय।
जो इन्हें पूजता, भक्ति में डूबा, शांत पाया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।1।।
चार शत अष्ट पंचाशतम् हैं, मध्यलोक के जिनवर भवन ये।
इंद्र वंदन करें, हम भी अर्चन करें, द्रव्य लाया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।2।।
ऊर्ध्वलोक अधोलोक में भी, जितनी प्रतिमा जिनालय कहे भी
सबको शत शत नमन, हो निजातम रमण, तुम पद ध्याया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।3।।
प्रभु मैं चक्री की पदवी न चाहूँ, मात्र तेरी शरण आना चाहूँ।
हर दम तुमको भजूँ, जग के सुख सब तजूँ, भाव आया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।4।।
''चंदना'' मैं भी शिवपद को पाऊँ, भक्ति का फल यही नाथ चाहूँ।
ना हो अब भव भ्रमण, छूटे जामन मरण, भाव आया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।5।।

आरती

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज-क्यों न ध्यान लगाए, वीर से बावरिया............।

कर लो सकल नरनार, प्रभूजी की आरतिया।
करती है भव से पार, श्री जी की आरतिया।।
तीनों लोकों में तू घूमा, लेकिन जीवन प्रभू बिन सूना।
जीवन में लाती बहार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।1।।
आठ करोड़ लक्ष छप्पन हैं, सहस सतानवे चार शतक हैं।
इक्यासी जिनधाम, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।2।।
सब कृत्रिम अकृत्रिम प्रतिमा, तीनलोक को जानो महिमा।
भरे सकल भंडार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।3।।
इस नरतन को तूने पाया, तीन लोक मंडल रचवाया।
कर दे सुखी संसार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।4।।
प्रभु की आरति भवदुखहारी, भव्यजनों को आनंदकारी।
वरण को शिवनारि प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।5।।
जय जयकार करो अतिभारी, गूँज उठे यह नगरी सारी।
बोलो सभी नर नार प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।6।।
ज्ञानमती माताजी की महिमा, कहे ''चंदना'' तव गुण गरिमा।
भरे ज्ञान भंडार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।7।।